सूरज की आहट

सरस्वती पब्लिकेशन्स
११५७६, सुभाष पार्क एक्सटेंशन, दिल्ली ११००३२

सूरज की आहट

(कहानियाँ)

सावित्री परमार

प्रकाशक सरस्वती पब्लिकेशन्स
११५७६, सुभाष पार्क एक्सटेंशन,
दिल्ली ११००३२

संस्करण प्रथम संस्करण, १९८७

मूल्य साठ रुपये (६० रु०)

पृष्ठ १६८

मुद्रक देवदार प्रिंटर्स, दिल्ली ३२

SURAJ KI AAHAT (Stories)
by Savitri Parmar Rs 60.00

भूमिका

जानी मानी लेखिका सावित्री परमार की कहानियों का संग्रह पाठकों के सामने प्रस्तुत है मैं भली प्रकार से जानता हूँ कि सावित्री जी ने जिंदगी को बड़ी गहराई से देखा है उन्होंने जीवन के उतार-चढ़ाव, सुख दुख, गरीबी से अमीरी तथाकथित सवर्ण और सदियों से अछूत समझे जाने वाले लोगों के दिलों में झांक कर देखा ही नहीं अपितु उनकी मनोभावना से लेखिका का हृदय स्पंदित हुआ है इसकी छाप लेखिका की इन कहानियों में स्पष्ट दिखाई देती है मुझे विश्वास है कि यह कहानियाँ पाठक को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकतीं

सावित्री परमार से जब भी कोई बात करता है तब वह अपनी कहने के बजाय दूसरों की बात सुनना ज्यादा पसंद करती हैं यही नहीं कुरेद कुरेदकर मन के कोनों में छिपी बातों को निकालने में वह बड़ी माहिर हैं वास्तव में एक साहित्यकार के सामने पूरा समाज ही प्रयोगशाला के रूप में है, इसमें से जो कुछ वह चाहे निकाल कर पाठकों के सामने प्रस्तुत कर सकता है

अभी हम संक्रमणकाल से गुजर रहे हैं एक ओर आधुनिकता और २१वीं शताब्दी की आंधी की आहट आ रही है, तो दूसरी ओर सदियों पुरानी परम्परा को भी एकदम छोड़ नहीं पाते वास्तव में छोड़ना चाहते भी नहीं क्योंकि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, पहचान है फिर भी समाज में जो खोखलापन, आडम्बर व्याप्त है इसे तो समाप्त करना ही होगा जीवन की वास्तविकता को अधिक समय तक नजरअंदाज नहीं किया जा सकता

इस संग्रह की कहानियों का प्रत्येक चरित्र जीवंत है, चाहे वह नशे की सर्वहारा स्थिति को स्पष्ट करने वाली कहानी हो अथवा छोटी जाति के समझे जाने वाले लोगों के आत्मसम्मान को उड़ेलने वाली नारीमन की पर्दादारी का भी लेखिका ने कुशल विश्लेषण किया है

भौतिकता की अंधी दौड़ में नशे की लत आज शहर में गांव की नई पीढ़ी में जहर घोलती जा रही है आदमी के दिल दिमाग का नशा कितना निचोड़ लेता है, कितने घर बर्बाद हो जाते हैं और प्रिय से प्रिय संबंधों का भी कितनी

निर्ममता से यह निगल लेता है, यह हमे इस सग्रह की कहानी मे पढ़ने को मिलता है

सदियो से अछूत समझे जाने वाले लोगो की परछाई से भी लोग कतराते हैं किंतु उनकी बहन-बेटिया की अस्मिता पर डाका डालते हुए तथाकथित सवण लोगो को सकोच नही होता इस स्थिति का व सामाजिक जागृति का चित्रण भी लेखिका द्वारा किया गया है

नारी, समाज का अर्द्धांग है किन्तु भारतीय समाज मे उसे जन्म स मत्यु तक कितनी पीड़ा, कितना अन्तद्वन्द्व सहना पडता है, इसका चित्रण लेखिका द्वारा सजीव रूप मे किया गया है

गावो म पनपती राजनीति न महात्मा गाधी के रामराज्य की कल्पना के विपरीत राजनीतिक प्रदूषण का काय ही किया है लखिका ने इस तथ्य का विश्लेषण बडे चुटीले रूप म किया है

'सूरज की आहट' कहानी सग्रह की प्रत्यक कहानी अपने आप मे पूण है इनमे समय की पुकार है, समस्याए हैं और कथानक के अनुरूप समाधान भी है

१५ माच, १९८७ देवीसिंह नरूका

सूरज की आहट

घच्च घच्च घच्च

अरे हा हा हाका हू हुहूह

'छोडो बाबा इन्हे ! अब ये आगे बढ़ने को तयार नही कहा तक पैना मारोगे? देखो, एकदम थक गए हैं रोक दो, यही रोक दो'

सिर पर पडा अगोछा झाड और उसे लपेटकर मनोहर पहिए पर पजा टेककर कूद पडा हाथ मे उठाई जूतियाँ आपस मे टकराकर झाडी और पैरो मे फसा ली गाडी पर बैठा बाबा सुजन हडबडा उठा बाबू ! यह सहर नाई जो रोटी-पानी आ जुटैगा अरे, आस पास गवई गाम, भरा पूरा बियाबान जगल और ऊपर से भूभर बरसाता सूरज ठीक ठिकाने चुपचाप आ बैठो ये हुरिया जरा बडक्रा रहा है सो मुआ कब ताई ठसका मारेगा एक पैना छुआ नाहिं बबुआ के, रेल हो जावैगा यहा ठहरने के अरथ हैं बाबू जिंदा आग मे झुलसना आ जाओ, बरध पहले ही बिदक रहा है' लेकिन मेड पर बैठा मनोहर न हिला, न डुला मिट्टी के ढेले से ढेलो को टकटकाता रहा, जैसे उसने कुछ सुना ही न हो बैल ने पूछ मरोड कर गदन आगे कर खैंच मारी पहिया धचके से हिला सुजन बाबा की चुधियाई आखो मे लौ सी लपकी और पैना तेजी से हुरिया बैल की गुददी म तीन चार कौंच मार आया बल फफनाकर आगे खिचा और साथ ही गाडी ऊपर हो गई

लीक सामने समतल थी— आ जाओ बाबू, रास्ता काबू मे आ गया'

हा, हा हू, हू की टिटकरिया के साथ गाडी फिर हिचकोले लेने लगी

मनोहर धीरे-से उठा जूतिया हाथ म पकडी, कुर्ता समेटा और कीले पर पाव टेककर गाडी मे बठ गया गाडी घिसट चली पसीना सिर के बालो से बहकर

अगोछा भिगो रहा था कनपटी पर लकीरें खिंच रही थी सुजन बाबा की हरी बडी तर हो रही थी पसीना, धूल और हवा के झक्कड लग-लगकर जाने कब बडी कई जगह अपना रग बदल चुकी थी धूप म सुजन बाबा की कानो की मुकिया झिलमिला रही थी उम्र का कोई अदाजा नही किट् किट, तृ-त हो करते-करते नीचे का ओठ लगभग लटक आया था

मनोहर गाडी की रस्सियो से पीठ टिकाकर बोला—'बाबा ! अगला गाव कितने कोस होगा ?'

पैने का सटाका जमाकर सुजन बाबा जरा तिरछा हसा और बोला—'बस, हम जानैं हैं बाबू ! सहर की हवा गाम गलियारे की किल्लत कहा भुगत पाव है अरे ! अबई चले अढाई घण्टा नही भवा और पूछा रहै गाव कितनी दूर है क्यों साच कह रहे हैं न हम ?'

मनोहर को बाबा सुजन एकदम रूखा और गवारू नही लगा बैलो के सग उसकी मीठी गाली गलौज और बात का सीधा उत्तर न देने का ढग बडा अच्छा लग रहा था उसे उसी रौ मे बोला—'बाबा ! अपने को अपनी परवाह न कभी रही, न है मुझे तो बैलो पर मोह हो रहा है देखो न, झागो से थुथनी भर आई है, ऊपर से तुम पैन की चोट दे रहे हो रास्ता इतना खराब है कि गाडी फिर से धचकने वाली है न हो, घडी भर इन बेचारो को कही पेड के तले बाधकर घास-पत्ता दे दो, हम-तुम भी पैर फैला लेंगे'

'अच्छा, अच्छा चप्पी कर बैठे रहो देख समझ लिया तुम्हारा मोह हेज-इधर रहा हरिया और उधर रहा बडका दोना आठ महीना ऊपर दस दिन हुए हैं खरीदे मेले मे इनका मालिक बोलन लगा—साहूजी ! बैल नाहि अपनी दोनो आखें दे रहा हू पट की आग मे झुलसकर खूटे की रोसनी बेच रहा हू जरा सभाल के जोतना बैल ऐस हैं कि आधी पानी ऐसे उतार दवें हैं जैसे कुछ बला दुनिया मे है ही ना वस चाबुक के यार हैं, थोडे सिर चढे है ता बबुआ ! तुम सोच मत करो यो बच्चो जसा बहाना करने की जरूरत नाहि वो सामने भजनवा का कोल्हू दीखै है न वहा घोटू मोड छाव मिल जाव है वहा रोक लेंगे और सूरज उतरे चल पडेंगे हाथ-पैर आज हमारे भी जाने क्यो गिराय रहे हैं'

मनोहर आखें बद किए पडा रहा उसका पसीना टप टप गाडी म बिछे सरकडो पर गिरता रहा

हू हू करक पहिए रुक गए सुजन बाबा न कूद कर बैलो की पीठ सहलाई मनोहर ने आखें खोलकर इधर-उधर देखा सचमुच घुटने-पीठ छिपान लायक छाया थी कुछ दूर इटो के टूटे पुराने भट्टे के पास छाया गहरी थी सरकण्डो पर से गम जलती चादर खीचकर वही बिछा दी और पावो की अगुलिया सहलाकर

जसे धरसा की थकान उतारने लगा बाबा ने बैलों के कंधों से जुआ हटाया और उन्हें पेड़ के तन से बांध दिया, बड़ी जुगत से बैठाया मटका फूस के नीचे से खींचा और काली चिकनी पोटली उठाकर मनोहर के चादरे के कोने में सटकर बैठ गया पोटली में से अनगढ़ हाथों की ठेकी दो रोटियां और चटनी की लगदी निकाली एक अपने सामने रखी, दूसरी मनोहर के आगे

मनोहर को मिचली-सी आ रही थी रोटी देखकर मन में खटास-सी घुल गई बोला—'बाबा ! तुम खा लो अपना जी तो उलट सा रहा है'

बाबा की झुर्रियों में बेपरवाही-सी झांकी मुंह में कौर ठूंसता बोला—'बस रहने दो, भैया ! ये उल्टा पल्टा जभी तक है जब तक पेट के गड्ढे में कुछ डालो नहीं ज्यादा सहरीपन छांटोगे तो हैजा गाद में डाल लेवगा भैया ! देवी मां का नाम भजो और रोटी मरोड़ लेओ पानी दो चार गिलास पड़ा है बस दुपहरिया कट जाएगी लो, खाओ झटपट'

बाबा की फटकार काम की थी सचमुच भूख से आंतें ऐंठी जा रही थीं बेमन से रोटी तोड़ी और पानी के साथ सटक ली पानी तप रहा था फिर भी था तो पानी जैसे-तैसे पूरी रोटी खा ली खाते ही आंखों में दम आया और देह सीधी हो गई गम पानी भी अमृत लगा तब कमर सीधी कर लेट गया पास ही सिर का पटटा खोल सुजन बाबा सो गया गदीला, गुदना गुदा हाथ तकिया बना था खिचड़ी मूछें और खारीभार मुंह माथे पर बेहद लकीरें

'कितनी उम्र के होंगे बाबा तुम ?'

'पूछ रहे हो तो समझ लो सत्तर ऊपर तीन या चार हैं' बाबा ने मसकोड़ा ले करवट बदलते कहा

'अच्छा बाबा ! इस जगह का भजनवा का कोल्हू क्या कहते हैं ? यहां तो कोल्हू का नाम भी नहीं'

बाबा को झपकी आ गई थी, चौंककर बोला—'अरे ! हमने का ऊ ससुर की पगड़ी बांधी हो सो जानें ? नाम सुना तो याद कर लिया फिर रोजीना का रास्ता नापना रहा यहां की हरेक टेकरी याद पड़ी है कानू कमबख्त की नाड़ गड़ी है यहां जो सारे भजनवा हजारवा की जनम पतरी ढूढ़त फिरें ! तुम क्या सिर फोड़त रहो, होगा मरा-जीता अपने को का !'

मनोहर को बाबा की झुंझलाहट पर हंसी आ गई और बोला—'बाबा ! उम्र की छाया तुम्हारी कड़कदार आवाज और हड्डियों पर नहीं पड़ी तुम इधर के नहीं हो तो कहां के हो ?'

बाबा ने खांसकर बात दबा ली दुबारा जब मनोहर ने फिर पूछा तो कहा —'तुम परदेसी ठहरे, का छिपाना ? हम यहां तो चार बरस से हैं बाकी मिर्जापुर

ठिकाने वे हैं आए सो इधर मुह डार बैठ गए उमर ससुरी कहा खावे डसेगी। जिदगी जब कदर खो दे तो बाबू उमर भी दो हाथ पीछे ठहर जाव है कदर मारती है आदमी को वो करम मे लिखाई नही'

अब मनोहर की बारी थी करवट लेने की क्या पते की बात बोल गया बाबा दु ख को जब दु ख की गध आई तो उत्सुकता जाग गई आखें बाबा पर लग गई बोला—'बुरा मत मानो बाबा। ऐसा क्या हुआ कि इस उम्र मे यो हाड गला रहे हो? गाव छोडा, रास्ता छोडा, यहा न जान, न पहचान क्यो आए, क्या घर मे कोई नही है?'

'अरे भया। कोनु नाहर डसे है घर को। सब जिंदा हैं मरे तो हम ही मरे हैं तुमको कहा तुम पडे रहो, पहुचा देंगे साझ आधी टले जिदगी लम्बी पडी है कहा कहा पूछत फिरोगे दु ख दरद'

'नही बाबा। मैं तभी गाडी मे बैठूगा जब तुम बता दोगे सौगध है तुम्हें'

अरे बाबू। भली चलाई सौगध की हमने भी सरदारी को माथे की सौगध देई थी, जो ठोकर द भाज गया पर हम तो बबस हाए जा रहे हैं तुम्हारे आगे क्या सुनोगे। है कहा। महराऊ न जब हाथ उठा लियो मारन क, तब कहो, मरद की जूती या घर मे टिक सकेगी कहा? बोलो और समझ लेओ'

'हाथ उठा दिया महराऊ ने?'

अरे और कहा? गारी गुपतार तो चलती रहे थी पर या जुलमीपन अभी सामने आया माथे मे कीडा हमार ही उठा या भैया। चटपटी मे पहले दो लुगाई मर गइ औलाद की चाह म तीसरी आइ तो सरदारी को आगन मे पटक वा भी चली गइ रामजी महाराज के। उमर दौरी जा रही थी सो ताई ताऊ के कहने में आक गगापार की चौथी ले आए सोलह सत्तरह साल की अल्लड उमिर काजर कयो घरी न छूटे सरदारी की मट्टी कौडी रह गई फिर भी गज भर की य छाती है बाबू जो प द्रह बरस खची औरत सरदारी प उमर आई तो धपिया ठुमकी सी बुराई रोज कर सरदारो अलग आख दिखावे दोना के बीच म हम पिस गए एक दिन बुलाके कह बठे—ये तेरी महतारी य तेरा बेटा, क्या गाव गली सिर पर लवो हो?' सरदारी की आख म पहली बार फास देखी कडक के बोला—अरे बडे सम झान वाले हो न। बुढापे मे य बाघ बाघने की सूझी क्या? तुम खेतो पे हाड गोडो हो कुछ खबर है पीछे घर म कौन कौतुक रचे जाव हैं ख्याल बुढापे का करके छोड देवें हैं नाहिं तो ' बस भया छाती म भाला-सा तन गया

मनोहर ने देखा बाबा की कचलाई आखो मे अधेरा घुमड आया सास बढ गई जो अभी हटटा-कटटा दिखाई दे रहा था अब वह ऐसा लगा जैसे दुनिया भर म ठुका पिटा मुर्दा पडा हो उनका मन कही दूर तक इस बुढापे के लिए दु ख

गया जरा पास खिसका और बोला—'लो बाबू, थोड़ी घूट पानी ... ले लो कहत-कहते रुक क्या गए, फिर क्या हुआ ? देखो, कहने से कलेजा हल्का होता है कहा है तो अब खाली हो लो

बाबा ने पटटे के छोर से ओठो के किनारे पोछे और डूबी सी आवाज मे बोला—'सरदारी घर म जा सोया और हम तिलमिलाते रह गए दूसरे तीसरे दिन तक यो ही घर म चुप्पी बनी रही हां, चम्पिया मे खास बात नजर आ रही थी कि वो सिगार-पटार पहले से ज्यादा करने लगी पैठ जुडी थी कोसारी मे, सो बछडा लेके वहा गए आधी रात लोटे जब देखें तो मैया गाज गिर गई हमारी बहन का जेठ जिसकू हमने ही घर मे जगह दी थी खेती म मीर दी थी और बेसहारा कू आसरा दे के धीरज बाधा था, वोई कमजात हमारी महराऊ की बाह सहलाए पडा था लोहू चढ गया बखरी मे जाके देखा तो सरदारी कही नही दीखा बस लपक के गडासा खीचा और जा पहुचा खटिया के पास वो नीच तो कूद के छान के पीछे हो लिया, पर महराऊ ने झपट के जो धक्का मारा, सो गडासा गिरा एक लग और हमारा सिर टकरा उठा लडामनो से चढ बैठी छाती पर और बस हमारी इज्जत उसने ले ली हाथ मार के धमकी मार के अलग बोली—'तैंने और तेरे बेटुआ ने की चू की तो गडा ने म दो पैंडा ही समझ जिंदगी भर तेरा धधा पेला, क्या दिया तैंन ? दोना मिलके मरी ल्हास ढोनी चाहें हैंगे जो मन आवेगा करूगी तू देखे तो देख नही मुह कालख पोत निकस जा '

'बस ललआ रात भर वही पडा सुन्न हो गया सबेरे कब सरदारी आया और कब हम उठे कुछ याद नाही सरदारी जब गठरी बाध जाने लगा तब पूछा—'कहां चला ?' तो बोला—'अरे ! अब यही महराऊ ढोल बजावगी हम तो मुतिया की मा के पास जा बैठेंगे मौज मजा मे दो रोटी कहीं नही गई मुलक भर यहा आके इनके पास ठल्ले मारे, अपनी आखन मे खून उतरे है ' मुतिया की मा, तुम नही जानो बबुआ गाव भर की बदमास राड यो कच्ची उमर बहका रखी है, के जी गिरा के रह जावें है समझ गए के बटवा से मुफ्त खेती करावगी, कोल्हू पिलवावैगी और गन्ना की तरह जब चूस लेगी, तब दगडे मे फेंक देगी समझाया, पर अकडा—'बापू तू तो अपनी टिक्कुटिया को बाध लै हमारी तेरी नातेदारी खतम तू रह या जा, मैं तो अब इस लग आऊ तो सौ जूती, हुक्का को पानी अलग ' सो जा बठा बाबू मुतिया के घर

'एक दिन सरदारी की बखरी मे सोया था के कान म भनक आई जैसे कोई दीवार के पास सटा है देखा ता वही बहन का जेठ सोचा भूसा का टोकरा टेकने आया होगा, पर सक नाही गया सा हाथ पकड के भीतर कर लिया पूछा कहा बात है ? बोला—चम्पिया आज खेत म पटवारी के लरिका के सग थी और भी कैई

दिन देखो है यही नाय, आते जाते राहगीर से भी ना बचै रोको भया ! पूर गाम मे चचा हैगी ' बबुआ ! खेंच के थप्पड दिया मैंने वाके मुह पे 'अरे तू बिस-भायी ! आज रोन मरा है मेरा मन भूडा करके तुम पै आई दस पै गद्द, तू क्या सूजा ? मन मिल बात कर नहीं लम्बा हो जानै कितनी गारी हमन दे दी, पर मन जो खटाया सो जुडा नहो उसी रात रह हमन घर छोड दिया, गाव छोड दिया चपिया हमारे लिए मर गई और सरदारी कुआ झाब म डूब गयो या ही राम कहानी है टरक्त भये इतकू निकल आए सो गढ़ी मे ठहर गए हैं मनकराम ने कोठरी दे दई है गाडी हाकै लेव हैं और दो रोटी ठेक मैं पेट के अगार भूखा लैवे हैं '

खामोशी और बोझिल हो उठी आदमी दु ख मे सहज क्या-क्या कह जाता है कौन यह बाबा ? कौन इसकी चपिया ? कौन सरदारी ? कहा इसका मिर्जापुर ? पर न जाने मन कैसा होने लगा ढेर सी ममता उसके लिए उमडी आ रही थी बाबा तो जसे निश्चित हो गया था, सब कुछ कह कर, पर मन तो अपना बडा गिरा दिया मनोहर चुपचाप यो ही धूलभरी जलतो पगडण्डी देखता रहा क्या बोले, अब है क्या पूछा को ? फिर पूछे भी क्यो और दु ख क्यो पाए ! यह तो मुसाफिरी है सब यो ही मरे पडे है यो सोचते सोचते नीद आ गई

आज तीन दिन हो गए मनोहर ने सोचा, कहा मिल गया यह सुजन बाबा और बुखार भी यो बीच म आना था ! कोठरी म उमस बढ रही थी बाहर धूल भरा अधड चल रहा था भीत म छोटा सा मोखा बस यही से हवा यही से रोशनी सकरे गलियारे मे ठसी कोठरी, बाबा को न जाने कब तक बाधेगी, पर वह तो आज बुखार उतरे या न उतरे बस चल देगा बाबा गाडी ले जाएगा ठीक है नहो तो पैदल ही चल देगा कोई और गाव होगा, वहा से ले लेगा दूसरा गाव ! कैसी भूल पड गई दिमाग म आग के चार कास के बाद की जमीन तो खुदी पडी थी पावा से सभी कुछ याद है चार कोस कसे भी बाबा ठेल दे, फिर पदल चला जाएगा गाडी क्या कन्नी है ? यह बाबा मन को बाध लता है पर मन बधन वाले ही तो बधते हैं ! बाबा क्यों नही बाध पाया सरदारी को और चपिया को ! लेकिन बाबा मेरा क्या लगता है ! कुछ भी तो नहीं फिर क्यो हाथो पर रख बठा है ! सस्कार का जोड यही तो ठीक बठता है

तभी काठरी का पल्ला खुला और बाबा हाथ म प्याली लिए अन्दर आ गया मनोहर न दखा बाबा का मुह लाल हो रहा है

कहा गए थे बाबा ! यो धूल मिटटी मे लाल मुह किए कहा गए थे ?'

'अरे ! तुम रात भर कराए रह हो यहा जगल मे चार घर' बीच मे बुठरिया न दवाई न कछ और चाय मिल जाती कल तुलसी की तो ठीक हो जाते सो दो कास पे दमगढी है न वहा जाक चार गालो और चाय दूध लाए लेओ अब उठो

ये गरम चाय म घूट मारो और गोली भीतर डारो रामजी ने, देवी मा ने चाहा तो साम को भाजन लगोग'

आँखें फटी रह गई मनोहर की दवा, चाय दो कोस से! ये कौन-सा रिश्ता बध रहा है! रिश्ते हा रिश्ते! या ही बधते रहे, लेकिन रिश्ते की डोरी हर बार टूटती रही कि दम घुट गया है अब य बाबा फिर रेशम की गाठ कस रहा है नहीं, बस बहुत हुआ

'बाबा! मैं ठीक हू नाहक गए तुम पूछ लेते, ऐसे तो गर्मी है अच्छा, सुनो मैं य गोली ले लगा, चाय भी पी लूगा, पर अब तुम बल जोत-लो और मुझे पहुचा दो पूरे तीन दिन हो गए अब मैं जाऊगा' कह तो दिया, लेकिन मनोहर ने सोचा कि सुनते ही बाबा प्याली पटकेगा और दो चार सुना देगा पर यह क्या, सुनकर बाबा न मुह क्यो फेर लिया? क्या सोच रहा है वह? तभी उसने देखा कि बाबा की आखें उसे अपलक देख रही हैं कही कोन म चमक झलक रही है मोती-सी आसू! कहा छिप थ? एसा क्या कह दिया उसन कोइ दु ख क्या पाता है मुझसे!'

'क्या हुआ बाबा! चुप क्यो हो गए?'

सुजन बाबा बाहर चला गया लेकिन जल्दी लौट भी आया देखा आखें रगड-कर आया है पास आकर बठ गया हर समय व्यग्य म खिचे ओठो पर तरलता छा गई थी चेहरा मासूमियत लिए एकदम नजदीक आकर खुरदरी अगुलिया बालो म डाल छाती पर झुककर बडी नम आवाज मे बोला—'याद है तुम्हें! उस दिन बोले थे कि गाडी म तब तक नही बैठूगा जब तक अपनी कहानी नही सुना दोगे तो बबुआ! सुन लो, मैं भी तुम्हे तब तक नही छोडन वाला, जब तक उग-लोग नही जो कुछ करेजे म दबाए घूम रहे हो जमाना देखा सुना है मैंने और जान गया हू कि दरद तुम्ह भी कोई साल रहा है सोचोग, यह बुढऊ किस जुगत का है! जिससे महराऊ नही निकाली गई और खून स निकला बचवा नही राखा गया पर बाबू! समझ लो के मानस वही अपनी नजर म खरा है जो बुराई को कुद्दी कर खुद निकल आए चार दिना जिनगानी के, कौने अधिकार मागता फिर! फिर मागे भी तो यहा, जहा पै हाथ धरन की जगह हो मानो तो हम तुम्हारे हैं ना मानो तो कोई भी अपना ना है हम तो बिटवा तुम्ह कहा बताए, तुम्हे अपना कह दिए हैं य भी कह द हैं कि दु ख जोर आवें तो या कोठरी खुली समझ लेना कहो कहे के रहनवार हो? यहा क्या आए हो? हम गलत ना हैं तो कौन दु ख खाय रहे हैगा आज हम गाडी लक कहीं नही जायेंग जो कहोगे तो मन हल्का करके भेजेंगे'

मनोहर साम रोककर सब सुनता रहा, कौन झुका है ऊपर! ऐसी प्यारभरी बोली तो कई बरस बाद मिली है वह भी किसकी, जो न अपना है और न पराया. [illegible]

सोचो जाए हर घडी, पर कहत न बन घडी भर भी

सुजन बाबा की अगुलिया बराबर बालो म फिर रही थी मन को दूर तक ठण्डक पहुचा रही थी मनोहर को याद आ गया भूला बिसरा बाप का प्यार मामा की बरहमी और सेठ की दुत्कार आखें भर आई ओठ थरथरा उठे छि, कहा हारा जा रहा है। अब उमर रही है क्या या सुबकने की। लडकपन दिखाने की। नही, मजबूत बनो, पर यह क्या? छिपा कहा पाया था सब सुजन बाबा की काठ-सी कडी और माटी हथेलिया पी गई सार खार पानी को मुह और झुक आया मूछो भरे कोन और ममता म भीग गए

पुचकार निकली—'बाबू! जी आछा करने से दुनिया नही नापी जावगी तुम कह भर देओ, देखना कैसी चिनगारी छटती है बरफ की सिला सा करेजा हो उठैगा अच्छा जाओ वायदा रहा कै रात को पहुचा देवेंगे तुम्हारे ठिकाने जूडी भी अब तो कुछ मन्दी लगै हैगी गोली भी तो देवता का नाम पढक दीनी है'

अब सोचन समझन को कुछ बाकी नही बचा ये सामन कोई और नही, एक दम अपना है सुर्जन बाबा है गाडीवान है और है तुम्हारे माड का अगला पत्थर अब नही टाला कह डालो बडा जहर इकट्ठा हो गया है काटे डाल रहा है और मत कटो देखा जाएगा आग और कोई सुजन मिलेगा तो उस भी आखिरी बार कह डालेंगे मन मे बतीसी घुमडी, अपनापन उफना सुजन बाबा की काठ-सी हथेली अपनी हथेली म दबा ली बडे नजदीकी ढग से दूसरा हाथ उसके घुटने पर रखकर कहा

—'बाबा! तुम कौन हो, मेरे क्या हो, नही कह सकता, पर सच जानो, तीन दिन मे जो प्यार तुमन मुझे दिया है वह पूरे पच्चीस बरस से नही मिला मेरा किस्सा बडा लम्बा और उलझा हुआ है, पर तुम इतना जान लो कि मैं बडा अभागा रहा हू जहा गया प्यार बोया, लेकिन बदले मे कुछ भी नही मिल पाया हर बार जहा स मैं चलता हू वही पटक दिया जाता हू बडी पुरानी बात है छोटा सा था कि गाव म प्लग फला रात और दूसरी दोपहरी न मा-बाप दोनो को ल लिया मैं बारह बरस का रहा होऊगा दो दिन धोबिया के यहा रहा सबको अपनी अपनी पडी थी धोबी न मुझे गाव छोडते समय मामा के पास दूसर गाव छोड दिया मैं अनाथ मामा मामी न रख तो लिया लकिन जी नही दे सके पूरे चार साल मैं उनके पास रहा वो दिन मेर मन के कोन म ही रहने दो घर से एक दिन आखिरी राम राम कर चल पडा कहा कहा भटका, क्या करोग सुनकर। जान लो कि एक दिन एक शहर म चबूतरे पर यो ही जाडे-बुखार म पडा था कि एक आदमी पास आकर बोला—यहा दो दिन स देख रह है तुम्हे कौन हो? नौकरी करोग। गदन हिलाकर मैंन हा कर दी बस उसके पास आ टिका उनका लडका मरी उमर का था सज्जन और मस्त खिलदडा पट गई काम करने लगा घर

भीतर का दिन भर जी-तोड मेहनत करता और रात को उनका लडका, जिसका नाम मोतीराम था मुझे पढाता मिडिल पास था ही पहले से, रात दिन मेहनत करा कर मुझे दसवी पास करा दिया बस यही से मेरी कहानी बदल रही है बाबा, दो घूट पहले पानी दो न '

बाबा दौडकर पानी लाया पिया लेकिन कडवा लगा जैसे पूरा किस्सा ही निचुडकर गले मे आ बैठा है ! नही कर रहा जी कुछ कहने को, पर लगता है बिना बात ही कोइ निकालकर सब कुछ बाबा को पिला दे बाबा फिर सुनने की मुद्रा मे बैठ गया और हाथ फिर अपनी मुट्ठी म दबा लिया दोना आखे सवाल बनी थीं

'नही मानोगे तुम सुने बिना, सुन लो इस निपट अनजान का किस्सा और बठा लो दद पर दद की पत आवाज फिर डूब सी गई और मन कही जा पडा गहरे म बाला— मैं दसवी हो गया बाबा सेठ का प्यार मुझ पर पूरा था बोले-'अब क्या घर का काम करोगे लो दुकान की मुनीमी सभालो ' मन खुश हो गया उनके लडके को भी बात जची और मैं तीन चार दिन बाद ही दुकान पर मुनीमी करन लगा साल मजे मे कट गया घर-दुकान दानो जगह प्यार मिलता आदर मिलता देह चमक उठी चेहरे पर गुलाबीपन आ गया मोतीराम ने कसरत का शौक डाल दिया सो बदन लोहे का हो गया सेठानी भी मोतीराम की तरह मानती एक दिन सेठजी ने दुकान पर सौ रुपये देकर कहा—'लो य रुपये रखो घी, दूध के लिए जरूरत पडे और ले लेना मैंन वे नोट उन्ही को वापिस कर दिए और कहा—'मुझे क्या कमी है खाने की सब घर का खाता हू रुपय नहीं लूगा जरूरत पर माग लूगा ' इससे पूरे घर मे मेरी और कदर बढ़ी असोज, नही इसके बाद का महीना था घर के सामन एक बैलगाडी आकर रुकी और सेठानी के भावज भैया उतर देखा कभी था नही सुना था कि सदा बीमार रहने वाला भाई है बस उसी से पीहर जिदा है वह गया ता कोई नाम लेन वाला नही रहेगा इलाज कराने बुलवाया है मेरी बचपन से आदत थी कि बोलना कम और सब कुछ देखना चुपचाप घर के दूसरे नौकर ननकू के साथ सामान उतरवा लिया सोचा शहर म आए हैं सो बैलगाडी लेकर आने स अच्छा तागा था '

तभी बाहर से किसी ने सुजन बाबा को आवाज दी, बात रुक गई

बाहर से बाबा की झिडकी सुनाई दी— अरे ! कहन दीनी के नाही जाना है देख रहे हो बल पगुरा रहे हैं भीतर मेहमान जूडी मे झुलस रहा है गाडी नही जावगी अरे ! तुम दस रुपया छोड बीस दओ तो भी नही सरकने के रुपया कौन बाप है हाथ जोरी, नाही चलन के है '

लोगो के लौटने की आहट मिली बाबा उसी झुझलाई मुद्रा मे अन्दर आया मनोहर न कहा—'बाबा ! क्यो दस रुपया छोड बैठे ? चले जात न मैं तुम्हारे पीछ

भागकर नहीं जाता'

'अरे रहिन देऊ तुम तुम्हार दु ख-दद के सामन सब रुपया बेकार है हम जतन कर सुनि रहे हैं गाडी ता मौसी हमारी राज ही हम दौरात रहे हैं, फिर आगे बोलो, कहा भयो फिर !'

आगे आया। समझ ला कि हमे ननकू ने बताया कि चार कोस ही तो गाव हैं, वहा से घर की गाडी म आ गए घर मे एक काठरी साफ कराके भाई का बिस्तर लगा दिया भाई का नाम सुदरलाल और भौजाई का कपूरी था हम एक काम और सौंपा गया कि दुकान से लौटते हुए दवाई लाया करें सो बिना नागा हम लाते रहे दीय जले मैं लौटता था, सेठानी चौके मे होती बेटी ससुराल चली गई थी छोटी बेटी गुरकुल मे पढती थी मोतीराम ऊपर अपने चौबारे मे होता सेठजी मरे पीछे मदिर जाकर काफी देर बाद आते थे आगन पार कर बरामदा था बरामदे के दोनो कोनो पर दो कोठे और थे, जो अनाज, मसाले, गेहू व बोरो म भरे रहते थे बीच मे एक बडा सा लम्बा कमरा था उसके बाद म सुदरलाल वाला कोठा था एक बडी खिडकी पिछवाडे खुलती थी, जो बाजार की गली के नुक्कड से ही दिखाई देती थी मैं दवाई लेकर जैसे ही घुसता वैसे ही कोठे से कपूरी निकलती और दवा ले लेती मैं चुपचाप लौट आता

एक दिन मन मे सोचा कि क्या तो कहेगा सुदरलाल और क्या य कपूरी सोचेगी कि बीमार का हाल तक य आदमी नही पूछता सो दूसरे दिन पूछ बैठा 'कैसी तबियत है लालाजी की ?' इसी दिन नजर उठाकर अच्छी तरह कपूरी को देखा बोली—'अरे रहने दो लल्लाजा ! हम तो पराये समझ रखे हैं तुमने भला कोई तुक है कि दवा देके लौट जाते हो ! घडी भर काठरी मे भी नही आते हो डर लगता है क्या ?' मेरे कान तप उठे जीवन म पहली बार कोई स्त्री इतने नजदीक खडी होकर ताने मार रही थी जाना ही नही था बाबा कि औरत के तेवर क्या होते हैं और ताना मे क्या मार होती है ! ताने तो सुनते-सुनते कान छलनी हो गए थे, पर यह ताना कुछ और था बडा तल्ख तल्ख बडा मीठा मीठा सा

मैंने कहा—नही, ऐसी कोई बात नही, दवाई तुम्ह देकर कुछ जरूरत नही समझी थी भीतर आने की अच्छा चलो, कहा हैं सुदरलालजी !' और म भीतर चला गया क्या बोला जल्दी म, अपनी ही समझ म नही आ रहा था मन था कि जल्दी यहा से निकल जाऊ मै खाट पर बैठ गया तभी कपूरी शबत का गिलास ले आई और परो के पास बैठ गई फिर मेरा मन उडने लगा कि मैं क्या आया जाने क्या बाबा सब कुछ अटपटा लग रहा था मन जुड नही पा रहा था पर कपूरी की तो जिद थी ही, सुदरलाल भी बार-बार कहने लगा और मुझे शबत पीना पडा पीते ही मैं बाहर आ गया और अपने कमरे म जा बैठ गया कमरे म आकर मन

सही हुआ आगे में दो दिन पहले की तरह दवाई देकर चला आया इतना जरूर था कि कपूरी चुपचाप दवा नहीं लेती थी, हसकर दो चार बोली जरूर मारती थी

एक दिन रात को बादल घिर रहे थे अंधेरा छा रहा था मैं बाहर छत पर सो रहा था बस लग रहा था कि बूंदें अब गिरी, अब गिरी लेकिन भीतर जाने का आलस करता रहा आएगी तब देखा जाएगा, सोचकर जाने कब नींद आ गई मुझे लगा नींद में कि कोई ठण्डी छुअन माथे पर हो रही है चौंका कि कहीं बूंदें तो नहीं आ गई आखें खोली तो अपने ऊपर कपूरी को झुके पाया मैं एकदम बैठा हो गया मेरे दांत जैसे जम गए बोला हो नहीं गया दूसरी छत पर मोतीराम और ननकू सो रहे थे मन दुविधा में कि ये क्या आई है अच्छा हुआ अंधेरा था और उसने गहरी हरी धोती पहन रखी थी मैं उसकी ओर आंखें फाड़कर देख रहा था बोली—'नीचे आओ लल्लूजी ! जरा देखो तुम्हारे भैया जी को क्या हो गया है न बोल रहे हैं, न सुन रहे हैं बस आखें खोले पड़े हैं मैं और हैरान कि मैं क्या करूंगा जाकर, बुला लो सेठजी को या सेठानी जी को बाबा कुछ नहीं चुपचाप जल्दी से जीने में आ गया वह पीछे पीछे थी मैं वहां रुक गया वह बिल्कुल पास आकर खड़ी हो गई खुशबू की एक घुटी-सी लपट आई आदमी बीमार और ये खुशबू ! मैंने धीरे से कहा— सुनो, मैं नहीं जाऊंगा जानता भी कुछ नहीं हूं तुम जाकर सेठानी मां को जगा लो मैं मोतीराम को जगाए देता हूं" वह और पास आकर मेरी छाती पर हाथ फेरकर बोली—'हाय राम ! यों तो हाथी जैसा बदन पाले फिरते हो, पर ऐसे डरते हो जैसे अभी डोली से उतरे हो देखो तो क्या चकला सीना रखे फिरते हो, पर दिल इसमें जाने कहां छटकी भर का ले रखा है और मुझे किसी का नहीं जगाना है, तुम्हीं आओ,' कहती खिलखिल से हसकर मेरी देही में अपनी समूची देही का रगड़ा देती नीचे उतर गई मैं, बाबा सच कहता हूं ठण्डा पड़ गया कैसी है यह कपूरी ! बीमारी, खुशबू और मेरी देही, छाती का बखान कोई कहीं मेल नहीं मैं नहीं गया उल्टा छत पर लौट आया और मोतीराम को जगाकर बोला— जाओ, मां को जगाकर कोठरी में देखो सुंदर भैया की जी ठीक नहीं है'

मोतीराम की आदत थी बात में से बात पूछना बोला—'पर तुम्हें कैसे पता इसका ?' मैंने झूठ बोला बाबा पहली बार कि कराहना सुना है वह नीचे मां को लेकर कोठरी में गया मैं ऊपर से देखता रहा आधा घंटे बाद आकर बोला—'तुम भी मनाट्र ! एकदम धीरज खो देने वाले आदमी हो नींद में बिल्ली गुर्राती सुन ली होगी वह तो मजे में सो रहे थे जगाया तो बोले—'मैं ठीक हूं' मां अलग परेशान जरा कम खाकर सोया करो जा नींद ज्यादा न आया कर' वह फिर सो गया, लेकिन मैं रात भर नहीं सो सका क्या गोरखधंधा है! क्या है ये कपूरी ? झूठ बोली थी क्या ? जाने कितनी बातें दिमाग खराब करने लगीं सुबह तक घड़ी भर

न सो सका दुकान पर बड़ा उनींदा रहा देह टूट रही थी बहुत दिन बाद मां याद आई जो कहा करती थी कि नजर देह चटखा देती है जाने कितने काले टीके लगाए थे उसने मेरे और न जाने कितनी मिर्चें वारी थी चूल्हे में आज देखो को नजर चटखा तो नहीं गई हंसी भी आई लेकिन बाबा मन काबू में होकर काम में नहीं लगा शाम को दीये जले दवा लेकर लौटा तो कपूरी कोठरी से नहीं निकली मैंने ननकू के हाथ दवा भेज दी सेठजी आज मंदिर नहीं गए थे बाहर आंगन में बिछी चारपाई पर लेटे थे मैं भी वहीं जा उठा वह बहुत उदास दीखे रसोई भी ठण्डी पड़ी थी सेठानी मां भी मुंह लटकाए बैठी थी मन में खटका हुआ कहीं सुंदर भैया पर तभी भीतर से उनकी खांसी सुनाई दी मन में तसल्ली हुई पूछने पर पता लगा वह भी रात को मोतीराम से चांदी का सट्टा हार गए हैं सट्टा कहकर मोती हंस पड़ा और बोला—क्या पहली बार हारे हैं यह तो चलता ही है इस घर में और चलता रहेगा जीतते हैं तो दीवाली मनती है डूबते हैं तो मातम मनता है तू आराम से खा और सो भूलकर भी कभी सट्टा मत लगाना बस देख ले, मैं पक्के सटोरिये का बेटा हूं पर मजाल है जो कभी सट्टा लगाऊं गांठ बांध ले तू भी बाबा! पहली बार जाना कि आदमी जितने में हो उसी में तसल्ली क्यों नहीं करता"

बाबा सुजन मुस्करा कर उठे और मनोहर को दूसरी गोली दी दीवार के कोने टिकी सुलफी उठाई, भरी और आ बैठे बोले—'बेटा! सट्टा नशा है ठीक ही कहा मोती ने जहां तक होवे बचना ही चाहिए सभी काम ऐसे नशे के हैं वो कपूरी को क्या था? मैं बताऊं नसा था और वो खुद जहरीली नशा थी इतने से मैं तो पहचान गया हूं कि क्या हुआ!' कोठरी सुलफियाई गंध से भर गई

फिर क्या बाबा! तीन चार दिन तक कई बार आते-जाते वह दीखी लेकिन मुंह मोड़कर निकल जाती मैंने सोचा चलो बला टली इतवार के दिन मैं ऊपर नहा रहा था तेल मला ही था और गर्म पानी ले गया था, तभी पीछे चूड़ियां खनकीं पास पड़ी धोती झटपट बदन पर डाली और कहा—'कहो! क्या बात है?' 'मैं तो इधर मुंडेर पर चादर सुखाने आई थी देखा तुम्हें हाय! दही है के आफत पानी की बूंदें यों सरक रही हैं जैसे रेशम पर फिसल रही हों देखा! या क्या शरमा रहे हो? मेरा मन खराब है तीन दिन नहीं बोली सोचा मूरत से क्या बोलना न हंसो, न बोलो जाने कैसे मर्द मानस हो इस उमर में साधु बन फिरो अच्छा नहीं लगता मर्द हम तो नहाओ न, शरमा क्या रहे हो? मर्द तो खुले में यों ही नहाता अच्छा लगता है लाओ कमर मल दूं' मैं सकपका गया, इसका क्या यह तो मलने लगेगी मैं एकदम खड़ा हो गया और बोला—नीचे जाओ मुझे सामने नहाने की आदत नहीं है मां आ जाएगी, ठीक नहीं आप जाओ वह हंस रही थी

और बाबा ! मैं बोले जा रहा था डर रहा था खुली छत पर ये क्यो ? ऐसे खडी है ! पूरे वक्त यो ही मजाक करती रही और मैं चुपचाप चारो ओर देखता रहा गला सूख रहा था बिना नहाए बाल्टी लेकर नीचे पौरी मे चला गया पर डरने लगा अब उससे, उसकी नजरो से कब सुदर भैया अच्छे हो और कब ये जाए यहा से !

'बाबा ! एक रात , बडी भयानक थी वह रात जब मोतीराम न मुझे हाथ पकडकर झकझोरा मैं हडबडाकर उठा आज भी रोगटे खडे हो जाते है जब मोती के चेहरे पर घृणा की लपटें नजरो मे घूमती हैं मैं पागल हो उठा देखकर कि, वो वो कपूरी मेरे पावो पर पाव रखे एकदम मुझसे सटी पडी थी नीद मे देखकर वह भी जाग गई और चुपचाप धीरे से उठकर यो ही मुस्कराती नीचे चली गई मोती कडका—मामी ! तुम यहा क्या कर रही थी ? क्या आई इधर ? बाबा ! मेरा सिर चकरा गया जब वह बोली—हाय ! मैं तो मर गई वसे ही इन्ह अपनी खाट पर पाकर मैं तो सोई थी यहा मुझे क्या खबर जान ये कब आकर सो गए अच्छा हुआ तुमने जगा दिया न जाने क्या होता ? मैं गुस्से से पागल हो गया चीख पडा कि क्यो बरगला रही हो मैं रोज ही यहा इस खाट पर सोता हू जब देर स सोया तब अकेला था तुम्हारा क्या काम था ! वह बडी इठलाकर बोली -'अब रहने दो, चाहू तो सच्ची बात कह सकती हू, पर जाने दो सोच रही हू वे मां बाप के हो, ठिकाना बना रह खाट पर नाम पटटा लिखाकर लाए हो क्या ? मैं तो साझ दीये जले ही सो गई थी झूठ बोलकर क्या खोट छुपा रहे हो ? नजर तो पहले भी मैंने तुम्हारी पहचानी है आओ मोती लल्ला ! छोडो इन्ह आदमी होग तो इतनी ही लानत बहुत है मोती जहरबुझी नजर डालकर नीचे उतर गया मेरे काटो तो खून नही सारी इज्जत, घर का प्यार, मुनीमी सब डावाडोल दिखाई दी

मोती ने शायद बात पी ली घर वैस ही चल रहा था हा, मोती की नजर मे जो फर्क आया वह नही हटा काम करता था, पर मन नही लगता था वो मस्ती नही रही अपराध सा पुत गया था मुह पर हाथ पैर टूटत रहते जस कोई मर गया हो ! मैं मर ही तो गया था, सबस बडा अचम्भा तो ये था बाबा कि औरत इतना झूठ कसे बोल जाती है मैंने क्या बिगाडा था उसका ? क्या मुझे शिकार बनाया उसने ? अच्छा भला काम कर रहा था क्या बीच मे आकर खडी हो गई ? मेरी शराफत का यही मोल दिया था उसने मेरी खुराक कम हो गई उदास रहन लगा सेठानी मा ने कहा—'रे, यो क्या बुझता जा रहा है मोती से भी ताश नही जमाता ?' क्या जवाब देता, फीकी हसी हसकर काम पर लग जाता सुदर भया ठीक हो गए थे उन लोगो के जाने के छ दिन रह गए थे मन म तब कही चन पडा सोचा मोती को समझा लूगा तब सब ठीक कर लूगा बस ये चली भर जाए

मैं रात को अब और देर से आने लगा ऊपर की तिछत्ती पर दरी बिछाकर सोने लगा, क्योंकि वहा सीढी नहीं जाती थी बा मुंडेरा पर चढकर उस पर कूदना पडता था यह मोती के कारण किया था, जिसे मेरे ऊपर भरोसा नहीं रह गया था

एक दुपहरी मा सत्सग म गई थी ननकू बाजार गया था और मोती घर मे नही था बाहर चबूतरे पर सुदर भया बैठे थे मुझे देखते ही बोले—'आओ बैठो, तुमने मेरी दवाइया लाकर बडी सेवा की है कभी दो बात तेज नहीं सुने तुम्हारे मुह से बडे नेक सीधे हो अच्छा है जमाना देखकर चुप रहना भला अच्छा बैठो !' मैं बोला—'बस्ता रखकर आया, ताली भूल गया था, लेनी है कुछ सिर भी भारी है, घडी भर लटूगा अभी आ रहा हू कहता हुआ भीतर चला गया घर अकेला सूना पडा था

मुश्किल से कुछ समय बीता था कि कमरे के किवाड बद होने की आवाज से मैं चौंका देखा कपूरी थी दह पर्गा गई सोचा अब क्या करने आई है क्या यह यहीं थी ? मैं किवाड खोलने बढा तभी वह मुझसे लिपट गई आखें भरी हुई, चेहरे पर उदासी और बवती हाथ गले म लपट लिया उसने मैंने उसे बडी कठिनाई से अलग किया वह रो रही थी हाथ जोड रही थी कि मैं बाहर न जाऊ चिढ-सा गया था कि यह अब कौन-सा नाटक खेलने जा रही है क्या झूठ गढेगी आज ? उसने मेरे हाथ पकडकर जबदस्ती बैठा लिया मैंने कहा, हा ! नाम लेकर कहा—कपूरी ! तुम क्या चाहती हो ? तुमने मेरी उस दिन कितनी मिट्टी खराब की, मैं ही जानता हू अब तुम यहा क्यो आई हो ? मैंने तुम्हारे लिए अच्छा ही किया जो कुछ किया तुम उसका यह बदला ले रही हो ! बाहर भैया बैठे है, तुम जाओ ' वह घुटने पर मुह टेककर सुबकती रही कहा गई छत वाली, हसने वाली, ताने मारने वाली कपूरी यह कपूरी तो और ही थी—असहाय, बेसहारा बोली—'तुम समझते क्या नही मनोहर ! अपमानित तो तुमने मुझे किया है तुम इतना भी नही समझ पाए बच्चे तो नहीं हो मैं चली जाऊंगी मेरा भला कर दो, बस औरत होकर लाज हया अलग कर रही हू डूब मरने को मुझे जगह नही है तुम समझते हो मैं ऐसी ही हू तुम्हें जिस दिन से देखा है, जुड-सी गई हू एक इच्छा मन मे उठकर पागल बना रही है कुछ तुम्हारा बिगडेगा नहीं ' वह बोलती जा रही थी मेरा सिर घूम रहा था सोच रहा था यह क्या कह रही है ! क्या चाहती है पता नही था क्या है जो इस चाहिए ? क्या मैं दे सकूगा इसे ? बोला—'रुपए चाहिए तुम्हें पर मेरे पास नही है या क्या लोगी ? बताओ क्यो दुखी हो रही हो ?' वह मेरे पैरों पर हाथ फेर रही थी, बोली—रुपए तुम जितने चाहो मुझसे ले लो मैं मुह खोलकर ही कहती हू कि तुम मेरी गोद भर दो, मैं निहाल हो जाऊंगी तुम मुझे जिंदगी दे दोगे अब और निलज्ज न बनाओ मैं कैसे कह सकी हू, तुम नही

जानते उस दिन के लिए माफ कर दो मनोहर ! तुम मर्द हो झेल लोगे मैं औरत, फिर घर की खास मेहमान सोचो, क्या होता ! मुझे बुरा कह लो, पर मेरी बात मान लो मनोहर मान लो' उसकी आँखें भरी जा रही थी मैं पागल सा उसे देख रहा था क्या कहू, क्या बोलू, समझ म नही आ रहा था वह मेरे पैरो मे सिर रगड रही थी

मैंने कहा—'कपूरी ! मैं तुम्हारे हाथ जोडता हू मुझे माफ करो छोडो मुझे मैं गरीब हू, दूसरा के पास रहता हू मेरा ख्याल करो मैं कुछ नही जानता तुम क्या कह रही हो बाहर तुम्हारे पति बैठे हैं ठीक हो गए हैं ईश्वर से प्रार्थना करो जल्दी स्वस्थ हो जाए मेरा क्या है, रास्ते का आदमी हू जाओ, बाहर जाओ मुझे लज्जित मत करो मैं तुम्हारी सहायता नही कर सकता कुछ भी नही मुझे मेरे लिए जिंदा रहने दो मैंने कभी ऐसा सोचा भी नही उठो जाओ आगे कभी मुझसे ऐसा कहने मत आना मैं तुमसे नही अपनी तकदीर से घृणा करता हू, जो मुझे चैन नही लेने देती मैं बहुत कठिन जीवन जी चुका हू काटो मे मुझे और मत घसीटो कसे कह पाई हो यह सब ? खैर, तुम्हारा भी दोष नही साथ ही मुझे दोष मत देना" उसकी भरी आँखें लपक उठी मैं डर गया था वह मुझे घूरे जा रही थी साडी सीने से खिसक गई थी, जहा ज्वार उठ रहा था लग रहा था वह सब कुछ डुबोकर रहेगी

'मैं जाने क्या कह कह कर उसे दरवाजे तक लाया और किवाड खोल उसका हाथ खीचकर बाहर हुआ ही था कि सामने मा और मोती पौरी मे घुसे मैं ठक से रह गया खडा का खडा हाथ म उसका हाथ यो ही बना रहा उसकी आखें लाल और बाल बिखरे थे आचल वसा ही अस्त-व्यस्त होश आते ही मैंने हाथ छोड दिया मोती की आखा म फिर खून कौंधा मा का मुह फटा हुआ मोती फुफकारा —'मामी ! क्या है ?' जान कब सु दर भया भी आकर खडे हो गए थे एक अजीब कडवाहट भर उठी थी हरेक चेहरे पर कपूरी की सूरत उफन रही थी आखो म शोले भडक रहे थे बोली— देख रहे हो, और छोडो घर म मुझे अकेला दु खी गरीब की जोरू सबकी होती है न यह हाल किया है मेरा इसने हाय राम ! कही की नही होती जो हाथ पाव चलाकर दरवाजा न खोल डालती रक्षा हो गई जीया ! कौन मनहूस घर मे डाल लिया है यही राहगीर मिला था क्या तुम्हे ! एक दिन माफ कर चुकी थी, लेकिन मोती लल्ला, अब क्या रोज रोज माफ करोगे ?'

हाय बाबा ! मैं क्या सुन रहा था ! चीख पडा सारी बातें कह दी मेरी कौन सुनता था ! सच ही मैं क्या था उन लोगो की नजरो मे ! अनाथ, बेसहारा न ! बेघरबार का, भटकता, रोटियो का मुहताज क्या कीमत थी मेरे चीखने चिल्लाने की ! सुदर भैया की बोली ने रहा सहा दम तोड दिया जब वह बोले—'अच्छा

समझा, यो नही बैठे थे तुम मेरे पास तारी तो बहाना थी,' मैं कट कर रह गया सेठ जी आए और जातें हा इससे पहले ही अपने कपडा को समेट पोटली बना चलने को तैयार हो गया आगन मे पैर पीट-पीट कर मोती चिल्ला रहा था गालिया दे रहा था मेरा मित्र मेरा प्रिय, अब कुछ भी नही था

'तो या बाबा ' मैं मुह पर कालिख लगवा चला आया धू धू कर चिता मा जलता रहा, घूमता रहा कहा कहा गया, कुछ ठिकाना है क्या ? जाने कितन द्वार मिले प्यार भरे जाने कितन लोग मिले मित्र बनने को उत्सुक, पर मैं कही बध नही पाया पूरे आठ साल हा चुके हैं मुझे यो ही भागते, पर क्या भाग पा रहा हू रात दिन बेचनी सी दौडती है रगा म नही भूल पाता हू वह अपमान नहा समम पाया हू कपूरी को पाच दिन पहले मन मे हूक उठी सो चल दिया और मिल गए तुम बस यही है कहन को यह जो घुलता पिसता तुम्हे दिखाई देता हू, यही बात है जिसके कारण ऐसा रहता हू कहीं भरामा नही जमता '

मनोहर चुप हो गया करवट बदल ली सुजन बाबा यों ही बुत बने बैठे रहे धीरे से उठकर पानी लाए और बाले— लो, पी लो, जी दु खी न करो कपूरी जसी बहुत हैं तुम नही समझे गावो मे छिछो चीज ठोकर लगन पर सिर पर छा उठती है अच्छा किया तुमने अब और हल्कान मत बनो सचमुच बहुत कडवी घटना सुनाई तुमन मन उदास हा गया अब जूडी बहुत कम है तुम्हे आराम कर नो जाने कितना दु ख पीए बठे हो अच्छा यहा बसतपुरा मे क्या है क्या जा रहे हो यहा ?'

मनोहर ने वैसे ही करवट रखी और बोला—'बाबा ! यही तो मेरा गाव है वही जा रहा हू बहुत दिन बाद हूक उठी है मन नही माना और चला आया देखो कब तक रुकूगा क्या पता ? मन उचटेगा तो आगे मत रोकना बाबा ! कहे देता हू नही ठहरूगा

बाबा ने जस कुछ नही सुना उसी डूबती-तैरती आवाज मे बोला— बेटा ! यहा किससे मिलोगे ? कोई है वहा अपना कहने को ?

'हा, बाबा ! उसी से ता सब कुछ कहने जा रहा हू है एक वहा बचपन की ललक थी तब बुद्धि नही थी, तब भी गाव का एक एक समाचार, सभी उत्सुकताए वही पूछता था झिडकिया घुडकिया सहता, पर वह रूप जो मन म उतरा

'कौन है वा ?'

लक्ष्मी भाभी '

'अब कही मत जाना बिरवा ! बहुत दु ख पा लिए यह तो बीच की कडी सुना पाए हो बचपन मे क्या बीता यह हम नाही जान सके पर समझ गए हैं के बडी बुरी गुजरी होगी पर कहना है कि अब अपने ठिकान रहोगे बहुत भटक लिए लक्ष्मी भाभी हम जानि गय है के बच्ची उमर का दुखवा अपने अचरा से बुहार के

तुम्ह तसल्ली दने वारी रही होगी रे भया ! अब के भी उन्ही सुना, के अपनी धिया आचर का सुख पालेओ और बने रहो इतै ही पर हा भैया हमारी मुलक जरूरत पड तो देखना भूल नही ' सुजन बाबा का बूढा गला भर रहा था, प्यार आखो की राह टपका पड रहा था

नही बाबा ! एकना नही है कौन वह हमारी सगी हैं हा, तुम ठीक समझे जब भी हमार मन को या तन को मार पडी, तब हमे उनकी ही नजर मे प्यार दीखा बालक उमर को और क्या चाहिए ! मन पिघल के उनके सामने ढह जाता था उमर बडी हुई तो औरत जात की जितनी अच्छाइया होती थी, हमे उन्ही मे नजर आई और हमेशा के लिए ठप्पा डाल कर जम गइ आज भी पता नही कि वो क्या थी और अब भी क्या हमे इतन दिन के बिसारे गाव जा रहे हैं घर भी है या नही, कह नही सकता भाभी पहचानेंगी भी या नही या यो ही पडोस का वा पगला लडका समझ हसकर रह जाएगी खैर, कुछ भी हो, हमे तो उनकी पहचान है देखेंगे कहेगे, चार मीठे बोल सुनेंगे और फिर निकल पडेंगे हा बाबा ! यकीन रखो, जाएगे ता तुमसे मिले बगर अब नही रह पाएगे बस समझ लो कि जसे लक्ष्मी भाभी की नजर ने हमेशा चैन दिया, वसा ही चन हमने तुम्हारी नजर मे पाया है और बाबा नही अब रहने दो बडा कष्ट है बडा कष्ट है हाय !'

'अरे ! ये नीलो पीलो रग हो गयो कैसे भैया ! कहा भयो अब रे ! जमाने भर का दर समेट लिया है क्या भीतर ! ठहरो उठो मती, हमे कहो क्या चाहियै है ? करेजा मरूर रहा क्या ? अरे छातीवा काहे दबा रहे हो ! ठहरी जावो, लाओ हम सहला दीनै हे देबो मा ! या छाती सारी झुलस रही है या सुसर कौने फूक दीनी है रे अरे या तो झुलस के राख हैगी लेओ यो नारियलवा तेल मल देवे है धन परिहे, अब कहो ना कस तुम्ह कच्चे बासन को टिकार आमें जिदद के बली होगे बताओ पडी कुछ ठडक ? हा हा, मानी है, दरद होवा रे, जरन भी होगी, पर या हतिका है ववार ! और कौन सी भामह सिर उठा के केरि लाये हा ?'

बाबा नारियल का तेल मलते जा रहे थे और मनोहर को जसे अपनी बोली मे, स्नेह म, गोदी मे समेटे जा रहे थे मनोहर अवश सा उनके आगे बच्चा हुआ जा रहा था य बाबा फरिश्ता है ! यहा कौन दुश्मन क्या कहू ! सभी तो गडबड हुआ जा रहा है इतनी गिनतिया बिछी पडी हैं नामो की, छाटना मुश्किल है पर बाबा ! हा, यह अलग ही है नाम बस बाबा ! अब मत बाधो मोह मे मत घसीटो क्यो मले जा रह हो दह को ? हाय बडा कष्ट होता है क्यो ज ■ दिया इस गाव ने जो खीच रहा है बार बार य रतनी नही कोई रतनी नही, कोई कुशलपाल नही और सुमर डाकू डाकू नही इसान हाँ इसान, गहरा इसाग मैं, एकदम करम जला आदमी जो घबरा उठा सोचने की हिम्मत जाती रही कहा तक सोचे ?

दिमाग फट जाएगा भागो मनोहर यहां से कोठरी से भागो मत थको बाबा म बस ये गाड़ीवान है आगे कुछ नही है भी बहुत कुछ ! अब बस और नही जी मरोड़े ले रहा है 'बस बाबा ! अब रहने दो य दाग है जलन के अपने आप ठडा जाएग तुम्हारे हाथ दु ख गए होंगे अब तुम बैल जोतो और मुझे पहुचा दो कभी नही भूलूगा तुम्हे मिलकर जाऊगा लो, चलो अब '

'अरे बबुआ ! अबई दिन का एक पहर और गरमायगा जरा बीतने देओ जोतेंगे बैलन कू जोन के आज जरूर छोड आवेंग अब तो हम तुम्ह गाम की सीमा म घर के आगे ही छोड़ग यो ही अघर म नाही अब उतारन लग हैं य जर कस गए ? मुलक क़ुरस के छाती कैल ठीकरा बनाय सी है जाते जाते तनि खुरच डारो करेजा के घाव क अरे बिटवा ! करेजा मा तन ससल्ली नाही जुड़ रही है लागत है के अब तुम हम नाही मिलोगे सब हम यों ही मुलक बटवान रहे हो बूढ़े नाही यों ही झूठी दरकार करे जाओ हो लौटि के नाही आओग, निबरि जावोगे पर हम जानि हैं नाही का सयोग हो सो जे कहा करनो रही ! थोरे मे फेर डारो

'बाबा ! साल पहले यो ही डगर डगर डोल रहा था गाव आया, ठहर गया बधा, चल दिया शहर मे ज्यादा गाव मुझे खीचते महीनो हफ्तो रुकता वहा के काम देखता कुछ बताता चल देता ऐसे ही गोपालखेड़ी के रास्ते जा रहा था कि रात को हा शुरू की रात थी मुझे चीखने की आवाज सुनाई दी भागा जी तोड़ भागा औरत की चीखें घोडो की टापें जगल हिल रहा था घुमाव सड़क का देखे जो भागा तो एक घोड़ा पास से सरसराया बस उछलकर उस पर लटक गया सवार ने दो कसके गर्दन की गुद्दी पर मारे पर हाथ खिसकने वाले थे, पर मजबूती से जीन की पटटी जकड़े रहा घोडे की चाल तेज थी आगे वाले घोड़े भी हवा मे उड़े जा रहे थे और उतनी ही तेजी से बीच वाले घोड़े पर चीखो की छटपटाहट थी जिस घोड़े पर मैं लिपटा चोटें खा रहा था, उसने सीटी बजाई सबसे आगे का घोड़ा रुका सब रुक गए मेरा वाला घोड़ा अगले घोडे के पास जाकर रुका और सवार गरजा कोई आदमी है जो घोड़े की पीठ पर उछला था जो अब न गिर रहा है और न पिटाई से बेदम हो रहा है 'बाध लो ' उस घोड़े से झपटदार आवाज आई उसी घोड़े पर रस्सी से कस दिया गया और आखो पर पटटी कर दी गई और मैं बधा यो ही पड़ा रहा मन म अजीब सा डर और अनजानापन था कि यह सब क्या है ! वैसे जान गया था कि डाकुओ का गिरोह है देखा तो नीचे मिट्टी के घरौंदे जम कई कटाव और उनम लालटेनें व मशालें जल रही थी हटटे कटटे जाने कितने वैसे ही कद्दावर डाकू आकर जमा हो गए घुटनो से ऊपर धोती, सिर पर कपड़े की लपेटी और अगरखा या कण्डी सवन पहन रखी थी सब उतरे और तब बाबा ! मैंने देखा कि चीखने वाली लड़की थी जिसे ब्याह मडप से उठा लिया गया था नथनी, जेवर

से भरी हुई लाल धोती और हाथो मे मेहदी अनवट बिछुए दबे हुए भयभीत हिरनी सी रह रह कर घिघिया उठती थी मेरी ओर उसने देखा मैंने इशारा कर दिया कि रो मत, मैं हू बाबा ! दु ख मे जल्दी जान पहचान होती है न ! मैं कौन हू, क्या हू, यह वह क्या जाने, पर उसकी हिचकी थम गई और चेहरे पर तसल्ली की परत छा गई उसे खीचकर नीचे उतारा गया और दो डाकू घसीट कर भीतर मिट्टी की खोहो म ले गए वह बडी कातरता से मेरी ओर देखे जा रही थी जसे मैं ज म ज मातर से उसका परिचित था

सडाक स मेरी पीठ पर कोडा सर्राया मैं तिलमिला उठा वही पहले वाले घोडे का भीमकाय आदमी खडा पूछ रहा था—'कौन है तू ! ठीक बोल वरना खाल खिचवाकर जल मे फिकवा दूगा' मैं समझ गया कि यही सरदार है मुझे जान क्या सूझा, कह दिया झटपट कि जिसे तुम उठाकर लाए हो मैं उसका मामा हू भात पहनाने आया था 'सा ले तू मामा है ले निकालू तेरा मामापना ' बाबा ! मार पडती रही, मैं चीखता, लोट-पोट होता रहा हा, हा, मैं मामा हू पूछ लो उसी से कि क्या मैं झूठा हू ? उसे घसीटकर फिर लाया गया और कपडो के गट्ठर की तरह फैक दी गई सरदार के परो मे उसका बाजू झटककर वह बोला—'यह तेरा मामा है सच बोल कौन है यह ?' उसने मेरी ओर देखा मेरा इशारा समझ गई और बोली— हाय ! कैसा मुह-नाक से खून बहा दिया है ! अरे मत मारो हत्यारो ! यह मेरा मामा है सगा मामा हाय राम ! मार ही डाला, छोड दो इसे ' सरदार ने कहा ठीक है इसे मेरी तिखडी मे बाध दो इसे, मतलब लडकी को भी वही ले आओ अब मैं जाना कि मुझे वहा क्यो बधवाया गया था, क्यो वह मेरे सामने लडकी से निलज्ज बातें कह रहा था कैसे इज्जत लेने पर उतारू था वह थी कि गाय सी डकरा रही थी और मैं खम्भे से बधा चीख रहा था आखें बद कर लेता और 'छोड दे की रट लगाए था तभी बाबा ! यकीन नही करोगे तुम उस पिशाच के भीतर का चमत्कार मैंने देखा कभी न भूलने वाला चमत्कार जैसे ही लडकी के कपडे उतारने मे सफल हो रहा था कि वह पूरा जोर लगाकर डाकू की छाती पर गिर कर 'भैया' चिल्ला दी भैया' शब्द ने जैसे बिजली छू दी हो एक ही धक्के से उसे दूर धकेल वह धौंकनी की तरह हाफने लगा चीख उठा -'दे गाली मुझे, कम-जात लडकी ! कितनी बुरी गाली दे बैठी कम्बख्त ! तेरा खून निकलवाकर देख अभी सबको पिलाता हू अरे, जाने कितनी तेरी जैसी एक चुटकी पर मसल डाली रोती रही, चीखती रही, पर करी क्या मैंने परवाह और एक तू नवाबजादी आई है कि मुझे गाली दे दी मेरा खून कर डाला ' उसके मुह मे गालिया बरस रही थीं, ओठो पर झाग के बगूले झर रहे थे आखें अगारा सी हो रही थी चौडे हाथ लडकी की पीठ नीचे डाल रहे थे वह हाफ रहा था पागल-सा

लडकी फिर चीखी—हा, हा, दूगी गाली अगर 'भैया' कहना गाली है तो तू हजार बार मेरा भाई है मार दे, खून पिला दे, पर तू मेरा भाई है मुझे मत परेशान कर भैया ! छोड दे मुझे ' तडाक से मेरे चाटा मारा डाकू ने कि 'देख ले अपनी बेगैरत भाजी को गाली दे रही है मुझे एकदम बेबस बना दिया इस निकम्मी चुडल ने ' फिर कसकर एक ठोकर मारी उसने शराब की हाडी मे गद्दा दूर उठाकर पटक दिया और बिफरे शेर सा इधर उधर घूमने लगा दीवार पर, दीवारें क्या मिट्टी के लौंदो मे बास, लक्डी के खूटे गाड रखे थे उन पर बर्छी, बदूकें क्तार म टगी थी वह हाफ रहा था अब उसकी आखो मे नफरत नही थी

उफान थम गया था बहुत देर बाद डाकू की नही, आदमी की भी नही, एक दम इसान की आवाज सुनाई दी— चल उठ ! कपडे पहन देख कई जेवर खुलकर गिर गए हैं पहन ले तू क्या बोल गई ? किसी औरत ने नही कहा जो तू कह गई भैया ! फिर कह न एक बार कही चोट तो नही लगी, क्यो ?' कहकर वह उठा प्यार से उसे खडा किया मुझे खोल दिया और अपनी पगडी से एक धागा खीच कर बोला—'ले अब राखी बाध दे अब मैं तेरा भैया हुआ देख, कहना नही किसी से कुछ बाध इसे हर राखी पर आऊगा बधवाने, चाहे जान क्यो न चली जाए' वह हस रहा था सारी बेरहमी धुल गई थी और मामूली हसी भरा चेहरा दमक रहा था तभी एक आदमी को ताली बजाकर बुलाया और घोडे पर हमे गाव के पास छोड दिया मैं नही जानता था कि वह कौन सा गाव था हम कहा खडे थे और कहा जाना था उसी ने बताया कि उसका नाम रतनी है गूजरो की लडकी थी ब्याह के फेरे पड चुके थे कि डाका पडा, साथ ही भागते भागते उसे भी उठा ले गए अब चलना है उसके साथ सो चल दिया आगे की बात बडी झमेल वाली है बस इतना जान लो कि ससुराल वालो ने नही ली और पीहर वालो ने नाक भौं सिकोडकर घर मे पटक लिया गरीब पीहर था लेकिन मैं उसी गाव म उसी घर मे काम पर बना रहा देखता रहा कि जब तब वो डाकू सुमेर आता घर की जरूरतें पूरी कर जाता और राखी पर धागा बधवाता अब तो घर वाले उससे राजी थे उसके चरित्र पर सौ जान न्योछावर थे

अबके जो राखी आई तो किसी ने पुलिस को खबर दे दी गाव के चारो ओर पुलिस घर के कोनो पर पुलिस न हमे निकलने दे न बाहर से किसी को आने दे सब परेशान थे, क्योकि जानते थे कि बात निभाने मे वह पक्का है जरूर आएगा तब ? दिन पूरा निकल गया राखी का रात आधी पर कमरे के पल्ले खुले और वह भीतर सहन मे आ गया धीरे से सबको जगाकर बोला—'ले रतनी ! बाध जल्दी धागा ! सुबह से मैं जान बचाए यही छिपा था मौका नही आया अब भी मुझे शक है कि कोई पीछे है ले बाध ! और एक गडडी नोटो की उसके हाथ मे दे दी

रतनी ने उसे मिठाई खिलाई, कि दरवाजे की राह आहट हुई वह चौंका, बोला—'अरे पुलिस पीछे है और ये मामा तेरा फिर यहां ? इसी ने खबर दी होगी वह गुस्से और निराशा से काप रहा था जलती लालटेन मेरी छाती पर औंधी कर घुटने दबा दिए मेरी छाती पर तेल फैल आया और मैं जल उठा तभी रतनी ने आव देखा न ताव अपने आपको मेरे ऊपर डाल दिया—'तू भाग भैया ! जल्दी पुलिस तेरे पीछे है, पर ये तूने क्या किया ? मनोहर मामा ऐसा नही है ये तो तेरी फिकर दिन भर से कर रहा था तूने बडा बुरा किया खैर, फिर फुसत मे आकर इसे प्यार से तसल्ली दे जाना बच गया यह तू भाग पीछे से'

मैं जलन से छटपटा रहा था रतनी की एक आख मुझ पर थी और दूसरी सुमेरू पर वह लौटा पीछे की ओर तभी न जाने क्या सोच कर मेरे पास आया और बाबा ! जो बोला वही तो इस घाव के साथ घुलता है बडा सालता है पता है क्या बोला कहने लगा—'मनोहर ! अब तू भी मेरा मामा है न ? मैं गुस्से मे पगला गया था डाकू हू न, जगली हू तुझे बडी जलन हो रही है, बच गया तो जल्दी तुझसे मिलूगा अच्छा, मुझे बुरा मत कहियो अब तो गलती हो गई' मैंने बडी मुश्किल से कहा—'अच्छा सुमेरू ! तुम एकदम भाग जाओ यहा से' वह मुडा ही था कि एक गोली तीर सी, उसकी पिडली पर आकर लगी उसने भी बन्दूक सभाली और फायर दाग दिया, लेकिन तभी दूसरी गोली उसका भेजा फोडती निकल गई और वह कटे पेड की तरह ढेर हो गया रतनी का बचा धागा चमक रहा था उसने आ कर वचन निभाया था आगे क्या हुआ रहने दो बस मैं जलती छाती से कब दूसरे दिन वहा से भागा क्यो भागा ? आज भी पता नही ये कहानी है बाबा ! अभी हाल की'

'वाह ! बबुआ ! यहा भी तुम झूठ और बेईमानी के मानस माने गए यो क्यो भाग आए ? क्या हुआ रतनी का ? वहा क्यो न बने रहे ?'

'छोडो बाबा ! वहा क्या करता रहकर ! सुमेरू गया सब कुछ गया जी ही ले गया वह जी एकदम खट्टा हो गया, सो भाग निकला काम मेरा हो चुका था काम का, सचाई का बदला पा ही चुका था अब बचा ही क्या था ! ये घाव कसकता रहेगा और सुमेरू को याद करता रहेगा रतनी याद रहेगी, जो टूट कर ढह पडी थी जलती छाती पर बस और क्या पाना था अब चलो बाबा ! देखो दिन डूबने लगा है'



धूल ही धूल और तपती ऊपर की टपरी वही मचिया डाले बैठा था मनोहर रीती-सूनी नजरें चारो ओर घूम रही थी बहुत सारे घरो का ढेर इधर-उधर

बिखरा पड़ा था कुछ घर बस गए थे, वरना सब टूटे फूटे मिट्टी के ढेर बने पड़े थे चार-पाच घरो के बीच एक घर का उठान लौदो से ठेक लिया था फूस छपरा, टीन के टुकड़े और लकड़ी के तख्ते, जो भी हाथ लगे छा लिए थे और उनके नीचे रेंग रही थी इन्सानी जिंदगी पक्के घर भी दस बीस दीख रहे थे जाने किस किसने बनवा लिए हैं, कुछ पता नही

आज दो दिन पूरे हो गए आए बाबा छोडकर चला गया था घर मे था ही क्या, भयानक सन्नाटा आ बैठा था मलबे पर गाव मे बचे खुचे लोगो को पता लगा कि गोविन्दी का लडका आया है कौन गोविन्दी ? जैसे धूल-मलबे ने गाव ढक लिया था वैसे ही दिमाग और दिल भी ढक डाले थे, जो सवाल उठ रहा था, कौन गोविंदी ? खैर, याद भी जल्दी आ गया कि कौन सी गोविन्दी का लेकिन ये ही कितने पहचान वाले ! जैसे सब नए आ बसे थे धीरे-धीरे सब निखर आएगा सब पहचान लेंगे बैठे रहो जल्दी भी क्या है ! जो छोटे थे बड़े हो गए हैं बच्चे क्या जानने लगे ? बूढो को खासने से दम मारना मिले तो कुछ सोचें, बोलें औरतो मे वह जाता ही कब था ! लेकिन, धीरे धीरे चार छ दिन मे सब ठीक हो जाएगा

वह उठ बठा पास के दूसरे घर मे गया फिर तीसरे मे और वही वह रहा धोबी का बिटोरा ललक कर वहां जा खडा हुआ तीन चार आवारा कुत्ते पड़े थे बराबर मे धुआ आ रहा था उसी ओर चला अरे ये तो हरचदा का घर था ! पर ये तो और कोई है ! आओ भया की पुकार पर अन्दर चला गया सलोनी, गोल मैसड की रोटिया और कई जोडी आखें पहचान आई अरे तुम कचन ताऊ ! बडे बुढिया गए ! ताई ! तू तो और भी ढहरा गई दात तोड के कहा पटके इतनी जल्दी ? अरे य दो अन्दर कौन हैं ! अच्छा, लच्छू और यसी के अभी से ब्याह कर दिए ! अभी ताऊ घर नया-नया सा लग रहा है और वो खजान वही अपना धोबी या धोबन थी न कहा हैं ? खतम दाना ही और बच्चे ? सब बारह-बाट हैं राम ! बस या ही घर घर जाकर बचे और मरा के रोजाना परिचय लेता रहा काम खत्म हुआ अब जरूरत नही थी कि जाए घरा मे सबसे मिल लिया अब तो बैठकर चुपचाप दिमाग शांत करना है जाने क्या ओट बाकी बटाता है दिन भर मा ! शायद पागल हो जाता है अब लच्छो भाभी कहां है वह ? कोई पता नहीं लगा गाव भर की दिन भर मे हजार परिक्रमाए की उसी के लिए तो, पर कहा मिली ! किससे पूछे कैसे पूछे ?

तभी किरधी बढ़ई आया बुलाया था एक खाट ठुकवाने को सोन [illegible] कर गन्ना है मचिया पर जमीन म लगी पड़ी है खाट एक ही तो टूटी बची है सालों को [illegible] ी गड़ी उसी को ठीक कराना म काम चल जाएगा काम हो रहा है किरधी दादा ! [illegible] बात ता बनाओ या [illegible] रहा [illegible] किसन चाचा [illegible] तभी [illegible] ने

पीछे ! उनका बेटा था एक रौतास और दूसरा मल्ली जो सहजना ब्याहा था ! याद आया तुम्हे ? वे भला कहा गए सबके सब ? मकान देखने गया था, पूरा मिट गया है बस दो कोठे साबुत बचे हैं छोड दो खाट इधर, हा इधर बैठो और बताओ क्या हुए सब ?'

बिरधी बैठ गया मनोहर से जुड कर बताने लगा— हैजे से बचे, लेकिन करम की मार से नही बच सके पहले फसल मारी गई फिर अकाल चाट गया बडे और छोटके दोनो बेटे बीमार पड गए मदन तोड बुखार मे आगे पीछे चल दिए डोकरा डोकरी ये झटका नही सह पाए तो अभी पाच बरस पहले दम तोड गए बीच वाले वो मल्ली और बहुरिया लक्ष्मी, उनकी जिठानी हरप्यारी और सबसे बडे जेठ के बडे बेटवा हजारी—अच्छे खासे रह रहे थे गम भी हल्के पडते जा रहे थे कि बीच की विधवा बहुरिया का पाच बरस का लडका बिंदवा रात को मार के किसी ने कोठे के बीच गाड दिया साथ ही सारा कुनबा तहस नहस हो गया

'तू क्या कह रहा है बिरधी ! कौन बिंदवा ! खैर, पीछे हुआ होगा लेकिन किसने मारा और क्यो मार दिया ? फिर कुनबे का तहस नहस होना कैसा ? जल्दी बता, क्या हुआ मल्ली की बहुरिया का ?'

'तुम तो बबुआ ! ऐसे भाजे यहा से कि सबने सोचा कि लो गोविंदी का अकेला बेटा भी मौत मे समा गया, भला घर-भीतर की खबर रखने साल-दो साल पीछे सभी आवै है हुआ क्या कि बीच वाली जो भौजी थी न, इटारसी वाली जानकी भौजी, जिनके औलाद नही होती थी, नही याद पड रहा क्या ?'

'मुझे उस घर का चप्पा चप्पा और हरेक आदमी याद है तू बस एकदम बता दे मुझे '

'तो गगा मया की किरपा से आधी उमर मे जाकर लडका पैदा हुआ क्या खुशी मनाई गई महीना गीत चले जगमोहन गाए गए सहर से भी पू बाजा आया और बतासे लुटे वही लडका जब पाच बरस का हुआ, तब कोठे मे गडा मिला अब सोच लो क्या बीती सब पर ! खासकर महतारी पर !'

'क्या बीती ? कैसे पता लगा कि कोठे मे गडा है ?' मनोहर की आखें फटी जा रही थी अब और कौन-सी पत्थर की सिला का बोझ रखना बाकी है छाती पर

'पता या चला कि पहले तो जगल, गलियारे कुआ, पोखरा छाने फिर रपट लिखाई थानेदार ने घर की तलाशी ली इससे पहले रपट लिखाते समय जाने बडी दिदिया हरप्यारी ने, के राम जाने हजारी ने, ये और लिखा दिया कि हमारी एक बहुरिया के औलाद नही होती है वह टोने-टोटके करती रहती है उसी ने साधू के कहने से लडके को मारकर, खून का घूट पीया है जानकी जिया भी उन दोनो के कहने मे आ गई और यही बयान लिखा दिया कि पहले भी एक-दो बार लडका

उसकी गोद स ऐसी-वैसी हालत म पाया गया था थानेदार सिपाही लेकर आया तलाशी म गीली जमीन देख शक हुआ खोदा तो बच्चे की सडी काया निकली बयान थे ही लक्ष्मी भौजी सुनते ही गश खाकर गिर पड़ी सारे गाव म शोर मच गया होश आने पर बराबर चिल्लाती रही कि वा तो बिटवा को पेट स ज्यादा चाह थी, ऐसा ग दा काम वो क्यो करती वो का समझदार नही कि एस पापा स कही औलाद होती है ! उ होने बालक तो क्या कुत्ते के पिल्ला तक पर प्राण दिए हैं बालपन से आज तक वा ता हमशा दूसरा के लिए प्राण लुटाती रही पर्दा-लाज सब खोलकर जेठजी क, और वो बाहर की बखर वाले जैसीरामजी के ग्दा म जा गिरी हजारी से कहा कि तू कब का उनका दुश्मन निकला जानकी जिया स पुकार-गुहार की कि हम भला कैस ऐसा कर सकी होगी सोचो, तुमने पदा करके पटका और हमने पाला क्यो बहकावे मे आकर मेरा मुह काला कराने पर तुली हो ? पर भैया वो सब पत्थर हो गए थानदार की डाट डपट अलग ज्यादा फल फिर उ होन नही मचाई ऊचे घर की, सदा की शात थी न, सो चुप हो गइ चुप ऐसी कि पत्थर की जात और ऐस ही चुपचाप चली गइ '

'कहा चली गई ?' कण्ठ फूट चला था मनोहर का

'जेल गई बरसन कू '

'छूटी या नही ?'

'छूट गइ कैस ! अबई तक जेल मे है '

'पर ये तो बता बिरधी ! वे सब उन जैसी सीधी, भोली और देवी-रूपा भौजी के दुश्मन क्यो बन गए थे ?'

अरे भया ! सहरी हवा से भी ज्यादा यहां का हाल हो गया है उनके हिस्से की जमीन, पीहर का डिब्बा भरा गहना, य सब मिलता कि नही ! ऊपर से औलाद नही ' सो काटा हटाया फिर, एक और बात है कहते शरम आती है बडे घर की बातें भी बडी होती हैं हम ठहरे बढई-लुहारी फिर भी हमारे घरन म अभी घर बर है इनका का करें ?'

'बता बिरधी ! आज सब बता दे, फिर कौन तुमसे पूछेगा ये सब ? बोल दे जो भी अच्छा बुरा है

हरप्यारी दिदिया तो बहुत जरती थी उ ह देख के तुम्हे भी याद होगा कि पहले से ही फूटी आख नही देख सके थी सुनत है सुनें क्या हैं सच ही बात समझ सा कि पीपरिया गाँव के पटवारी गदा परसाद और खेडी के बोडिआ साब जानें इनका क्या नाम था, हा याद आया रघुवीरदत्त जी बहुत आने लगे परथा चली आती थी इ ही के यहा महमान ठहराने की तो य भी यही ठहरते आना बहुत अधिक बढ गया गांव म कानाफूसी भी चली कई बात लेके, पर बडेन की ओखरी

मे थो मूड घुसेडे ! एक दिन छुटकी लछमी भौजी ने रगे हाथ पकड ली, चुप रह गई, पर बडकी दिदिया जानी दुश्मन बन बैठी भौजी बोली तो कुछ नही, पर हलवाहे नोलू से कह दिया कि नीचे की बैठक मे बैठाओ खिलाओ इससे आगे हवेली मे काम नही क्या शान थी उनकी ! घर कू हवेली बोलें थी '

'अरे भैया ! हजारी खुद एक दिन चाची पै नजर गडा बठे नहा धो के ऊपर जा रही थी आधे-अधूरे कपडे पडे थे बदन पर ये आया था शिकार पर दो दोस्तन के सग गाव शायद स्कूल की छुटटी थी तो भौजी को उस भेस मे देखते ही कुत्ता की तरह टूट पडे भौजी तो याद अच्छी तरह होगी न, रूप की खान और मिसरी-सी सफेद बस भौजी ने जो हाथ की हडडी तोडी उनकी और उनके दोस्तन की, सो आज भी कोहनी पे स् आडा-बाका पडा है तब भी घर मे तूफान मचा कि बडी सतवन्ती बनी रहती है पटवारी और वीडिओ इसी ने तो नीचे की बैंघक मे घुसाए हैं कि वही खुद रहती है बराबर के कोठे-दल्लान मे घर का लडका ने पल्ला छू लिया तो धरम भ्रष्ट हो गया इसका मल्ली भैया कलकत्ता गए थे काम की खोज म बस आज तक आए नही रामभरासे दूधिया कह रहा था कि उन्ह मरे दो बरस हो गए इतना बडा जुलम और कलक लेकर उस दिन भी यो ही चुप रह गई थी सो यो हरप्यारी दिदिया और हजारी भुने बैठे थे वो मौका क्यो चूकते '

बिरधी हैरान रह गया देखकर कि मनोहर ने तेजी से उठकर बखरी की चौखट से सिर दे मारा और ये पत्थर जैसा आदमी बच्चो सा बिलख बिलख कर रो रहा था हूकें निकल रही थी सासें नही बध रही थी बिलबिलाहट के मारे सारा बदन फटा जा रहा था जैस क्या हो गया मनोहर बबुआ को ! कौन-सी बात की कीली जा चुभी राम जाने

'अरे बबुआ ! तुम क्या हूकी देन लगे ! बात बीत गई, अब क्हा है ! परमात्मा तो है न ? हजारी तो पेड काट रहे थे, सो डार टूट गई गिर गए नहर मे भौतेरे हाथ पाव मारे, नहीं बचे हरप्यारी के निकरी माता वो मोटी माता मैया के तिल धरन को जगह नही मिलै जाने कसे जिगर फूट गई सड गइ बिस्तरा के पास ठाडो नही हो सके कोई भी डकरा-डकरा के मरी कीडे पड गए इससे का बुरी गत और दण्ड देगा भगवान ! हा, इतना जरूर है कि कबूल कर गई '

मनोहर पागल-सा झपटा बिरधी के घुटने पकड लिए आखें फटी जा रही थी नया आदमी देखता तो पागल बता देता बोला –'क्या मजूर कर गई वो ?'

'कह गई मरने के एक दिन पहले सगरे गाव ने सुना—'मैं किए का खूब फल पा गई हू अब मर ता रही हू हजारी अलग किए का भुगत गया मैंने ही बिचली का लडका अपने हाथो मारा था पटवारी और वीडिओ वाली बात ने मुझे विरोध

म बहुणी बना दिया था इस पे कलंक लगाने और उसकी इज्जत उतरवाने के लिए मैंने भुकरम किया था वही ले बठा मुझे जब कर चुकी सब सत्यानाश तब पर फटन लगा छुटकी की हंसी, प्यार, उसका ब्योहार नोच-नोच के खान लगा पर अब क्या होवे है ! मिल गया हाथा हाथ फल कोठ जेस जावे छुटकी से कह देना कि तू तो दूध क जैसी पवितर है तू दुःख मत मना हम दोनो बुरी गत से क मरे है और अभी अगल जनम म जान क्या गत होगी छमा करदे अपनी बडकी जो को या वो भैया सड सड क 'छुटकी-छुटकी' चिल्लाती मरी '

मनोहर जमीन पर पड़ा था हाथ छाती पर बधे थ आंखों के कोना से कानों पर होती धाराए बह रही था पेट रह रह कर हिचकियो से उछल रहा था

अरे ललुआ ! है गया अपना तो नास पूरे सबर सुमन अच्छा बैठाया पर पे हल की नोक लेने कालीराम आएगे क्या कहूग ! लाओ खाट ठोंक दू चलू '

'नहीं विरधी ! छोड़ दे अब खाट-वाट नही ठुकवानी तू जा, अभी चला जा अब जरूरत नही रह गई खाट की तू फौरन जाकर अपना काम सभाल और दख करनी नही है दुकान पर कोई चर्चा इस तरह की '

विरधी इस नए पागल न पर सिर झटकाकर चला गया

दो दिन बीत चुके थे, पर मनोहर क सिर से भौजी का भूत नही उतरा हूके-से कलेजे म उठते और जान क्या-क्या कहने को उतावला हो उठता था खुद को ही नाच रहा था कही भाग जाए ? नही जी को शात करना ही पडेगा जाने कितना दखा है और कितना दखना है ! चलो तसल्ली है कि बडकी अपनी नीचता कबूल कर गई भौजी सफेद बफ की डली-सी स्पष्ट रह गई जेल ! ओह ! कभी उन्हान सपने म भी सोचा होगा कि वो जेल जाएगी हत्यारी बनकर क्यो ऐसा सब होता है ?

मनोहर सोचता रहा क्या सहा तून ! कुछ भी तो नही ! सहा तो भौजी न है लाछन ! एक चरित्रहीना का और हत्यारी का अलग गाव की लीला बदल गई सब जान कसे रूखे और पराए से हो गए हैं ! न रिश्ता के बधन हैं न किसी की लाज शम जरा-जरा-सी बात पर गडासे-कुल्हाडे चलते हैं परसो भला कोई बात थी ! हरनाम और केसरी चौधरी म जरा-सी जमीन क टुकडे पर लाठी चल गई दानो मामा फूफा क लडके खून से रग गई जमीन सिर्फ एक बालिश्त के लिए एक वही मर गया दूसरा मरन के करीब पडा हाय-हाय कर रहा है लगा कौन अब उस टुकड को हाथा-हाथ काटा दबाया या कुए म पटका बस रफा दफा

उधर वो बाबा केहर सरपच बने बठे है कभी कैसी बाते सुनी है इनके बारे मे उसे याद है इनके घर म प्याज का छौंक भी नही लगता था, अब दारू से पहल रोटी हलक स नीचे नही उतरती और अगुलियो की तीसो रखो के बराबर बहन बेटिया भोग चुके हैं आग मागने को अभी करारी उम्र पडी है लकिन जब वक्त

आता है, तब सरपंच बन 'पंच परमेश्वर' होकर बैठ जाते हैं यहाँ भी मन का पाप नही धुल पाता जिसकी ओर से मोटी रकम जेब मे आ गई वही पक्ष जीतेगा याय के लिए सच्चा व्यक्ति माथा फोडकर मर जाए, लोग कहते हैं कि माथा खराब था उसका

शहरो मे औरतें पढ लिखकर कितनी भी बदल गई हो, पुरुष बदल गए हो, पर यहा तो आज भी वही दहेज की आग है वही ठोकरें है औरत है क्या इनके लिए! चार दिन पहले जिद कर रुक्मा कमालपुरा ले गया था गाव की तहकीकात दिखाने क्या देखा बस मन जल कर रह गया विद्रोह की लपटें उठ पडी उसी गाव मे दो तहकीकातें थी पहली हत्या की, दूसरी चोरी की गाव वाला का, गवाहो का कहना था कि हत्या घर के ससुर, पति और सास ने मिल कर की है गले पर लाठी रखकर दोनो छोरो पर बेटा-मा खडे हो गए और पैरो को दबाकर ससुर बैठ गए गवाही देने वाला उस घर का सबसे छोटा सात साल का लडका था, जो उस दृश्य को अपनी आखो से देख रहा था जमीदारी का लुटा पिटा, खाया खेला घर था कितना ही लुट जाए, आज भी क्या कमी थी! घी बिखरगा, पर चिकनाई तो छोड देता है पहले तो थानेदार ने पूरे घर को ढीला कर दिया फटकारा और फोश गालियो से कानो में कीडे झाड दिए सभी सोच रहे थे कि आज न्याय करने वाला हाकिम आया है

लेकिन दो घटे बाद समूचा पतरा बदल गया इतनी आत्मीयता थानेदार की चाल मे कहा से आ गई? आखें खोज नही पा रही थी कि अचानक परिवर्तन कैसे? फिर तो जमीदार 'ठाकुर साहब' हो गए, जिनकी मा बहनें अभी अभी थानेदार के पूरे कुनबे की औरतें बनी गालियों की नोको पर उछाली जा रही थी ठकुरानी साहिबा 'भाभी जी' बन गइ जिन्हे स्वय ऐसी गालियो का धारावाहिक प्रवचन सुनना पडा था कि शायद गर्माहट मे आकर ठाकुर साहब भी उनका बखान करते तो वह बेहोश हो जाती

थानेदार की तीन घण्टे तक जवाई की तरह खातिर हुई मनोहर पागल! तू क्या देखने आया है यहा! कुछ पल्ले पडी बात! हा, चल ही गया पता जब गाव वालो की भीड के सामने हसकर अमरिका की सिगरेट जो बडी कीमती बताई गई, स्पेशल तौर से थानदार साहब को भेंट की गई सिगरट का डिब्बा गाव के भोले भाले लोग सही समझकर अपने अपने रास्त और खेता पर चले गए आगे जब बहली मे बैठकर थानेदार साहब ने मूछो पर ताव देकर डिब्बा खोला तो सिगरेटें हाथो मे आईं अरे कैसी सिगरेटें? मोटी मोटी तीन गड्डियाँ बत्ती बट कर ठूस रखी थी थानेदार किलक उठे और खुशी के मौके पर भी एक वजनी गाली ठाकुर साहब के लिए हवा मे तर गई मन छटपटाकर रह गया जी चाहा अभी ठाकुर से

पूछे सब कुछ क्या मिल गया उसे ? दहेज की कमी पर कन्या का गला घोंट कर और गाय की चिता जलाकर उसे क्या मिला ? क्या अब दहेज मिल गया ?

मनोहर वापिस नहीं लौटा रुक्मा के साथ वह अभी रुकेगा अभी तो एक ही तहकीकात का रंग देखा है अभी मेल बाकी है रुक्मा भी रुक गया दूसरे दिन उन्हीं थानेदार की सवारी फिर आने वाली थी गांव में आतंक छा रहा था क्योंकि चोरी के मामले की बात अलग होती है सभी पर शक, सब चोर जाने सत्यानाशी कितना पीटेगा ! किस किस से झूठ कबूल कराएगा, कहा नहीं जा सकता

दोपहर से पहले दो सिपाही आए और रामजीलाल से बोले, जिसके यहां चोरी हुई थी, कि थानेदार साहब और इंस्पेक्टर साहब खाना आ रहे हैं असली न मिले तो केसर-कस्तूरी पूरी मात्रा में जुटानी है दस सिपाही होंगे नहीं तो आप जानो सिर फट जाएगा कहां से उस गरीब ने जुटाया कुछ जुट नहीं सका, तो कितनी मलामतें, मारपीट और गालियां उसके शरीर पर पड़ी तहकीकात में कितने बेकसूर पकड़ और पिटे खाबू धाबी का लड़का बेदम होकर गिर पड़ा, फिर भी जूतों के तले उसकी कमर और धड़ पर बरसते रहे अधिक चीख-पुकार नहीं सुनी गई उससे और अमराई के बीच में वह पागल सा रुक्मा का हाथ पकड़कर भागा इधर जूते हंटर बरस रहे थे ववस आंखों से घृणा के छींटे उड़ रहे थे कैसे देखता वह सब कुछ ? कहां से लाए ये गरीब किसान मोटी माटी रुपया की बत्तियां सिगरेट के डिब्बे में ! चोरी, फिर कर्जा लेकर खाना देना और ऊपर से उसी की, उसके घर वालों की खिंचाई ! वाह ! क्या रावण राज छाया है ?

गांवों का पंचायतीराज और पुलिस का न्याय नहीं भूलेगा वह कभी नहीं बिसार पाएगा वह दौड़ता रहा, कब गांव आया और कब उसी सूने खण्डहर में आ पड़ा जहां फिर भौजी आंखों में आ गई पुरानी यादों के साथ

मनोहर पोखर से नहा कर लौट रहा था खेतों की ओर देखने को मन चाह रहा था लेकिन जैसे कुछ बुरा दीख जाएगा उसने आंखों पर अंगोछा कर लिया धरा के नीचे वही पुरानी भुरभुरी गुदगुदाती मिट्टी, वही सोंधी गंध वाले खेत, वही लुनकाए हरे गदराए पौधे परिचित कीकर, नीम, बबूल और वह पुराना कड़ामा बरगद यही वो अमराई, कितनी चोरियों की आमियां नमक-मिर्च लगाकर खाई थी यहां वह झमेला बुलाती सी लगी पैर उठ गए उधर तना सहलाया बचपन लौट आया अधिक नहीं सहला पाया कहीं कुछ टीस गया लौट पड़ा हां ये है मंदिर की टूटी मढ़ी यही आकर कितनी रोती रातें गुजारी थी और ठीक इसके पीछे रहा लसछोहा पीपल आज भी उतना ही ताजा, उतना ही भरा भरा ललि हाए कच्चे पत्ते चला मनोहर, भागो यहां से वह भौजी का पिछवाड़े वाला कोठा कहां है ? यही ढेर तो है बस मलबे का यहीं उनकी कच्ची दीवार खतम होती थी

यही है गरू के मड़े मारिये पाव दौड़ पड़े पागल सा ढेले-ढेले को उठाकर सूघने लगा, टटोलने लगा दोना हाथो से धूल छानने लगा कौन है यहा ? और भीतर घुस गया कही छत धसी थी, कही आधा छपरा उड गया था बासो के जाल लटक रहे थे भुस की कुठरिया साबुत थी, पर चौखट बुढ़ापे की झुकी कमर जैसी टूट गई थी

वह रहा बरामदा मकडी के जालो से भरा खुदा पडा लोग लीपन-पातने को खोद ले गए होग ! पराया गुड भी अच्छा लगता है न ! जगह-जगह दीमक लगी थी किसी चीज की परवाह किए बिना चला गया अदर सिर पर पुत गए जाले पुतने दो वो रहा भौजी का कोठा बिला रहा है सूना पडा यह यह रही वो चौखट यो ही खाली, मजबूत बस इसी की तो तलाश थी यही भौजी की सबसे बडी निशानी है अरे अरे रे ये रही सब टिकुलियाँ सारी ज्यो की त्यो चर्खे की टाल से जब दो गोरी कलाइया शीशा टिकुली उठाकर माथे पर लगाती थी, तब वह इसी बरामदे के खम्भे से लगा अपलक देखा करता था क्या देखा करता था ? बस बडी अच्छी लगती थी तब क्या रही होगी उसकी उमर ? यही पन्द्रह की या कुछ आगे भौजी की लम्बी आखें काजल की डार पर खिच उठती और वह हस कर कहती—'अरे मनोहर ! तू यो क्यो देखा करता है रे ? बहुत अच्छी लगती हू क्या ? ले, मैं तो भूल ही गई थी तेरे लिए महेरी रखी है खा ले देख तो कैसा सूखा मुह लिए फिर रहा है ' चुपचाप काठे मे, इसी कोने मे बठाकर प्यार से दूध डाल-डाल कर खिलाती जब चलता तो गोद मे भर लेती तब वह लिपटा लेता अपने हाथ उन गुदाज हाथो मे लगता उसे कि वह गोद मे नही समेट रही, बल्कि पूरी कपास की खेती उसके ऊपर ढुलक पडी हो !

एक दिन बोली—'मनोहर ! तू बडा स्वार्थी है रे ! हर पैंठ पर जाता है, पर य नही कि भौजी के लिए टिकुली ले आए अरे, मुझे शोक इन्ही मरियो का है लाएगा रे ?' वह पगलाया भागा था और अगली पठ पर तीन दिन मेहनत से बीनी कपास लेकर हरी-पीली-लाल आने बितन रगो की और छापा की पुडिया भर टिकुलिया खरीद लाया था लाकर उन्हे हापते हापते दे दी थी कैसी मगन हुई थी देखकर ! जी भर कर प्यार किया था सिर पर हाथ फिरा फिरा कर

मामी को पता लग गया था कितनी मार पडी थी और कसो बुरी बात कह कर मामा को भडकाया था कि सारी रात मदिर की कोट पर काटनी पडी थी उधर उसी हरप्यारी ने मल्ली भया से जाने क्या कहा कि व बोले—छोकरे ! खबरदार जो टिकुली फिकुली खरीद के लाया उमर की औकात मे रह, नही तो गाव मे रहना भूल जाएगा ' मैं मुह फाडे रह गया था क्यो मामी ने मारा ! क्यो मामा ने गाली दी क्यो मल्ली भया न धमकाया तब क्या समझ थी अब भी क्या

समझ है भौजी के बारे में बिना प्यार पाए बच्चे को ममता मिलती थी, तो टिकुली तो क्या वो कहती तो वह धरती फाड देता उनके लिए

य सब यो ही चिपक रही हैं जब नई लगाती तो पुरानी चौखट की शोभा बनाकर चिपका देती थी सब वही है मेरी लाई हुई तो क्या भौजी न इनके अलावा और नही मगाई एक दिन उदास होकर बोली थी—'मनोहरा ! मेरे पास मत आया कर तू य सब जालिम हैं बकार मुझे दुख होता है दुनियाई बातें सुन कर तुझ कुछ मागना हो तो पिछवाड वाल कोठे की खिड़की से माग लिया कर देख लोग बडे बुरे है, इनसे बचियो, य किसी का हसना-बोलना नही देख सकते दुनिया बडी बेरहम है मनोहरा अब तू जा और वह बुत बना रोटी थपथपाती गोल कलाइयो को देखता रहता था लाल चूड़ियो म चादी के कडे बजते रहते थे पल्ले कुछ भी तो नही पडता था बस यो ही भौजी की गुडहल सी लाल शरबती आखो को देखता रह जाता था कब चमरौधा जूता पीछे से उसकी पिंडलियो म गडता और कब खुरदरा पजा उसकी गदन को घेर उठता, समझ कहा पाया था ! समझा तो तब था, जब जहरी आवाज न उस पर थूक दिया था एक दिन—'अबे मनोहरा ! साले सुअर ! गडासे स पत्तन छुरी सी गदन उडवाना चाहता है क्या लुच्चे जब देखो रकूला बना जूतिया सहलाता मिले है गाव म रह भी कूदे नही मिलेगी, समझ लीजियो बखरी न दाए-बाए हाथ-पाव पसारे ल्हास धरती म गाड कुत्ता छुडवा देऊगा, भाग नरकिय की औलाद'

भौजी का मुह पीली मकई क आटे जैसा हो उठा था कोहनी के एक दसकारे स उनके सुहाग रखवाले न ओटे के पीछे धकेल दिया था भाग कर भूरिया के खेतो की ओट म जाने जब तक अनोडे पकड-पकड कर उडाता रहा था वह भौजी के दद ने, न समझ आन वाले खिचाव न, उसे एसी-ऐसी चित्त-पट्ट पछाडिया दीं कि उसके मन मे औरत नाम स गहरा आघात छा गया जो आज तक उसे किनारे नही बठने देता

वो दुपहर आज भी उसे अच्छी तरह याद है जब हल्की बूदा-बादी मे पराये गाव की पराई औरत को अपनापन का रिश्ता दे बठा था मौसी कहकर वही गुमाना मौसी जब हर फसल पर बेटा के आग रिरियाती कि कोई उसे एक बार गगा म गोता लगवा द तो जनम के पाप पवित्तर कर आऊ पर सब चुप्पी खीच जाते और अगली फसल की बुवाई गुमाना मौसी म फिर से गगा की शीतल-लहरो स मिलन की नई तडप दे देती पर उसके सत्यानासी बेटो ने उसके भाग के ठीकरे आखल मे फोडकर बिखराय ही किरपा कभी नही की जने-जने से मौसी का रोना यो ही चलता रहा इसाफ करता कौन ! हट्टे-कट्टे साडो से कौन छाती कुटवाता अपनी गाव म झगडा सिर लन का मतलब अपनी मौत ही तो है

तभी उस घुमडाई दुपहरिया मे पत्तों की बुर्जी के पीछे शून्य मे आखें टिकाए गुमानो मौसी की पीठ पीछे जाकर बोला— 'मौसी ! तू चाहे तो चल मैं तुझे गगा ले चलू !' मौसी पल भर पीछे मुडकर सकते मे देखती रह गई थी 'अरे पराये पूत, तेरा कलेजा ठण्डा होय ल चल बेटा आज तैंने देखी नई गाव की चार गाडी लदि कै गई हैं गढगगा कछु रुपया पडे हैं और कल दोना घडुआ गिरवी धर दऊगी भरोसे वोहरा के बस तेरा काम सग देने का है अरे ! तीन घडी को बुलावो आवं रामजी करै इन कढोआई ओलाद कू ? मेरे हिस्सा की जमीन है कोई मैं गिरती-पडती फिरू हू का मेरे हिस्सा की जमीन है लँ परसो ई चल द अब तू बेटा' निकार नरक सू अरे कोई पेट को ई थौंटू मुडे हैं का ? तेरे कधान पै सुरग है आऊगी ' बोले जा रही थी मौसी आखें चमक रही थी कठ रुध रहा था तीन बार हाथो के हाड उसके सिर पर फिर और एक सुखद अनुभूति जैसे मौसी समूचे शरीर से निकलकर उसके शरीर को ममता की डोर से बाधने लगी

अधिक सोच कर यादो को कुरेदने से क्या फायदा ! इतना ही बहुत है कि सीधा हरिद्वार की पोडी पर ले जाकर मौसी को आनद सागर मे डुबो दिया था बार बार सिर तक डुबकिया लेती और सासो के तार तार से दुआए देती अभागे मन में चोर फिर झाकने लगा था जसे भीतर का दूसरा मनोहर सघष कर रहा था कि क्या करेगा अजाने गाव लौटकर ! सभी गाव सभी जगह तो अपनी हैं क्यो नही यह कही रमता जोगी बन जाता ! हजार हजार आदमियो की भीड मे एक मनोहर और सही गेरुआ कपडे कला कमण्डल और चदनी टीके बडे अच्छे लग रहे थे लगा ले शायद इन्ही मे जिंदगी के दग छिप जाए ना छिपें क्या तो मिलेगा ही पर इस मौसी का क्या हो ! तभी कनखल के मोड पर मिल गया भजनलाल का कुनबा जो दूसर दिन लौटने वाला था मौसी की काया उन्हे सौंप चल दिया था फिर नई दिशा पकडने चौले साधु के चबूतरे पर लेट कर भला वह क्यो रोया था पूरे दो घटे ! बहुत याद करने पर लगता है कि उस समय छाती मे हूक उठ रही थी सोच सोच कर कि कहाँ जन्मा, कहा कहा भटका ! न भरपूर दो जून खाया, न पीया पत्थर की सिला की तरह सन्न उदासी जकडे रही मन सूना और दुनिया साथ साथ करती मुह फाडे मिली सब कुछ उजडता गया बाहर काया भागती रही, भीतर मरघट फैलता गया

चबूतरे पर सोते साझ घिरे पर के अगूठे पर दबाव पडते ही वह चौंक उठा सामने चौडे फने ललछियाए गुदाज गूलर से तीन चेलो को देखकर वह हडबडाकर उठ बैठा चौले साधू के चबूतरे पार कुटिया मे अब चहल-पहल बढ गई थी एक चेने ने पानी मागने पर कमडल से गगाजल हिलाते हुए पूछी थी जात बिरादरी क्या बात बताता ! चुप रह गया था तीनो ने पहले हसी की उसके साधू बनने

की बात सुनकर ठहाके लगाये—सबसे छोटी उम्र के चेले ने कण्ठी देकर, गंगाजल छिड़क कर कुटिया के सामने कोना बता दिया कि रात तो काट ले, सुबह फैसला सुनाएंगे कि पहले साधू बनेगा या चेला उसने जल्दी फैसला दे दिया था कि चेला बनेगा तब मोटे नथुनो और भारी भडकल आवाज वाले चेले ने पूछा था कि पूजा जतन जाननी होगी, सेवा टहल के कायदे सीखने पड़ेंगे सबके लिए मजूरी देने पर कब कमर मे गेरुआ गमछा आ लिपटा और कब खडाऊ पहन सिर घुटवा कर चोटी मे गाठ लगा ली, अब कुछ ध्यान मे नही जमता तकदीर मे चुभे काटे भला किसने गिने हैं ?

सेवा-टहल के जतन-कायदे जानने को कौन-सी पोथी-पत्रा पढने थे ! कह दिया कि आँख खोलकर देख और मन फैला कर गुन चोले साधू के दर्शन कभी-कभी हो जाते थे अघोरी रूप, तन भर मे गहरी भभूत, काला डरावना चिमटा, मृगछाला पर बिखरा शरीर बडे बडे दात, खूखार दिखाई देने वाली लाल-लाल आखें, लम्बी जटाओ मे घिरा सिर, रुद्राक्ष के बडे बडे दानो वाली माला ! नीचे से ऊपर तक नगापन होठो के दोनो कोनो पर तैरता लसीला थूक साक्षात यमदूत था

शाम घिरी नही कि सेवा टहल का जोश चारो तरफ फैल जाता था आखें खोल मन फैला रखने पर भी कुछ गुना नही जाता था पहले ही कह दिया कि यह मनोहर बडा अभागा रहा है भीतर बाहर से सभी तो जिंदगी भटकाने मे इसे थोडी भी मेहनत नही करनी पडी है नही तो यहाँ से भागता क्यो ?

एक दिन साझ ढलते ही सब नये-पुराने चेलो ने दूधिया भाग की गिलौरी छान घोट पी ली उससे भी चार घूट उतारने को कहा गया, पर वह नशीली गाढी चीज उससे कहा निगली गई ! चेला ने सलाह दी कि उस दिन की सेवा टहल का भार उसे सौंप जाएगा यो कब तक तेल पानी से शरीर मे माल तैयार करता रहेगा ! उनमे से चार उसे मुख्य कुटिया के नीचे तले मे उतार ले गए वह हैरान था कि घास से घिरी मामूली सी कुटिया अपने पेट मे तिलिस्म छिपाए थी कोठरी के दरवाजे पर उसे खडा कर चेता दिया गया कि भीतर झाकने की जरूरत नही बस चौकन्ना रह जाने कब महाराज जी आवाज लगा दें टहल बजाने मे वह फुर्ती दिखाए क्योकि आलसी चेला इधर नही चलता महाराज की नजरो मे चढने का यही मौका है उनका मन जीता कि पौ बारह पच्चीस समझो गाठ बाँध ले इस सीख को

भीतर तेज बिजली की रोशनी किवाडो की सधो से झाक रही थी लोबान, कपूर और अगरबत्तियो की बडी मीठी गध नशा सा फैला रही थी उसके पैरो म मच्छर काट रहे थे मन परेशान-सा था कि न जाने कब तक यो ही खडा रहना

पड़ेगा अंदर महाराज शायद साधना में लगे हैं देख लिया जाए झाँककर तो क्या लगता है, लेकिन चेलों ने ऐसा करने को मना कर दिया था वह आँखें चौड़ी किए इधर-उधर देख रहा था कि धीमे से दो बरतन खटके शायद आहुति के लिए घी डाला गया हो पर यह कांच सा क्या बज रहा है यह तो चूड़ियों की आवाज है वह स्तब्ध खड़ा रह गया क्या हो रहा है अंदर ! शायद कोई दुखिया आशीर्वाद मांगने आयी होगी! पर तभी छीना झपटी सी हुई तेज गुस्सल सांसें बाहर तक आने लगी लगा जैसे अरना भैंसा अपने नुकीले सींगों से धरती खुरच रहा हो स्त्री की आवाज जैसे चीखना चाह रही हो, लेकिन चीख न पा रही हो अब वह नहीं रोक पाया अपने को और झिरी से में उसने दोनों आंखें लगा दीं अंदर का दृश्य देखकर उसके सिर तक के बाल खड़े हो गए आँखें झिरी पर फैलती जा रही थीं भीतर एक मोटी, काली औरत ने गांव की भोली लड़की को दबा रखा था वह पहचान गया उस काली औरत को यह वही थी, जो दिन में महाराज जी के तेल की मालिश कर गर्म पानी देती थी नीचे की लड़की छटपटा रही थी, पर मोटी औरत ने उसे मजबूत हाथों में बेबस कर रखा था और महाराज भी बड़े वीभत्स और जंगली ढंग से नाच रहे थे जैसे उघड़ रहे थे और अपनी बर्बर वासना में पागल हो रहे थे काली औरत बेहयाई से मुस्करा मुस्करा कर उन्हें बढ़ावा दे रही थी और उनकी मदद कर रही वह न चिल्ला सका और न सोच सका घिनौनी और पाशविक लीला उसके सामने हो रही थी शरीर का सारा खून गर्म होकर जैसे उसके सिर में खौलने लगा मुट्ठियां भिंच गईं वह अब क्या करे? वह बाहर भागा और आकर अपनी कथरी पर औंधा पड़ गया उसका मन गुस्से और लज्जा से भर उठा धर्म और तीर्थ क्या यही हैं ! क्यों आते हैं लोग यहां पुण्य बटोरने ! क्या भगवान के दर्शनों के लिए और अपनी आत्मा की शांति के लिए इतना बड़ा बलिदान देना पड़ता है ! वह नहीं रुकेगा यहां भागेगा दूर बहुत दूर बहुत दूर पर कहां भागे? हर जगह ने उसे अचम्भे में डाला है जब भी वह झूठ-सच का लेखा करने बैठा तभी उसे वक्त ने पछाड़ा शहरों की सफाई ने तो खींचा था उसे और उसने दूध वाले घोसी कालीचरन की नौकरी की थी दिल जब ज्यादा कुरेदने लगा तब पूछ बैठा था—'दद्दू ! इतना पानी भला क्यों मिलाया करते हो ! क्या तुम्हारा मन नहीं डरता! नानी कहा करती थी कि जो पीछे छुपकर चोरी करता है, भगवान उसका सब ले लेते हैं तुम ऐसा बुरा काम क्या करते हो ! पूरा दाम लेकर भी चीज पूरी क्यों नहीं देते !'

सुनकर कालीचरन कितना हंसा था और वह मुंह फाड़े उसकी ओर देखता रह गया था जब हंसी थमी तो कालीचरन ऐसे बोला था जैसे अपने गांव का भालू मास्टर बच्चों को उठक-बैठक कराकर पहाड़े और जोड़ बाकी के सवाल

की बात सुनकर ठहाके लगाये—सबसे छोटी उम्र के चेले ने कण्ठी देकर, गंगाजल छिड़क कर कुटिया के सामने कोना बता दिया कि रात तो काट ले, सुबह फैसला सुनाएंगे कि पहले साधू बनेगा या चेला उसने जल्दी फैसला दे दिया था कि चेला बनेगा तब मोटे नथुनों और भारी भड़कल आवाज वाले चेले ने पूछा था कि पूजा जतन जाननी होगी, सेवा टहल के कायदे सीखने पड़ेंगे सबके लिए मजूरी देनेपर कब कमर में गेरआ गमछा आ लिपटा और कब खड़ाऊ पहन सिर घुटवा कर चोटी में गाठ लगा ली, अब कुछ ध्यान में नहीं जमता तकदीर में चुभे कांटे भला किसने गिने हैं ?

सेवा-टहल के जतन-कायदे जानने को कौन-सी पोथी-पत्रा पढने थे। कह दिया कि आख खोलकर देख और मन फैला कर गुन चोले साधू के दर्शन कभी-कभी हो जाते थे अघोरी रूप, तन भर में गहरी भभूत, काला डगबना चिमटा, मृगछाला पर बिखरा शरीर, बड़े-बड़े दात, खूखार दिखाई देने वाली लाल-लाल आखें, लम्बी जटाओं में घिरा सिर, रुद्राक्ष के बड़े बड़े दानो वाली माला। नीचे से ऊपर तक नगापन होठों के दोना कोनो पर तैरता लसीला थूक साक्षात यमदूत था

शाम घिरी नहीं कि सेवा टहल का जोश चारो तरफ फैल जाता था आखें खोल मन फैला रखने पर भी कुछ गुना नहीं जाता था पहले ही कह दिया कि यह मनोहर बड़ा अभागा रहा है भीतर बाहर से तभी तो जिंदगी भटकाने में इसे थोड़ी भी मेहनत नहीं करनी पड़ी है नहीं तो वहाँ से भागता क्यो ?

एक दिन साझ ढलते ही सब नये-पुराने चेलो ने दूधिया भाग की गिलौरी छान घोट पी ली उससे भी चार घूट उतारने को कहा गया, पर वह नशीली गाढी चीज उससे कहा निगली गई। चेला ने सलाह दी कि उस दिन की सेवा टहल का भार उसे सौंप जाएगा या कब तक तेल पानी से शरीर में माल तैयार करता रहेगा। उनमें से चार उसे मुख्य कुटिया के नीचे तले में उतार ले गए वह हैरान था कि घास से घिरी मामूली सी कुटिया अपने पेट में तिलिस्म छिपाए थी कोठरी के दरवाजे पर उसे खड़ा कर चेता दिया गया कि भीतर झाकने की जरूरत नहीं बस, चौकन्ना रह जाने कब महाराज जी आवाज लगा दें टहल बजाने में वह फुर्ती दिखाए, क्योंकि आलसी चेला इधर नहीं चलता महाराज की नजरों में चढने का यही मौका है उनका मन जीता कि पौ बारह पच्चीस समझो गाठ बाँध ले इस सीख की

भीतर तेज बिजली की रोशनी किवाड़ो की सधो से झाक रही थी लोबान, कपूर और अगरबत्तियो की बड़ी मीठी गंध नशा-सा फैला रही थी उसके पैरो में मच्छर काट रहे थे मन परेशान-सा था कि न जाने कब तक यों ही खड़ा रहना

पडेगा अदर महाराज शायद साधना मे लगे हैं देख लिया जाए झाककर तो क्या लगता है, लेकिन चेलो ने ऐसा करने को मना कर दिया था वह आखें चौडी किए इधर उधर देख रहा था कि धीमे से दो बतन खटके शायद आहुति के लिए घी डाला गया हो पर यह काच सा क्या बज रहा है यह तो चूडियो की आवाज है वह स्तब्ध खडा रह गया क्या हो रहा है अदर ! शायद कोई दुखिया आशीर्वाद मागने आयी होगी! पर तभी छीना झपटी सी हुई तेज गुस्सैल सासें बाहर तक आने लगी लगा जसे अरना भैसा अपने नुकीले सीगो से धरती खुरच रहा हो स्त्री की आवाज जैसे चीखना चाह रही हो, लेकिन चीख न पा रही हो अब वह नही रोक पाया अपने को और झिरी तो मे उसने दोनो आखें लगा दी अदर का दश्य देखकर उसके सिर तक के बाल खडे हो गए आँखें झिरी पर फैलती जा रही थीं भीतर एक मोटी काली औरत ने गाव की भोली लडकी को दबा रखा था वह पहचान गया उस काली औरत को यह वही थी, जो दिन मे महाराज जी के तेल की मालिश कर गम पानी देती थी नीचे की लडकी छटपटा रही थी, पर मोटी औरत ने उसे मजबूत हाथो से बेबस कर रखा था और महाराज जी बडे वीभत्स और जगली ढग से नोच रहे थे जैसे उधेड रहे थे और अपनी बबर वासना मे पागल हो रहे थे काली औरत बेहयाई मे मुस्करा मुस्करा कर उन्हे बढावा दे रही थी और उनकी मदद कर रही वह न चिल्ला सका और न सोच सका घिनौनी और पाशविक लीला उसके सामने हो रही थी शरीर का सारा खून गम होकर जैसे उसके सिर मे खौलने लगा मुटिठया भिच गईं वह अब क्या करे ? वह बाहर भागा और आकर अपनी कथरी पर औंधा पड गया उसका मन गुस्से और लज्जा से भर उठा धम और तीथ क्या यही हैं ! क्यो आते हैं लोग यहा पुण्य बटोरने ! क्या भगवान के दशनो के लिए और अपनी आत्मा की शांति के लिए इतना बडा बलिदान देना पडता है ! वह नही रुकेगा यहा भागेगा दूर बहुत दूर बहुत दूर पर कहा भागे ? हर जगह ने उसे अचम्भे मे डाला है जब भी वह झूठ-सच का लेखा करने बैठा तभी उसे वक्त ने पछाडा शहरी की सफाई ने तो खीचा था उसे और उसने दूध वाले घोसी कालीचरन की नौकरी की थी दिल जब ज्यादा कुरेदने लगा तब पूछ बैठा था—'ददद्दू ! इतना पानी भला क्यो मिलाया करते हो ! क्या तुम्हारा मन नही डरता! नानी कहा करती थी कि जो पीछे छुपकर चोरी करता है, भगवान उसका सब ले लेते हैं तुम ऐसा बुरा काम क्या करते हो ! पूरा दाम लेकर भी चीज पूरी क्यो नही देते !'

सुनकर कालीचरन कितना हसा था और वह मुह फाडे उसकी ओर देखता रह गया था जब हसी थमी तो कालीचरन ऐसे बोला था जैसे अपने गाव का भोलू मास्टर बच्चो का उठक-बैठक कराकर पहाडे और जोड बाकी के सवाल

समझाया करता था कहने लगा—'अरे, नहर-नहर नाप डारी है, पर अक्लि के नाम कोरी माटी गोवर पल्ले वाधे फिरो हो मैया ! उमिर मे पांच कम पचास गमा दिए हैं दूनई मानस पतुरियान देखि देखि कैस कौनू ससुर ऐसा नाहिं आयो जो सतवादी हरिचद बनिके आयो होय, सबई मामा शान वसर के पीछे सू धक्का दे आगे थारे के ऊपर गिरत रहिते रहे अरे, किनौ पियावें असल दूध ! यो सार दोगन मानस, जो ससुर तनिक-सी मजे से जमीन लयन, तरक्की चाहन और थार ठीक रान की बढोत्तरी कारन अपनी वहिनी, बिटियान और भाटजुरी पतुरियान को मिनिट भर मे दूसरन पास बेहिचक हाथन छोड आवें और ऊपर सो ठसका मार पान चबैं कहत फिरें के उन जैसे नेक-नरम और सुधारक दुनिया माह दूसर नाहिं हाथ लगै तो दूसरन को काया माया तक पै आग्र फेर दें इन भ्रष्टाचारन को असल दूध गटिका के हमही तुम्हें दीखे हैं न ! सापन को और ताकत दे पाप के भागी बनै और पुन की सैरा वाघ उल्लू बने खून के घूट पीत रहैन चौं"

सवेरे कब तक वह यो ही गठरी बना पड़ा रहा, कहा पता लगा था ! दोपहर को खाने की बुलाहट पर चेले चाटियो ने जाना होगा कि कथरी कमण्डल ले नया चेला भाग गया कमबख्त को एक रात सेवा-टहल दी थी, तो घबरा गया चेला बनकर रहना सबके बस की बात हो, तो भला सब साधु सत-वैरागी न हो जाए ! उनकी नजर मे मूख , वजमूख मनोहरा स्वण स्थली छोड भाग उठा सो गहन अपराध के साथ-साथ अच्छे स्वामी का हाथ सिर से छिटका गया गगा मा इसके दोनो लोक उजाडेंगी चेलो ने यह शाप दिया होगा और वह हरिद्वार से आगे गूगा वहरा बना भाग रहा था पाव भारी हो गए ठोकरो ने लहू झलका दिया था कि तिल कगनी के लड्डू देकर गगौटी से मजा लोटा भर पानी पिला के सुरती मैया क्यो धीरे धीरे पूछ बैठी थी सारी विथा और सुनाता रहा था सडक की कोर पर बठा नया पुराना सभी कुछ उसके पूछने की बारी आई तब पता लगा कि बहुरिया को सग लिए फला स्वामी का चरनामत पिलाने, दरसन झाकने वो रिसी केस जा रही है तो उडती नजर से बहुरिया के मेहदी पालिश लगे पैरो की अगु लिया की गोराई देख कौन से अधिकार से आधे रास्ते से ही खीच लाया था उन्हें गरजकर कह दिया था—बस हो चुकी मैया तेरी सफल यात्रा छोड सब माया मोह घर का कस और चौके की नमक की डली मे जो स्वाद है, आबरू है उसे तू यहा बूद-बूद खो देगी बोल तक नही पाएगी बहुरिया को मैं भेडिया से नहीं जाने दगा तेरा वेटा अनकमाऊ और नशेवाज है औरत को मारता-दु ख देता है तो वो घोटालू स्वामी क्या करेगा ? तेरा और इसका नसीब अपने किए ही जुडेगा यो मेरा किस्सा सुनके भी तू धीरजवाली तो चल दिखा लाऊ यहा की स्वग गैर' और सुरती मा चुपचाप उल्टी लौट आई थी अकेली नही, उसे भी साथ लेकर

पति पर जादू करने वाला वशीकरण मंत्र लेना भूलकर बहुरिया कमली भी चुप चाप लौट आई

नया घर था नया गाँव था फिर भी बहुत दिनों बाद उत्तराखंड के पेड़ो से घिरे उस गाँव की रात में गाढ़ी नींद सोया था, निश्चिंत और बेखबर सुबह करवट लेते जान पड़ा कि गुदाज कलाइयों ने बड़ी कोमलता से अच्छी पैरों से लेकर सिर तक ढांप दी थी और सिरहाने बंधा बछड़ा बाहरी कोने में ले जाकर ठहरा दिया था, यह सोचकर कि परदेसी की नींद खराब न हो जाए मन के किसी छिपान में ये सब हिफ़ाजतें बड़ी अच्छी लगीं और बहुत दिनों बाद मौजी और उनकी हरी-लाल रेशमी ढकी गुदाज कलाईयां याद आ गई सुबह उठकर भी वह यों ही नींद का बहाना किए पड़ा रहा और घर में होने वाली हर आहट और हर बात का जायजा लेता रहा कैसे आहट के नाम को घर में था ही कौन ? सुरती भैया और ये पैंठ में बनी चिरकनी गुड़िया सी कमली बहू उधर ओटासे के कोने की ढीली मचिया पर पड़ा सुरती भैया का बूढ़ा भाई दो भैंस, दो बछिया, एक बछड़ा और इमली-नीचे मिमियाती बकरी दोनों कुनी भैंसें खूब दूध देती थी, क्योंकि बाल्टी मे धार गिरने की आवाज बहुत देर तक घर को ताजगी देती रही थी

उठना बार बार चाहकर भी वह नहीं उठ पा रहा था जाने कैसी लाज जकड़े दे रही थी। सुरती मां होती तो काम बढ़िया रहता ये कमली बहू ने सब उलट दिया है मौजी बचपने की याद थी बीच के आए सभी घूंघटो के संकेत यों ही आए और अपने स्वार्थों में या अनाम मान अपमानित कर गदी छाया छोड़ चले गए उम्र की किस गुप्त सांकल को खोले बिना खोले बिना पूछे मीठी-सी दस्तक दिया कुछ घण्टा के साथ में ही कमली दिल की ढपली पर झांझर बजा उठी कसी माया रही कि वशीकरण लिए बिना ही उससे भी जबरदस्त जादू की बुकनी फेंक मारी उसने जनम से दुखियार और भटके हुए मन उसने थोड़ी सी अच्छी सरका कर आंगन सूना पाया तब चुपचाप डोर और लुटिया उठाकर निकल गया बाहर पूरे रास्ते भर वासना-वृत्तों की अपरिचित आंधी का सामना किया लेकिन महीने भर बाद क्या रह पाया था वो गांव का अनजाना सभी शहद-दूध की तरह घुल उठे थे उसे लेकर फिर भी उसे भागना पड़ा था हां भागना पड़ा था ।

लुटिया डोर में ताजा पानी लाकर रखा ही था कि सुरती मैया की झगियाई कच्चे दूध की परत सी नेह भरी आंखों की तरेर मिली और पोपले मुंह की प्यार भरी फटकार कि वह क्या चुपचाप नए गवई गांव में निकल गया था और वह भी अकेला वह चलती संग तो सभी को जानकार कराती अपनी छोटी सी बेरिया और अमराई भी दिखाती लाती कहीं जंगल में राह-बाट की सही सीख भूल जाते भैया, तो कैसे क्या होता ? और भी न जाने क्या-क्या कहती रही और

छपरी के डासन म रस की बूदें झरती रही भौजी की खिडकियां भी तो ऐस ही प्यार की बूदो से ढक लती थी सुरती और भौजी ! अब समझा कि क्यो भौजी की झिडकिया वार-वार कहा करती थी कि मनोहरा ! ये दुनिया बडो खराब है पू दुखी मत हुआ कर और मत आया कर इधर बचपन की देहरी से बाहर निकलकर कोई बराबर की उमर हाथ खीच ले, कसाई भीच ले, तब ! तब 'स'दह क फाटक खोल बहुत-सी आखें झाकती हैं इन आखो का मुकाबला करने, चिढ़ाने और किस्से-कहानियो म गाढ़ा रग छिडकने म कुछ ज्यादा अच्छा लगता होगा जस कमली बहू को देखकर ठन्न विचारो की कडी टूट गई

परा के पास सुरती मैया सेर ऊपर के लोटे म चिकनाई डूबा मटठा लिए बैठी थी बीच म गोल-सफेद मक्खन की पिंडी मानो कमली बहू का मूक निवेदन पढा था या ठोस वजना यो कि वह गांव छोडकर चला जाए सुरती मैया ने बडे प्यार से जो चने की दो रोटी और भरा लोटा मटठा खिलाया पिलाया हर ग्रास के बीच कोठे म किवाडो के पीछे बाजूबद चूडियो से टकराकर मनुहार कर रहे थे कभी कभी बिछुओ की रुधी रुधी सुरमुराहट मन को गुदगुदा देती वह रोटी-मटठा खाता रहा सुरती मैया का नेह बटोरता घर का छोटा बडा सब अधिकार लेता हुआ जाने कैसे कोठे के किवाड का पर्दा भेद सीधे कमली की आखो मे उतर गया था !

कितनी विपा छिपाए पडी थी अपने मन म ! मर जाती यो ही अनकहे, अगर वह अचानक बीच म मिलकर उसे डबने से न बचा लेता वह तो सोच कर गई थी कि ऐसी भारी जिनगानी से ता गगा मया की ठण्डी गोद भली राक्षस के पल्ले मढी कब तक देह भार ढोती फिरती ! घर मे बूढी सास और बूढे मया ससुर से क्या बहल पाती मन की कोर ऐसे बेहिसाब दिना की माला उसके वश की नही थी फेरनी अब उसके आने से भला कसा घर भर मे उजास फल गया था तये पर रोटी डालने म सावन के गीत गाने को मन करता था चक्की पर दानो की जगह जसे हीरा मोती नजर आते थे वह सोचता कही इतना कह-सुन लेन पर भी वह पुरानी चाल पर ना घर छोडकर चला गया तो वह अपने गले मे ओढनी फसा लेगी तो नया जनम ले मनोहर अपने गले म उसकी ओढनी फसा कर रुका रह गया था

सुरती भया कोई काछन मालिन तो थी नही, जो यो परदेसी जवान गबरू गाव मे छिपा रह जाता ! उधर कमली की ओढ़नी म गुच्छेदार मोतियो वाला घुटीला जब और लहरान लगा और बिसाती उसके दरवाजे पर बरेली का सुरमा, मिस्सी और गोटा किनारी ज्यादा ही बेचन लगा तो गाव की चौबोलिया मुखर हो उठी सुरती मैया की अधी आखो पर तरस आने लगा घर की दीवार ढहने मे अधिक समय नही लगेगा अब ठकुराइन, वह भी चौरासी के चौहानो की भला कहा से पकड कर आग फूस पास बठाकर कैसे तसल्ली से सास ले रही है जमीन

जोरू क्या यो ही बिना खरीद परख किए आए गए के हाथो सौंपी जाती है, जो ये आन गांव, बिना जात बिरादरी का आदमी लेने की कोशिश कर रहा है ! चौपाल मे हुक्के अब कई-कई बार खाली होते और भरे जाते बडे-बूढो के कान ज्यादा पैने हो गए थे सबसे ज्यादा सांप गैहुअन लोट रहे थे जवान बहू-बेटियो पर, मरे को ये ही घर मिला था क्या बस गाव भर मे ! अरे, और क्या कम हैं ? एक नजर मार के तो देखे गोठ हसुलिया-झांझनो पर क्या बिखर बैठा है इधर आए तो देखें कैसे-कैसे रूप बिखरे पडे हैं ! क्या चलता है मरा हाथी सा ! हथेली भर तेल बदन मे छपा कैसा झटका देके जुलफ निकाले हैं, बस जी मे हल चला दवे है, री ! पायो की धमक सू धरती हालती है अब तो तरकीब ऐसी लड़े कि हमकू ना तो और कू भी ना कमली राड मे ही कौन सोने के गोखरू उग रहे हैं ! हर घर की चर्चा बन गया मनोहर पर मनोहर की तो तकदीर ही धतूरा खावे जहरी पनपी थी, जिसके नाम के साथ जुडकर नीचे से ऊपर तक वह सबकी नजरो का काटा बना हुआ था, उससे छुट-पुट हसी-मजाक करने मे भी जैसे उसके प्राण बाहर आ बैठते थे कसम धरता था वह कि उसने जी भर के मुह भी तो टकटकी लगा के नहीं देखा, कमली का ठोढी का तिल एक दिन यो दीए की रोशनी म चिलका मार गया था सो उसी दिन से कसा मन बेताब हो उठा कि फिर नजर भर देखू पर ये आखें ऐसी बेकार हैं कि ऊपर उठते-उठते गिर जाती हैं मगरू भगत ने एक बार रामलीला करवाई थी उसमे उसे पर्दा उठाना और गिराना सबसे अच्छा लगता था सो य पलकें वैसे ही गिर गिर पडती हैं उसके सामने

ये थोडा हसना-बोलना भी क्या उसके बस का रोग है ! वो तो कहो कमली हिम्मत वाली औरत है कुछ बाधकर देती है या मगाती है तो बोली मार जाती है हसी की चिकौटी दे जाती है बस जी हरा हो आता है हाथ-पैर खुल जाते है काम म उस दिन कही से आकर गांव के ऊपर बादल रुक गए सझा तक बात ही दूसरी हो गई ठडी हवा खेत म पडा अनाज उडाने लगी थी बूदें भी झर उठी थी वह कमरे से जल्दी हल लग्गी खोलने को बोला ही था कि मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई ऐसा भीगा कि चार दिन बुखार की बेहोशी मे न तन काबू मे रहा, न मन आखें जोर देने पर भी नही खुलती थी सुरती मया ने गाव के सयाने तो क्या आन गाव के हकीम वैद तक को नही छोडा ऐसी कलपती भाग रही थी जैसे इसी का जाया हो गाव के औसारो से आखें झाकतीं बहुआ की और बेटियो की दूध चाय देने के बहाने हजार फेरे काट जाती बूढिया हुक्किया घुटने पर रख सुरती मया को घडी भर पारी की चौखट पर उगठा लेती और मन की वह डालती—'अरी सुरतिया ! बादर मे टांके मत मार भैना ! पीहर सू सासरे की रुख देखते ही उमर पक गई, पर ये कौतक काऊ धी बेटी के घर नाय देखे परायो माल कुत्ता की खाल

पर इस जनम म तो तू मरी अपनी मन म हो चुकी है तन स कैस सगाई जाऊ सू, जब तन का हकदार दूसरा है और दुनिया के लोग तन के हकदार को ही जानत है उहू मन स कोई सरोकार नहीं य मैं तेरे सिर पर हाथ रखकर कह सकता हू कि तू इस जनम म मेरे मन से हटगी नहीं और कोई दूसरी आएगी नहीं मैं तो बड़ा पागल और प्यार का भूखा आदमी हूं तून मुझे जो सब कुछ ममता-प्यार दे दिया कि मैं भरपूर हो गया हूं अब मैं तेरे खालीपन को जैसा तू चाहती है कैस भरू ?'

जान कैसे कौन-सी शक्ति स प्रेरित होकर, जाने कौन-सी अबूझी लालसा और अनजानी चाह लेकर वह कमली का अपने नजदीक खींच लाया था अपने सीने पर उसका सिर झुका कर उसके बाल सहला उठा था हां हां, अच्छी तरह याद है कि उसकी भी आखें भर आई थी तभी कोठे के बराबर वाले दालान म प्याज और हल का पना नीचे गिरे थ और उसन घबराकर कमली को अलग कर दिया था अच्छी तरह छाया देखी थी उसन और पहचानी थी कोठे की भीत के सहारे सुरती मैया की छाया आग सरक गई थी उसका जी धक्क स हो गया था उसने जल्दी स कमली को उसके काठ म भेज दिया था और रात भर तड़कते सिर को दोनों हाथों म दबाए सोचता रहा था कि रे अभागिए मनोहरा ! तेरी उमर यो ही सिसकते कट जाएगी जिंदगी के तपत बालू रेत म एक बूंद ठण्डे पानी के लिए तू यो ही मारा मारा फिरता रहेगा अरे ! क्यों आता है तू किसी के आचल का प्यार मागने और आखो का अपनापन लेने ! क्या कहेगा सवेरे ? कैसे देखेगा मैया की ओर ? है कोई जवाब ? ठीक है तू पवित्र है, कमली भी ऐसी ही है लेकिन सफेद पर काला लगते क्या देर लगती है ! फिर तू लेगा क्या, कुछ भी तो नहीं है रात को सान पर अच्छा-सा सपना है, जो टूटेगा जागने पर जरूर फिर ! जाने कब नींद आ गई उसे

दोपहर म चुपचाप सूखा-सा मुह लिए सुरती आ बैठी बहुत उदास और टूटी सी उसे देखकर उसका बीमार तन काप उठा था कुछ बुरा होना है, ऐसा विश्वास उसका खून निचोड़ ले गया था तभी उसने परे की चादर ठीक कर सुरती मा बोली थी— बटवा ! पेट सू पैदा कियो ना है पर तू वासू भी ज्यादा है मेरी आखन सू कहू छिपाव ना रह्यो है दोस कौने दू ! बहू न मेरी देहरी न छोडी रूखो-सूखो खाके वा मेरे लजाऊ पूत की हर बेजा हरकत सहती रही है तोसू इस बोल के चार दिन जी खुस कर लियो है ना भया ! कछु पाप ना मानू तू धरम दार आदमी है रे तो सू कहा बुरा मानू तन बातन को बस बोलन को अमरित छिड़को है हम दोना बयरों के कलेजान म अरे ! तू तो खुद ही बिपदा का मारा है रे पर तोसू हाथ जोड़ अरज है कि मेरे हीरा स तू अब चला जा कल बुढ़ा तबाली सहर सू लौटा हैगा और बाने मेरा काया नजर हाट म घूमतो देखो है

दो-चार दिनान मे जाने वजमारौ कब आ मरै और भेडिया सौ टूट परै तापै तो धरम सू मैं तेरे परेम व्योहार म कहीं उल्टी सीधी रिस्ता रसम न कर बैठू । कहीं ऐसो न होय कि बिरादरी म ठोक्र मार और कछु ऐसी टटो न कर बैठू, जो या देहरी पै आज तक नाय भयौ निकार फैंकू कपूत कू और बहू लैके चल परू तेरे सग या फिर काऊ कू मौह ना दिखाउ कह ना सकू कछु आग तू मेरे सुभाव कू पहचान गयौ हैगो मेरे जी मे पाप-पुन कछु ना है मेरे लाल ! जो अपनौ, सोइ अपनौ और सबन मे आग दैके हालऊ न पूछे, वो कैसो अपनो । या खातर मैं तोसू परथर कौ जी करके कह रही । किन्तु अब जा न तेरे करम मे चैन न हमारे मैं तेरी बेजती न सह पाऊगी समझ रह्यौ हैन ? जिदगी मे दो घरी चैन की ले पावै तो या डोकरी क और वा फूटे करम की कमली कू याद कर लीजो छोड के चला जा भैया, हमारी मोह ममता ' कहकर कसी बिलख उठी थी सुरती मैया मुह मे ओढ़ना ठूस चली गई थी उठ कर वह पागल सा फिर बियाबान जगल मे खडा रह गया था आखो के आगे सपाट-सूने लम्ब रास्त खिंच गए थे भीतर तक गम तपता लोहा धधक गया था भौजी याद आ गई –'अरे मनोहरा ! ये दुनिया बहुत बुरी है तू नही समझेगा अब मत आया कर' सोच लिया उसी घडी कि सुरती मा को, कमली, ठाकुर घर को और अपनी पत को बचाने तुरन्त चल देगा चलना ही तो काम है उनका वह मूरख है जो रुक जाता है कमली का क्या कहेगा ! कैसे कहेगा ! सुन लेगी ! न सुने, पर कह डालूगा और मुह फेर चला जाऊगा

कमली ने एक दिन पूछने पर सब कुछ बिना हिचक बता दिया था कि कस उसे अपन फेरो वाले आदमी से नफरत हुई थी उसकी आवाज, उसके कपडे यहा तक कि उसकी छाया छू कर आई हवा तक से उसके रोगटे घृणा से सिकुड जात थे इसका कारण या ब्याही आई थी तब हा, यही तो सुनाया था उसने दारू मे चढा आता सग दो चार यार-दोस्त मा ननिहाल गई थी, बस कहता कि तू मरी ही नही, मरे यारवासा की भी है कैसे बेइज्जत करता और कराता एक दिन तो हद कर दी जब पटवारी को घर मे पीने के लिए ले आया और जोर-जबदस्ती उसे धक्का देकर उसकी मचिया पर ढकेल कर बोला था—'ले लो पटवारी जी ! ये मास का लोथ और क्या काम आएगी ! नई बोतल के साथ इस ससुरी को भी चढा जाओ सेरा बाध के अपने नाम पर दीया बारले को नही ली है सुना पटवारी तुमने, सात कलेजे ठण्डे करे वही सच्ची लुगाई लगती है अपने को अरी ओ मनाबाई यो क्यो मेरी ल्हास पै झुकी बठी है ! चल उठ हुक्का ताजा करके ला और नई डाट खोलकर पिला जरा अपन सगे पटवारी को ' कमली ने आगे बताया कि न जाने कौन चामडा उसमे भरी कि एक हाथ खीचकर अपने करम के कीडे मे मारा कि वो शराब के नशे को झोक सभाल नही पाया और गाय के रस्से मे उलझ

उसके सीगा से टकराकर औधा जा पडा उधर ज्योंही वह पटवारी की ओर बटलोई उठाकर मुडी कि वो भस की सहामनी पर पैर रख छीतरमल की छत पर जा कूदा और वहा से पिछवाडे पोखर की ओर कूद गया इस घटना ने कमली का मन चूर चूर कर दिया नाई को हाथ की पद्येली देकर गिरवी रख जो रुपये मिले उन्हे उसे देकर सास को मरे जिए की सौगध उठवाकर जैसी बैठी हो वसी हाल मे आने को कहलाकर भेजा

सुरती मा से भला क्या छिपा था ! दिल की भारी, जबदस्त, सरल और ममतालू होने के कारण बहू को अपने आचल म बेटी का प्यार दिया तो बहू के विद्रोही पाँव बडी आसानी से उस श्मशानी घर म रुक गए वरना आग वह कहा सुन पाया था उसकी बात ऐसी खरी और जहरी औरत ने कौन-सा विश्वास उस रास्ता चलते आदमी म देखा कि मन की तमाम अधेरी खिडकियाँ खोलकर मुट्ठी भर उजाले को लेने के लिए समर्पित होने को पागल हो उठी जगल जगल तपने को साथ लग लेना चाहा कितनी राख पुत गई थी उसका आखो की पुतलियो पर जब उसने उस गाव को उस घर को छोडने की बात कही थी वह एक बार तो डर ही गया था उसकी हालत देख लग रहा था जैसे खेती पर पाले की परत जम गई है या चिकनी धरती की देह पर भूचाल ढह पडा है भोली हिरनी की फटी आखो से गूगी बनी केवल देखती रह गई कुछ बोलना चाह रही थी क्या बोलती जाने ? क्या कहती कहा दिया था निर्मोही ने उस समय ? चल ही तो पडा था धागा तोड कर तकली मे कुछ उलझकर झटका दे कठ और कच्चा पक्का सूत खच्च से टूट जाए बस ऐसे ही तो भागा था वह कोठे के बीच आचल फलाए उस कमली की आत्मा चीत्कार करती रह गई थी कि आधा पाव छटाक ये प्यार का सौदा लेकर, छीन कर मत भागो लौट आओ, पर कहा रुका था वो आचल या ही रीता रीता रह गया था यह बडा अभागा है दुर्भागी है कमबख्त है नही तो क्या कमली या ही बिलखता आचल फैलाए नेह की भीख मागती रह जाती ! नही मनोहर तेरे म किसी का बनकर रहने की कूवत नही तू कभी किसी की खुशी हरी नही कर सकता तेरी बडी मनहूस छाया है जहा जाएगा, वही तू धतूरा बनके खा डालगा सबको तभी तो भाभी कहा करती थी कि य निपूता कलमुहा जिस दिन अपनी मनहूस खोपडी लकर बाहर निकलगा, उस दिन इस घर की रूरानी लौटेगी पता भाभी के घर की रूरानी लौटी या इस मलबे क नीच मटियामट हो गई लकिन यह बावडा जहा भी अपना उधार रिश्ता जोडने बैठा और हसी की अकाली रेखा तनिक भी आठो की देहरी पर खिची कि वही मनहूसियत की काली परछाई ने निगल लिया

कमली को मन म छिपाए कहा-कहाँ वह चिता की तरह धू धू करता मारा

मारा फिरता रहा भागता रहा सारा दिमाग खो बैठा जाने कितने गांव, नदी नाले पार करता रहा। दम्मू हलवाई की दूकान पर जब वह चाय पी रहा था न जाने कैसे दूर जाते पीली कमीज वाले आदमी को पहचान लिया था लगा था कि सुरती मैया की गाय खोलने वाला है आज भी वह घटना ताजी-सी लगती है अधूरी चाय छोड़कर वह बेतहाशा दौड़ पड़ा था और पहचान लिया था कि वही है उसने भी उसे पहचान लिया था ऐसी खुशी हुई जैसे बहुत दिनों की खोई चीज अचानक मिल जाए। वह बोला था कि गाव मे कमली भौजाई मरने को खाट से लगी पड़ी है जाने कहां उसके प्राण अटके हैं। अब भला कहने में क्या लाज है कि जब से वह वहा आया था जाने क्या दीमक-सा चाट गया कमली भौजाई की काया को कि न खाती रही, न पीती रही बस यो ही दिनोदिन खाट पकड़ती गई उसके आदमी ने क्या कम जुल्म ढाए, जब गांव वालो से पता लगा कि जादू की किनकी डाल के कोई परदेसी घर मे बहुत दिन ठहरा रहा था सुरती मैया एकदम बुढा गई है हाड़ो की माला रह गई है बेटे का जानलेवा क्लेश अलग और सोने की डली सी बहू का गलना अलग घर की पूरी रूहानी ही बदल गई है

वह तो कहकर चला गया, पर वह सिर पर कफन बांध फिर भागा था उसी गाव की ओर, जिसे एक बार सुरती मां की खातिर छोड़ आया था कमली पर क्या गुजरी थी इसे भला उसके अलावा कौन जानता था। रात की शुरूआत थी दीये जल चुके थे जब उसने पौली म सुरती मां को आवाज दी थी पूरे घर म मौत का सा सन्नाटा था उसकी आवाज पर सफेद-काले बालो का जाल छितराए काले चौड़े हाड़ का एक आदमी खासता हुआ ढिबरी लिए आगे आया था वह उसे नही पहचान सका उसी आदमी ने कहा कि वह हरगोविंदा था जो कमली की मौत का सच्चा दावेदार-हकदार था साक्षात यम था कही भी उस आदमी मे सफाई और हयादारी उसे नजर नही आ रही थी तभी उबार लिया था बाहर से लाठी टेकती आ रही सुरती मैया ने, जिसने आते ही उसे हिलक कर भर लिया था बांहो मे खूब साफ अब भी याद है कि 'बेटा मनोहर' सुनते ही उस आदमी की आखें और सिकुड़ गई थीं और सफेद-काले बालो से ढके माथे पर पड़ी लकीरें गहरी हो उठी थी बिना बोले वह आगे-आगे भीतर की ओर चल पड़ा था और सुरती मां आखो मे आसू भरे उसे लेकर कोठे म सीधी चली गई थी जमीन पर दरी के ऊपर कमली पड़ी थी एकदम कमजोर शरीर ऐसा निचुड़ गया था जैसे रस निकली गन्ने की पोरी हो बदन हाथ-पाव सरकंडे की डार से पड़े थे और चेहरे का पूरा रग उड गया था सुरती मा ने धीरे-से कमली के कान म उसका नाम लिया, पर सीपी-सी बद आखें न हिली न खुली। रात के आधे पहर म उसने पानी मागा और भरी भरी आखो मे जीवन की पूरी ताकत भर कर उसी की ओर देखती रही वह भी

अपना पराया भूल वहीं खाट से लगी पड़ी पीढ़ी पर बैठकर उसे मुह फाड़े देखता रहा कहा था वो रसभरा गदराया शरीर और हसी से पके गढ़ा वाला चेहरा ! एक गलत पुरुष क्या सवहारा नारी को यो मरोड कर रख सकता है ? रख ही सकता है शायद, तभी तो कमली साक्षात इस सवाल का जवाब बनी पड़ी थी

जान व्ह क्या सोचे जा रहा था कि दोनो हाथा मे कपन हुआ और कठिनाई से बढ़कर व मेरे घुटन तक आए, फिर माथे तक चले गए तभी हुक्के की नली मुह मे दाब हरगोविंदा अदर आया और व्यथ ही इधर उधर कपडा-हाडिया की धरा उठाई कर बाहर चला गया उस रात कमली को जैसे बड़ा चन मिला और वह भर नीद सोई चेहरे पर बडी शाति और आखा मे मीठ सपना को सहलाए आराम से वह सोई वह बिना खाए पिए यो ही बैठा रहा पाटी से लगा गाव कुछ भी कह ले और य हरगोविंदा पीछे स आकर कुल्हाड़ी मार द चाह, लेकिन न वह अब यहाँ से उठेगा, न ही जायेगा क्यो जाए ? क्या बाहरी रिश्ता ही अपना है और आत्मा का बधन जैसे कुछ है ही नहीं ! वह परवाह किसी की करे तो क्या ? कौन उसे दुख सुख मे सभालने आया था ? किसका दबैल है वह ! कमली न य सब मान मानकर अपना ढेर कर लिया कौन उसकी पीर बाटने आगे आया नहीं वह फैसला कर बैठ गया था कि जाना तो उस अब भी है, लेकिन कमली की जिंदगानी वापिस दिलाकर ही वह जाएगा

सुबह जैसे ही तारा की छाया फीकी पड़ी और चिडिया चहचहाई कि कमली की आखें उलटने लगी सासें लबी-लबी हो गइ और हाथ पैर ऐंठने लगे वह घबरा कर पीढी से उठकर बाहर भागा और सुरती मा को जगा लाया और कमली के पास बैठा जल्दी-जल्दी उसके हाथ-पर मलने लगा घण्टा भर की मसलाई के बाद उसन धीरे से आखें खोली और लगातार उसी की ओर देखती रही वह कभी उसक सिर को और कभी उसके परो को दबा रहा था कमली की दोना आखो के कोरों से आसुओ की धारा तकिय को भिगा रही थी दीय की फीकी लौ मे उसका आखा की पुतलियाँ और अधिक डूबी सी लग रही थी थकी-थकी सी नजर जैसे बिदाई के समय अपने प्रिय का सपूण रूप आखा की पिटारी मे बद कर ले जाना चाह रही थी

कमली की ओर दखते देखत उसका मन चीत्कार कर उठा वह सोचने लगा कि य कौन से जन्म की इकट्ठी की हुई निष्ठा है ! आकर देख लें गाँव वाले और दखलें आसमानी दवता कि किस सती, व्रती नारी से कम है कमली के चेहरे की पवित्रता सारे उसूला मे उतार लें इसे और देख लें कि अच्छे धर्म की ऊची उठान को छून म कमली किसी भी पतिव्रता स कहाँ पीछे है ! इन बुझती गहरी आंखो क अतल म डूबकर दख ले कोई भी किसी कल्पना के नहीं, बल्कि

सचाई, प्यार और त्याग के कितने बेशकीमती मोती छिपे पड़े हैं इन बंद, मूक अधरों पर कितना बड़ा अडिग विश्वास फैला है। क्या कारण है कि इतने बड़े निश्छल प्रेम के प्रति घर और बाहर का इतना क्रूर परिहास कि ताजा हाड मास देखते-देखते यों पंजर होकर विदा होने पर मजबूर हो जाए। वह सोच सोच कर पागल हुआ जा रहा था कि जब वह चला गया था तब न जाने कितनी बोलियां इसे सुननी पड़ी होंगी। कितने असहनीय कटाक्षों का सामना करना पड़ा होगा बिटौरों पर, पनघट पर, घूंघटों की फांकों से होने वाले इशारों को देखकर कितनी अंत-व्यथा भीतर ही भीतर भोगकर यह टूटी होगी। अकेले चुपचाप ही मथा होगा इसने अपने आपको और था ही इसके पास कौन जिससे कुछ कहकर गंदे पानी के बहाव को थोड़ा काट पाती क्या सहा होगा। किसी से पूछने की जरूरत कहां है? जो है सो सामने बिखरा पड़ा है दीये की लौ जैसे आखिरी बार तेजी से भभक मारती है, इसी तरह थोड़ा बोलकर उसने इशारा किया कि वह करवट लेना चाहती है अपनी ओर मुंह करके उसने उसकी इच्छा पूरी की देही की पूरी ताकत को एकबारगी समेट कर वह बोली वही तो आखिरी शब्द थे एकदम खुले उघड़े कहा था—'सुनोजी! सभी ने बुरा कहा अब तक अच्छा बोला को हिया पलभर के लिए भी न पुलका सका मन पुलकने को तरसा ही किया, पर तुम मेरे लिए सब की तरह मत सोचना बुरा कह लो चाहे नाटक-दंगल नाची पतुरिया समझ लो, पर जाते हुए कहने में मुझे लाज नहीं कि अपने मन का पूरा देना लेना तुम्हें दे बैठी मिले अगले जनम में नरक तो मिले! सच कहने में अब क्या। जब तुम चले गए, गली-खेत लुट से गए काम-काज में अपने को बहला न सकी यों मेरा मन अच्छी तरह जानता था कि जिसके परों में अपने को रख चुकी वह भी मुझे किसी न किसी ढंग से मान चुका बस जी, इतनी तसल्ली क्या कम है! बचूंगी नहीं, सो मन छोटा मत करना मुझे पराई औरत मत समझो, सो इतना भला कर दो कभी तुमसे एक बात चाही थी, पर तुम फैला आंचल छोड़कर चले गए थे आज मेरी बात माननी ही पड़ेगी, देखो मेरी चौतई के नीचे बड़ी संभारकर रखी एक पुड़िया है, निकाल कर एक चुटकी इस ठुकराई वीरान मांग में भर दो वक्त कम है जी जल्दी करो मैं बड़ी थक गई सो भर दो चैन से जा पाऊं, ये मन है मेरा ' और कमली आंखें बंद कर निढाल पड़ गई मैंने जल्दी से पुड़िया निकाली और बड़ी गहरी मांग भर डाली एक टिकुली भी माथे पर सजा दी डर नहीं लगा, बल्कि लगा कि इतनी उमर की बस यही तो कमाई की थी पाप-पुण्य तोलें तोलने वाले, उसे तो उसी दिन सब मिल गया था सगाई भी और ब्याह भी उसने दोनों रचा डाले इस क्षण

मांग में सिंदूर की बुरकी पड़ते ही उसके चेहरे पर न कहने वाला सुख छा गया बरौनियां खुशी से कांप रही थीं रुलाई शायद सुख की थी, रोकने में उसके

आठ पर्रा रहे थे कमजोर शरीर आराम से चित हो गया एक प्यास जो तन जलाए डाल रही थी, जैसे अथाह जल पाकर शांत हो गई यही भूख होती है क्या मन की, उसी दिन समझा बड़ी देर तक उसे देखता रहा इस इंतजार में कि प्यार से भरी आंखों की ज्योति शायद अब जीवन का कोई संदेश दे जाए लेकिन जब संदेह बढ़ा कि आंखें खुल क्या नहीं पा रही, तो जी धक्क से रह गया कि वहां नाड़ी-नेत्र चिर व्यापी थकान से बेआवाज तो नहीं हो गए हैं मन का दुख कराहता कराहता मुक्ति पा गया था पिंजर में बंद दुखियारा जी अब कैद नहीं था, आजाद हो गया था आंठों पर परम शांति थी, जैसे के वह रह रहा कि प्रिय का हाथ माथे पर हो तब ऐसा सदा के लिए सो जाना बड़ा अच्छा लगता है

वह भूल गया अपनी उम्र, भूल गया अपना रिश्ता और भूल गया गांव वाला बस चीत्कार कर उठा उस बेजान सीने पर सिर पटक कर मन का कोना कोना हहरा उठा राम रोम कमली कमली चीख उठा वसलोचन कूटती-कूटती सुरती मां दौड़ी आई और दहाड़ मारकर ढुलक गई जवान लाश पर

कहां टिका वो, एकदम बाहर भागा कुएं की जगत तक जाते-जाते सोचा कि क्या बिना कंधा दिए भागने की सोच रहा था लौट पड़ा एक बार फिर भीतर कोलाहल को दबाकर, आर्तनाद का मुंह भींचकर चल दिया अर्थी को सहारा देकर जिंदगी की पहेली, एकदम अपनी चिता को दहका कर जैसे बची खुची जिंदगी को भून डाला दो डोल पानी कुएं पर डालकर जब छप्पर में आया तब देखा जो आज भी याद है कि कमली का-सुहाग मुंह में अंगोछा ठूंसे फूट फूटकर मरने वाली के माठे के दरवाजे में खड़ा रो रहा था वह रो तो लिया, लेकिन वो तो बिलखकर रो भी नहीं सका था तब

वह कहां टिका था फिर यहां अब तो खेल ही खत्म हो चुका था सुरती मां के सिर पर हाथ छुआ भर सका था कुछ भी कहने को नहीं था भाग चला यों ही भटकने के लिए आंखें अंगार हो रही थीं हाथ पैरों पर धूल जम गई थी और सिर के बाल उलझकर माथे पर आ गिरे थे रात दिन उसके मन में यही चिता सुलगती रहती, जिसे अपने हाथों जलाकर आया था

नियति पर उसी दिन विश्वास हुआ जब उस गांव का आदमी कैसे और कहां उससे टकरा गया था, वरना कमली या हो एक छोटी सी लालसा लेकर मर जाती एक ही रटन, एक ही घुलन लिए वह गांव गांव खूंदता रौंदता डोला कि अचानक मन ठान बैठा कि उसकी भी सांस ज्यादा नहीं चलनी सो एक बार बस एक बार अपना घर अपना गांव और वह पेड़ देख जिसके सदा जाने कितना मीठा खट्टा घुला पड़ा है देख आए बस फिर कहीं भी किसी भी गांव-जंगल में उसकी टूटी-थोथी काया बिखर जाए मन में कसक नहीं रहेगी तो यो सोच अब इतने

दिन बाद अपने गाव आया, सो इधर भी क्या मिला सिवा विषा मे

ओह ! एक झटके से उसने अपने को सभाला अरे मनोहर ! क्या-क्या सोच गया तू आज ? कितने ताने बाने बुन लिए बैठे बठे क्या जरूरत थी यो मन के खुरण्ट को खुरचने की ! इनमे कौन सब कुलबुला रहा है ये तो बडी भयानक यादें हैं जो उसे जिंदा ही मुर्दा बनाए हैं, जिनसे मौत ही छुडा सकती है तू पागल हो जाएगा भौजी जेल गई कमली राम के यहा जा ठहरी और तू लोहे के सीखचो के पीछे दीवारो से सिर फोडेगा मत सोचा कर ये सब पर क्या वह जानकर खोलता है ये पर्दे हर समय धुआ सा उसके दिमाग पर छाया रहता है आँखो मे मेला सा घूमता है नही नही दुपहर ढल गई है, चल उठ खडा हो नही तो सिर की सारी नसें तडतडा कर टूट जाएगी कमली की अर्थी को कधा तो मिल गया, तेरी मिट्टी को कौन उठाएगा ! आन गाम मरने पर तसल्ली तो होगी, पर यहा तो अपने पर काबू रखना ना, कुछ नही सोचना अब

सब कुछ झटककर गमछा कधे पर डाल पैरो मे दु ख-सुख की साथिन प हई पहन घर से बाहर गया था सांझ घिर रही थी दूर पर कोई अलगोजा बजा रहा था, जिसकी तान मे पुराने दिन घुल उठे थे पछुआ हवा से खेतो की गध उड रही थी चारो ओर घास की, गोबर की, चारे की और माटी की खुशबू जैसे हाथ पकड-पकड कर उसे अपने से एकाकार कर रही थी

वह चौडा दगडा छोड छोटी पगडडी पर हो लिया आगे चलते ही कीकर और नीम के पड जैसे उसे अपने पास बुलाने लगे, पर कब तक वह जो अब इनकी बाहो में समाएगा कुछ भी हो, गाव ने करवट तो ले ली, अचानक उसने सोचा यहाँ था पचायत घर और वह छोटा सा पीला डाक बगला उधर नहर के पुल पर खाद घर और बीजघर पहले कहा थे अब कम से कम बेचारो को अच्छी खाद और अच्छे बीज तो मिलते हैं, वरना क्या उसने वो दिन नही देखे कि एक बोरी बीज के लिए हरिया और जगा कितना गिडगिडाते फिरा करते थे ! घर भी पक्के हो गए हैं महाजन का अगूठा अब कहां इनकी गदनो पर है ! सभी तो खा पी रहे हैं औरतें हसुली और कठला गढाने को तरस जाती थी गगो चाची बेचारी बुढिया हो गई, पर कानो के चाँदी के कटकालिया जिंदगी भर नही गढा पाई और वो भगवती की मा गिलट के बिछिया लच्छे पहन कर ही ब्याह सगाई मे जाती रही अब तो चाँदी छोड सो ! के गहने भी खूब हाथ पाँव चमका रहे हैं दस-बीस पढे लिखे भी गाँव मे बस रहे हैं सब ठीक ठाक है सुधरी तो सही इनकी गत पर फिर सोचा इसम क्या होता है ! एक तरफ सभले हैं तो दूसरी ओर जाने कहाँ से उल्टी हवाए भी ले आए कि खाई बना-बना कर खुद ही गिर रहे हैं शहरीपन जाने कसे इनके घर गलियारो मे खिचा आ रहा है ! भोले-भाले मन और ऊपर से शहरी

छुअन भला बचेंगे ये लोग।

जान कितने गावों मे होकर आया जहाँ धरती काच सी टुकड़ा म फटी बिखरी पड़ी है पानी नही, चारा नही, कपड़ा नही ऊपर से तरह-तरह की बीमारियाँ फिर भी चोरियाँ, डकैती लूटमार और बेईमानी इनके अंदर आ बसी है चारे के गल्ले के गल्ले गायब दियासलाई क्या छोटी सी चीज लेकिन बड़ी जरूरत की चीज इसे भी पूरे ठीक दामो म नही दुगुने दामो म बेचा गया जो गाँव ठीक है वहा भी क्या कम बेईमानी है। खूब मिलावट और दूसरे का हड़पना सीख रहे हैं पर इसम इन बेचारो का क्या कसूर। गाँवो म जहर मिला जो दिया है। चक्कर काटता हुआ वह पछाह वाली बस्ती मे निकल आया छप्परो की दरारो से धुआ उठ रहा था रोटियो और मक्का के दलिये की सोंधी सुगंध हवा में तैर रही थी एक कच्चे चूल्हे पर बैठा एक लड़का गुड़ की डली से गेहू की उबली कौंमरी खा रहा था उसस पूछा कि यह किसका लड़का पोता है पता चला नौरग का अरे, नौरग की चौपाल म वह जाने कितनी दुपहरियो मे अप्टा चदा और कबड उछाल चला है। नौरग ताऊ कितना प्यार करते थे उसे और चुपचाप शक्कर की मोटी मोटी डलियाँ पानी म डाल सत्तू घोल कर भरपेट पिलाते थे पर य क्या जाने कि वह कौन है। फिर भी कहीं से प्यार का उफान आता है और वह बच्चे को प्यार करता है थोड़ी सी कौमरी अपने मुह मे डालता है आगे बढ़कर फिर पीछे नही देखता गले म कुछ गीला गीला सा अटकने लगता है

सामने कुइया के किनारे कच्ची पक्की चौपाल पर गाढे की मिरजई पहने गदी पहलवान चाचा हथेलिया के बीच चूना तबाकू फटकारते मिले मन जुड़ा आया आँखें बिना बात भर आईं पास जाके जुहार की तो पहलवान चाचा ने धुँधियाई आँखो मे जमान भर का लाड भर कर पास बठाया और हजारो बातें करन कू बा" कहने लगे— अरे लल्ला अबकी और जबकी बातन मे बड़ो हेर फेर है गया है ससुर जाने कौन कीमत पै बेमाता टमकोरा मारिके बैठी कि सब खेतन को चकबदी है गई अब एक कोनो लेके परे रहो नही तो तू देखे हैगो कसो फासलो हुआ करे हो। कोऊ सार नहर के पार हतै तो कोऊ पीपर वाले खाले मे कबऊ हल जोर जा रहे हेंग मिलक गाँव तो कबऊ घुमाइ लग अब धरे रहो एकई मेंड़ सू बंधे अरे भया नहर सोर कौन सी चादी उगल हेगी। सिर फुटाइ अलग है जावगो है नाय तो पहले रहट चलाई और मनमौजी काट लया पानी हाँ हाँ लल्लू फसल चोखी है जाव हेगी पर भया अब जुआ मदक और गाजे को जोर का कम हैगो जाए देखो लगा रहो हैगा दम तोकू दीख रहो हैगो कि का एकऊ गबरू ज्वान पाँच हाथ को। सगरे ससुर हाड बिगराए कमर झुकाए फिर रहे हैंग नाय तो पहले सार जमीन दहले हेगी जब चले हो आदमी बस रहन दे भया। जसो चल रहो हैगो चलन

दे हमारी यहा, पुरानो चामर है, आंखन मे खून तैर जावे है जब घी मे और दूध मे कूडो ककट मिलतो देखे हैं तू अब याँ सूँ कही मत जाइयो घर को ठान सौ-सौ सुखन को मूल है' वह कुछ न कहकर चुपचाप उठ गया था वहाँ से मन सब कुछ अपने आप जान रहा था चाचा भला क्या समझाते

चलते चलते उसने देखा कि सहदेवा के घर के सामने भग छन रही थी साथ ही सलाह चल रही थी कि निमाई काका के बेटो की धरती का तिकोना टुकडा कैसे हजम किया जाए करना जरूर है चाहे इसके लिए थाना कचहरी ही क्यो न देखनी परे अरे जब पटवारी कू हरा पत्ता चटा के मूरी सिंह की राड की धरती लै ली तो ये बेचारे कौन खेत की मूरी हैं बस थोडो मसा पानी जुटानो पडेगी, सो कौन हम भूखे मर रहे हैं !

उसका मन घृणा से भर उठा यह वही सहदेवा है जिसके बाप के यहाँ सात बार कुडकी आई जो जनम भर हल बैल नही जोत सका और दूसरो के यहा अध-बटाई पर दाने जुटाता रहा पुलिस-थाना तो क्या, जिसके पास रात की रोटी के बाद सवेरे के दानों का भी अकाल था, जिसने पूरे जाडे एक बार सकरकदी उबाल-उबाल कर कुनबा जिलाया था आज हवा कितनी बदल गई हैं कि उसी का सह-देवा थान-कोनवाली तक का दम रखता है

वह साफ देख रहा था गाँव के लोगो की नीयत को पहले अपने खेतो की फसल पर नजरें गोडे किसान तसल्ली और सतोष से बैठा रहता था आज तो जसे ही सुपारी से दाने फूटे नही और पीली हल्दी सी खेती चटखी नहीं कि भूखे भेडिये की तरह दूसरा की फसल पर आँखें गड जाती हैं इसमे चाहे आदमी काम आ जाए, रिश्तो मे फांस पड जाए दो चार जवान बेटो-जमाइयो के सिर फट जाए, पर मन की मरोर कम तभी होती है, जब अपना बचा रहे और पडोसी का खेत तबाह हो जाए या औने पौने मे बह जाए

गाँव की लीको पर जब तक बैलगाडिया और सडे चलते थे, तब तक मन दरिया थे ऊच नीच का ख्याल था, लेकिन गद उडाती जीपें क्या यहाँ आ गई वोट लेने के लिए लबे हाथ इधर क्या बढे कि इन माटी के बेटों का धम, चैन और भोलापन छीन ले गए पहले सूद दर सूद ब्याज चढता था कर्ज का जानलेवा जुआ बाबा-दादा से लेकर पोतो पडपोतो तक चलता था , फिर भी ईमानदारी की जड पर कुल्हाडा नही चलता था लेकिन अब तो दातो के बीच जीभ जैसी हालत गावा की है पटुआ तेली से लेकर चौधरी ठाकुर तक पाँचों घी मे डुबोये दूसरो को चोट देने की ताक मे रहते हैं हाकिम-हुक्काम राजी, तो काजी बनने मे क्या अबेर होती है, ये ख्याल इन भोले भाले प्राणियो मे जाने क्यो भर गया है ! पहने बोल की कीमत थी बोली गिरी कि टोपी गिरी अब दिन मे बीस बोल बद-

सते हैं पर आँख भी नीची नहीं होती क्या कम बरकत थी पहले चिथरों और मुट्ठी भर मोटे झोटे अनाज म ! आज इतना होने पर भी अकाल भुखमरी मह फाडे निगले जा रही है वह अब गनेसीराम की हवेली के पीछे निकल आया था गाँव मे दीये जल रहे थे और कई जगह बिजली जगमगा रही थी जान कोई त्योहार या व्रत रहा होगा जो सामने से थाली म बाती-दीया सजोये कुछ औरतें जाती मिली उसे हँसी आई क्या रखा है धरम-करम म ! अतर तो पहले ही कर डाला है मुह मे रामनाम की माला फेर कर पीठ म छुरा भोंकने म पूजा का प्रसाद लिया जाए तो समझ नहीं आती ऐसी क्रिया

उसने नींद लेने की कोशिश की लेकिन कीडे से दिमाग म चक्कर काट रह थे नीचे कोने वाली गली मे बोल चाल सुनी उसने कान दिया तो लगा कुछ लोग बहस कर रहे थ कौन हैं ये लोग ! क्या बात है ! वह दूसरी मुडेर पर जाकर झुक पडा देखा नाइयो की बैठक जुडी थी कल दिन म ही पता लग गया था कि सावे ब्याह ज्योनार और कनछिन्न मुडन आदि पर इस वग ने झूठन उठाने से इकार कर दिया था इनका सघ बन गया है जो एकाकर इस बात को गाव में कह चुका है कि वे लोग सिफ हजामत बनाएगे बस इससे आग का काम वे लोग नही करेंगे अगर उन्ह मजबूर किया जाएगा तो मिल कर सब हजामत की भी हडताल कर देंगे

उसने देखा कि गाव के मुखियाजी का लडका शिवकुमार उनका लीडर बना उन्हें कुछ समझा रहा था जिसे सब बडे ध्यान से सुन रहे थे शिवकुमार ही गाव का सबसे ज्यादा पढा लिखा और कानून की जानकारी रखने वाला लडका था उसे इस बात से तसल्ली मिली कि चलो गाव की नीच समझी जाने वाली जातिया अपना अधिकार लेना तो जान गई हैं ये लोग भी आदमी हैं, जानवर नहीं काम की प्रशसा तो दूर रही उल्टे उन्ह नीचे तबक का मानकर जब तब शर्मिंदा करना नहीं भूलते थ ऊँचे कहलाने वाल लोग उसे अच्छी तरह याद है कि जब माई का सिर धोन जावो नाइन आती थी तब उसे सब काकी कहते थे एक कोलन थी मुखिया आखा से कम दिखता था लाठी मुडवाती सवेरे ही आ जाती और सारे पौहो का गोबर कूडा सकेर कर कड थापती बदल म दो रोटी बेझड की और हाडी भर छाछ लेती सब नानी कहते थे खेत की कटाई निकाई और कपास बीनने को जितने कमरे मिलत सबको नजदीकी रिश्ते से जोडकर बोला जाता था गोस मनिहारिन चूडिया पहनान आती तो गली म शोर मच जाता कि बुआ आ गई कितने प्यार से घर भर की बच्चियो से बोलती थी मना करने पर भी उन्हे चूडिया पहनाती घटा भर घर भीतर बैठ कर बतियाती तब जाकर झोली म जो चना दाल सुहागिनो को बलया देती जाती उससे मखौल किया करती थी बमती चाची और

गौस भी उसे हट-सा करती तू क्यों यो चुपचाप बैठा ताक रहा है। तेरी बहू को भी इन्द्रधनुषी लहरिया पहनाऊंगी जब काम किया करेगी तब देखना मैं सो लिछमी जैसी दमकेगी यहां आने के दूसरे दिन गया था उनसे मिलने लेकिन दरवाजे पर ही मूज बटते शकूर मियां मिले एकदम बूढ़े रस्सों की तरह खाल की जेवड़ियां सी बटे हुए दुआ-सलाम की तो भी नहीं पहचान पाए जब गौस मनिहारिन के पास खेलने को आने वाले टेढ़े नीम वाले मामा के भाजे का हवाला दिया, तब जा कर शकूर मियां के जहन के जंग लगे किवाड़ खुले और मूंज के तिनकों में उलझे हाथ उसकी आंख नाक-ठोढ़ी पर हजार-हजार बार दौड़ गए जहां बैठे थे वहां धूप था चितकबरा लपका पीपल से छना पड़ा था, सो उसे मढ़ के भीतर ले गए

घर इनका भी ढेर हो गया था, वैसे मैंड़ी ही साबुत बची थी उसकी आंखें चारों तरफ टटोल रही थीं कि कहां है वह बड़ी सी बकसानुमा मारकीन की पोटली, जिसमें गौस ताई इन्द्रधनुषी लहरिया वाली चूड़ियां उसकी महरिया के लिए सौगात के रूप में रख गई होगी। पर वहां सिलवर के बदने और दो चार हांडिया के अलावा क्या पूंजी थी! एक आटा सनी कठौती बाहर दीवार से लगी धरी थी पूछा उसने कि कहां गए उनके दोनों लड़के, जो बचपन में उसके साथ खेले थे? कहां है गौस ताई? अकेले कैसे बैठे हो? इस पर कण्ठ में अटका बलगम दीवार के कोने में पड़े रस्सी के पुराने झोगे पर थूक कर वह बोले—'अरे मुन्ने मियां! क्या करोगे पूछ कर! अब तुम्हें यहां चूड़ी का एक टूटा टुकड़ा भी नहीं मिलेगा गौस के साथ ही घर भी अल्लामियां ने गारत कर दिया खानदानी कमाई की नाक काट कर बड़ा इमाम वही मुआ, जो तुम्हारे साथ कई बार इमली और आमों की चोरी पर पल्लन खां से पिटा था हां, वही वही वो शहर की चिमनियों के धुंओं में खिंच गया गांव में पला खेला-खाया, पर शहर की नजाकत को नथुनों में बसा कर गांव का जीवन न गुजार सका सो लोटा धुरी बांध ऐसा गया मजदूरी पर कि आज हमें ही पता नहीं कि कहां करमों की धूनी जलाए बैठा है छोटा था जरा घर की नजर रखने वाला रसूला ना' उसे तुम नहीं पहचान पाओगे जोर मारो तो याद करो जो गौस के झोलों उठाते ही खेल के बहाने अल्लामारे सबके की मुर्गियों की गर्दन मरोड़ डालता था वही वह रसूला भी नई रोशनी के बहकावे में आके अपने को रही कर बैठा खैर इतना दिल का खोटा नहीं निकला पास ही गन्ने की मिल में मिस्त्री है हर हफ्ता या महीना आठ रकम हथेली प रख जावे है ब्याह निकाह के नाम पे कूदे है कहे है अब्बा, हम मजूर आदमी कहां से खिलाएंगे नए पेट को! जाने क्या बन गया है कमूनस्ट जैसा ही कुछ कहे हैं नाम से उसके साथी उसे अब जो है सो वही है यहां तो मैं और बूढ़ी खाला सकीना पड़े रहे हैं उस खाला के हाथ-गोड़ सम्भालने में लगा रहूं दो जून सालन पका चपातियां तो दे देवे हैं उससे

भी नही तो हाथ धो लूगा बस भैया ! अब तो रहोगे न ? ना मेरे बचव ! कहीं मत आना गाव म एसी कई लाइलाज बीमारियाँ बढ़ती जाएगी अब तो खुली आखो वाले तुम जस ही नौजवानो का यहा काम है वे य लुच्चागिरी खतम करें, जो हम इधर-उधर से उधार ले आवें हैं और बिना सोचे-समझे अपना प ही आजमाने लगे हैं ' शकूर मियाँ गदन हिला हिला कर कहे जा रहे थे और उसकी आखें घर के कोनो मे जान कौन-कौन सी यादो के गट्ठर बाध रही थी उठ बैठा था वह कर कि देखो बाबा, सोचा नही, रुकू या जाऊ ! और वह निकल आया सरटि से बाहर सब तरफ नये चेहरे एक ऐसी अजनबी मुस्कान फेंकते कि और भी पराये हो उठते अपना ही गाव लेकिन कितना पराया सा अजनबी सा आसमान—धरती सब बदले-बदले हो उठे उसके लिए

रात से हरारत बढ रही थी सिर मे भयकर तनाव था हकीम जी की ओर चल पडा यो ही चार पाच शीशियो को लिए बैठे चबूतरी झाड रहे थे इनके पास रोज आके बठता था वह बात पते की और ध्यान से करते थे वही उनकी झडी बुहरी चबूतरी के किनारे आके लेट गया उन्होन पुडिया दनी चाही उनका दावा है कि पानी क घूट से उनकी दुकान की जो दवा फाक ले वह जवान पाडा हो जाए उसने उनसे दिल्लगी की कि तब तो हकीम काका ! गाव के सभी बूढो की गदन पकड पकड कर सटका दो इन्हें सुनकर हकीमजी ताना मारकर बोले उससे कि, वह पगलाई बातें करता है भला इन मुर्दाओ के लिए हैं क्या ये सजीवन गुटके ? भैया ! महगाई ने इनकी नसा को पहले ही निचोड लिया है दवाई कहा जाके घुलेगी गाय भस तो अब भी हैं सबका दूध बाजार जाके शहर के पानी मे मिल जाता है घी दूसरो को और अपने को क्या खिलाएगे ! उसकी असलियत ही भूल गए हैं पहले आधी खुराक तो आदमी दिल फाड हसी के कहकहो की लेता था अब वह इतने दिन से खुद ही देख रहा है सुनाई देते हैं हसी के ठहाके ? सबो के जसे मुह सी दिए है ठहाक लगाए कहा से, तीन पाच का चक्कर क्या कम चल रहा है ! आ मनोरा बेटा ! पहले आदमी को या तो मौत आया करती थी या शेर चीता खा लेता था पर अब वो तो खाने लग जगली फल इधर आदमी आदमी को चबा चबा कर रस लेकर खा रहा है झूठ कह रहा हू क्या ?' आखें मूद कर सुनता रहा हकीम जी के प्रलाप का जो कही न कही एकदम सच से टकराता था आनद आता था उनकी बेलाग बातो मे

चुपचाप एक वकील कर दिया है, जो भौजी के लिए कुछ कर सके सारी बातें नए सिरे से लिखा दी हैं ताऊ का बेटा सदेह मे घुला जा रहा था कि जमीन का बालिश्त भर का टुकडा शायद मैं छीनने आ गया हू सो उसका भी निबटारा कर दिया है कौन लेगा जमीन और कौन रहेगा वहा ? फूटे कोठे की अपील पर बैठा

बहुत थक टूट चुका हू जाने क्या इस कोठे की चौखट पर आ बैठता है वह क्यो देखता रहता है दूसरी चौखट पर चिपकी काँच की टुकडियो को ? क्या है अब इन मे ! नही बहुत कुछ है वह मुह से बोल नही सकता और ये घर यहा का लम्बा बीता जीवन और पेंठ से लाई टिकुलियाँ जाने कितनी कहानियाँ सुनाती हैं हसती हैं चिढ़ाती हैं उसे

भाईयो ने पूरी जमीन पा ली है, फिर भी सोभा बनिए की दूकान पर कूक रहे थे कि क्या पता इस आधे पागल का, जाने कब मार गडासा ले ले सारो की सारी, तो कौन राह घूर फाकन को बचेगी ! सोभा बनिए के बेटे गिरिराज के मुह से य सुनकर लगा कि इन्हीं पुरानी कोठो मे रस्सा घिर कर फासी डाल ले दुनिया क्या कहेगी अपने सगे उसे पागल करार कर रहे हैं जाने वह कौन-से लगाव मे बधा पडा है ! बस बहुत हुआ खूब देख भाल लिया अब उठो और चलो मनोहर फिर चल दो हवा बडी विषैली है यहाँ घोट देगी दम एक घडी मे वह अकेला बहता नदी का पानी है , जाने किन किन कगारा-कूहों को छूता-बचता बहता रहता है बस आज शाम के झुटपुटे म चल देना है नही पहले रास्ते से नहीं जाना, सुजन बाबा से मिलने की हिम्मत नही है , पालनी भी नहीं है ममता का अभागा फूटे भाग्य वाला आदमी है जहाँ नेह मे लगता है कि दूसरे को भी नमक की डली सा गलाकर मिटा डालता है वह नही जाना कही भी और जेल भौजी हा" नहीं वहाँ भी नहीं कम से कम भौजी के मन मे शायद आशा पलक झपकाए पडी हो कि कही नौकरी में लाख टके भूल कर अपना मनोहरा किसी महराज का हाथ थामे एक दो बाल बच्चा के हाथ पाव ढके कहीं अच्छे मे होगा बचपन के दु खो की धूल माटी झाड चुका होगा इन ख्यालो को वह उनसे मिलकर दियासिलाई दिखाना नही चाहता नही नही य सूखा-आंधिया का मारा चेहरा उन्ह नही दिखाएगा जो कर दिया उनके लिए बहुत कर चला अब और नही कुछ दिनो से जाने कैसा कलेजे मे दद उठने लगा है मरोड कर प्रान निकाल के रख देता है रात मे टीसें शुरू है यहा और रुक गया तो खाली ठाली बैठे के ख्याल और मार डालेंगे, पागल कर देंगे उसे अब बस और नही शाम तू जल्दी झुक आ मा जाने कब तुमने यहाँ की माटी मे पैन्न कर यहाँ के ठीकरे से मेरा नाल काटा था तुम कैसी थी ! नही देख पाया य तेरा बेटा अब जा रहा है कभी न आने को भौजी माफ करना और कमली बस तुम्ही जाने कैसे आ गईं इस टूटे-फूटे मन के कोनो म सुजन बाबा, तेरा बाप जसा प्यार नही यह नही चुकेगा कर्जा रहा वह अब और नही चल मनोहर चल

उसका मन यो ही हा-हा कार करता यादो में बिखर चुप होकर जाने कब दुपहरिया की तपन मे डूब गया साँझ की प्रतीक्षा मे ☐

पीला बरगद

साहब सिंह का आज सुबह से जोड़-जोड़ टूट रहा था लग रहा था जसे उसका शरीर जग खाए तारो की टूटी-फूटी कड़ियो से जुड़ा ढांचा है, जो थोड़ी सी हरकत पर चरमराकर तड़क जाएगा अपने सिर पर बधी पटटी को खोल अच्छी तरह कसकर बांध लिया अच्छी किस्मत है साली जनम कहा लिया और करम कहा फूटे ! न गाव, न गोत, बस यही कही ये हड्डिया बिखर जाएगी और दो मठ लकडी भी न जुट पाएगी सामने गिरने की ढलान पर यही चीलें दो घडी मे चट कर जाएगी कर जाए, कौन मरने के बाद देखने आएगा ! करमजली मौत आए तो सही पहले

सवारिया बाहर निकली स्टेशन के भीतर बाहर भगदड़-सी मच गई लगता है रैल आ गई अभी पसे काटकर गोली खाई थी कि चलो कुछ जान आएगी, पर आराम भाग्य मे बदा ही कब था, जो मिलता उसने मुह बनाकर देही को दो चार झटके दिए और रिक्शा पेड के नीचे से हटाकर झुनू पनवाडी की दुकान की बगल मे कर ली कधे पर पडा हरे चारखाने का गमछा हाथ मे ले लिया पहले देह फट कारी फिर रिक्शे की गद्दी पोछी यह साला पेड भी उसी जसा झरकला हो गया है कोई मौसम हो, झरता ही रहता है पत्तो मे न रग है न चिकनाई यो ही मर तैले से निकलते हैं और जरा हवा आँधी बही कि तिल तिल टूटने लगते है सारा रिक्शा भर जाता है झाडते फिरो इतने मे सवारियो को दूसरे गाठ लेते हैं पर जी भी तो नही मानता लाख चाहा कि उस घने झबरे नीम के नीचे जगह बनाई जाए खडी होने की, पर जान क्या मोह फास जुड गई है इस मुर्दा जरख से कि बस इसी के नीचे दम जुड़ता है शायद अपनी उनहार का जो ठहरा यह सोचकर उसके काले पपडियाए ओठो के लेसदार कोना पर जहरीली मुस्कान फूट पडी

पर की उगली मे परसो ठोकर लगी थी मामुली-सी पर दु ख ऐसी रही है जसे कही जग खेलकर आई हो टायर की पट्टियो वाली उखडी उखडी चप्पलो म उस न अगूठे और उगलिया को हाथ स ठीक सीधा कर जमाया तभी चूडियो की मीठी

सी झकार सुनाई दी नाक मे मोतिया झावे की खुशबू टकराई वह एकदम मुडा सीधा हुआ और व्यापारिक नजर से देखने लगा यही जोडा था जिसे वह कई बार ले जा चुका था

बिना कुछ कहे-बोले उसने रिक्शा पनवाडी की बगल से घुमा कर सडक की ओर कर ली व दोनो बिना कुछ कहे उस पर बैठ गए पहले लडका बैठा, फिर उसी का सहारा लेकर लडकी चढ़ी चूडिया फिर बजी खुशबू फिर लहकी उसने गमछे से कनपटी पर बह आया, पसीना पोछा और एक चोर नजर लडकी पर डालते हुए गद्दी पर उछाल मार कर हैंडिल थाम लिया देह अब भी कसक रही थी पर दिमाग म देही का दद कम और दूसरे विचारो की गड्ड मड्ड अधिक थी कौन हैं य ? कपडे लत्ता और बोली स तो ठीक घराने की लगती है कहा जाती है ? कहा से आती है ? और यह लडका ! लडका नहीं, एकदम आदमी है, कौन है ? जान क्या शक्ल स अच्छा नही लगता क्या लगता है इसका ? ऊह ! होगा कोई ? सुरग-नरक सारे नाप बैठा है, फिर भी जमाने भर की छीतरी खोलने को हर बख्त तैयार रहता है चला रिक्शा, ले दाम और छोड भाड मे

रह रह कर साडी का खिचाव, चूडियो की रिंगाहट होती जा रही है कुछ गडबड कर रहा होगा, वरना सीधी सपाट सडक पर रिक्शा घी की तरह फिसल रहा है, झटको का क्या काम !

सुनो !' विचारो को टहोरा लगा, पाव ढीले हुए, उसने पीछे मुड कर देखा आदमी की आखो म कुछ नगापन झाक रहा था बोला—'देखो ! अभी हमे पीरगज मत उतारो पीछे मोड लो रिक्शा हमे सरूप चौक से होते हुए दीवानशाह की ओर ले चलो '

बिना हां-ना करे उसने रिक्शा सडक पर ले ली मन मे कागला बोल उठा सरूप चौक फिर दीवानशाह क्या मामला है ? कही आज यह कोई गलत जुगत तो नही बठा रहा ! चौक म वह जानता है कसी दुकानें हैं निपट दुपहरी, आधा शहर वीरान दीवानशाह एकदम जगल, भांय भांय दस-पचास पेडो के नीचे पतले से नाले के पास दो सफद रग के कमरे कभी-कभार बरसात मे वह स्कूल कालिज के छोकरे छोकरियो को ले जाता रहा है, पर इस दुपहरी म झुलसनभरी हवा और और क्या ! फिर वही सासत मोल लेने की हवस अबे काठ ! जल्दी पाव चढ़ा, फेंक इ ह और पैसे ले कमबख्त सुबह से मुह मे न चाय गई है न पावरोटी

चौक के नुक्कड पर रिक्शा रोकन को वह और लडकी की आर एक मेदभरी आख की कौध मार वह बाई वाली गली मे मुड गया उसका मन धुकधुका गया यह गली तो विदु वता रहा था कि जीवन कलाल की है यहाँ तो चोरी से वो धधा होता है, जो नही होना चाहिए उसने नजर के कोने से लडकी को टटोला

उसे फिकर नहीं थी बड़े चाव से वह गली की ओर देख रही थी हे राम ! कहाँ आ मरा वह इस पर तरस भी आ रहा है और गुस्सा भी पर होगा भी क्या उसके तरस और गुस्से से !

उसने घबराहट छाँटने को कान में लगी बुझी बीड़ी सुलगाई और नाली के मोड़ पर बैठकर जल्दी-जल्दी पीने लगा लड़की ने पहलू बदला कि अखबार का बंडल हथेलियों में दबाए वो आदमी आ गया और बैठ गया बेमन से वह भी उठा हैंडिल साधते ही नाली की बदबू जैसा भभका रिक्शे के पीछे से उठा उसके माथे की नसें तनतना गई नाली की बदबू सह ली थी, पर यह ! उसने सोचा कि लड़की स्कूल की तो नहीं फिर ! घरेलू है, आ जाती होगी घरवालों को बहका कर ! विचारों की रौ में पाँव इतने तेज हो गए कि दीवानशाह आ गया वही सन्नाटा, सुनसान चुप्पीभरा जंगल कच्ची-पक्की, ऊबड़ खाबड़ सड़क और नाले के पास वाली तिदरी

पहुँचने में जोर ज्यादा पड़ा घुटनों की टिपरियाँ दुःख गईं वे दोनों एकदम कूद पड़े बिना हाँफे बिना रुके, दो फाँदों में नाले की पुलिया और दो कूदों में तिदरी ठीक है, उमर है वरना ' नहीं पुराना तो कुछ सोचना ही नहीं हाँ तो, इन्हीं टाँगों से, घुटनों से वह रामपुर की बसवाटी और चैलागोहट की चढ़ान और और चुप कर मरभुखिए ! चुप कर

वह रिक्शे की गद्दी फटाफट झाड़ने लगा जैसे मल भरा थक्का जम गय गया हो अरे ! आज सिर फट कर रहेगा पैसे दे दें तो लूँ झकार में से निकलूँ उसने तिदरी की ओर देखा वे नहीं दीखे कहाँ बिला गए तभी तिदरी और कमरों के बीच गलरी की फाँक से लड़की के पैर कुछ अन्दर कुछ बाहर चप्पलों में रपटते दिखाई दिए और साड़ी की किनारी दबाए दो और पैर जकड़ने लिपटने की हर कत में दिखाई पड़े उसकी बेकार मुट्ठियाँ कस गई अभी आँखें फूटी कहाँ हैं जो सब अनरथ देखें और झेलें टाँगों में पुरानी चिकनाई फिसली और दम मारते ही वह तिदरी में जा धमका गैलरी में उलझे चारों पैर अलग अलग सीधे हो गए छुटपुट हरकतों में ठहराव आ गया उन दोनों की आँखों में सवाल के साथ गुस्से की कुनाहट और थोड़ी झुंझलाहट-सी भी थी

'क्यों आए हो ?'

किराया दो हम चलें '

आदमी के ओठों पर नंगी शरारत तर गई— अभी कैसा किराया ! हमको ले नहीं जाओगे क्या !'

क्या कहे वह इस आदमी से ! जाने कब तक तू इस तिदरी की छाया में तन फैलाए मन की अमीरी दिखाएगा खैर आ गया है तो इस खटाई को भी चाटना

पड़ेगा, एक भद्दी देहाती गाली देता हुआ वह लौट गया और उसी कंधे के गमछे की कुंडली बनाकर पेड़ की छाया में लेट गया। टांगें भन्ना रही थी। बरसों मों ही सड़कों की धूल फाकते निकल गए, आज यह नया मौका नहीं है। कई बार ऐसे सिरफिरों के साथ उसके हाथ-पांव फसे हैं। चलो मरने दो। सिर के नीचे हाथ लगा कर उसने करवट बदली। उसे लगा कि गंगा मैया कहीं भी उसका साथ नहीं छोड़ेगी। कलेजे के तीन चार टुकड़े बहा दिए, पर लगता है उसकी लहरें जैसे उसे निगलने को दौड़ रही हैं। और वह उनमें डूबा जा रहा है। मन में अजीब-सी हुड़क उठी जो मितलाने लगा। अचानक उसने महसूस किया कि उसने सुबह से कुछ खाया नहीं है, तभी तो पेट का सूराख कमर से जा भिड़ा है। पर यहां क्या खाए! इस राक्षस से तो कुछ भी कहने मांगने को मन नहीं कर रहा। ठण्डी हवा, भूख, थकान, सबने मिलकर उसे झपकी दे डाली। तभी उसे सपना आया कि भारी भारी पत्थरों की चट्टानें लुढ़क रही हैं और उसे कुचल रही हैं। तड़ भड़ खटर-खटर पर। उसने आंखें खोली। कहीं भी तो लुढ़कते पत्थर नहीं, फिर क्या है!

अरे! वो लड़की भारी सांसें खींच रही थी। तिदरी की दीवार से कभी गैलरी के कोने में। कभी कमरों के आगे-पीछे। यह क्या है? भाग क्या रही है! इसके कपड़े क्या फट रहे हैं? बाल बिखरे थो हाफ रही है जैसे चटाखू जूता आकर पड़ा हो उसके ऊपर! वह नीचे बैठ गई। तभी वह आदमी लड़खड़ाता आया और भद्दी गालियां दे कर उसे भीतर खींचने लगा। दोनों में जाने क्या-क्या सुना-सुनी हो रही थी! वह कुछ सुन नहीं पा रहा था। अब वह लड़की जोर-जोर से हाथ पैर पीट रही थी।

वह बड़ी उधेड़बुन में था कि क्या करे! उसके बदन में पूरा जंगल भर गया खूंखार वहशियाना जंगल। उसने जबसे गांव छोड़ा था सोचा था कि कोई मरे, कुछ भी हो, वह अब काया चोला बदल कर रहेगा। पर इस समय जैसे उसके भीतर सकड़ों कुल्हाड़े तन गए। जबड़े मुंह को फाड़कर जैसे बाहर निकल आएंगे। आंखें सिंदूरी हो गई। वह लपककर चबूतरे पर आ गया। उस आदमी का ध्यान इधर हुआ तो उसने हवा में सिर लहराकर जोर से लड़खड़ाती आवाज में कहा—'अबे सूअर पिटेगा क्या! जा यहां से, तुझे किसने बुलाया, इस महफिल में, बोल!' साथ ही खाली बोतल आकर उसके टखनों में लगी और दुखती हुई उंगली के ऊपर से फिसल कर आगे लुढ़क गई। उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया। वह लड़की को देख रहा था जो टूटे पंखों वाली फाख्ता की तरह दीवार से लिपटी पड़ी थी, रिक्शे में बैठी और इस समय थरथराती हुई में मीलों का फासला था। वह होश में आया तो उसने पीछे मुड़ना चाहा। डरी-सहमी लड़की के मुंह से चीख निकली— नहीं! बाबा, नहीं! मत जाओ। ओह!' वह फूट-फूट कर रोने लगी।

वह हैरान था क्या बात है । उसे लगा कि बहुत दिनों का सोया हुआ आग का लावा उसमें जो को जला रहा है, बीते दिनों के काले साए-से सामने उठ रहे हैं

लड़की की आंखों से आंसुओं की मोटी मोटी धाराएं बह रही थीं तभी आदमी की आवाज गूंजी—'अरे सुना नहीं रनू ! जल्दी उठो ।' आवाज में अधिकार था जिद् थी

वह झपटकर लड़की के सामने आकर खड़ा हो गया 'नहीं आएगी यह कौन है तू ! क्या तंग कर रहा है इसे ! यहां क्या कर रहा है ! ठहर ! बोतल या जूते फेंके तो चबा जाऊंगा दूर हटकर बात कर ' उसकी सांस फूल रही थी

आदमी फुफकारकर उठा और फुर्ती से लड़की का बाजू खींचा 'कुलटा कहीं की कौन है यह तेरा । तीन कौड़ी के मजदूर से मेरी इज्जत खराब करवाती है'

'कमीने, लफंगे ! मुझे तीन कौड़ी का आदमी बताता है, वक्त की बात है, वरना कहने वाले की जीभ हाथ में होती थी थोड़ा छोड़ इस ओर दख मेरी तरफ बहुत देर हो चुकी सुनते सुनते, ले आ ' उसने एक लात कमकर आदमी की कमर में मारी आदमी थोड़ा-सा लड़खड़ाया और बाद में तेजी से घूमकर उसकी गर्दन को भींचने लगा लड़की दौड़कर दोनों के बीच कूद पड़ी आदमी के मुंह से लार गिर रही थी वह कांप रहा था बक रहा था उसके दांतों से खून बह रहा था उस पर नशा चढ़ रहा था 'ले तो तू भी सुन ले, पहलवान ! यह मेरी औरत बनने को तैयार है इसे कई बार मेरे साथ देखा है, तूने आज साली नखरे कर रही है दूर से खूब हंसती है, बातें करती है जाने कितना रुपया और जेवर डकार बैठी है रुक, देखता हूं, तेरा गंगादेवी वाला रूप ! तू जाएगी कहां पहले इस बूढ़े की गांठ बांध दूं'

उसने दोनों हाथों में सोडे की बोतलें उठा लीं बूढ़ा साहबसिंह सावधान था पुराना पिशाच जाग रहा था उसमें वह पैंतरा बदल गया बोतलें फर्श पर गिरकर बिखर गई वह पास खड़ा पत्थर उठाने को उठा कि लड़की बिफरी शेरनी की तरह कूदकर उसके हाथों पर झपटी इस अचानक हुए हमले को वह नहीं रोक पाया और नीचे गिर गया लड़की उसकी छाती पर बैठकर उसके बाल और मुंह को नोचने लगी वह पागलों की तरह चिल्ला रही थी 'नीच ! तूने समझा क्या है ! मुझे औरत बनाकर रखेगा ! क्या ! मैं एकदम पागल थी मूर्ख थी जो तेरी बातें सुनकर बहकावे में आ गई बीमार मां और अपाहिज बाप को छोड़कर तेरे विश्वास में बंधी चली आई तूने उन दोनों को यही यकीन दिलाया कि तू मेरी शादी करेगा उनका इलाज करायेगा मुझे क्या पता था कि तू यहां आकर ऐसी हरकतें करेगा और मुझे इतनी गिरी नजर से देखकर यों बेकार तरीके से बकेगा ! तू जलील है दुष्ट है मैं थूकती हूं तुझ पर यह बाबा नहीं होता तो जाने तू क्या करता ! तुझसे

हमने पैसे का सहारा लिया, तुझे अच्छा आदमी समझकर यह पता नही था कि तू मदद की ऐसी जघन्य कीमत मागेगा मुझे अफसोस है कि तेरी आखो का लाल रग पहचान नही पाई '

आदमी नीचे पडा हाफ रहा था शराब ज्यादा पी गया था दम नही बचा था दात पीसकर बोला—'अभी बताता हू तुझे कमीनी बडी सती है न, तभी बीमार मा-बाप को छोडकर जगल मे आ गई है मैं तुझे यो नही छोडूगा जीना हराम कर दूगा काटती है !' उसकी बाह म खून छलछला आया पूरे दांत गढ गए थे बाजू म

साहबसिंह न सोचा कि अभी तो यह नर पिशाच बेकाबू है, बेदम है जरा-सी ढील दी तो मामला बिगड सकता है उसन लडकी को पकडकर खीचा नीचे पडी साडी उसके चारा ओर लपेटकर हाथ पकडकर घसीटता हुआ रिक्शे की ओर ले गया पीछे वह बनैल सूअर की तरह डकार रहा था उठता गिर जाता लडकी को उसने बलपूवक रिक्शे म डाला और पैडल पर पर रखन से पहल पीछे मुडकर देखा वह उल्टी कर रहा था साहबसिंह उस घिनौन आदमी की ओर अधिक नही देख सका उस डर था कि उसका जानलेवा गुस्सा कोई खोटा काम पहल की तरह नही कर द और उसे फिर से जेल की हवा खानी पडे

लडकी रो रही थी रिक्शा सडक पर आया उसे तसल्ली थी कि वह बकरा यही बेहोश पडा था अभी उसम उठने या दौडन का दम नही है सारी अक्ल दुरुस्त हो जाएगी, जब पाच मील टूटी देह लेकर लौटेगा और ले बदजात इश्क की सौगात उसने रिक्शा रोका और पीछे मुडकर पूछा—'क्या नाम है बेटी तेरा !'

'रेनू '

'देख अब तू मत घबरा यह रास्ता है तू पेड के पीछे साडी ठीक से बाध ले, पल्ला एस ओढ़ ले कि तेरी फटी आस्तीन दिखाइ न दे जहा कहेगी, उतार दूगा '

लडकी चुपचाप साडी लपेट आई आते ही उसन उसक पैर छुए वह चौंक पडा अरे राम राम ! यह क्या कर रही है ! माया ममता म घेर रही है नही, अब नही साहबसिंह अब किसी के घेरे म नही आएगा बडी सासत भुगत ली क्या कम भुगता है ! न, अब नही, क्यो छू लिए इसन उसके पर ! देवता समझ रही होगी ! यह क्या जान कि मैं कितना ! भीतर स न जाने कौन भीगकर बोला—'अरे बिटिया ! यह जुलम न करो मैं गरीब आदमी गाव का गवार एकदम उजड्ड तुम शहरी जीव मत खीचो मुझे अब काटो म अपना धरम समझा, निभा दिया आग गलती मत करना समझ रखकर काम करते हैं तेरी किस्मत अच्छी थी कि मैं मिल गया कोई और रिक्शे वाला होता तो इस राक्षस के साथ मिल जाता चल, बता कहा छोडू !'

लडकी ठीक से बैठ गई उसकी सिसकारियां बंद हो गई थी हां, आंखें रह रहकर भर आती थी

'सावधान होकर बैठ जा बेटी ! लोग बहुत बुरे हैं मेरी भलाई कौन जानेगा, उल्टा मुझे ही पागल लेंगे इन शहरों मे बस यही काम रह गया है गांव ही ठीक है गांव ! ना गांव भी ठीक नहीं है ! यही पागल कुत्ते जब गांव जा पहुचते हैं, तब वहां भी क्या बचता है तुम्हारे मां-बाप बीमार हैं !'

'हां बाबा ! तुम गांव के हो ! यहां क्या आ गए ! रिक्शा कब से चलाते हो ! बुरी तरह कब चक्कर मे आ गए !' उसके ओठो पर बहुत दिनो बाद सीधी-सरल हसी झलक उठी कैसी पागल है यह ! कहा तो अभी चण्डी बनी थी और कहां इस ससुरे बाबा की पूरी जनमपत्री पूछने मे बौरा गई क्या बताए इसे !

'हां रानू बेटी ! मैं गांव का हूं उस रिक्शे वाले ने कहा—'मेरा नाम साहब सिंह है मेरे पुरखो ने शहर की बोली और चलन नही जाने मुझे बदकिस्मती के कारण दस-बारह साल हो गए यहां, सो बोली ठोली ही बदल गई करम ने ठोकर मारी तो यहां आ पड़ा, नहीं तो अच्छा अब शहर मे आ गए हैं गाती पल्ला अच्छी तरह लपट ले बता दे किधर चलना है !'

होली मुहल्ला !'

'वहां तो बामनो की बस्ती है तू बेटी क्या बामन है ?'

'हां, बाबा ! तुम्हे जिंदगीभर याद रखूगी तुमने मेरी इज्जत बचाई है ! भगवान तुम्हें भी खुशी देगा '

पगली छोरी है इस अभागे को कौन याद रखेगा ! करम बड़े अच्छे किए हैं न ! वह रिक्शा रोक कर होली मुहल्ले के नुक्कड पर खड़ा हो गया—'तो, अब तुम अपने घर जाओ जो भी मन भाए मां-बाप को बता देना '

वाह बाबा ! यह भी खूब रही वहां से उस पिशाच की मुट्ठी मे से बचा कर लाए, क्या सडक गली मे छोड जाओगे ! नहीं, ऐसा नही होगा तुम चलो खुद ही बापू को बता देना कि कैसे उबारकर लाए हो मुझे जलती भट्टी से सवेरे से भूखे प्यासे हो मुह जुठार बिना न जाने दूगी '

'ना बेटी ! बड़ा उल्टा टेढा लगता है अब नही पडता किसी नई सांसत मे ! भूख प्यास तो तेरे दु ख देखकर ही मिट गई थी। बस, जैसा कहती है वैसा बोल दूगा तेरे बापू से पर नाश्ता पानी शाम को वहीं खा लूगा हां, यह बता कि तू इस लोफर के चक्कर मे कैसे आ गई !'

'बाबा ! लडकी का मुह लज्जा से लाल हो गया

'अरी ! ऐसी वैसी औरतो की पहचान है मुझे। गांव की कई ब्याही, अनब्याही और विधवाओ को इसी रिक्शे मे बैठाकर कचहरी, मुहल्ले और न जाने कहां कहां

ले गया हू कुछ बेचारी मोहब्बत मे और कुछ मौजीरन मे शहरी दांव-पेंचो मे खो गई राम जाने क्या जमाना आ गया है पर तू मुझे अलग ही लगी है बेटी! तू इस आदमी का भरोसा कसे कर बैठो!'

'क्या बताऊ, बाबा! यह दूर के रिश्ते मे मेरा मामा लगता है मां बीमार, बाप अपाहिज बडा भाई जब मैं छोटी थी, तब मर गया एक भाई मुझसे दो साल छोटा है कुछ भी करता धरता नही बापू ने जमा किए रुपयो से दो बार दुकान खुलवाई सब चाट गया दोस्तबाजी म सारा दिन यो ही फिरता रहता है मैं थोडी पढ़ लिख गई हू सिलाई कढाई का काम भी सीखा है इस आदमी ने हमारी मजबूरी ताडकर मेरे मां-बाप को यकीन दिलाया कि वह मुझे अच्छी नौकरी दिला देगा और ब्याह शादी करा देगा सीधे-साद मां-बाप इसके चक्कर म आ गए और मैं नौकरी कर चार पैसे कमाने के लिए इस पर विश्वास कर बैठी कई बार यह मुझे इधर उधर ल गया यह उल्टी सीधी बातें भी करता था, पर मैंने ध्यान नहीं दिया इसकी हिम्मत बढ़ गई आज मुझे जगल म ले गया बाबा, सोचकर पूरे बदन म झुरझुरी सी हो आती है तुम न होत तो क्या बनता!'

'ऊपरवाला सबकी पत बचाने वाला है मेरी खुशकिस्मती है कि बूढ़ी हड्डियां तेरे काम आई अच्छा बेटी! तू घर जा आगे सावधान रहना मेरा तरे साथ जाना ठीक नहीं हू तो आखिर रिक्शेवाला ही न! इधर स कभी निकला तो तुझसे जरूर मिलूगा पास ही बीराजी मे बरगद के पीछे जो दस-पन्द्रह खपरली झुग्गियां हैं, उन्ही मे स एक मे पडा रहता हू खाली बखत म अच्छा अब चलता हू'

उसने उछलकर बिना मुडे-रुके रिक्शा सभाली और एक शब्द भी बोलने का मौका दिए बिना तेजी स चल पडा लडकी मुह म पल्ला दे सुबक उठी कितना पराया था, लेकिन कितना अपना-सा लगा

हारे-थके साहबसिंह ने रिक्शा झुग्गी के पास खड़ा किया सामने लतीफ की झोपडी मे अधी लालटेन बदबूदार धुआ उगल रही थी उसकी बीवी नाली के पास बठी आटे के खाली पीपे को अपने दांतो बेटो के खुले पेटो पर पीट रही थी बच्चे रो रहे थे चीख रहे थे उसके हाथ रुकने का नाम नही लेते थे उससे नही देखा गया वही से चिल्लाया—'अरी, खुदा की बदी—इन भूखे प्यासे बालको पर क्यो कहर ढा रही है! कही कुठोर चोट पड गई तो लतीफ तुझे जिंदा ही जला देगा छोड इन बेचारों को'

बिफरी मरखनी भैंस की तरह वह नाली से उठकर उसक सामने आ खडी हुई और उसक मुह के सामने हाथ लहराकर चीखी—'अरे, जा जा! बडा सैयद-हुक्काम बने हैगा इस गली का पर आज तक हलक नही फूटा उस नासपीटे के आगे कि बखत से घर आ जाया करे और इन करम-कीडो को रासन-पानी जुटा

हुई और रिक्शे से नीचे गिर पडा मैं उधर से निकल रहा था, नही तो कोई ट्रक-मोटर हड्डी पीस जाती न कुछ तसल्ली देती है, न पाव छटांक गुड सारे दिन हथेलियाँ बजाती रहती है नई सवारी छोडकर आया तो उधर मूले की दुकान पर नहीं जा पाया जहाँ उसे सुबह सुला आया था और कह आया था कि आध-पाव दूध की चाय उसके हलक मे टपका दीजो साथ ही पैसे भी दे आया था तेरे मे औरतपना बचा हो, तो जा छोरा को साथ लेकर उठा ला उसे मुझमे तो दम है नही आज एक बदमास स हाथापाई हो गई थी समझी! मुझे आज के बाद कुछ औधा-तिरछा बोला तो तेरे हक मे अच्छा नही होगा ले ये चार सिक्के हैं दस-दस के, इन बालको को बेसन के सेव खिलाकर चक्खे की प्याऊ का ठण्डा पानी पिला दे"

पैसे हथेली पर लेते ही लतीफे की बीवी की जलती आखो मे ठण्डा कुहरा छा उठा दो बूँदें उसके मैले-कुचैले सूखे गालो पर ढुलक पडी ठोडी, ओठ और नथुने आधी के थपेडो मे कापती लहरो की तरह थरथरा उठे बोली—'हाय! मैं क्या यू ही चीखू हू! तुम बडे वो हो भुबोल बोलू तो दोजख देखू दिल म चैंटी चलै हैंगी तो निगोडी जवान कीचड खाने लगै है अरे मार अल्ला की पडै मुझ बदनसीब पर मुझे क्या खबर कि बालको का अब्बा यू हाथ-पाव छांटे पडा हैगा गुड तीमन कहा से लाऊ रे मैं ढिबरी म कोडी का तेल पड जाए, वो ही बहुत हैगा छोडो रे करम ठोकनो हलक फाडना अल्ला गलत, सा उमर भर यू ही डकराते मरना' बच्चो के हाथ खीच, बकती, छाती कूटती वह मूले की दुकान की ओर दौड पडी

साहबसिंह के ओठो पर बडी बेबस और कडवी सी मुस्कान खिच गई सोचा, क्या करे यह बिचारी भी! यहा है क्या? बस्ती आसुओ मे डूबी रहती है हाय-हाय करते सुबह होती है और काय काय करते दिन गुजरता है फिर आती है कराहती-खासती रात यही रात चाहे आराम की मान लो, चाह मनोरजन की मन-बहलाव भी क्या है! बस देसी या ताडी चढाकर गाली गुफ्तार करना जुआ पीटना और बीवी बच्चो की सूखी हड्डियो को कूट कोने मे पटक देना इससे आगे इन बाशिन्दो की दुनिया नही है

अधेरा और भी गहराकर टूटे गदे परनाले पर उतर आया था चारो तरफ मच्छर भनभना रहे थे बदबू नाक मुह मे घुसी आ रही थी कलुए की अधी मा कराह रही थी बीमार थी बच्चे सुबह कमाने जाते हैं और शाम तक वह खुले पाखाने के सामने मक्खियो का ढेर बनी पडी रहती है बरसा आए चाहे गर्मी आए, इसका ठिकाना नही बदलता बस एक दो दिन की चला चली है यो ही कराहते दम दे देगी अच्छा है मर जाए तो पीछा छूटे इसका भी और घरवालो का भी

सुबह से ही मन थका पिटा था सोचते-सोचते और भी ज्यादा दुख गया रामखेलावन का टूटा झगोला सामने पडा था, उसी पर साहबसिंह ने कमर सीधी

दिया करें पास तो बैठ जाएगा पर नहीं है कभी तुम हमारी तकलीफ ! आया बड़ा रोकने वाला '

साहबसिंह एकटक उस औरत को देखता रह गया बाल बिखरे, लाल-लाल आखें, ओठो की सूखी पपडिया पर थूक के बगूले, मैल दातो के बीच गदी जबान, हाथ परो के असमान झटकार उसे याद आई अपनी ठकुराइन ओह ! कभी सीधी थी ! एकदम गऊ मजाल थी कि आख उठाकर भी देख ले हमेशा डरती कापती रही तन मन से सेवा करके भी खुलकर कुछ चीज मागने का उसे साहस नहीं था वह कभी नाराज हो जाता तो उसकी जान सूख जाती वह उससे खुश कभी नहीं रहा कौन से दिन उसने उसे प्यार के बोल बोले

गवई गाव की बात सारे दिन घर का छानना फटकना ही नहीं निपटता था उसकी आखें बतियाने को तरस गई एक दिन हिम्मत बटोर कर कुसे का सोर पकड दरवाजे पर रोकने लगी तो झिडक दिया साल चौमासे दीये की मदी जादू भरी रोशनी म कभी वह उसकी चूडिया सहलाने लगता, तब भी हसने की जगह उसकी आखें घूघट म बरसती रहती उसके जाने के बाद वह घटो अपने हाथों और कलाइयो पर काजल के ठहरे दाग धब्बो को देखता रह जाता

उसने एक दिन लडके को चाटा मार दिया बस फिर क्या था ? हाथ का हुक्का कोने म उडका के भरी चिलम ही दे मारी ठकुरानी की कमर पर वहीं पर जली खाल को हाथ से मीड तडपकर लोट पोट हो गई लेकिन मुह से कुनकुनाहट तक नहीं व्यापी एक यह औरत है कि फाहशा बनी उसके सामने अपने घरवाले को अनाप सनाप बक रही है साथ ही हजारो बातो की लपेट मे उसे भी सान रही है लगा दे क्या इसके भी मुह पर एक झापड ? फिर भी चीखी तो रख दे हवा भरने का पम्प दस बीस बार टागा मे ? वह सोचता रहा और उस गदी बिफरी औरत के मुह से बिखरे झागो म अपनी ठकुरानी की साफ-नहाई और बुझी उदास तस्वीर ढूढता रहा

वह फिर चीखी--'अरे ! अब क्या तुझे साप सूघ गया ! कह दीजो उस घडूक को कि आज हाडी म तुझे पकाके ईद मनाऊगी क्या समझे हैगा वह मुझे ! सब जानू हू अरे हम भूखे ही जसन मना लेंगे कर तू मौज उस कजरी गुलबिया के यहा जा, कह दे अपने जिगरी से ' फिर नाली पर कीचड मे सने पुते लडको को परे धकेल पालथी मार बैठ गई दुपट्टे की गाठ से चूना मिला तम्बाकू निकाला और थूक झाग भरे मुह मे बुरक लिया

देखकर उसे मितली-सी आने लगी और बडे जोर से गुस्सा आया बोला--'अरे ! तू क्यो उसग रीव को बक रही है ! कुछ होश ठिकाना है तुझे ! आज उसकी थावर-खूटा की सवारी उतारकर लौटती बार टागें काप गइ एक जोर की उल्टी

हुई और रिक्शे से नीचे गिर पड़ा मैं उधर से निकल रहा था, नहीं तो कोई ट्रक-मोटर हड्डी पीस जाती न कुछ तसल्ली देती है, न पाव छटांक गुड़ सारे दिन हथेलियां बजाती रहती है नई सवारी छोड़कर आया तो उधर मूले की दुकान पर नहीं जा पाया जहां उसे सुबह गुला आया था और कह आया था कि आध-पाव दूध की चाय उसके हलक म टपका दीजो साम हो पसे भी दे आया था तेरे मे औरत-पना बचा हो, तो जा छोरा का साथ लेकर उठा ला उसे मुझमे तो दम है नहीं आज एक बदमास से हाथापाई हो गई थी समझी ! मुझे आज के बाद कुछ औंधा-तिरछा बोला तो तेरे हक मे अच्छा नहीं होगा ले ये चार सिक्के हैं दस-दस के, इन बालका को बेसन के सेव खिलाकर चवन्ने की प्याऊ का ठण्डा पानी पिला दे'

पैसे हथेली पर लेते ही लतीफे की बीवी की जलती आंखा मे ठण्डा कुहरा छा उठा दो बूदें उसके मले-कुचैले सूखे गालो पर ढुलक पड़ीं ठोडी ओठ और नथुने आंधी के थपेडो में कांपती लहरो की तरह थरथरा उठे बोली—'हाय ! मैं क्या यू ही थोयू हू ! तुम बड़े को हो सुबोल बोलू तो दोजख देखू दिल मे चैंटी चलै हैंगी तो निगोडी जबान कीचड़ उछाले लगै है अरे मार अल्ला की पड़ै मुझ बदनसीब पर मुझे क्या खबर कि बालका का अब्बा यू हाथ-पांव छांटे पड़ा हैगा गुड़-तीमन कहा से लाऊ रे मैं ढिबरी मे कौडी का तेल पड जाए, वो ही बहुत हैगा छोडो रे करम ठोकनो हलक फाडना अल्ला गलत, तो उमर भर यू ही बकराते मरला' बच्चो के हाथ खींच बकती, छाती कूटती वह मूले की दुकान की ओर दौड पड़ी

साहबसिंह के ओठो पर बड़ी बबस और कड़वी सी मुस्कान खिच गई सोचा, क्या करे यह बिचारी भी ! यहा है क्या ? बस्ती आंसुओ मे डूबी रहती है हाय-हाय करते सुबह होती है और काय काय करते दिन गुजरता है फिर आती है करा हती-खासती रात यही रात चाहे आराम की मान लो, चाह मनोरजन की मन-बहलाव भी क्या है ! कच्ची देसी या ताडी चढ़ाकर गाली गुफ्तार करना जुआ-पीटना और बीवी-बच्चा की सूखी हड्डिया का कूट कोने म पटक देना इससे आगे इन बाशिन्दो की दुनिया नहीं है

अंधेरा और भी गहराकर टूटे गदे परनाले पर उतर आया था चारा तरफ मच्छर भनभना रहे थे बदबू नाक मुह मे घुसी आ रही थी कलुए की अंधी मां कराह रही थी बीमार थी बच्चे सुबह कमाने जाते हैं और शाम तक वह खुले पाखाने के सामने मक्खियो का ढेर बनी पडी रहती है बरसा आए चाहे गर्मी आए, इसका ठिकाना नहीं बदलता बस एक दो दिन की चला चली है या ही कराहते दम दे देगी अच्छा है, मर जाए तो पीछा छूटे इसका भी और घरवाला का भी

सुबह से ही मन थका पिटा था सोचते सोचते और भी ज्यादा दुःख गया रामखेलावन का टूटा झगोला सामने पड़ा था, उसी पर साहबसिंह ने कमर सीधी

करने को हाथ-पर फैला दिए आखो के पपोटे मनो बोझ के नीचे दबे जा रहे थ भरपेट खाने की कौन कह, ढग म चना चबैना भी कहा जुट पाया था ! भूख-प्यास दोनो ही लग रही थीं, लेकिन झगोले म बदन क्या गिरा कि हड्डिया अब उठन का नाम नही ले रही थी दो-तीन निबोलिया पेड से झर कर उसके पेट पर गिरीं थाखों मे कहीं बादल घिर आए कई सतरगी आसमानी धनुप से दश्य एक-एक करके सामने नाचने लग घर ! जिस घर को, वहा की यादो को छोड भागा वह, वही मथने लगे

कभी निबोलिया पूरे आगन मे भर जाती थी घर भर में कच्चे नीम की महक फैल जाती थी नीम का बौर दोनो लडके हाथो मे भर लेते और एक दूसर पर छितराते कसियाई-कसियाई खुश्बू और ठकुराइन की ललकती नजर कभी बालको पर और कभी उम पर टिकी रहती उमर आधी के करीब नहीं तो थोडी सही, उसने कई सहरो मे गुजार दी जाने कितनी फैसनेबल बीयरो को रिक्शे पर घुमा डाला, पर एक नही मिली उस जैसी कद-काठी की बाल लटकाए, बाल छितराए, ओठ रग और पौडर चिपकाए चाहे मन मे इतरा लें, पर कर तो ले कोई उसके से सिंगार-पिटार का मुकाबला रुपया भर टिकुली, हथेलीभर गुलाल रगी माग, दो अगुरीभर पटियादार काजर, अखरोटी छाल रगडे दात और गुलाबी-बसती झिल कामार सुनहरी मूडल छिडके ओढनो मे ऐसी दिपदिपाती कि पलभर को तो ससुरी अपनी भी आख वही जाम हो जावै थी

लेकिन हाय ! एक लम्बी सास पूरे कलेजे पर आरी-सी फिरा गई, कब किया ध्यान ! दो घडी भी प्यार के बोल नही साझ पडे ही सिंगार मुरझाने लगता और दीये म बाती जले ही आख का काजर बहने लगता आधी रात होते होत वह भूखी बनबेल सी धरती पर ढेर हो जाती तबरे तारे डूबे जब वह लौटकर दुबारी की कुडी खटकाता तो गूलर सी सूजी लाल आखो से बस एक बार देखभर लेती कब मुडकर देखा था उसन बिखरे मुडे सिंगार को या पलभर को भी रुककर पूछा था उन सूजी फूली आखो की रातभर की बिथा को ! तब तो बदन मे आग हिलोरे मारती थी और आखो मे हर घडी सरसो फूली रहै थी हाथी-सा बदन उमडती उमर, दिन कटता दोस्तो क साथ आराम मे और नस पत्ते मे रातें कटतीं नदी पार बिल्ला दई क गुमठे म कहाँ थी फुरसत उम करमजली का सुहाग सूघन की ! सर दारा कभी तीतर कभी कबूतर मार लावै था घेर के पीछे झूमरे के बिटौरे के पास बडे छिरिया का बरासन लगाकर चढ जाव थी हाडी सलीमपुर का सोना बीरन को सग लेकर कच्ची भट्टी से कहए भर लावै था

ओह ! पूरी छाती म आग सी जल उठी ! हाथ-पाव भी सतहीन हो गए आखो की दोना कोरा से मैला नमकीन पानी खाट की भीगी-गन्दी रस्सी पर टपकने

लगा पसलियों के बीच हूके से उठने लगे बड़ी मुश्किल से करवट ली और हाथ मोड़कर सिर के नीचे टिका लिया आँखें बरसे जा रही थी हूकें उठ रही थी और थोड़ी देर के बाद वह बालकों की तरह फूट फूट कर रोने कलपने लगा ओह भगवान ! कहा पड़ा हुआ ! कहाँ की मिट्टी तन से लगी और कहा मरने खपने चला आया ! वो सुबह वाली सरबिनी कहने लगी— बाबा तुम देवता हो अरे बावरी ! क्यों बेचारे देवता को गाली देती है ! साहबसिंह बड़ा धूर्त था लम्पट था सबको खा गया सभी कुछ फूक डाला हत्यारा है वह तभी तो सोने की ढेरी पर सोने वाला आज गदी नालियो से अटे मच्छर-बदबूभरे दल दल मे झगोल पर पड़ा अपने खोटे करमो को रो रहा है अरे हटो ! कोई मत आओ इस नरकिए के पास जुल्मी है यह इन हाथो से सभी का गला घोटे बैठा है यह साहबसिंह

जाने कितनी देर तक वह सन्निपात के रोगी की तरह बड़बड़ाता रहा हाथ-पाँव अकड़े जा रहे थे पूरे दिन की बेमतलब की थकान और भूखे-प्यासे पेटा की टूटन ने अधमरा-सा कर दिया था जाने क्यो सिर पर आग-सी महसूस हो रही थी कोई बुक्के फूट रहा हो जैसे मटियाली रात गदगी को घेरे बैठी थी इधर उधर टपरियो से धुआ उगलती ढिबरियाँ टिमटिमा रही थी

एक साथ तीन-तीन गाड़ियाँ आने का समय हो रहा था, लेकिन मरें ससुरी भाड़ मे जाए कौन उठे हड्डिया चटकाकर ! पहले ही जी मे काग बोल रहा है आखो के टॅट फूके जा रहे हैं किसके लिए दौड़े ! पेट के गढे मे जो भट्टी सुलग रही है वह क्या पस नाज से बुझेगी ! आने दो गाड़िया सत्ते ले लेगा हमेशा फुकता है गालिया देता है कि निखट्टर जलील यही मरता रहेगा एक भी सवारी दाए बाए पल्ले नही पड़ने देता डकार मार मारकर मरेगा शैतान की आत जैसे सुबह शाम टाग फलाए स्टेशन निगल लेब हैगा आएगी, जल्द आएगी खुदा कसम प्लेग इसे तब इसकी जान बैठेगी पेंदी मे

बड़ी गालियां खाई हैं इसकी कहा गया जोश ! चुपचाप गर्दन डालना कब सीखा था साहबसिंह ने ! कहा है अब साहबसिंह ? वह तो उसी दिन मर गया जब उस रात घर गाव, खेत खलिहान और बचपन की हमजोली पगडंडी छोड़कर भागा था जब ओह ! सिर म चक्कर क्या आ रहा है ! य कौन से खीचे मास नोच रहा है ? आज ही सब क्यो याद आ रहा है ? बदन इतना तप क्यो रहा है ? ये काली काली परछाइया इधर सामने कहा से आ गई हैं ? कौन हैं ये सब ? कहाँ डूबा जा रहा हू ? कैसी कसो बिथा है ? कैसी कैसी कचोट है यह ? क्या ? क्यो सब घिरा जा रहा हैं दिल मे ?

हाँ, सब याद आ रहा है वाह साहबसिंह ! तू तो कुछ भी नही भूला जेठ मास की दुपहरिया थी एकदम निपट दुपहरी लू के सर्राटे देही की खाल फूके

डाल रहे थे गरम रेत के बवूले पूरे गाव को थपेडे मार रहे थे चारों ओर सन्नाटा पोहे जगल मे और आदमी गोठो मे बस, बाल बच्चे, वो भी इक्का-दुक्का ही उनके चौंतरे के नीचे गेंद दडी खेल रहे थे उसने सबको भगाया, पर भागे नही थे हाथ पाव और कमर तो उस वखत भी दम तोड बैठी थी यो ही चौपाल पर पडा रहता था उदास, मन मारे अरे राम रे ! तभी छप्पर के पीछे छातीफोड रोना फूटा कलेजा चीर के दहाडें गूजी पहले तो वह समझा कि यो ही कही कोरियो की बाखर मे कुछ हो गया होगा, पर जब चुन्नीसिंह की काकी कोठे की ओर भागी, तो उसे लगा कि चीख चिल्लाहट तो उसी के ढोड मे से उठी थी वह भी तब घर की ओर झपटा था

देखते देखते गाँव इकट्ठा हो गया उसका दरवाजा मर्द-औरतो से भर गया कुए की जगत, चौपाल की मपील और गगू नाई की टूटी बैलगाडी का बाजू सभी पर आदमी ही आदमी बडी-बूढियाँ बहन बेटियाँ सारी भीतर जा रही थी जसे जैसे औरतो के जत्थे भीतर जाते, वसे वसे ही रोने की आवाज और दहाडे तेज होती जाती आसमान फटा जा रहा था पसीने की धारें बह रही थी पीपल के ठूठ का सहारा लिए आँखें फाडे मुह खोले सभी को फटी फटी निगाह से दखे जा रहा था क्यो ? पूछना चाह रहा था जसे कि कहा जुल्म हुआ ! कौन की मौत आई पर पूछ कहा पाया ? जीभ ताल से चिपट गई थी मुह मे पूरा काटो का जगल उग आया एक बूद भी रस जीभ पर नही तैर रहा था

तभी पीछे से सत्तो नाई ने कमर मे टहोका मारा— अरे ! कहा बावरे से माह फाडे ठाडे हो ! करजा ऊपर पत्थर धरिके सुन लेओ—तुम्हारे गोपालसिंह के छोटके चल बसे हाय रामजी ! कहा है गयो जे जुलम धरती फटि गई अरे कौन सो कारो कउआ खाबे बैठ हतो, जै बादर फटिवौ और देखनो हो तुमकू बज्जर कर लेओ अब अपनी छाती कू

सुनते ही सचमुच उसकी आखो के आग धरती धस गई थी आसमान नीचे गिर गया था और पूरी चौपाल उलट गई था सब कुछ तहस नहस हो गया था साय साय का ऐसा ही चक्कर तब भी आया था, जिसने उसकी पूरी देही म लकआ सा दे मारा था

बीच-बीच मे तनिक सा चेत होत ही व देख रहे थे कि जो भी सुन रहा था उसी की आखो म पानी भर आता था हाय-हाय मच गई थी सभी हैरान और परमात्मा को कोसते हुए सभी के मुह फट रहे थे किसी को भी यकीन नही हो रहा था उन्ह चक्कर पर चक्कर आ रहे थे सामने की गदली पोखर मे जसे कई भट्टिया जल उठी औरो की क्या कहे ! खुद उन्हें ही जसे सब झूठ लग रहा था भला एसा जुलम भगवान करेगा ! कुछ बरस पहले घर से राम लछमन की सी

पट्टी जोड़ी लकड़ियों पर धरी थी दुनिया तभी तबाह हो गई थी पर ठकुरानी ने रोती-मूजती आँखों को डूबते सूरज पर लगाते हुए कहा था—'ठाकर ! हमारी कबहु नाय सुनी अरे ! बासन घटकें हैं तो कान खड़े हैं जायेंगे, पर हम जिनगीभर पुकारत रही तिहारे कानन का परदाऊ नाय फड़को ऊंच नीच समझात-समझात देवता सरीखे ससुर दम द बठे और हम बूढ़ी हैं गई आज तो करेजा बासन उछर रहो होयगो! ज्वान बेटान की स्वासन कू फूक नें सड आ फूटि रहे होयेंगे ! चौं ! अरे फूटे मेरे करम ! अब काहे कू ढिंग बैठवे विसूरत हो ! हमारी जमानी तो बोतलन म पोर कें पी गए और कील-कांटे चढ़ाय आय आनें दिन दिन गदी मोरीन मे सरस गयो हीया मिल बैठ कू आज बेटान की छानी प अगार धरवे आए हो तो पास सरक बठे हो सरम की कहा कह ! कछु होती तो जे धरती चौं फाटती ! खैर, हम तौं डरती रही, अब कहा बेसरम बने इतनी ही बिनती है के आगे ता म्हों की कालिख पोंछ कें बुढ़ापो सभार लेओ खुद कें लिए नांय तो जो धर म नयो पिरानी आ रहो है, वाके लिए ही सही'

ठकुरानी की बात बीच मे ही काटकर उसने मुडासे के छोर से आँख-नाक पोछ कें कसे हुलस के पूछा—'अरे ! तिहारे म्हो म घी-सक्कर ! हमारे सिर की सौगन है तुम्हें, जो फिर न कहो जे बात लेओ हमारे मूड मैं सौ जूती दे मारो देखो करेजा टूक-टूक है गयो है अब सुनवे की म ताब हैगी और न जी मे जोर इन पूतन नै का कम लात मारी हमारी कमर म, सो तिहारी कसर बची हैगी ! कहो तो फिरत कहा कही अबई ! कौन आय रहो है ! कहो बेगि

यह बोलता जा रहा था ठकुरानी की आँखो से आंसुओ की धार बह रही थी हिचकी बध रही थी बडी छटपटाहट की थी वह पडी उसने दौडकर लोटा भर पानी उसके हलक मे उतारा जान कहा से टूटी पोरा म जान आ गई जसे बेटो की चिता सजाकर नही उनके ब्याह रचाके आए थे उसी समय पानी पीकर ठकुरानी थोडा होश मे आइ और कांपते ओठो से खबर दी ' अब जी हलकान मत करी जी हमारी मंसा तिहारे बोली ठोली मार कें जी कू दुखावे की नही है य तो मगज म आग फुक रही है, ये तो सौ जनम को जमो धुआ निकरि गयो अब दुख मत पाओ जो हमारे करम कूवाचनो हो, वाचो तुम्हारो भला कहा दोस ! आंसू पोंछौ और सुनौ बडके की बहू के पाव भारी हैंगे भगवान ने हमारी देहरी को दीयो रोसन रहन दीनो हैगो पर तुमकू भी मेरे सिर की सौगन मेरी मरी को म्हों देखो जो अपनी पुरानी लतन के चक्कर म बधे तो !'

सुनकर वह फिर रो उठे, लेकिन इस बार सुख सतोष के आंसू थे— हे— पिरभू ! तुमसू बडा भला कौन ! अरे, कसी दरिद्दर की झोरी भरी हैगी ! जीने को सहारो द दियो झटपट मँडी म झपटे थे और हुक्के का पानी हाथ मे लेके, ठकु-

रानी सामने सात बार हलफ उठा और सारे दई-देवान की कसम उठाकर, धरती पर पाँच बार लकीर काढ़कर, पूरी दिलजमई से हामी भरी कि पुराने लफड़ान में अब नही पड़ेंगे पड़ा तो सौ जूती तेरी और नरकवासा भगवान की तरफ सू और, पर क्या निभा पाए थे वह सौगन्ध ठकुरानी की ?

बड़ी बेचनी है झगोले पर करवट तक नही ली जा रही मच्छर ससुर आज चाट ही डालेंगे सिर की नसें आज नही बचेंगी सूखी ताँत सी नसें ऐंठी जा रही हैं भला यह उमर यो नाली-कूड़ी मे सड़ने की थी ! सब सुख थे पर करमहीन को कैसे सुख ? वह मनहूस रात हाँ, वह रात जब रहे-सहे करम फूटे नायब का कारिंदा आया था क्या नाम था जाने उसका, सिब्बू ! नहीं शिवरतन वह चुपचाप उसे उठाकर बरगद के नीचे ले गया और बोला—'दाऊ ! हरकिसना ने मुकदमे की सूरत बदल दीनी है मेरी ओर बोलनिया एक नही है तुम भी आँख चुराए गए तो बनी बनाई साख डूब जाएगी जो काम बन गयो तो मनपसन्द दावत बिहारी पक्की'

विचारो की आँधी मे सिर पत्ते की तरह घूमा जा रहा है

'कौन ! अरे कौन है ! क्या भजना है ! ना, पाँव छोड़ दबाने की जरूरत नहीं है बस यो ही थक गया हू जादा रोटी-पानी को भी जुगत आज नही बैठी, सो कमजोरी सी है अब तू जा तेरी महतारी रोटी के लिए बैठी है हजार गालीन के साथ हैं जल्दी आ जाया कर झोंपडी का दीवट थोड़ी जल्दी बुझा दीजो आखन की पुतरिया फटी जा रही हैं सिर भी बड़ा भारी है चक्कर आ जा रहे हैं देख, जो मैं मर जाऊ, तो मेरी ल्हास्यूँ यहा मत फूकियो जगी प्याऊ वाले के पास थोड़े पैसे दे रखे हैंगे ले लीजो और गाव ले जाके जला दीजो वहा जाने महताब सिंह ठाकुर की हवेली गाव के लोगन सू पूछ लेना हवली हा हा हवेली नहीं फूटा ढाढ मिलेगा वही कही बड़ी-सी चौपाल का फूटा ढूह भी होगा वही देही की माटी टिका दीजो मट्टी माथे मे जरूर डाल दीजो बस कलैजा मे ठड़क पड़ जाएगी

भजना थोड़ी देर बाद चला गया सोचा कि आज बाबा के ताप चढ गया है माथा भट्टी हो रहा हैगा सो बर्राहट सूझ रही है सो लेगा ठीक हो जाएगा मगर साहबसिंह के माथे की मशीन थी कि लगता था कि आज सबकुछ छाप कर ही मानेगी आज ही तो दिन आया था कि वह अपने सारे भले बुरे पत उतार-उतार कर अपने हाथो ही उन्हे जूते लगाए, लानत दे थूके और फटकारे

सिर चक्की की तरह फिरते फिरते फिर लौट आया मन की एक गाठ और खुल गई गाव भर म गहरी लाल चिनवा ई टन की एक ही हवेली थी वैसी किसी की नहीं थी ऊची-ऊची और बड़े बड़े जगलेदार बैठक वाली तिदरी चौबारी

हवेली एक साथ इसमे दस बैल समा जाए, ऐसे चौडे फाटक फाटक था कि हाथी भी सिर मारे तो खून खच्चर हो जाए, पर मजाल जो एक भी चूल हिल जाए अठकली नोक्दार फूल लोहे के और बीच मे घुडीदार कील साँकल ऐसी कि राजा-महाराजान के महलन कू भी मात करैं बीच मे तीन-तीन मोटे आगल अलग से चोर आन पीट लें, पर सुई बराबर जगह नही कर पाए अर्राट करके फाटक खुले था और गडगडा के बद होवे था पूरे गाव को खबर लग जाती थी कि ठाकुर की हवेली कब खुली और कब बद हुई ! खाट घुस जाए, ऐसे आसार थे दीवान के गोल गुम्बददार महराब धूप और चादी-सोने से दमक्ते रहते थे लेकिन जब गाव छोड कर भागे तब बुरी गत थी हवेली की फूट फाट कर टेढे मेढे दो कोठे ईंटें तो जाने कब झर गईं नसा-पत्ता मे जब मौका देखा, तब अपने हाथन बेच दई और गोबर मिट्टी दीवारन पर चढती गई फूटती गई सो फिर लिसती गई सो टेढे मेढे दो फूटे कोठे और आधे फूटे दालान की गोठ भर रह गई थी चार-डालने के लिए फूस-घास बटोर थोडी जगह और छा ली थी

और चौपाल ? अच्छी भई कि दाऊ की आखन आगे चौपाल नही बिखरी नही तो दाऊ को सराप और भी उसके बदन मे कीडे डालता

हवेली के पिछवाडे जहाँ अखाडा अर्राता था, वहा अब गाव भर का घूरा-कूडा पडता हैगा अखाडे की बगल मे कितना बडा बाग था ! दाऊ को यो ही तो नामो से पूरे आठ गाव जानते थे या तो पहलवान के नाम से, या बाग वाले दाऊ जी के नाम से बडे बडे पेड कौन सा फल बचा था वहाँ ? चकोतरे, अनार, नीबू, आम, कटहल क्या नही था ! सेरो पपीते यों ही बिन तोडे-खाए सड जाते गाव भर के बाल बच्चे और ढोर डगर चलकर खा-पी जाते

साहबसिंह की आखो के आगे पिछले बरसो के सैकडो रग खिल गए दस जोडी पठनिया बलो के गले की घटिया टुनटुनाती रहतीं भैसें ! बस जी ये सब दूध का भडारा थी कुट्टी काटने की मशीन पहले पहल दाऊ ही लाए थे पूले के पूले ठसते थे तो पूरन ताऊ के लडके और सुखराम का जवाई कैसे कुढे जले मरते थे। कुछ ऐसी नजर मारते थे कि जसे आखो से ही भसम करके छोडेंगे करते क्या ? पूरी दुपहरिया थूक छिडक छिडक कर हथेरी मे गडासे की मूठ दबाते, तब जाके कहीं भैंसिया लायक छिददी कर पावें थे

दाऊ ! ऐसे बाप जो मुरब्बा तक चले जाओ मिल तो जाए कलई के तौला सा चेहरा और कान की लौर तक नोक मार मूछें मजबूत ठोडी, बडी-बडी लाल डोरा सुती आखें जसे हर बखत उबल रही हों ! मुह फाड कभी छोटी सी और पतली परत की घुमावदार हसा मौसी कहा करें थी– 'जीजा के म्हौं मे बतासा भर फाक है हसते बखत मोती से गुथे भर दांत सच मे दूसरे की जान खैंच लवें है नक

सो फटे है आठन की चोवा, पर मल्लान मे उगरिया डूब गड्ढे पर हैं स ची रे। मन ऐसो वैसो है के रह जावें हैगा नजर न लग जाए सो दिन मे दो-तीन बार धुधकारा लगा देवें हैं' दाऊ, वह ठट्री साली, सो उन्ही के धनुसरग के दुपट्टा स पूकारा पुछवावें है मौसी जब तक मा के पास आवे रहती थी, तब तक या ही जीजा साली की मौके बेमौके ठिटोली बोली चलती रहती थी

दाऊ ! कैसा पत्थर-सा कुटा था बदन मे ! मजाल जो उगरी भी गड जाए! होरी के रग मे जब सराबोर रसमगन होवे हुलसाते, तो कसी गरम ऊची बात मारते थे अजी मचली भौजी ! दो हाथ सू रग छिरका के कहा वीर-मर्दानी बन रही होगी ! पास आवे गुलाल उछारो ना ! जनेऊ सौं उगरिया की चिटुनी सू ही बधकर न रह जाओ तो नाम कहा ! हम तो सोचें कहा रग डारें ! एक करारे हाथ की ढोलची पर गई, तो खटिया सभारती ही दीखोगी हा हा हा और मचली भौजी शहदतिरी आखें गडाए देखती रहतीं

बदन की महमा भी खूब रही ! चार परिया तेल दिन निकरे ठोके था वह नाई हीरा गुहाने वाले पडित की पिछवारी भीत का ठसेका लेके जब जाघ और बाज तेल से ठुके है तब राम कसम आठ-आठ अगुर मछरिया लहरा जावें थी अब अगुरिया की पोर गडे तो कहा गडे ! हरदी मैदा मिली चिकनिया देह थी वह वसी ही टिमा टरी सूरत और नाकदार मूछें बादर सी गहराती हुमकती आवाज चलते तो लिपे गोबर के आगन मे पाव के नीचे चार दरार दरक उठें थी खडे खडे दो बाल्टी कच्चा दूध चढा लेना और ऊपर स मुठिया कसा बदाम पिस्ता जमा गुड ये तो मामूली बात थी दोपहर को सवेरे के ताजा मक्खन मे लिपटी बालिश्तभर गुडचनी की रोटिया दोनो बखत पूजा पाठ शाम घिरी कि चल पडे थे तीन कोस दूर हनुमान जी के मदिर मे गाम भर के उठती उमर के लडको को पटेबाजी सिखाना फारिग होकर खुद घटा मुग्दर चलाना लौटते बखत चादी से दमकत पसीन से चिकने माथे पर सिंदूरी तिलक झमझमाता रहता ऐसे बाप का बेटा था वह ! एकदम कपूत, बेगैरत रात को बाप गुलाबी रगत घुला दूध पीते और बेटा ? कमबख्त चमट्ट सिब्बू क सग कही मदक गाजा पीता रहता लानत है रे साहबसिंह तुझ पर

जान कौन कौन स नसे पत्ते सिखा दिए थे उस सिब्बू ने उसे !

दाऊ को अभी उसके बिगडन का पता नही था वह भोले गऊ जाए से बस या ही सोच गुजर लेते थ कि अभी लरिका-बाली उमर है सो यहा वहा यार बासे म कहानी मुरकनी सुनने-सुनाने मे बतियाता रहता होगा ! इकलौता बेटा यो भी आखो का तारा कहा स जान पाते कि कुल मे सेंध लगाने य धतूरे का बीज उनक पुश्ता जिमम म स पनपा है कडवी वस-बेल का यह धतूरा नही, उन्हें वहा गुमान था ?

जाने कहाँ से वह जमदूत नहरी गुमटी में उनके ठहरा था। वह नरक-वासनी शाम। मिट्ठू के संग लच्छन खान सक्के का बेटा बसीरा और अतरी माली का बेटा डबर उसारे में आ खड़े हुए दाऊ बलन कूं सानी-पानी देवें महाभारत की कथा सुना रहे थे बाहर वाली गोठ में शोभा सुनार को जाड़े उतरे ही थे ठिठुरन ज्यादा नहीं थी, सभी न आकर इशारा किया चलने का करम खोटा न कुछ सोचा, न समझा, बस दाऊ की नजर बचाकर चल पडा उन जमाने भर के लुगाडों के साथ

गुमटी थी कोई दो कोस के फासले पर ऐसी दौड लगाई कि वहीं जाकर साँस थमी वहां था वह साधू ओह! उस पाजी ने कैसे उसके सिर पर प्यार भरी खुरदरी हथेली फिराई कि लगा जैसे सात जनम सुफल हो गए! हे हू रे गोगा बाबा! भारि लहि दम तोरे परसाद माहूने दीख जाए बकुठ धाम रे दीख जाए मोकछ सुरग हा हा ताल ति ट् ट धु न न और मतर फूक हथेली बीच जो चिलम थमाई, तो वा घूंट सारे बदन की नस-नस को खींच गया गिरती पडती हालत म रास्ते में सभी धूर्तों न बताया कि ये सुरग की गैल ले जाने वाली चरस थी और यह था नये सबडे बाबा का अखाडा

कान की लौर पकड कसम खाई कि अब जो गुमटी की राह पकडी तो पाव तोड लेंगे गगा मया की सौगध से लकर पेटम रखने वाली मया तक की कसम उठाई मगर हाय र भाग्य का बोढ! सारी की सारी धरी रह गई साम झुकती कि खुद ही पाव उधर दौड पडते किसी को साथ लेने की फिर फुरसत ही कहा थी?

दाऊ की तज नजरें काम कर रही थी बेटे का सुता मुह और तात सुतली से ढाकर हाथ पाव जब ज्यान ही आखा मे गढ़ने लग तो रहा नहीं गया उस भगत आन्मी से कहा फिर भी कुछ नहीं बेटे की खुराक बढ़ा दी पास बैठाकर दूध दही देने लगे, गोदिया लडडू बनवाये पर खुराक असर क्या करती? मक्खन-दूध जहर बन बठ दिन दिन देह और जरक सी हाती गई खासी भी उठन लगी ऐसी खासी कि हाथ पाँव अकड जात छाती पर बल्लम चल पडते एक एक हाड-पसुरी खूटा सी तन जाती आखें उबल उठती खासी का दौरा सास तोड देता

बाप की आखो की नींद उड गई हर समय माथा तना रहता

दाऊ का मन घोर शकाओ म डूब गया कहीं वह पहलवानी, अखाडा म पटे बाजी और दाव पच ही सिखात रहें और घर का चदन ढाक की लकडिया बन फुक जाए! पाव तो नहीं फिसला बठा कहीं? जी बचैन और कलज म उचकाहट एक दिन कुछ सोचा और जा दबोची उन दोस्त यारा की गर्दनें, जा महीनो से बेटे क इद गिद कुलबुला रहे थ पहले ता सबन हैकडी जताई पर जहा दो चार

मसरती हाथो ने उन्ह जमीन चटाई, तो सभी ने उगल दिया गाजे-चरस का किस्सा और भी दबी-ढकी कई बातें उजागर कर दी

'अरे करमपिट जनम अघोरी ! तुझे किसी भी जिनगानी म चन-सुख न मिले' बस इतना कह खुद का वह तीन दिन तक दह दत रहे न रोटी खाई, न पानी पिया बाल्टी दूध की या ही पडी रही मुग्दर नहीं छुए अखाडे की माटी उनके बदन स नही लिपटी फिर अचानक एक दुपहरी पागल स दौडे और उस निभाग कपूत को खींचकर भरा बाधन वाली साह की साकल स जकड कर पिछवाडे वाले कीकर से पूरे पाच दिन तक बांधे रखा जब भी कलेज मे हूक उठती, तभी उसके सामने आकर बालका की तरह छाती कूट-कूट कर रोते और मुट्ठी भर धूल अपन सिर म झोक फिर कटे पड स कुइया वाले चौतरे पर औंधे मुह पड जाते वह बेटे की पीर दखत और खुद का कोसते रहते आसू बहाने क सिवा क्या करते ?

तब तब उस निपूत बेटे की आंखो स जो धार फूट पडत उनसे भी सबक कहा सीखा ? जहा शाम आई और रात गहराई कि सारे यमदूत जाने किन कोने स निकल आते और चुपचाप साँकल की गाठ जोडी ढीली कर बगल क दगरे स सीता पटुआ की बजर टुकडी से निकाल नहरी पटरिया पर भगा ले जाते रात के गए पहर तक वही जहरी धुआ और वही जान लेवा नसा फिर वही दौड करेजा फाड गिरते फूटते फिर भागते, आके साकलों म बद कर जाते करम कीडे पहले की तरह हो

नशे की लत जो लग गई थी तो कहा छूटी ! लात घूसे बरसाकर, भूखे प्यासे हाहाकार करके सब तरह से अपन का और उसको तास के दाऊ हार थक गए चुप हो गए महीने, हफ्ते, बरस सरकते गए दाऊ न लाड स समझाया, मरने मारने की धमकी भी दी, हर लोभ लालच से ठीक राह देनी चाही, पर नसबाजी स लौटना तो दूर रहा, बल्कि शहर से लौट लबरदार के छोटके जगन परसाद के साथ उठ-बठकर शराब पीना और सीख गये थे यह पापी साहबसिहजी रे निपूतिय रेऽऽ

गगाराम तमोली न, जो महीने प द्रह दिन म सहर जाकर पान की गाठ खरीदा करता था और गाव के पास वाले कस्बे मे जिसकी पुश्तैनी पनवाडी-बीडी शरबत वाला की दुकान थी, जब दाऊ का खबर दी कि उसने उनके कुल-बोरू को शराब के साथ साथ सानकी के कोठे पर भी चढते-उतरते देखा है , तब दो दिन मे ही दाऊ का जगी बदन टूट गया मन की बज्जर सिला पर जस हनुमानजी की गदा गिर पडी देह किरच किरच बिखर गई जब भी बेटा गाव लौटता, तब वह न चौपाल म न आगन म और न बाहरी बड फाटक वाल बरामद मे निकलते कि

कहीं नासपीटे कालिख, पूते नसेबाज का मुहू न दीख जाए ! बस ओबरे मे दफन हो जाते वहीं खाना-पीना वहीं रामजी के और हनुमानजी के आगे ह ▮ रोना और खुद को कोसना

मद लगी ईटो पर दो बालिस्त धूल जम गई मां की सूरत छ बरस पुरानी बीमार जैसी हो गई बेटा कहा माने नहीं फेरे डाले आदमी से पहले जीभ चलाई थी न, अब कुछ ढांढ़स देने की हिम्मत नहीं रही वह दाऊ से भी पहले झुरिया गई गाव भर म लुच्चे, लफगे और शराबी बेटे के किस्सो, मार-पीट और बहन-बेटिया की शिकायतों से उनकी कमर ऐसी टूटी कि दोनो ही बरस आगे-पीछे चारपाई पर ही दम तोड बैठे न बाहर मुहू दिखाया किसी को, न हाट-पैंठ ही किया हाठ पैंठ क्या, व तो किसी से बोले तक नहीं फिर

गाव ने उस बदजात पर थूका सो-सौ गालियां मे उसके नाम के टुकड़े किए हवेली ही सूनी हा गई कद मढ़ी ईंटें, सुन्दर वजन तोलन के गोले और कद मढ़ा लट्ठ तब पड़े रह गए काना-कोना रो रहा था नानी-नाना ने आकर उसे जाने कितनी लानत-मलामत दी मामा और मौसा न तो गेरू की लकीर खीचकर वचन दिया कि जिन्द मुदा उस नीच-जाहिल का मूहू नहीं देखना कभी भी

दाऊ ने साल पहले यह सोचकर कि जवान बेटा है, रस्सा-पघेरा डारिके पाँव बाँध लेओ, सो शादी कर दी कहा पता, भगवान की ऐसी कछु किरपा है जाय के याकू यारे मूड की आवे बस मे कर ले ! अरे ! गुतरियान सू चार घरी मन की बीच म सूखे कागज के फूल भले ही खिलाय लेओ, पर कहा तन-बदन हरिया होवै है अपनी घरनी की मुहू माथा सूघें बिना ! जे पचास गामन के नीचे सू निकरी भई मटनियां जान कब की ठोकर झारिके निकार दिगी मरद की ऐंठ मिनटन मे झार डारे इज्जत आबरू कहा जावे यारी म्हों छिपागे ! तबकू होम हैगी अपनी घर-लछमी चार कसूर माफ करे, गरम खवाव, दस बात सुने, दस सलाह देवै जैसा दा पहर ले, जैसा दो खा ले कहा यो ही दुनिया बावरी है जो हजारन रुपया फूक के घर बसाव है और उजडने पर धार धार बुक्का फारिके गर्रावै है !

सभी के चिल्लाने-कुकियान का कहा असर पडा था ! यार मित्तर और बढ़ गए दाऊ गए तो घर तो खचाखच भरा पडा था ही नाज-पानी से बुखारे अर्रा रहे थे चार कोठे कपास चने, जो गेहू की गुहार भरी गुड़-सक्कर और घी के पीपे कोठरी म तला ऊपर कहा कमी थी वहां ! कई हल की खेती पाच कूनी भसें दाऊ के साढू ने खरीदवाई थो तीन हरियाना की दुधारी सफेद-कबरी गायें झब्बू-झीगा चढ़ती उमर के बछेडे दाऊ की आँख मिचते ही कैसी मनमानी छाई थी उस पर खूब पैसा उलीचन की आजादी दाऊ के हायो लाड-प्यार से संग ब्याही कस्तूरी की कब परवा की थी उसने !

जाने कौन से घाटे बरस मे हरी घास की छरी उग आई थी, या राम जाने दाऊ के सतकर्मों के परताप से चार बरस म बिरजू और मगल भगवान कस्तूरी की गोद म बैठा दिए सून घर म मा के कहने उजारा फलान आ गए थे दोनों एक से एक बढ़कर गोल मटोल भूरे भक्क अपने बाबा के चेहरे मोहरे की उनहार लेकर जनमे थ उनकी ओर देखा और बचपन की किलकियाँ टिटरियाँ सुनने का कहा मौका मिला ? घर आंगन को गहन मोड़ी ही कब ? उस धमकनी कोरी म घुमत रहा थी !

दाऊ की गुजर तीन बरस हुए थे किसना के भाई की बारात जानी थी बारात मे कहा गए ! बीच म ही एक नई होनी ले बैठी दो-तीन दोस्तान की राय हुई कि बुढ़ऊ-भोड म कौन दिन खराब करे, अगली रेल से चलेंगे जो डिब्बा हाथ लगा चढ़ गए और बस वही वो चौड़े पाट की काली किन्नी के घूघट मे उगरिया भर काजर मे आप डुबोए बैठी दीखी, बहुत रखीं, पर वो काटेदार नुकीली आंखन ने जी कूरे कर रख डाला पूरी बांहों क रेशमी जम्पर म हरी लाल चूड़िया लपटें बिखेर रही थी

गाड़ी हिचकान दे रुकी तो माथे से थोड़ी किन्नी सरकी चांदी से माथे पर काले-उमठदार बालन की पत्तियां और बाईं ओर झमकत सिंदूर म माग गिन्नी सी कोरेदार आखें कसी शरमाई थी उसे एकटक निहारत देख ! नाक मे पड़े डेमलकट बुलाक का गुलाबी गोल मोती ओठों की नोक पर मुस्करा उठा था बस जी ही निकल गया था दो बार उठकर उस पीतल की गड़ई म पानी लाकर दिया हर बार वही मरोड़दार मुस्कान ! दइया ! जान ही ले बैठी थी कौरमपुर के किसी ऐसे-वैसे मोहल्ले म रसूक रखे थी, सो जान पहचान जल्दी ही बढ़ी ऐसी बढ़ी कि फिर इधर-उधर का भटकन छूट के उसी की ड्योढ़ी की होकर रह गई

उसी का छाँव तले ऐसे सिराये कि बिरजू मगल की कनबतियां कान म रस छलका ही नहीं पाई जान कब तक उस फिरकनी क चक्कर म घुमेर खाते रहते वह कि संग बढ़े, खाए पिए दोस्त न ही धोखा दिया वह पूरे बारह बरस तक उसे खास अपनी समझत रहे अड की तरह सत रह हवेली का नास किया, जमा-गोठा सब उजाड़ दिया उस पर मा, बहू और पुरखा के रखे जवर और नगदी सब न्यो छावर कर दी उस पर. सब नगा कर दिया उस नटनी को ढकने की खातिर कहीं थी दाऊ वाली बरक्कत घर की औरतें जान कहाँ चार दाने नाज के छिपा-जोड़कर चूल्हा जलाया करती थी, वरना सब स्वाहा कर डाला था उसी कमजात औरत ने जब उन्ह दोस्त क सामने लात मार दी, तब पहली बार मन का मद जागा जूते मारे, गालियां दीं, बाल नोचे वह सब किया जो दाऊ नहीं कर सके, माँ नहीं कर सकी और न सतफेर ढली कस्तूरी कर सकी पर कहा जग ? घर फूक डाला, देही

दे डाली, तब आँख खुली ! सारे दुश्मन बन गए सोने की हवेली ढेर हो गई और भरी जवानी मे ही कस्तूरी सत्तर बरस की बुढिया हो गई विधवा औरत का सा भेस और मर्दों के से नगे हाथ-पाव सभी परेशान थ

मन मे हा-हाकार का गोला दुधारी तलवार की तरह काटे डाल रहा था चारो ओर स ठोकर खाकर और गदी नालियो मे डूबकर घर की ओर ध्यान गया आसुओ म घर भर डूबा हर ओर तबाही तभी देखा बिरजू, मगल को भर आँख बाबा की तरह ही दोहरे बदन के ये अचरज तो यह था कि जाने कब बडे हो गए और बाबा के मुग्दर और कद लिपटी इटा को सभाल बैठे सो दोहरी देही कसरती धार नाप बैठी बडे ठाढे जवान निकले ये दोना बेटे

उसके मन मे उन्ह देखकर बडी ठेस लगी दाऊ ने ऐसे कसरती, गठीले बदन के बेटे की ही तम ना की थी कैसे-कैसे उजास मन म पाले थ पर निकला टेढ एक दम नाली मे सडन मे उगा गली बास की पोली जसा नालायक निकला उनका बेटा तो

बेटे बडे होते गए रग-ढग भी हाथ-पाव फैलाने लगे मन मे शका झाकी कहीं ? हा क्यो नहा बेटो ने बदन काठी ही तो दाऊ की पाई थी, लेकिन इनकी रगो मे ता उसी का खून बह रहा था वह खून, जिस खून खोलन म भी शम आए, जिसकी एक एक बू द मे जमाने भर का नशा टपक रहा था जिन रगा से व टपके थे, वहाँ सिफ शराब थी कच्ची गदी बर्बाद करन वाली शराब जब केसरी ताऊ हाथ मे हुक्का लेकर उसका पानी उसक सिर पर औंधा क चीखते थे तब यही कहते थे—'देख रे कुत्ता ! पहले तो तरा बियाह हाना नही और कोई आँख का अधा करम का खोटा डुबो ही गया अपनी अनचाही ओलाद को तेरे द्वार प, तो समझ लीजा तू भी ऐसे ही खून के आसू रोवैगा जसे तेरे बाप रोवै हा एक बार जिस घर कू चाटने ये लत घुस पडे है, रामजी भी उसे नही छील सके ' अरे ! तो क्या वह बेसरमी, बर्बादी और गदी हरकत फिर अपना सिर उठाएगी ! नही नही, ऐसा भला क्या होगा पर होनी को कौन टाल सकता है ?

आखिर धक्क का पहला रेला आ ही गया चौंक पडे जब बडा बेटा बिरजू दबे पाव बखरी म घुसा था एक तेज जाना-पहचाना भभका उसक नथुना स लेकर सिर जिगर तक नापता चला गया मन के गढ म तोप-सी दगी उ होने लपककर ढिबरी जलाई और बेटे को आवाज दी जब कोई जवाब नही आया, तब थोडे गम होकर कुछ कह दिया जी धक्क से रह गया जब बेटा सिर ऊचो लाठी उछालकर सामना कर उठा वह भी उसी चौपाल के नीचे जहाँ वह बाप की लाख फटकार सुनकर भी नजर नही उठात थे जजीरा से पिटे थूक डलवाते रहे भूखे प्यासे रहे, लात घू से खाए पर मजाल जो दाऊ स आँख मिला सके ! यह दिलद्दर बाप पर

लाठी उछालने को तैयार है ! जमाने की बात है आगे की पीढ़ी कुछ तो आगे चले तेरी गति यही है रे नरकिये साहबसिंह

हर ओर गहरा सन्नाटा चारों ओर बिछी खाटें सभी जाग गए थे सभी के कान उस ओर और सभी की आंखें उसके ऊपर उनकी बेइज्जती हो रही थी बेटा चीख रहा था, बाप सुन रहा था

होश आते ही उन्होंने हवेली जैसी भी बची थी, संभाल ली थी खेत खलिहान देखे खेती में फिर दम आया भैंसों की देही चिकनी हुई बैलों की घण्टियाँ फिर गूंज उठीं दोनों बेटों की सेहत पर रात दिन एक कर दिया मां की रतौंधियाई आंखों में जुगनू चमके और फूटी किस्मत वाली कस्तूरी के हाडों में जान आई समझे कि चलो अंत में दाऊ के सारे आंसू हवेली की हर दरार से पोंछ देंगे जो हुआ सो हुआ, अब दिनों को ज्यादा नहीं कालिख लगन देंगे पर यह क्या !

खाट से खांसकर रामजीलाल ने बोली कसी—'अरे साहबसींग ! बेटवा तो तिहारे ही हैं तुम दो सकोरे चढ़ावे थे, तो ससबेल पूत चार सकोरे चढ़ाई हैं तसल्ली करनी है तो पूछो उसी चंपा से, जिसने पाली हैं तीन-चार तितरियां, वहीं छैलजू पीछे आए हैं यकीन करो तो ये परो है रखवारी टकोरी माने पैंठ सू लौटते बखत यहां सू उतरत देखे हैंगे अब चुप खेंचो जैसो बीज, वैसो पौद पड़ौस की नींद तो मत उजाड़ो अच्छोई भयो आखिर ते देखि लयो, बाप सेर तो बेटा सवा सेर मरे दाऊ की आतमा कू ठण्डी करवे कू अबई कसर जो बची हैगी भैया '

हाय हाय ! कैसी कालिख पुती थी कान सनसना गए थे पोखरी के बड़ के नीचे डकरा-डकरा के रोए थे दाऊ दाऊ ! तब जान पाए थे, दाऊ के करेंगे के मरोर को दाऊ ! अपनी पीर सह गए तुम तो, मैं कैसे सहूं ! दाऊ का बेटा तो दास था, पर ये ! हे राम ! पत बचाइए

दूसरे दिन से जाने क्यों वह बेटों से डरने लगे आंखें बचाने लगे जो भी रिश्ता हाथ लगा, दोनों के ब्याह कर दिए दाऊ ने भी सोचा था कि बेटा ब्याह से संभल जाएगा पर क्या संभले थे वह ? फिर ये कैसे संभलते ! कस्तूरी, जो कभी बोलना तो क्या उसकी ओर देखने की पूरी जिंदगी हिम्मत नहीं कर सकी, वही अब उठते बैठते ताने से कसती रहती दाऊ का बेटा तो कुलच्छन करे था बाहर, पर ये पोते ! ये तो एकदम निलज्ज डोन हैं ! मरने मारने पर उतारू देही का जोम उनका कसरती बदन आंखों में भय के कांटे उगाता

एक ओर आफत उसके जी को बंधी थी कि वह बदल गया था, घर निहोर बैठा था पर यह ससुरी लत ! इसका क्या करता ! कई बार सोचा कि नशा बंद कर दूं, पर ये गोड़ हाथ चलने से रहे तब ! बड़ी माबई जान को आई मदक गांजा पी नहीं सकता था, चिलम धुआं उडेलती, तब ये दोनों जल्लाद आ जाते

संरम अलग सोचते कि नसेबाज बाप भला क्या कहके हेकड़ी जतायेगा ! शराब ! अरे ना ना फिर तो दोनो करमठोकरने सामने ही सामने बोतल बजाएगे फिर ! ये घुटने कैसे चलें ! पूरा घर सभारा है तो ! यह आस करना ही बेकार है कि य दो जवान पट्ठे उनका हाथ बाँटें हाथ-टांग चलान हैं तो नसा तो होगा ही चाहिये पर कैसा नशा हो, जो हो भी जाए और किसी को पता भी न चले

पर हो कैसे ! एक दिन एक तरकीब सूझी चल दिया नजीर की झोपड़ी की ओर, और दियासलाई की डिबिया में चुपचाप अफीम घर लाया बड़ी घिनौनी चीज मन अंगीकार नहीं करे, पर हुबकाई-डबकाई से-न्यामर महीना बीस दिन म अपने को इस बदकार चीज के लायक बना ही लिया किसी को भी हाथा-हाथ पता नहीं लगा इसका जब भी हाथ टूटते, चुपके स एक गोली मु ह म डाल लेता काम चलता रहा बेटे बद-स बदतर होत गए वह सूनी-सूनी आँखो से, बबसी स, जीभ ओठ भींचे उन्हे सहता रहा

दूसरा धक्का आँधी-सा तब आया जब जाने किस बुरी सोबत की सलाह से या उन्ही की फूटी तकदीर के इसारे पर दोनो दलिद्दरो ने घर के आंगन के पछाई कोने म कच्ची भट्टियाँ लगा ली वह देखते रह जहाँ दूध की धारें बहती थी, शाम-सुबह सिल-लोढे पर कच्ची सौंफ, बादाम और खस की खुशबू उठे थी, वहाँ अब कच्ची बदबूदार शराब क मटके दबे रहत थे नरक बन गया था घर साप के से फन फलाए बुरे दिन चारो तरफ मडराते रहत तभी जाने किसी बैरी न मौका पा लिया किस्मत खोटी होवें है तो दुसमनो की कतार लग जावे है फिर

बैरी ने मौका पाते ही शहर जाकर अड्डे की खबर कर दी फिर क्या था ! एक नहीं, दो नहीं, दसियो बार लाल पगडी के छापे पड़े पुलिस के बूटो से घर-गली धमक उठे उसकी गत सबसे बुरी पछताव में फुका रहता न जम कर पुलिस से बोल पाता, न बेटो के खोटे करमा का जिकर कर पाता सब कुछ देखता हुआ खामोश रहता कौन विश्वास करता कि भीतर कौन से हाहाकारी पहाड़ चटक रह हैं कौन मानता कि दारू का कपूत आज अपने ही पछताव क दज मे डूबा जा रहा है ! चोरी छुपके सभी कहते— अच्छा भया ससुर के आँखिन आगे अपने खोटे करम पनपते देख लिए स्साले के कीड़े न टपकें तो कहना अब बनता है दूध धुभा बाप को तो खा गया बेसरम, आज बना है हरीचदर अभी तो देखते जाओ कहा कहा दुर्गति होगी याकी '

पुलिस के छापे पड़ते रहे कोतवाली तक घर के कुलच्छने कपूता के साथ वह खिंचा खिंचा फिरता रहा घिसटता रहा

और वह हत्यारी तिपहरिया ! वह बैठा मू ज की डोर बट रहा था कि खाट पर डाले लोग उसके बेटो की लोथें लायें खून मे डूबी य दो लोथें आखें फट कर

उसको बाहर आ गई खून के तालाब में तैरते अपने उन अभागे बेटों से लिपट कर वह चीख उठा था होश आने पर पता लगा कि नरई गाँव वाले काले कलाल भट्टी वाले से कई महीनों से रंजिश चली आ रही थी चार-पाँच दिन पहले ये दोनों अपने साथियों के साथ जाकर उसे पीट आए थे वह जला भुना बैठा था आज मौका हाथ आया तो उसने अपने गुण्डों के साथ घेर कर दोनों पर कुदाल चला दी एस ही फटी आखें रह गई थी दुनिया के सारे दुत्कारे बहुरे कानों से टकरा गए थे ऐसी लाज-कलख पुत रही थी उस बखत उनके चेहरे पर कि न रोते बन रहा था, न काले कलाल के लिए गालियाँ ही निकल रही थी बस पागल से हो उठे थे वह

उन्होंने अपना मुँह नोच लिया था भाग पड़े थे पोखरे पर और बरगद से लिपटकर दाऊ दाऊ! पुकारकर चीख पड़े थे खुले आसमान के नीचे पेट फाड़ दहाड़ों से डकरा रहे थे तब न जान कौन-सा पछतावा उन्हें हिला रहा था।

पानी पानी साँसें धौकनी सी चल रही थी कोई नीली-सी छाया धीरे धीरे उनकी ओर बढ़ती आ रही थी पहचानी क्यों नहीं जा रही! तभी डरावनी सी गड्डमड्ड और छायाएं अरे पानी हाय राम प्रभु! बुरी से बुरी गत देना रे उन्हें हाय! पानी

ये ! हा रे, आ? छोटकू! कहा है छोटकू? ठकुरानी के दिए सदमे ने कैसा जी हरा कर दिया कि मंगल की बहुरिया के पाँव भारी हैगे जी चार महीने बाद छोटकू आ गया था याद का जीता जागता टूक! रात-दिन छाया की तरह वह बालक पर छा गए थे भूल गए बीते पीरान पिय सारे दुःख नई आसा फिर झाक उठी पथराई आँखों में कलेजा में कुछ मजबूती आई दाऊ की तरह उसकी निगरानी में जुट गए थे खुद ही नहलाते, खिलाते पिलाते, दूध मक्खन सभी का पूरा पूरा ध्यान रखते छोटे से छोटकू को कहानियाँ सुनाते पहलवानों की कलेजे में छिपी जाने कौन सी लालसा थी, जो छोटकू के तनपिरान में फूंकना चाहते थे

बच्चा बड़ा होता गया उसे निराले खेल-कूद सिखाते वह अपने हारे-थके बदन में दम छिड़कते और अखाड़े के पतरे दाव और लकड़ी लपेट सिखाते थे सब दुःख-पीर भूल गए थे उसे पाकर अफीम का नशा मगर फिर भी कहाँ भूले थे? नशा बराबर था न होता तो काम काज और छोटकू का लालन-पालन कैसे होता! बिना नागा अफीम की गोलियाँ निगलते रहते थे

तभी आया वह अकाल भरा जेठ मास भयानक गर्मी, खेत, ताल पोखरे, सब चटक गए धरती पपड़िया गई हर तरफ सूखे-लुटे बंजर खेत रेत और धूल उगलती धरती आदमी सभी प्यासे सभी भूखे गर्मी, भयानक गर्मी कुओं में तारों की तरह टिम टिमाता पानी और एस में दिनभर चलते गरम जलते लूओं के झोंके

खूब देखभाल करते भी जाने कोई हत्यारा झाका छोटकू को लग गया जिसने भी जो बताया, दवाई ने रूप म दिया कच्ची आमी का भुना पना भी दिया पर बुखार की झुलसन खतम नही हुई और भी बढ़ती ही गई तब वह दौड़े थे राम-बली बद के यहां वहा से लाए थ छोटी छोटी गोलियो की पुडिया हर घटे बाद देना पानी स सटका देना सवेरे तक राम्जी की किरपा रही तो चैन हा जाएगा

बडी आस बाध दौडे आए थे आग मे बधे हे भगवान, अब बुढापे मे लात मत मार देना

चार गोलियो की चार पुडियां उन्होने थमा दी थी कस्तूरी को उसी के सामने उन्होंने औसारे वाले कोठे मे छोटकू की खाट के पास वाले गोल आले मे रख दी थी रात को वही बुखार मे तपते बेदम छोटकू की घराट के पास अपनी खाट भिडाकर वह सोये थे कई दिन के हारे थके थे, छोटकू की बीमारी की चिंता से नीद और नशे की झोंक म अपनी अफीम की ताजी गोलियां, जो पुडिया मे लाये थे, वही आले मे रख दीं पडते ही सो गये थे सोने से पहले कह दिया कि वह कितनी ही गहरी नींद मे क्या न हो, जब भी दवाई का वखत हो, उन्ही को जगा दे दवाई का टैम आया, तो पति की थकान भरी नीद पर तरस खाके कस्तूरी ने खुद ही दवा देनी चाही चानी के कड़ा म चूडिया की झनकार झमकी, सो खट्ट से उनकी आखें खुल गइ बस नीद और नशे की उसी झोंक म पुडिया वाली गोली की जगह अपनी अफीम की गोली छोटकू को दे दी गाज गिरे रे तुझ पै सत्यानासी दो घटे बाद भी वही गलती फिर की और सुबह तक फिर तीसरी गलती भी हू अब नरकिय साहबसिंह रे ऽऽ

जानलेवा गोलियो का जहर सूरज निकले तक फूल से बेटवा को चाट बैठा कस्तूरी बातों से रोने से हजार-हजार जूते मार रही थी उसने कि दम बर्बादी के मारे अफीम कब से खाने लगे ! य सौक तुम्हें और बाकी था क्या ! वह चुप रहे थे क्या कहू ! कौन सच मान भी ! कौन सुने किसे कहें कि किस भाव से सारा नसा-पत्ता छोड इस अफीम को खाना सीखा बेटा की मौत पर इतने जूते नही पडे, जितने इस बेटवा की मौत पर

पिसाच सी भाय भाय करती हवेली म कनाल बने वह खडे थे कौन दुर्वासा, बना साप डस गया ! हवेली के खडहर मे वह अकेले हत्यारे बने खडे थे हजारो साप उन्ह डस जा रहे थे अरे ! कसे मूह दिखाए अब गाव वालो को ! दाऊ के साथ वाले वडे-बूढे क्या कहगे !

उसी रात के सन्नाटे मे इस शहर म भाग आए थे रिक्शा की बाहे हाथ मे आ गईं और नशे पत्ते को जिंदगीभर के लिए गाव के दगडो मे ही छोड आये अब भी तो बिना उस गोबर के खाये गोड चलते हैं ! छोरी कहती है बाबा तुम देवता

हो हा हा पगली दानव राक्षस हैं हत्यारे हैं कसाई हैं कितना जिनगा लिया निगली हैं, इस पिसाच अघोरी ने, अरे ये नीली छाया काली-सी छाया क्यों आ गई है पास ! अरे लतीफे ! औरतों पर हाथ मत उठाना रे हा रे लतीफे सुन मुझे मेरे गाँव ले जाकर चौपाल वाली कुइया के पास सुला देना रे छाया हां पानी पानी

सुबह उठकर लतीफे की बीबी की नजर उन पर पड़ी, तो बिना चीखे-पुकारे पास आई और उनके पाँवों पर सिर रख कर झोली फैलाकर खुदा से दुआ माँगने लगी चारों ओर गैरों की भीड़ एक ने बढ़कर अपने सिर का अंगोछा उनके मुँह पर डाल दिया दद बिखर कर बह गया था अच्छे बुरे जैसे भी थे अब साहबसिंह हाक के पास जा चुके थे अगला जन्म सुधारने के लिए

□

टूटे पुल

छोटे से आगन मे नटखट बालक-सा धूप मे चितकबरा टुकडा जाने कब आ बैठा ! आज वह बौना सा पीला तिकोना टुकडा कमला को अच्छा लगा हालांकि आगन घर के मुकाबले बहुत छोटा था, पर हुआ करे किराए के मकान का क्या आगन, क्या छत ! उमर काटनी है, वरना घर तो अपना होता है चाहे कितनी बडी नाली छटवाओ, चाहे दीवार भर जगला खैर, इन चिन्ताओ मे माथा-पच्ची करने का आज कहा समय था उसके पास बडी मुश्किल से समय निकाल पाई थी बाहर जाने का गुनगुनी धूप कोने मे छितराए महुए की छत पर चढी नहीं कि उसने तागा मगाया नहीं ज्यादा न सही, पाच छ दिन के लिए इस थकान और ऊब से भरी जिदगी से कुछ छुटकारा मिलेगा

उसने जल्दी-जल्दी अलगनी पर चार दिन से लटके सूखे कपडे समेटे बाहर कुछ छोडकर नही जाना लापरवाही दिखाकर दो चार थाल कटोरी निकलवा देना मूर्खता के सिवाय और क्या होगा ! बक्स बिस्तरा सुबह दिन निकलते ही ठीक कर लिया था अर्जी कल दे ही दी थी एक सप्ताह की छुट्टी की मन खुश था शहर से बाहर निकलने के लिए तन थका थका सा था कि जहा वह जा रही है वहा खास खुशी की बात नही थी, लेकिन काम से थोडा छुटकारा था मन कुछ तो बदलेगा

स्टेशन आकर देखा कि गाडी खडी थी टिकिट लिया और बैठ गई गाडी चली तो दोना ओर की सूखी-हरी धरती ने मन गुदगुदा दिया बेटी तो इन्ही मिट्टी ढेलो की थी कितना अरसा हो गया शहर का जीवन जीते, पर गाँव की तस्वीर आँखो से मिटी नही मिटे कसे, पैदा हुई पिता के ठेठ गाव मे, पली ननसाल और पिता की नौकरी वाले शहर मे, पर शादी हुई गवई गाँव के गलियारो मे जहाँ वह रही कम, पर गुनी बहुत जाने कौन सनीचर आ बैठा कौवा बनकर उसके सिर पर कि घर वाले से बनी कम, निभाई ज्यादा जब निभाने मे तन-मन थक गए

और पार पड़ती दिखाई न दी तब न जाने कौन से पुण्य-परताप से बुद्धि की नस जागी और मर मर कर उसने दसवीं पास कर ली किसी की सीख पल्ले बांध ट्रेनिंग ले ली, जिसका ही चमत्कार था कि आज वह सुख-शांति के दो कौर खाकर चैन से सो जाती है

तसल्ली से मन का जख्म कभी ज्यादा दुखने लगता है, लेकिन उसका इलाज क्या हो ? भाग्य का लिखा भोगा ही जाता है आना जाना न घरवाले ने छोड़ा, न उसने ही रोका गाडी धचके धक्को मे चलती रहे तो बेकार मेड़ फसाकर क्यो रोकी जाए

कई सिरफिरो ने नेकनामी और मनमानी लूटने के लिए तलाक लेकर रोटी कपड़ा बांधने की सीख दी पर वह आखा की अंधी तो थी नहीं जो बारहबाट हो अनाथ बन जाती मुह पर जवाब दे मारा कि अच्छे घर की बहन-बेटियों की किस्मत खोटी निकल जाए तो निकल जाए, सह लेंगी लेकिन अदालत कचहरी की चौखट देखने से अच्छा है पटिया बाँध नहर मे सरक जाए कहने वालो के मुह पर ताला लग गया और अलग नौकरी कर गुजर-बसर करने की भी बात बनी रह गई मौके-बे मौके सलाह मशविरा लेने कभी घरवाला चला आता है तो कभी वह चली जाती है काम की बात की और अपना अपना रास्ता पकड़ा आज भी तो ऐसी ही कोई घरेलू समस्या लिए जा रही थी घरवाले के पास इसीलिए मन खुश था पर तन थका था कि जहा जा रही है वहा रखा क्या है सिवाय इसके कि बातो-बातो मे जाने कब और कितनी बार तू-तड़ाक और कड़वी झड़प हो जाएगी

गाडी के साथ-साथ खेत, गाव भागे जा रहे थ कभी कभी नदी-नाले आ जाते थे मन ऐसा हुलसा जा रहा था जसे उड जाए खेत मे काम करता हर किसान मामा बाबा या हरकू-सा लग रहा था हर औरत नानी काकी लग रही थी और मेडा पर बठ लकडी की फास हाथ म लिए भैसा गायो के पीछे भागते बच्चे उसके बचपन की तस्वीर याद दिला रहे थे कच्चे घर रूखे-काले छप्पर अपने गाव जसे लग रहे थे सूखी मिट्टी, कही घास चरमुरी, कही कटी फसल के गल्ले, कहीं अनाज की ढेरी पर दाय देत बलो की जोडी हाय ! मन खींचे डाल रही थी जी कर रहा था कि यहा उतर जाए और रहट चलते कुए से खोंच भर भर पानी पिए और हाथ-पर धोकर खेत के बीचाबीच बठकर गुनगुना उठे— हो ऽ ऽ बाबुल, मत दीजो दूर विदेस '

गाडी की चाल धीमी हुई और बहुत नजदीक से एक गाव, गांव क्या छोटी सी खेडी गुजरी कोन वाले बुजदार दरवाजे का घर बिल्कुल गाव के घर जसा लगा वैसा ही कलई की गोट दे गोबर स पुता चबूतरा बसा ही नीम का धुंधलाया सा

पेड और घना ही महरावदार बायें हाथ वाला बरामदा दोहटी मे बैठा कोई बाबा की तरह हथेली पर थूक के छींटे मार मुट्टी काट रहा था य सब कुछ उसन पलक को एक ही झोंक में देख लिया गदन टेढी कर तब तक उसकी नजर जमी रही जब तक लम्बे-ऊचे पेडो ने छाया नही कर दी

घर के साथ ही बाबा की याद आ गई कितन मसखरे थे हर बात पर हसना और गहरा तीर कसना बाबा को भला बातचीत करने की कला किमन सिखाई थी ? गवई गांव के मोटे किसान, गाँव के आस-पास की चालीस-पचास कोस की जमीन के अलावा और कुछ जाना ही नही कि इससे बाहर भी दुनिया है फिर ऐसी गम-ठण्डी बातो का उतार चढाव कहाँ स से पाए ? उनकी हर बात मे तिसकारी भरी चुटकी होती थी मिर्मों को एक फेरो सी हमी और हल्की हरारत सी मुस्कान गुस्सा होकर रूठ बैठते तो महीनो नन्हे बुखार से जमे रहते

पैंतीस बरस की इस जग खाई उमर मे मेहदी-सी गमकाई एक बात बाबा की याद आ गई कितने हसे थे सब और बहू मा कितनी झेंपी थी बच्चे दादी मा 'बहू मां' कहते थे थीं भी वह बहू माँ सी हो ठिंगना बूटा-सा कद और गाल छोटे मु ह भर बतासे सी मु ह फाड छोटे-छोटे हाथ पाव बाबा आँघा आगे बने थे, सो बुढापे की आखिरी सीढी पर भी वह काजल मिस्सी से लैस रहती थी दा धोती, जिनम बस दो गुलाबी रग के आए दिन झिलमे लगते रहते पैरो मे चांदी की झाझर और काले तीन लटके डोरे मे काठ में स दूक की किर्नाद भर तालीं लटकी रहती थी चलती रेल की नमकीन हवा मे भी उनकी नाक मे बहू माँ की धोती-कुर्ता से छनती बाजरे की दलिया और बुट्टी की घास की गध एक-दम ताजा हो आई

बाबा की उस दिन की चुहल याद आ गई दोपहर का समय था जेठ की सुलगती दुपहरी हुक्का पीकर बाहर की मेढ़ी, जो दुसारी भी थी वह खरैरी खाट पर लेटे पीठ मे पडे मरज़ोरियो के छत्ते को जेवडियों पर रगड रहे थे भीतर ओटे में बहू मा दाल रोटी न्या-डन कर कठौती धोने म लगी थी तभी मैंढ़ी की उढकी किवाडा मे से दुपहरी भर टक-टक डोलती, दूध दही मे मु ह मारने वाली मुहल्ले भर की बदनाम कुतिया आकी इस कुतिया को कोई डडे से मार नही सकता था, क्योंकि वह जगल्न चौधरी के बेटे मक्खनसिंह की पालतू थी दो एक ने साहस किया था, लकिन इस बात पर जो मूड फुटाई हुई तो सबने कान की लौर छूकर गगा मैया की कसम गाँठ बाध ली थी कि कुतिया छुआ सो राम दुहाई

मैंढी की किवाडें परलाबन्द नही लगती थीं एक के ऊपर एक पल्ला उढकाकर साकल अटका दी जाती थी जरा सा धक्का पडा कि हाथ भर जगह हुई जग ही कुतिया ने भीतर को धक्का दिया कि उसके मु ह की गिलासी गदन तक अन्दर आ गई बाबा की आँखें नींद से गदरा रही थीं आम के बाग मे उस दिन मेढ धोबी

थी, इसलिए काम की थकान हाथ-पैरो में कुल्हाड़े चला रही थी कुतिया को मुंह गिलासी पैरो के पास देख उन्हें बड़ा गुस्सा आया मजाकी स्वभाव भी कुलबुला उठा, बोले— 'आओ ! भई घों ठाडी रह गई, एक ढसुका मार भीतर ई आय पौढो '

दादी ये कान ओटे म खड़े हुए, वहीं से गुहार मारी—'ए को हत्व ! हाड़ गोड पहलेई हरूभजन कर रहेंगे, जे बातन की चवकलुसबाजी कौन सू चल रही हैगी '

बाबा के मसखरियापन ने एक दौड मारी बोले—'अरे ! जे मक्खनुसिंह की सासु आई हत विनकूई बैठावे खातर पिढ़िया ढूंढ रहे हतें '

'चैए ! सासु आई हतें, सुन्दरपुर वारी !' कहती बहू माँ लप्प से काठ म और भीत में चिमनी ल्हेसा मिट्टी से दबे शीशे मे जल्दी से बिंदी पर अंगूठा भर सिंदूर और छाप, नाक तक मूंगिया रंग की धोती का पल्ला खींच, टल मल बिछए बजाती दो घड़ी मे दुवारी मे आ गई देखा, बाबा छिक् छिक हंसे जा रहे थे बोली—'बूढ़े भय पर जे दांत फारवे को रोग न गयो कित गई सुन्दरपुर वारी !'

बाबा ने ठण्डे पड़े हुक्के की नली मे मुंह लगाते उसी किन किनाती हंसी से किवाड़ो की ओर अंगुली कर इशारा किया— जे कसी खरबूजा सो म्हों फारे ठाडी हत बड़ी सजबज के भाजी आई हो गरे मिलिके ननसार को हाल चाल पूछ लेओ कै अकाल बाढ़ मे घर को कोऊ बचो है कै सबई मरि खपि गए '

दुवारी मे गगू हलवाहा और चिन्ना मामा कसे छत्त फोड़े हंसे थ और वो भी तो मिट्टी के चूल्हे मे सींको की लकड़ी जलाती गुड़िया की ज्योनार की तयारी करती अपनी सहेली गोमा के साथ खिलखिला पड़ी थी

बहू मा ने पहले कितने गुस्से मे भर के बाबा को देखा था और फिर उस घर झांकनी कुतिया की ओर जो हाथ भर जीभ निकाले धौंकनी-सी हांफ कर बाबा के पैरो को देखे जा रही थी बहू मा का मुंह झेंप और खिजलाहट से लाल हो गया सुन्दरपुर उनकी ननसाल थी जहां सभी नाना मामा, सगे कुनबे के जिन्दा थे, लेकिन बहू मा को ज्यादा बुलाते चलाते नहीं थे बाबा मन ही मन उनके काइयांपन से जलते थे और मौका आने पर बहू मा को मीठे ताने दे दिया करते थे

'बस रहने देओ ! मरि खपि जाएगे सब तो तुमसू कोऊ तेरई करावे कू रोकड़ी मागने नाय आयगो जब देखो म्हों मे सू अगारेई फूटत रहत हैंगे गगू सीगजी ! जा हत्यारी की थूथरा प देखो तो सही लठिया को भर हाथ गुद्दा खाय गई जे नकटी कुतिया '

और सचमुच बाबा के लाख मना करने पर भी बहू मा ने कुतिया पर जो चहत बरनाये कि तीन दिन तक मक्खनसिंह ने घर भर की सांसें उल्टी टाग दी

बातें बहुत सी याद आ गई तो ओठो पर और आँखो मे हसी तैर उठी उसने घबराकर आस-पास बैठने वालो की ओर चोर निगाहो से देखा कि कोई उसकी ओर देख तो नहीं रहा कोई समझेगा कि साफ कपडो मे पागल औरत बैठी है लेकिन सभी चुप रहे थे दो चार अखबारों के पन्ने चाट रहे थे हा पन्ने चाटना ही हुआ एक एक लाइन को ऐसे पढते थे जैसे इन्हीं के लिए खास तौर पर खुफिया खबरें छपी हों फिर उसे हसी आ गई मुह पर रूमाल लगाकर उसने बाहर गर्दन निकालकर देखना शुरू कर दिया बाबा की सफेद कतरी मूछो का एक-एक मजाक सौ-सौ फुट उठ-उठकर रगीन लगने लगा

उसने घडी की ओर देखा अभी डेढ़ घण्टा बीता था पूरे चार घण्टे का सफर बाकी था सांझ के दीए तेजी पकड लेंगे तब कही जाकर पहुचेगी रैलगाडी नीद की हल्की-सी खुमारी उसकी आंखों में भी करकरा उठी मन था कि थोडी सी झपकी ले ले रेल मे तूफानी चाल के साथ गाना और सोचना उसे बडा अच्छा लगता रहा है बचपन से, लेकिन सोना ठीक नही हारे-थके दिमाग को नींद आ जाए और गाडी पहुचा दे अगले स्टेशन पर तब ? इसी सोच मे मन बहक गया भला ऐसा हो जाए तो रूपय भी इतना कम कि वापिस लौटकर भी नही आ सकेगी क्या हो यदि ऐसा हो जाए तो ? उसने झटककर इस विचार को निकाल दिया ! भला यह भी कोई तुक है

अचानक उसकी विचारधारा मे रुकावट आई बराबर वाले डिब्बे से तीन-चार मर्दानी आवाजें आ रही थी उनकी बातों की खानगी में कसावट थी एक आदमी तेज आवाज म कोई घटना अपने साथियो को सुना रहा था उसने सांस रोककर कानो की पूरी शक्ति खिडकी से बाहर सिर निकालकर लगा दी बातो का टूटा-फूटा किस्सा ठीक-ठीक जुड गया था कहने वाला आदमी थाडे दिन पहले बम्बई की ओर जा रहा था तब एक फैशनेबिल औरत उसी डिब्बे मे चढ़ी जिसमे वह था औरत के साथ जितना कीमती सामान था उससे अधिक कीमती कपडे और जेवर वह पहने थी साथ म एक बच्चा जिसे उसने गोदी म ले रखा था बच्चे की आखें बन्द थीं, लगता था सो रहा है

जब कई स्टेशन निकल गए और बच्चा न रोया और न जगा तो सदेह हुआ पूछने पर औरत ने बताया बच्चा बीमार है पर सदेह कुडली खले साप सा फैलता आता है अगले स्टेशन पर किसी ने गार्ड को इत्तला दे दी और उससे अगले स्टेशन पर तहकीकात हुई

हजारो सवाल जवाब के बाद राज खुला कि मरा हुआ बच्चा था उसके गले से नीचे तक लबा चीरा देकर भीतर अफीम भरी थी और ऊपर सिलाई कर दी गई थी औरत की मुसीबत आई सब फैशन, जेवर, कपडा और इज्जत धूल मे मिल

गई परेशान हुई तो कह दिया कि यह सब कुछ नही जान सकती उसे तो कम माल इधर से लेकर उधर पहुचाना है आगे किसी बात का उसे पता नही जब यह पूछा गया कि तुम पढ़ी लिखी समझदार होकर ऐसा काम क्यो करती हो ? तो पहले चुप रही, फिर बोली—मा बाप गरीब हैं, भाई-बहन कई, कमाई कम शादी विवाह का रास्ता नही नौकरी भी आसान कहा ! पढाई करते समय ही कदम गलत रास्त पर उठ गए ये जहा से वापिस नही लौटे पसे की जरूरत ने यह सब करने के लिए मजबूर कर दिया

गाडी की आवाज तेज हो गई थी उसका मन खट्टा सा हो गया मध्यम स्तर की औरत को अपनी नेकनामी और प्यार का पूरा मूल्य नहीं मिल पाता न घर से न समाज से चारो ओर भेडियो के झु ड घूरते दिखाई देते हैं, जो उस निगल जाना चाहते है जब व ऐसा नही कर पाते तो उसे घायल कर फेंक देत हैं, जहा स वह लु ज पु ज होकर ही उठती है ऊह ! दिमाग परेशान करने वाली बातें आज नहीं सोचनी चाहिए और दिन कम हैं क्या मजिल पास आ रही थी उसके मन मे धक धुक सी होने लगी खबर तो आन की दी नही है खबर देकर भी क्या होता कौन उसके लिए डोली लिए कहार आते ! चुपचाप जा बैठेगी दूसरी ओर मुह किए घरवाला पूछ लेगा कि चाय मगाई जाए और वह पी लेगी अजनबीपन से घुटे वातावरण मे वह किसी पुरानी किताब के पन्ने उलटती रहेगी और वह उसके लिए साग रोटी का जुगाड करेगा तब होगी बातें बस यही पर आकर मन खट्टा हो उठता है

गाडी उस स्टेशन पर आ गई थी जो सबसे बडा है इस यात्रा मे घण्टे भर का सफर और रह गया था मुह कुछ कडवा हो उठा जी चाहा कि पान का टुकडा डाल लिया जाए लेकिन न जाने क्यो सामने होने पर भी खरीदने मे शर्म लगी और चाहने पर भी नही लिया गाडी मे बैठने से पहले और बाद मे जितनी उमग थी वह अब नही रही जी भारी हो गया था सफर हो तो ऐसा कि साल भर के लिए खुशिया द दे कोई साथ हो, हसे, बोलें यह क्या कि अकेले चलते रहो क्या अच्छा लगा क्या बुरा कह भी न सको उतर पडो ऐसी जगह जहा सिर्फ उदासी हो, पुराने घाव हो दूसरे दिन फिर इससे भी अधिक टूटन लेकर, घावो मे खुरण्ट छील कर, या ही उदास लौट आना होगा

तभी बाराती से लगने वाले चार यात्री उसी डिब्बे मे चढे उसने नाक भौं सिकोडी कि जो डि बा सामने दिखाई देता है चले आते हैं कहा है यहा जगह चार बडे बेडौल बधे बिस्तरों के लिए ! दो टोकरे चादरो म बधे, सामान की गदन पर कमेलाटा डोर अजीब यात्री थे, जसे तीर्थ-यात्रा के सदाबहार पुजारी हो वह खीझती रही लेकिन चारो उसी के सामने जगह बनाकर बठ गए और मस्ती म

भर कर चूना-तम्बाकू हथेलियो पर रगडने लगे उसने दूसरी बार नजर फेर ली कौन दुनिया भर का खाता देखता मरता रहे ! अब थोडी देर बाद उतरना ही हैं, मरन दो

गाडी चल दी उसने अपने बिस्तर, ट्रक को एक नजर ध्यान से देख लिया चारों यात्रियो मे ऐसे खुलेपन से बातें हो रही थी मानो वे रेल मे नही अपने घर के आगन म खाट पर बैठे गप्पें मार रहे हो बातो की भाषा से लगा कि वे उसी की ओर के थे भाषा अपनी लगी तो यात्रियो का सामान, उनके कपडे-लत्ते और उनका यो मस्त लापरवाहपन भी अच्छा लगा, कोई बुरापन नही

बातें जैसे-जैसे व करें कि उसका मन गाल-गाल हुआ जाता रहा मन मे आया कि पूछ ले व कहा से आ रहे हैं ! भला इस गए-गुजरे इलाके मे क्यो आए ? मन न माना उसने सीधे सवाल किया कि व लोग कहाँ के हैं ? चारा ही क्षण भर को अचम्भे मे आ गए शायद सोच नही पा रहे थे कि आखें चढ़ाकर धकेलने वाली म देवता शकर ने कौन सी मिसरी घोल दी कि तेवर ही उतर गए

अता पता भी पूछन लगी तो उनमे से एक बोला—'बहना ! हम तो हरिया इलाके के हैं और रामगड सू आ रह है'

सुनकर वह एकदम उनके सामने सीधी बठ गई क्या कहा ! आप लोग वहा से आ रह हैं ! अच्छा, खूब रही'

उनमे से दूसर न दात निकाले और हसी म बोला— क्या तुम भी वही-कही की रहनवारी हो ?'

अब तो सभी उसे अपन सगे लग रह थ बोली—'वही की तो हू अच्छा ये बताओ, आप लाग चौधरी कुवर जी को जानत हैं क्या ?'

उनके चेहर चमके बोले— अरे कहा कह रही हो हम वाही मुहल्ला स तो आ रहे हैं'

उसने पुलककर कहा — उन्ही की हवली के सामने तीन मजिली इमारत ही तो मरा पीहर है गोरखरामजी की बेटी हू'

इस बार चारो उमग स उफन नही, बल्कि थाडा अविश्वास स बोले—'कहा कही तुम उनकी लरकनी हो हम उन्ही का काम करके तो आ रह हैं अबई सात दिना पहले ही तो उ होंने अपना मकान बेचा है हम तो सल्ली दलाल है सो हमारी जरूरत उन्हे परी हमने ठीक आदमी के हाथ पूरे खर दाम दिवा के मकान बिकवा दिया है दोना बेटा हुत और वो खुद हुते अब शायद कल बेटान के सग चले जाएगे तुमकू या बात को पता ना है का ?

उसके सिर म चक्कर सा आ गया आखो के सामने धुध छा गई उन लोगो ने क्या पूछा आग और क्या क्या कहा, कुछ पता नही घर बेच दिया लालाजी ने !'

बस यही वाक्य उसे नोचने लगा हलक सूख गया घर बिक गया क्यों बिका? खबर तक नहीं दी पिता ने क्या? अगर ये लोग न मिलते तो उसे शायद पता भी न लगता ओह मां! तुम्हारा घर बिक गया तुम्हारी आंखें बंद होते ही

सारा कुछ शून्य हो गया कान सांय-सांय बजने लगे, हाथ-पैरों का हिलाने डुलाने में भी जैसे उसे डर लगने लगा अजीब सी जड़ता छा गई बड़ी हिम्मत कर और आवाज पर काबू पाकर पूछा—'दाम कितने लगे?'

एक ने हिसाब जोड़कर बताया कि वकील, रजिस्ट्री का खर्च काट हम हमारो हिस्सा देने के बाद तीस हजार नगद उन्हें मिल गए

उसका मन उतनी ही गहरी पीड़ा से दुखा जितना उस दिन दुखा था जब वह नौकरी के पहले दिन दुपहरी में अकेली रोटी खाने बैठी थी लड़की का सबसे बड़ा आकर्षण उसका पीहर होता है, चाहे गरीब हो चाहे अमीर! बचपन से अभी पिछले दो साल पहले तक की उस घर से संबंधित घटनाएं लकीरों की तरह उसकी आंखों के आगे खिंच गईं

अगले स्टेशन पर ही उतरना था बिस्तर और बक्स लेकर वह गंदगी में दरवाजे के पास लगकर खड़ी हो गई गाड़ी अधिक कहां रुकती है बस ठहरी सीटी दी और चल दी क्षण भर का तन मन उतरने की जल्दी में खो गए

स्टेशन आ गया छोटा-सा एक कोने में सिमटा भिखारी सा रंग रूप, आकार कभी रहा होगा, लेकिन अब तो राख-पुता अजीब उदासी से भरा था जहां मन नहीं हो वहां की कोई चीज बांध नहीं पाती है उसने सामान जमीन पर टेक कर रूमाल की गांठ खोल टिकट निकाला ऐसे वीरान स्टेशन पर टिकट चेकर चार पांच यात्रियों के लिए भला क्या मुस्तैदी में आकर खड़ा हो! एक कुली सा रेलवे का मजदूर दरवाजे पर खड़ा था उसी ने हाथ बढ़ाकर टिकट ले लिया

वह थके-टूटे कदमों से आगे बढ़ गई और एकमात्र खड़ी रिक्शा के पास आई माल भाव करने की उस समय उसकी हालत नहीं थी, इसलिए जो मांगा चुपचाप हां कर लिया और पता ठिकाना बताकर बैठ गई

मन में असंख्य विचार उठ-बैठ रहे थे घर बिकने वाली बात ने उसे बर्फ बना दिया रिक्शा अब उस ओर मुड़ गई थी जहां से फर्लांग भर दूर वह हवेलीनुमा जगह आ जाएगी जिसके एक कोने में चढ़ता अंधेरा जीना उसे ऊपर ले जाकर छोटे से क्वाटर में खड़ा कर देगा जीने के ऊपरी दरवाजे के आगे बिछा बदरंग सा लकड़ी का तख्ता पड़ा रहता है वहीं तो सबसे पहले वह सामान रखकर मुसाफिरखाने में बैठे यात्री की तरह बैठ जाती है दस-पांच मिनट सुस्ताकर फिर कमरे के भीतर कदम रखती है नीले खादी के गिलाफों में लिपटे तकिये, हरी फूलदार मटमैली चादरों को ओढ़े दो बांकी-टेढ़ी चारपाइयां, कुर्सी पर टिका पंखा और तीन कुर्सियां

पर लदे साफ मैले कपड़ा का ढेर उसके मन को और पका देते हैं उन्हीं में से एक चारपाई पर वह बैठ जाती है, प्लस्तर छूटी दीवारों को देखती हुई बातें शुरू होती हैं तो नजरें दूसरे कोनों पर टिकी रहती हैं वहां का धूसर वातावरण अशुभ घड़ी की तरह तनाव पैदा करता रहता है

रिक्शे वाले को पैसे दिए और वह ऊपर चली गई दरवाजे की बगल में कीचड़ की चौड़ी पट्टी को फलांग कर वह आंगन में पहुंच गई लगा कि वह किसी जेल के आंगन में दाखिल हो गई है घरवाला घुटनों के बीच सिर झुकाए जाने क्या कागजों के ढेर में ढूंढ रहा था बीच-बीच में कंधे हिला हिलाकर कुत्ता खांसी खांसता भी जाता था वह बाहर तख्त पर न बैठकर सीधी कमरे में आकर खाट की पाटी पर बैठ गई

कमरे की सांसें बड़ी विषैली हो रही थीं जाने कितनी फालतू शीशियां, डिब्बे और जूते चप्पलों के ढेर जमा थे कबाड़ी की दुकान भी साफ रहती होगी, लेकिन यह कमरा एकदम उबकाई दे रहा था शीशियों कागज के टुकड़ों में लिपटी छोटी-बड़ी पुड़िया सामने वाली की अलमारी में ठुंसी थी वह जानती थी कि उनमें शिलाजीत, मोहिनी बूटी, बकाय की बेल से सनाय की पत्ती तक बंधी पड़ी हैं, क्योंकि घरवाले के मन में सदा शंका बनी रही कि मर्द का जैसा होना चाहिए वैसा वह नहीं है उसमें कहीं सर रत्ती कसर है उसी कसर को छांटने के लिए सदा खरल-बटलोई लिए वह कूटता छानता घोलता रहा जाने कौन सी जड़ें फांकता था कि वह उसकी सांसों से अपनी सांसें एक न कर पाई

कभी शिलाजीत की गर्मी से भर कर उसने गहरी कसावट में उसे जकड़ भी लिया तो दूसरे ही क्षण वह पूरा भर अपनी उकताहट और घृणा का थूकते-थूकते भर देती थी और सुबह उसके काम पर चले जाने के बाद जो पुड़िया-पोटली हाथ में आती उसे गली के गुब्बार में उड़ा देती थी

शाम को उसे पता लगता तो पहले वह पानी से भरी मटकी बीच आंगन में फोड़ देता और फिर अपने भैंसे की तरह हर आले-दिवाले में सिर डाल-डाल कर बची जड़ी बूटियां की परख करता उसका सस्कारी, पढ़ा लिखा और हंसी-खुशी को तरसने वाला मन बेचैन हो जाता वहीं बहुत भीतर तक घृणा की लम्बी लकीर खिंचती चली जाती और जब जब जितनी बार ऐसी लकीर खिंचती उतनी ही बार उसके और घरवाले के बीच तारकोल से भरी खाई चौड़ी होती जाती

कभी-कभी वह उसकी गहन उदासी महसूस कर चौकता तो बड़ी लिजलिजी घिनौनी हंसी के साथ उसके रेशम से घुंघराले बालों पर अपनी अंगुलियां की दौड़ शुरू कर देता अंगुलियां इमामदस्ते की मूसली पर दौड़ते फिसलते और जड़िया-घासों का कपड़छन करके इतनी मटमैली और गांठदार हो गई थीं कि उसे प्यार

भरी दौड में जाते उसके कितने बाल टूट जाते और मन और अधिक गहरे गर्त में डूब जाता। जब वह कटीले घेरे जैसी बाहों में बंदरी उछल कूद मचाता तो ओफ! वह लज्जा और भर्त्सना से गड़ जाती। मन का कोमल कोना फूट-फूट जाता और अपनी मुक्ति के लिए वह छटपटा उठती। फिर उसकी कमर पीठ पर बूंदी रस सिक्त लाता की चाट धमाके के साथ पड़ती। ऐसा अनोखा प्यार जब उसे असह नीय हो गया तब ही उसने अलग रहने की सोची। चार पैसे कमाकर चार रोटियां सुख-शान्ति की खा और लम्बी गहरी अतृप्त नदी में डूबती-उतारती वह किसी सूने कमरे में जा पड़ी थी।

वह जब बैठी और चूड़ियों की छनक हुई तो घरवाले ने घुटनों में से सिर निकालकर देखा। उसे अचानक आई देख वह हड़बड़ाकर उठा। उसके गन्दे, बेतरतीब खिचड़ी बाल घास की तरह खड़े थे, कुछ माथे पर छितराए थे। उसकी पीली, कचलाई आंखों के कोनों में भवक से लपट सी कौंधी और वह दूसरी खाट पर बैठ कर बड़ी भौंडी मुस्कान से ओठ चौड़े कर बेमतलब हंसा। जिसका मतलब साफ था कि वह किस बात को लेकर आई है। जाने कैसे अजीब किस्म की मिर्च मसालों की या डिब्बों में बन्द हींग की गंध उसके समूचे शरीर और कपड़ों से आ रही थी। वह टेढ़ी होकर दूसरी ओर मुंह कर बैठ गई। उसका जी मिचलाने लगा।

वह बेकार काले ओठों पर बैंगनी जीभ घुमाए जा रहा था। दोनों हाथों की हथेलियां खाट की पाटी पर पसारे आगे को झुका उसकी ओर देखे जा रहा था, मानो भूखा बिलौटा शिकार पर झपटने की तैयारी में कमर-पूंछ फुला रहा हो। बोला— अरे! कैसी मुसीबत वाली हवा चल रही है। ये खिड़कियां बन्द कर दूं? देखो तो, तुम्हारे चेहरे पर कैसा धूल कोयला जमा है। बाल्टी में पानी रखा है, मुंह हाथ खंगाल लो और ठीक तरह बैठो। मैं जाकर दूध न आता हूं। पहले चाय पी लो ठीक है न?' फिर सौंठ जैसे पीले दांत निकालकर बेवकूफों की तरह हंसने लगा।

बड़ी गहरी ठेस-सी लगी। उसे हे ईश्वर! क्या पौरुष से सबल गम्भीर हास्य को वह जीवन भर तरसेगी? कितना मन तड़पता है कोई उससे धीरे धीरे मीठे बोल बोले। दुःख-सुख की बातें पूछे। मुंह से कम पर आंखों से सब समझा दे। इस जीवन में यही अभिशाप ढोना है। वरना क्या पिता अपनी इकलौती लड़की के लिए ऐसा कुटि वचन वर ढूंढता। अब तो वह भी बहुत पछताते हैं। लेकिन पछताने से उसका मन का खाली कोना तो नहीं भर सकता। यों तो चार-पांच बच्चे भी हो गए। चाहे कितना विरोध रहा हो, फिर भी साल छः महीने में मेल हो ही जाता था और वह मछली-सी तड़फकर भी उसका दिया बोझ ढोती थी।

वह अपने मन की पूर्ण ममता अपने बच्चों को देती रही यह सोचकर कि इन्हें अच्छा इंसान बनाएगी। बच्चे बड़े हो गए, लेकिन लगता है कि पिता की छाया

उ हें भी लगेगी सब कुछ होने पर भी वह कितनी एकाकी है

उम मितलाई गध से घबराकर उसने कह दिया –'ना, कही जाने की जरूरत नही चाय स्टेशन पर पी ली है और न मुझे मुह-हाथ धोने की जरूरत है मैं एकदम सोऊगी, क्योकि मुझे अभी पता चला है कि लालाजी ने घर बेच दिया मैं बहुत दु खी हू बातें करने तक को मेरा मन नही करता मेरी चारपाई सामने बराडे में डाल दो सुबह चाय हो जाएगी और बातें भी मेरा तो पीहर ही खत्म हो गया मैं बहुत परेशान हू ' कहते कहत वह उठी आर बिस्तर समेटकर खाट खुद ही घसीट कर सामने वाले सिरकी बन्द बरामदे मे ले गई बिस्तर जैसा-तैसा डाल लिया और किवाड का कुण्डा भिडाकर लेट गई चैन की सास आई बिस्तर म वही कमरे वाली गध समाई थी उसने अपनी धोती का पल्ला मु ह पर ढक लिया और आख ब द कर ली चलो कम से कम इस समय तो मनहूस वातावरण से पीछा छूटा

वह चाह रही थी कि किसी तरह उस इतनी गहरी नीद आ जाए कि सब कुछ भूल जाए पिछले दो ढाई घण्टा म उस इतनी मानसिक यातना मिली थी कि कुछ भी देखन सोचने को मन नही हो रहा था जि दगी की आधी मजिल पार कर ली, यो ही ऊपर नीचे दु ख-सुख क हिचकोले खात हुए माना किताबो म पढा है और विद्वानो न भी कहा है कि आदमी का जीवन धूप छाव की तरह है—कभी फूल तो कभी काटे लेकिन उसका जीवन आंखें खोलते ही फूलो पर कम काटो पर ज्यादा चला है रात को आखें बन्द करो तो पलको पर भारी दबाव सहो और सुबह आखें खोलो तो जमाने भर की मुसीबतें, कलह, बदनामिया दरवाजे पर गालियो की तरह चिपकी देखो हाथ बढाकर किसी क स्नेह की ओर पकडना चाहा तो नारी की खोल म सहमकर मुह छिपा लो अपनो द्वारा अपमान-लाछना मिले तो दुनिया के अटटहास सिर पर ओढ कर आखें नीची कर जीओ क्योकि जीना जरूरी है आत्महत्या मे भी डर है नही मर तो अदालत मे खडे होकर शमनाक सवालो के जवाब दो । इससे अच्छा है कि जहर के घू ट ही पीते रहो और जीते रहो

वह जानती है कि जब उसन अकेला जीवन अपनाया तो एक भी सगा आग नहीं आया कुछ हमदर्दी के छीटे जरूर उडे, लेकिन व शब्द उसे ऐसे लगे जैसे ब्लेड से अगुली चिर जाती है और उसम नमक मिच लगकर पीडा देते है

उसने करवट बदली लगा कि उसक सिरकीबद बरामदे के सामने एक वहशी छाया की तरह उसका घरवाला चक्कर काटता घूम रहा है कभी लोटा जोर से दहरी पर रखता है तो कभी किवाड के पल्ले तेजी से खोलता-ब द करता है उसन सांस रोककर चादर सिर तक तानकर कस ली जब किसी से बेहद घृणा विरक्ति होती है तब उसकी छाया तक से तन मन नीचे से ऊपर तक घिना उठता है

जोरदार खटाके के साथ उसके कमरे का दरवाजा ब द हो गया और खट्ट

से, बिजली का स्विच बंद करने की आवाज आई मुसीबत टली उसने चैन की सांस ली और सिर को झटककर तकिये पर अच्छी तरह जमाया प्यास भूख दोनों ही सता रही थी, लेकिन उठकर मटकी गिलास खटकाकर बगल में कौन हलचल पैदा करे ! वह घुटने पेट पर मरोड़े पड़ रही जाने क्यों अपने पर बड़ी करुणा आई कि दो मोटी धाराएं तकिये पर वह निकली रात के एकांत क्षण जाने क्यों इतनी तसल्ली देते हैं कि पांच-साल की उम्र से चौंतीस साल की उम्र तक का पूरा बहीखाता खुल जाता है

लालाजी ने मा के मरते ही मकान साल भर के भीतर बेच दिया उसे लिखा तक नहीं, कहा तक नहीं ले देकर दो भाई और वह एक बहन मा की सूरत घूमी कि मां-बेटी का रिश्ता गायब हो गया और एक नारी दूसरी नारी की दुख-बीथियों में खो गई मा की मृत्यु की याद में नहीं बल्कि मा की अतृप्त इच्छाओं, उनके द्वारा समय-समय पर सुनाई गई कष्टपूर्ण बातें याद कर उसका मन हाहाकार कर उठा

पांच साल की उम्र कम नहीं होती याद आ रहा है कुछ धुंधलेपन के साथ जब मकान मा की जिन्दगी की सबसे बड़ी साध के रूप में खरीदा गया था सारे गहने कील कांटे तक स्वाहा कर दिए थे इतने पर भी न जाने कितना कर्ज पिता के सिर लद गया था मकान क्या था अच्छी बड़ी हवेली थी सुना था किसी जमाने में यहां कचहरी लगती थी छोटे लाट की ऊपर सात कमरे और नीचे नौ कमरों के बीच तीस खाट का आंगन और जाजिम बिछावन का बरामदा पाकर मां निहाल हो गई थीं

अपने छोटे छोटे हाथों से चकला-बेलन, टोकरी गठरी लाद लाद कर वह किराए वाले घर से सामान ढोती रही थी और आज भी बक्स में सभालकर वह फोटू रखा है जो इस घर में आते ही जसवन्त मामा की गोदी में बैठकर लालाजी और मा के कन्धों पर हाथ रखकर उसने खिचवाया था नौ कमरों के बीच बड़ा हाल कहीं और मिल जाए मुहल्ले भर की सहेलियों के यहां बड़ा घमण्ड था अपने घर पर उसे पर जाने क्या हुआ कि दो बरस उम्र के और आगे बढ़ते ही वह मा पर ढाए अत्याचार देखती और सहमकर रह जाती '

बहू मा उसकी सयानी उम्र में सिखने वाली छत पर धूप सेंकती बताया करती थी— माडी ! तुम्हे क्या बताए ! जब तुम्हारी महतारी रख्बा में सू उती हती तो हम तो गस आ गया हा हमने मन में कही कि ब्याहुली कहू पेंवडी सू तो नाय नहाई हतें अगूर और इनको रग एक माफक हो हमारे मोंड़ा मुकन्द तो बाबरे से है गए देखत ही हाथ पाव जैसे खीर में लपेट लए हों नाक में सफेद नगीना की लौंग ऐसी लपट मारे हो के बस कहा पूछो हो हर बखत गरे में गुलूबंद और जै

माली, कानन म मछरी क छोका और पामन मैं इमरती न लच्छे पर रहत हे हसई तो सामन दूध से दातन म चाप ठुकी बीजुरी सी लपकेई पर लल्लू न कदर ना जानी नई तो का भरी जवानी म यो लकड़िया सी सुलग-सुलग के चिता पै चढ़ि जाती !'

उसको बालक उमर और कच्ची जिज्ञासा बहू मा के ढील-खरौंच भरे पेट पर सिर रखकर पूछ बैठती— बहू मा ! सरसुती अम्मा को भी लालाजी या ही मारत-पिल्लात थे ? अच्छा बताओ वा कैसी थी !'

बहू मां बरौनी सड़ी पपाटिया पर धाती की किनार रगड़ एक हाथ ■ उसकी कमर अपन पट पर भीच फुसफुसाती—'अरे ! लरकिनी ऐसी बमतलब की टोह नाय लियौ करें लल्लू के आयवे का बखत है रहा है, चलो नीचे बदाम छील के निसास्ती गरम करनो है देर है गई ता हमकू नाय खिचवानी पुरखन की आत' पर वह कहा जान देती थी उन्हं बार-बार वही बात, वही जिद

बहू मा उसके सिर की पयास अपनी खुरदरी हथेली से अगोछती कहती— 'जादा मलूक तो हती नाही, बीच की सी हों मायीऊ थारो ही रो सो हा पर कमरी बड़ी ही कठौती भरो मक्का बाजरे का आटो ■ धपकी मार चकरी मे पसार लेतई बालक एकऊ नाय जियो जान का है जाव और कँ धरती पै आया और रामजी न सभारा आर दिनन के जाप खाय गए और रही सही लल्लू न चाट लई अब तुम छोटी हो समझोगा नाय लल्लू नू लुगाई आत सू लगाय कबहू सू ना रही है सरसुती ब्याहुली कछु कह देती तो हाड़ गोड सब तुरवा ले भई या तो मरद-बीयर म जान कहा-कहा ऊपरतरे कहा सुनी चलत रहत है, पर जिलकी-सी साप फुफकार कहू न देखी, न सुनी '

'अब कहा कहूँ ! पट सू ही ब्याहुली हम तो चौका म भूनब-राधने म लग रहे हे, तबई धूम धड़ाक्क काठा म भई दौर के भाजे तब तक तो खूनन को पोरबारो छूट पड़ो हो हमन साची कि से और जितो हाथ सु गई डाब धरती न मरी भई लरकिनी पैदा करी ब्याहुली तीन दिनन तक ऐसी कराहती चीखती रही जस बादर छत फार गिर परेगो हमने पूछी कि जाती भई जितो बता जाओ मे जे जुलम भयो कस ? कहन लगी कि मालिक क हाथ सू मरिबा हतो सा पेट म सीधेई लात मारी ही, बस फिर-का चक्कर आयो तो मात सू मिला केई रहो

दो पल की चुप्पी के बाद एक लम्बी सास खीच उस और पास सटाकर बोली —ठीक चौथ दिन की रात कू ब्याहुली भगवान कू प्यारी हेगई ऐसी जबर छाती लै क पदा भए य लल्लू मजाल हे जा एक आध बूंदऊ पानी आखिन सू ढरिको हाय कहत भए–'अरे ! चौं रोती हो और ले आएग कपड़ा फट जाता है ता नहो बदलें हे क्या ? औरत जात का क्या ? गई गुजरी, नई आई' हम तो लल्ली बरसन

से, बिजली का स्विच बंद करने की आवाज आई मुसीबत टली उसने चैन की सास ली और सिर को झटककर तकिये पर अच्छी तरह जमाया प्यास भूख दोनो ही सता रही थी, लेकिन उठकर मटकी गिलास खडकाकर जगल में कौन हलचल पैदा करें। वह घुटने पेट पर मरोडे पड रही जाने क्यो अपने पर बडी करुणा आई कि दो मोटी धाराए तकिये पर वह निकली रात के एकात क्षण जाने क्यो उसे इतनी तसल्ली देते हैं कि पांच-साल की उम्र से चौंतीस साल की उम्र तक का पूरा बहीखाता खुल जाता है

लालाजी ने मा के मरते ही मकान साल भर के भीतर बेच दिया उसे लिखा तक नहीं, कहा तक नही ले देकर दो भाई और वह एक बहन मा की सूरत घूमी कि माँ-बेटी का रिश्ता गायब हो गया और एक नारी दूसरी नारी की दुख-वीथियो मे खो गई मा की मत्यु की याद मे नही वल्कि मा की अतप्त इच्छाओ, उनके द्वारा समय समय पर सुनाई गई कष्टपूर्ण बातें याद कर उसका मन हाहाकार कर उठा

पाँच साल की उम्र कम नही होती याद आ रहा है कुछ धुधलेपन के साथ जब मकान मा की जिन्दगी की सबसे बडी साध के रूप म खरीदा गया था सारे गहने, कील काटे तक स्वाहा कर दिए थे इतन पर भी न जाने कितना कर्ज पिता के सिर लद गया था मकान क्या था, अच्छी बडी हवेली थी सुना था किसी जमाने मे यहा कचहरी लगती थी छोटे लाट की ऊपर सात कमरे और नीचे नौ कमरो के बीच तीस खाट का आगन और जाजिम बिछावन का बरामदा पाकर मा निहाल हो गई थी

अपन छोटे छोटे हाथो म चकला बेलन, टोकरी गठरी लाद लाद कर वह किराए वाले घर मे सामान ढोती रही थी और आज भी बक्स मे सभालकर वह फोटू रखा है जो इस घर म आते ही जसवन्त मामा की गोदी मे बैठकर लालाजी और मां क कन्धो पर हाथ रखकर उसने खिचवाया था नौ कमरों के बीच बडा हाल कही और मिल जाए मुहल्ले भर की सहेलियो के यहा बडा घमण्ड था अपने घर पर उसे पर जाने क्या हुआ कि दो बरस उम्र के और आगे बढत ही वह मा पर ढाए अत्याचार देखती और सहमकर रह जाती।

बहू मा उसकी सयानी उम्र मे तिखने वाली छत पर धूप सेंकती बताया करती थी— माडी । तुम्ह क्या बताए । जब तुम्हारी महतारी रब्बा मे सू उतो हती तो हम तो गस आ गयो हो हमने मन मे कही कि ब्याहुली कहू पैंवडो सू तो नाय नहाई हतै अगूर और इनको रग एक माफक हो हमारे मौंडा मुकन्द तो बाबरे से है गए दखत ही हाथ पाव जैसे खोर मे लपेट लए हो नाक म सफेद नगीना की लौंग ऐसी लपट मारे ही के बस कहा पूछो हो हर बखत गरे म गुलूबद और जै

माला, कानन म मछरी के छरश और पामन में इमरती न लच्छे परे रहत हे हसेंई तो सामन दूध से दातन म चोप ठुकी बीजुरी-सी लपकई पर लल्लू न कदर ना जानी नई ता का भरो जवानी म यो लकडिया सी सुलग-सुलग के चिता प चढ़ि जाती।'

उसकी बालक उमर और बच्ची जिज्ञासा बहू मा के ढोले-ग़रीब भरे पेट पर सिर रखकर पूछ बैठती—'बहू मा! सरसुती अम्मा का भी लालाजी या ही मारते-चिल्लात थ? अच्छा बताओ वा कैसी थी!'

बहू माँ बरौनी झड़ी पपाटिया पर धाती की किनार रगड़ एक हाथ स उसकी कमर अपन पट पर भीच फुसफुसाती—अर! सरकिनी एसी बमतलब की टोह नाय लियो कर लल्लू के आयबे का बखत है रहा है, चलो नीचे बदाम छील के निसास्तो गरम करनो है देर है गई ता हमकू नाय खिचवाना पुरखन की आत' पर वह कहा जान देती थी उन्हें बार-बार वही बात, वही जिद

बहू मा उसके सिर की पयास अपनी खुरदरी हथेली से अगोछती कहती—'जादा मलूक ता हती नाही, बीच की सी हीं माथीऊ थोरो छोरो सो हा पर कमरी बडो ही कठोती भरो मक्का बाजरे का आटो-इ धपकी मार चक्की म पसार लेतइ बालक एकऊ नाय जिया जाने का है जाव और क धरती पै आया और रामजी न सभारा आए दिनन के जाप खाय गए और रहा सही लल्लू न चाट लइ अब तुम छाटी हो समझोगी नाय लल्लू कू लुगाई जात सू लगाव कबइ सू ना रहो है सरसुती ब्याहुली बच्छ कह दती तो हाड गाड सब तुरबा ले मई या तो मरद-बीयर मे जान नहा-कहा ऊपरतर कहा सुनी चलत रहत है, पर जिनकी सी साप फुफकार कहू न देखी, न सुनी'

'अब कहा कहूँ! पट सू ही ब्याहुली हम तो चौका मे भूनब राधन म लग रहे है, तबई धूम धडाक्क काठा म भई दौर के भाजे तब तक तो खूनन को पोरबारो छूट पडो हो हमन साची कि लै और जितो हाथ सू गई डाक धरनी न भरी भई सरकिनी पैदा करी ब्याहुली तीन दिनन तक एसी कराहती चीखती रही जैसे बादर छत्त फार गिर परगो हमने पूछो कि जाती भई जैतो बता जाआ क जे जुलम भया कस? कहन लगी कि मालिक के हाथ सू मरिबो हतो सा पट म सीधेई लात मारी ही, बस फिर-जो चक्कर आयो तो मौत सू मिला कई रहो'

दो पल की चुप्पी के बाद एक लम्बी श्वास खीच उसे और पास सटाकर बोली—ठीक चौथ दिन की रात कू ब्याहुली भगवान कू प्यारी हैगई ऐसी जबर छाती से क पदा भए ये लल्लू मजाल है जा एक आध बूदऊ पानी आंखिन सू ढरिको हाय कहत भए— अर! चों रोती हा और लें आएगे कपडा फट जाता ह ता नही बदलें है क्या? औरत जात का क्या? गई गुजरी, नइ आई' हम तो लल्ली बरसन

रोवत रह कहा खता ही वा बिचारी की ! अरे, रोवत जीती रही और रावत-चीखत ही मरि गई   अरे, तुम हम बुढ़ापे म द राटीन कू तरसवाओगी, कितनी अबर है गइ लेआ, चलो वगि नीचे ' और वह उदास मन लिए एक एक सीढी नीचे उतर आती

रात का सात समय पहली मा सरसुती का चित्र अ खा मे खिचता कहानी की तरह बाबा व ो कही कहानी—कि राजा न अपनी रानी को जगल के किले म कद कर दिया था   बडा जालिम था वह   थोडे दिन बाद रानी को मरवा दिया और जगल म नदी किनार गाड दिया जहा पर अनार का एक पेड उगा खुशबूदार एक बुढिया जादूगरनी न डण्डा फेर कर अनार क पड स बडी अच्छी राजकुमारी निकाली जिसका नाम अनारदइ रखा   उसी अनारदई पर वही राजा मोहित हा गया और महल। म ब्याह कर ल आया अनारदइ न राजा का अपन वश म कर लिया   ता कही मा भो उसा अनारदई का तरह पहला मा सुरसती ता नही है ? ऐस ही ऊटपटाग सपनो का दखती-साचती वह चुपचाप सा जाती और सुबह मा का उदास चेहरा दखती ता डर के कारण चुपचाप बिना बोल स्कूल चली जाती ।

मा कुछ और ही मिजाज की थी आत ही पहल बाबा को गाव मे बसाया और बहू मा के लिए दा भसे खरीदवाकर फूटे घर म दा काठे सुधरवाए उ ह अच्छा नही लगता था कि जमीदार घर की लडकी शहर की हवेली म मामा, ससुर और जिठानी की धाम-ठसक म क्षुवी रहे हालाकि बाबा न बहुत बुरा माना था बाबा सग मामा ता थ नही   लालाजी क सग मामा थे जब बहन और जीजा, कुछ बरस-दिना क आग पीछे सात बरस के लडके को छोड मरे थे, उस समय इन मामा की उम्र तीस या पच्चीस क करीब था बस कसम उठा ली गगा मैया की कि ब्याह शादी नही रचानो, क्याकि काले मुह की कोइ भी औरत आकर इस बहन की निशानी को बारह बाट कर दगी   सो जिंदगी भर कुवार रहकर गया के दूध मे भात महेरी खिला पिला कर पाल लिया   पाला ही नही खूब पढाया, गाव मे और गाव क बाहर भी मामा क्या थ, सग बाप स ज्यादा । वही मा और वही बाप थ

बहू मा न भी क्या कम त्याग किया अपन बेट, वह भी इकलौते मुकु द, स ज्यादा प्यार हुज दिया बारह दजा जसे ही पास किया लालाजी न कि बहू मा और बाबा न आसमान से जसे तारे ताड लिए   साचा अब बटवा हाकिम बनेग, तब कच्ची मलमल क तरह गजी फट का कसकर किगडीक्लाबस्तू लगे लहगे म सजी बहू मा क साथ सुलफिया पीत चाच भिडत किया करेग जब मा न आत ही उन्ही मा-बाप सरीक मामा-बहू मा को गांव म अलग धकल दिया ता दाना अचरज मे डूब गए कि लल्लू ता गुस्स म आग थे ब्याही नव बहू न कौन-सा जादू का डण्डा फर दिया कि उ ह दूध मे फसी माखी-सा निकाल फेंका   करत क्या, गाव आ गए

लालाजी के पढ़ाने लिखाने के चक्कर मे मुकुन्द रह गए नवें दर्जे तक चलें तो आगे कैसे चलें गिल्ली-डण्डा और कच्ची अमियाँ-जामुन तोडने खेलने से फुसत मिले तब न !

बहू मा ने बताया था—'लल्ली ! जे लल्लू तो बस गए सहरी बाबू बनके और मुकुन्द रह गए अधकचरे न गाव मे रह पाए, न सहर मे ही ढग की नौकरी जुट पाई एक कोई मन के साफ सज्जन सेठजी के मुनीम अनूपसहर म गगा किनारे मिल गए रात करते भए उन्ही से परेम प्रीत बढी, सो ले गए सग मुकुन्द कू और लगाय दये सुगर फैक्टरी मे एक रुपया कम दस पै वाई दिना की नौकरी आज भी मुलक हमे रोटी-कपडा दे रही है, नही तो लल्लू की भेजी पहले पाच फिर दस रपल्लीन म कहा गुजारो होतो हो कमरतोड मेहनत कौ ज असर भयो कि बरस पीछे बरस बढौतरी आधी उमिर पर आत ही पचास रुपया तक है गई'

मा से लालाजी भी डरते थे और अरुचि रखते थे मा ने गाव की लडकी होने पर भी शहर के रग-ढग बडी आसानी से अपना लिए थे घर को सजाने मे धार्मिक चित्र मगाए थे वह रात को लालटेन की कत्थई छाया मे अपनी खाट के ऊपर टगे कोने के शिवाजी महाराज, बीच के महाराणा प्रताप और अल्मारी की कानस पर टगे रामचन्द्रजी के चित्रो को घण्टो देखा करती बीस दिन तक कोस की किताबों के नीचे छिपाकर सचित्र महाभारत पढी थी सो उत्तरा और अभिमन्यु के चित्रो को, अर्जुन को समझाते हुए रथ पर पैर रखें कृष्णजी के चित्र को देखकर उसके मन में इच्छा उठती थी कि वह मा और लालाजी के घर की घुटी उदासी मे यहा उस चित्र जसी रौनक हो जिसमें हिरन खडा हो, झरना बहता हो और पेडो पर फल लटक रहे हो, और वह शकुन्तला की तरह फूलो के जेवर पहने हरी घास पर लेटी कुछ लिख रही हो

कितने प्यारे प्यारे ख्याल आया करते थे, पर रात के भीगे भीगे सपने, पिता की आवाज मे निकली गालियो और मा की सुबकियो मे बिखर जाते थे वह बडी हैरान होती कि दिन मे जो माँ शेर की तरह पूरे घर म निर्भय होकर रहती है वह रात को बकरी सी निरीह क्या सुबका करती है ! क्यो गालियाँ सुनती है ? तीसरे-चौथे दिन लालाजी एसी गदी बातें मा को क्यो बोलते हैं ? उसकी कच्ची अक्ल मे ये बातें नही आती थी यह भी नही समझ पाती थी कि औरो के घर हसी की पीली पीली कनिया धूप जसी रोशनी की गध अपने घर क्यों नही छाई रहती ?

लालाजी को पढान की नौकरी थी छोटे बडे सब तरह के बच्चे सोचा करती कि ऐसी क्या बात है मोहन, गोपाल फीरोज मे, और एक और था गोरा-गोरा, गाल मटोल सा, जिसे लालाजी उससे भी ज्यादा प्यार करते थे दूध पिलाना खूब मोटी मलाई की पत डलवाकर, सर्दियो मे गोला पिस्ता लगा गाजर का हलुवा

खिलाना, एक ही वक्त मे तीन-तीन सतरे देना क्यो ? जबकि उसे भी गाजर के हलुवे से बड़ा चाव था, पर माँगने पर रूखी सी फटकार ही हाथ लगती और रात को उसके बिस्तर पर अग्रेजी छाप के बिस्कुट रूमाल की गाठ मे से पटककर कहते ---'तू बहुत जिद्दन होती जा रही है अपनी मा पर बनेगी बेकार और मुह सुजाने वाली जो हम दें वो खाओ, बेकार की रें-रें हमे पसन्द नहीं हलवाई की दुकान पर मक्खियों की तरह कल से लार टपकाई तो एक थप्पड़ म हुलिया टैट कर दी जाएगी हम बच्चो को सिर चढाना पसन्द नही करते, समझी ? ले ये बिस्कुट खाले और सो जा' वह बस आँख मुह फाडे लालाजी के मुह से निकली बेमतलब की फटकार सुनती रहती बिस्कुट यो ही पडे रहते, उन्हें छून को भी जी नही करता था फिर

वह सोचती उन छोरो को लालाजी सिर क्यो चढाते हैं ? उन्हें हलवाई की दुकान पर रबडी-हलवा हुम हुमकर प्यार से क्यो खिलाते हैं ? वे नही खाते तो जबर्दस्ती खिलाते हैं क्यो ? और उसके लिए दो पैसे के आटे के बिस्कुट लाते हैं मां से उसने जब यह कहा और जवाब मांगा तो उनकी जलती आखो ने ऐसा कटु और घृणा का भाव दिखाया कि फिर कभी उसने जिक्र नही किया हा, इतना जरूर अब हो गया कि मा चुपके चुपके पूछने लगी कि किस तरह लालाजी का बर्ताव रहता है उन दुष्ट लडको के साथ ! क्या खिलाया ! आज कहा ले गए ? देखकर आ कि वे सब चुपचाप क्यो हैं ? क्या कर रहे हैं ?

धीरे धीरे वह अपनी मा की राजदार बन गई थी जो कुछ खबर वह देती उसी को जोड-गाठ मा रात को बिना नागा कलेश करती और अपने तन मन पर सौ गुना अधिक सहती धीरे धीरे मा मे अचानक एक परिवतन आया कि लालाजी का सब काम वह नियमित रूप से कर लेती किसी बात को न कहना, न सुनने की इच्छा रखना कपडे फट जाए तो भी नही मगाने खुद कहकर खाना लिए बठी रहती गरम गरम, एक-एक रोटी चौके में से चलकर देने आती कलेश कुछ कम हुए, लेकिन दोनो मे बर्र-अर्र किन क्या महीनो बोलचाल न होती लालाजी घर को धमशाला समझकर आते और मा उस घर का काम करना और लालाजी का मुह देखना अपना अनिवार्य काम समझती

घर म उसके पैदा होन के दस साल तक के बीच कोई और सतान नही आई मा ने इलाज भी कराया, अपनी मर्जी मे नही, बहू मा और बाबा के कहने पर लालाजी को इस ओर से कोई चिंता नहीं थी याद आता है आज भी वह सयाना जिसे वह मा सुखिया मालन के साथ जाकर लाई थी लम्बा चौडा चकले से हाथ पैरों वाला एकदम गवार जाति का कुम्हार था, आते ही मा की कोमल कलाई से पैरों की अगुलियो तक लोबान की धूनी फूक दी थी उसने मा ही शर्माई सो बादामो

आँखें गुस्से और क्षोभ से लाल हो गई थी वह उनके पास ही बैठी थी कि वह माँ की एक ललकार मे उसे बाहर निकलना पडा पर निकली कहा, थी वह ईंटो की पानवाली जाली के पीछे से सब देखती रही थी

जाने कितने गण्डे-ताबीजो स माँ की बाह और गला भरकर कुम्हार सयाना हटा था हल्दी म लपेट और गाठो मे बाधकर चावल दे गया था, जिन्ह घर के कई कोनो म और मा की खाट की पाटी म बाँध दिया गया था सात लोह की कीलें मा के कमरे की चौखटो और खाट के पायो मे ठोक दी गइ मेथी बथुआ काटने वाला मोथरा दरांत भी खाट की अदवायन मे उल्टा कर लटका दिया गया

शाम को जब लालाजी को पता लगा तब गदी-गदी गालियो के बीच मा को और तग होना पडा मुहल्ले मे किसी के यहा जगमोहन गाए जा रहे थे वह माँ वहा चली गई थी लालाजी ने शिमला से मगाए लपलपाते बेंत को जैसे ही खूटी से उतारा, तभी वह कोठरी मे से निकलकर मा के गुदगुदे मक्खनी शरीर से लिपट कर रोने-चीखने लगी थी लालाजी ने उसे खीचकर आतिशदान के नीचे बिछे तख्त पर फेंक दिया और सडाक से एक बेंत मा की कमर की लम्बाई को नापती ऊपर को उछली बस उसी क्षण, उसी घडी, दस साल की उम्र मे उसने यह जवाब पा लिया, जिसे उसका अबोध शिशु मन उस समय तक पूछता था कि परी जसी मा और उम जैसी गुडिया-सी बेटी से लालाजी प्यार क्यो नही करते और मोटे, काले, दूसरो के लडको को गाजर का हलुवा और मोटी मलाई की पत वाला दूध क्यों पिलाते हैं ?

बेंत के सटाके के साथ मा की झुकी बरसती आखो मे एकदम आग जल उठी आठ कसकर पहले मिर्चें और बाद मे इतने दिन से बद बोल बेंत के सटाके से भी अधिक तेज पैने निकले, तभी तो लालाजी सुनकर मुह फाडे रह गए और तेजी से जूते पहनकर बाहर चले गए, जहां स वह रात को दस बजे आए वह मा ने पल्ला फला, ठोडी चूम खूब बलैया ली, पर खाना नही खाया चेहरा तब भी टेसू सा लाल भभूका हो रहा था वह माँ ने उसके हाथ मे मेथी की भूजी और मक्का की रोटी घी गुदी भेजी तो बिना कुछ कहे चुपचाप खा ली और दूध पी सो गए

सारी रात वह मा के बोल का मतलब खोदती रही थी, जो वह बोली थी—'हा हां, खूब मार लो मुझको सरस्वती तो मूरख थी, पेट मे लात खाके मर गई, लेकिन मैं यो आसानी से मरने वाली नही हू मा का कलेजा रखू हू सो इलाज करवाऊगी स्याने धपान कू भी दिखाऊगी तुम्हें तो आस औलाद की जरूरत नही है, पर मुझे ता है ! ये तो पराय घर का कूडा है, सो दस पाच साल मे चली जाएगी तुम यो ही गुलछर्रें उडाते बूढ़े हो जाओगे मेरा क्या बनेगा ! मैं पन्द्रह बरस छोटी हू तुमसे माँ-बाप ने तना हुआ हाथी-सा शरीर देखकर पल्ले मे गांठ बांध दी थी,

तुम्हारे साथ, सो करम फोड रही हू कि नहीं ? बाप ने नौकरी देखी शहर देखा, बस झोक दिया यहा ! क्या सुख पाया है मैंने ?'

उन्हें कहा पता था कि बेटी महीनो बरसो हाथ छूने को भी तरसती रहेगी !

'अरे' यो क्या आखें दिखा रहे हो ! आज तक चुप रही खानदानी थी सो वरना उस आदमी को अपनी औरत पर हाथ छोडने का क्या हक है जो रात दिन छोटे छोटे बच्चे बच्चों को बहला फुसलाकर और दोने चटाकर मुह काला करता हो ! बताना पडेगा तुम्हे ! लाज लिहाज कुछ भी नही तुम समझते हो कि मामा और बहू मा नहीं जानते ! सारी करतूतो का पता है उन्हे

'मैं जानती हू तुम जैसा को अपनी औलाद और औरत की मोह ममता हाती ही कहा है ! सुन लो अच्छी तरह, अगर घर म सुख शांति रखनी है, तो जैसे गाडी खिच रही है चलन दो मैं कसम खा रही हू कि वह तो गई य बात पर अब सरम से गडी जा रही हू मेरी मसा जीवता जिंदगी तक कहन की नही थी मद की टोपी उछालना मेरे मा बाप ने नही सिखाया तुमसे इस मारे कह दी कि तुम मुझे बेवकूफ या अधी न समझते रहो पर कसम है जो कभी अपने सगा के भी कानों म कहू दूसरा कभी कुछ कह भी देगा तो जीभ खींच लू गी, पर तुम्हें भी अपन मरे माँ-बाप की ऐद है कि घर मे एक भी नहीं झाकेगा बाहर चाहे मौह पर धरे फिरो चाहे सगरी रकम दूध सरबत मे बहा दो और हाथ आज उठाया तो ठीक आगे बात अच्छी नही होगी आज के लक्षन की माफी छूट जाओ बस अब आखिरी आगे से ' और लालाजी कैसे भौचक्के खडे रह गये थे और माँ के चिकने गुलाबी गोल चेहरे पर आँसू ऐसे बहे कि वह देख नही सकी थी बाल्टी सागर भर पानी भल्ल भल्ल आखो से बहने लगा था घण्टा तक

भगवान की दया से घर मे भूरी बिल्ली के सफेद भुरांक बिलौटे-सा गोल मटोल भैया पैदा हुआ लालाजी की आखो मे बहुत दिना बाद खुशी के पटाखे छूटते देखे गाव से जापा करने बहू मा आई थीं साथ मे मुकुन्द भैया और बाबा भी आए थे बहू मा ने जिद कर ग्यारह दिन की बिहाई गवाइ थी

भैया के होते ही और लालाजी की आखो मे खुशी के पटाखे छूटते ही और रात को जच्चा गीतो के साथ ढोलक की थापें सुनकर मा एकदम जोगन से पलटकर पहले वाली हो गईं बहू मा की ठहाकेदार हसी अचानक जब घर की दीवारें हिलान लगी तब उसने बैठक के जगले म से देखा कि बहू मा खुशी खुशी माँ के जेवरो पर सोडा साबुन का पानी झाडू की सीको से रगड रही थीं उसे भी ऐसा जोश आया कि उसने अपनी गुलशन पट्टी मा के जेवरा के साथ डालकर बहू मा की शक्कर सी झिडकी सुनी थी - 'लरिकिनी ! तुम खजूर के तना सी यो ही बढ़त रहोगी, पर छटाकऊ सहूर तुम्हारी गाठ नाय बधे गो भैया को सिगार तो भयो ना, पहले तुम

सज धजके बैमाता बन लेओ ' लेकिन इस झिड़की पर मा ने कितने प्यार से बहुत दिनों बाद उसके चेहरे पर प्यार के बताशे फोड़े थे और अपनी गोखरू की माला उसकी सीक-सलाई गदन मे डाल दी थी, जिस पहनकर वह सारे मुहल्ले म पू छ-कटी बकरी सी फिरी थी आज पहली बार अपना घर उसे दूसरा के घरो-सा हसी की धूप से गुनगुना-गुनगुना लगा था

भाई के गीत हुए रतजगे मे फैन-बताशे बटे कान भी छिदे जनेऊ पर औरतो को छ छ दयाराम की इमरती और बच्चो को सिब्बा की दुकान के खलते मे बन्द चार चार बारीक, नरम बुनदी के लड्डू बटे और लालाजी और मां के बीच की कड़वी लाइन समय की रबड़ से मिटती-सी दिखाई देने लगी घर मे उतना विख राव नही रहा, जितना पहल था मा और लालाजी पास-पास बैठकर खूब हसे भी थे भाई को गोद मे लेकर लालाजी कितने अपने से लगे थे ।

कब बचपन की देहरी पर जवानी की शहनाइया गूज उठी, पता तक न लगा था यों ही आवारा की तरह उम्र की उठान दबे पांव आई और पूरे शरीर पर पहरे-दार सी बैठ गई । इतना ही पता लगा कि मां ने बरात मे आने-जाने पर रोक लगा दी दूध का लाना गोविंदा नौकर पर डाल दिया और शरीदार इजार और फला-लैन की कमीज की जगह धोती-जम्पर ने ले ली गाती मारने पर सख्त आखों का हुक्म लागू हो गया उम्र का यह रास्ता बड़ा अजीब बहका-बहका था सभी सूरतें अनाखी लगती छिप कर देखने-सुनने कुछ करने मे ज्यादा दिलचस्पी आती जितनी ज्यादा पाबदिया उतनी ही ज्यादा मन की हविश बढ़ी क्या हविश थी पता नहीं चलता था

पढ़ाई के सात दर्जे पूरे करते ही घर म बद कर दिया गया बडी मिन्नतें करने के बाद पिता स हारमोनियम मगाया मथुरा ब्राड सिखाने के लिए आए ब्रजबिहारी भट्ट घुघराले बाल, लम्बा प्यारा-सा कद और आखो मे जैसे सगीत की लहरियें पानी म मछली-सी तैरती लगती थी मीठी हसी मे खिलखिलाते बारीक चमकते दात सब कुछ बड़ा थरथराने वाला बहू मा की कहानी का शिकार खेलने वाला जगल मे भटकता राजकुमार मा कैसा पागलपन सा शाम के पाच बजे नही कि आखें घड़ी की सुइ पर टिकी हर गली की सास मे पावो की आहट सुनाई देती और हल्के हाथो की बैठक के किवाडो पर दस्तक मन की धड़कनो मे हवा के तेज झोके उडेल देती शाम को एक चौडी नदी आंखो स उतरकर कानो के धारो से फिसलती पूरे बदन में दौड़ जाती बाजे पर अगुलिया, सरगम पर नजर, लेकिन नजरो की लाखों शाखाए भट्टजी के सिल्क के कुर्ते और उनकी अगुली मे पडी चौड़े नगीन वाली अगूठी की जाली मे फसी रहती वीणा के कसे तारो सी वह कशाय उम्र कि जरा सी सरसराहट पर ही झन से तनाकर थिरक उठी

भटका राजकुमार शायद छोड़ गया था उम्र की ताजा डोर पकड़े उस बौराई नादानी को, तभी तो भक्ति-रस के पक्के गानो को छोड़ और आसावरी-मालकोष रागो को ताक पर रख श्रृगार मे पगे राधा-कृष्ण और गीत-गोविंद के पद सिखाने लगा ओठो को लाज की लाली ने जब और पान रचित कर दिया, तो अगुलिया का छोटा मोटा स्पर्श दे एक दिन कागज के गुलाब मे इत्र का छिड़काव कर, भीतर कागज का पुर्जा कद कर बाजे की रॉड मे उलझा दिया हिरनी सी चकित भोर आखों से उसका यह कौशल छुपा नही रहा था सासो मे जैसे भूचाल आ गया था

क्या था उस कागज मे ! कुछ तो था, जो घर भर मे बचपन से उपेक्षित साधारण लड़की को अपने आप ऊचापन लगा अपनी कोमल पर नाज हुआ और पहली बार पता लगा कि दुनिया बड़ी अच्छी और पखों पर बैठाकर सैर कराने वाली है चुप-चाप कोठरी के कोने मे, किताबो के पृष्ठो मे, गुसलखाने मे उस कागज की गोद मे बगीचे-सी महकती लाइनो को दस-बीस-हजार बार पढ़ा लगा कि दुनिया मे अगर सबसे अच्छा, सबसे प्यारा है तो कागज का वह पुर्जा और उसे लिखने वाला परो की चाल कही सच मे भटन न जाती, यदि मा की खोजी-तेज नजरो ने ये ज्वार भाटे गौर न किए होते दस दिन के भीतर भट्टजी की खुशबू दरवाजे के भीतर दाखिल होने से रोक दी गई उनकी जगह पेड पर लटके सूखे और पके पत्ते से पडितजी क्या नाम था हा तोताराम जी अग्रेजी पढाने आए, जो राजी-खुशी साल भर तक पढाते रहे खिली फसल पर पहली ही बौछार मे पाला मार गया उदासी फिर अधिक गहराकर घिरी दुनिया की चीजें फिर बेस्वाद हो गइ लाख चिरौरिया करने पर भी सगीत शिक्षा फिर नही हुई हारमोनियम पर धूल की पर्तें जम गई सरगम लिखी कापी फिर कभी काम नही आई

चलते चलते छोटे-बड़े कई रगीन मेले यो तो मिले, लेकिन नानी मा और बहू मा के बाहो के घेरे भी उतनी ही सतर्कता से फैलती उठती उम्र को कस कर दाब कर रखते गए नतीजा यह निकला कि हजारो बुलबुले बुदबुदाने से पहले ही फूट गए बैठ गए और बचपन का गम्भीर स्वभाव यौवन की अमराई मे प्रौढ़ बनकर धमक गया

बडे मामा जाने कैसे अपनी इस भाजी की मामुली शक्ल की अनकही कहानी पढ़ गए कि बड़ा प्यार दिखाते कपास से बिके पैसा मे से चप्पल, चौडे किनारो की महीन धोतिया और रेशमी खजूरी चूडिया दिलाते और मौके-बेमौके अनाज बेचने आई बैलगाड़ी मे उसे बिठाकर गाव ले जाते जहा बडी ठडी हवा लगती हाथ परो के जोड खुलकर मौलसिरी-कनेर की डालियों की तरह झूमने लगते सच्ची मामी की प्यार भरी बातें रात के सपनो को दूसरा ही रग देने लगती किशमिशी और

चानसाई के ब्याहे किस्से किसी दूसरे ही तिलस्मी दरवाजे की अधखुली दरारें दिखाते ओखली मे कूटते धान पात की महक मे, गोबर मे गोल गुदकारे उपलो म, बैलो की झावदार पूछ के फटकारो मे और खड़िया मिट्टी की लिपी लिसी दीवार मे जडे काच म, जाने कौन अनजाना चेहरा झांक जाता, जिसके साथ बहुत सारी बातें करने को मन तरस उठता बातें क्या होगी, इसकी रूपरेखा लाख बनाने पर भी न बन पाती प्यार भरी दो बातें और नेह भरे दो स्पर्श पान के लिए जिनके बचपन तरसते हैं, शायद उन सभी की ऐसी ही इच्छाए होती होंगी, वह अक्सर सोचा करती थी

होली के बाद आई शीतला मा की मानता शहर से दो-तीन मील पर माता-मैया का मेला लगता था लाल कामदार चूडियो के बीच काले लच्छे भर भर हाथ पहने थे मेहदी से हथेलियां माडी थीं मैदन रग की मलमल की धोती पर तीन अगुल चौडा सफेद गोटा टका था मा बडी खुश थी महावरी पैरो मे मीनेदार मछली की छोटी चुटकिया पहनकर धनुषी रग डलवाकर दो धोतियो को मुन्ना रगरेज भुड-भुड की घुरकी देकर दे गया था इन दिनों लालाजी मा की ओर कुछ झुके हुए थे सभी कुछ पूछ-पूछ कर करते सलाह लेते घर मे पैसा भी बचने लगा था, क्योकि घर का कर्ज उतर चुका था माँ के लिए नए कपडे और दो चार गहने भी आ गये थे कभी-कभी उसे भी लालाजी अपनी थाली मे बैठाकर खिलाते थे

गौरा ताईजी ने उन्ही दिनो फूलदार ठप्पे के गोदना गुदे झमलकट सोने के ठोस कडे बनवाए थे तुलसी चाची के देवर के ब्याह मे कोई औरत ऐसी नही बची थी, जिसके कलेजे पर उन कडा की आबफोड चकाचौंध मे खुरपिया नही चलाई थी जाने कितनी पिया की प्यारियो को उसी घडी पहली बार यह खबर पडी कि सब बडी भूल भूलैयो मे पडी हुई थी या डाल रखी थी, वरना सच बात यह थी कि उन्हें एक को भी वह प्यार कहा नसीब हुआ जो गौरा ताई को हरसहप ताऊ से मिला ! कई घरो के चूल्हे तब तक ठण्डे रहे जब तक वैसे ही कडे बनवाने का भरोसा नही मिला हफ्तो तक हरेक औरत के मुह पर कडा का ही स्यापा चलता रहा

एक फायदा जरूर हुआ कि सभी के मन के फफोले खूब निचुड निचुड कर फूटे उसी रात से एक हफ्ते तक मा ने ककेई रूप लेकर जो कोठरी को कोपभवन बनाया, तो तभी बालों मे चमेली का तेल डाला, जब लालाजी ने सुल्तानमल सर्राफ को गौरा ताई के कडो का डिजाइन दिखाकर सवा तीन तोले के बनने नही दे दिए घर घर फिर चर्चाओ की हीग उडी और मा के सीने की चौडाई कई इच बढ़ी कडे माता-मैया के मेले से ठीक एक दिन पहले बनकर आ गए थे माँ की सगी मौसी

वेदवती भी अपने तीन बालको के संग मेला देखने आई थीं घर मे मीठी पूरियो की महक उड रही थी भट्टा वालो ने और लालाजी ने मिलकर एक बैलगाडी किराये पर कर ली थी बच्चो मे बडा चाव था वह भी फालसई साडी और सुनहरी जोड लगी हरी-लाल चूडिया झकारती दौड रही थी

गाव से उसी शाम छोटे मामा लाठी कधे पर रखे आए मां को छोटे मामा से ज्यादा बडे मामा से मोह था छोटे मामा चुप रहने वालो मे से थे काम से काम, ज्यादा लपरलपर करना उन्हें नही सुहाता था एक ऐब था उनमे सुबह से शाम तक बीस बार गाजा-अफीम खाना और सुलगती आखो मे चुप्पी बाध काम करना या बैठना रात को भी कम सोते उसे बचपन से ही उनसे दहशत लगती थी

मामा आए तो मा की खुशी पर और सान चढी बहू मा आठ दिन पहले ही आई थी गरम गरम मीठे सक्करपारे-पीले बनाकर खिलाए मकान का कर्ज उतरा और चार रुपये जमा हुए तो मा ने सामने की छत पर से टीन उखडवाकर ऊपर बरसाती मे लगवा ली और उसकी जगह सीमेंट की ऊची घेरेदार छत ढलवा दी गर्मियो मे हवा और सर्दियो मे धूप मे धूप खाने सारे मोहल्ले की औरतो का जमघट यही रहता था

रात को सभी सो गए मामा उसे बाजार से खिलौने दिलाकर लाए वह हसी भी थी कि अब उस बडी उम्र म य मिट्टी के कुत्ते बदर अच्छे नहीं लगत आते ही उसने सारे खिलौने गुलदस्तो के पास सजा दिए जाने कौन वक्त रात मे, कुछ याद नही क्या बजा था, मा न बहू मा को टोका कि कुछ गिरा है आवाज आई है बहू मा दिन भर मीठे पकवान उतारते-उतारते गर्मी मे तीन बजे आटे सी बिस्तर पर फैली पडी थी, सो हा हू करके फिर करवट ले गई फिर खटका सा लगा तो मा ने धीरे से उसे आवाज दी कि जल्दी तकिये के नीचे से माचिस लेकर लालटैन तो जला जरा रोशनी मे देखा, तो कुछ नही था सभी कुछ ठीक ठाक लालाजी की नीद कही खुल न जाए सो जल्दी ही बत्ती बुझाकर फिर सो गए मा को फिर आसानी से नीद नही आई मन मे कुछ चुभ सा गया सदेह का कीडा उनके मन म बराबर मुगबुगाता रहा लालटेन की खटखट करती नही थी, यो ही मनमारे

सबेरे आंख खुलत ही सिरहान रखी चाबिया का गुच्छा देकर मा, बहू मा से बोली— लेओ बीबी ! तुम झाझन पाया मे डाल लेओ और मेरी इमारती की गले वाली चेन पहन लो मुझे भी सिलवर के कटोरदान मे सू सारा जेवर दे दो सवेरे-सवेरे बिना छीक-नाक पहन लू त्योहार का दिन है' बहू मा बक्स पर गई तो लकुआ मार गया जैसे वही से चिल्लाई 'हाय ! ब्याहुली, जे तो भाड सो खुलो परो है ज कहा भयो ! जा कौन की म्हौ कारौ होयगो ! इतकू वो आओ देखो तो सही कहा रहो कहा गयो ?' मा बिजली सी तडपी वह भी उनके पीछे भागी

सारा खकोरा लगाने पर पता चला कि चिडी पान वाली अगूठी और नये निकोर बन सवा तीन तोले वाले ठप्पेदार डैमल के कडे नही हैं मा को चक्कर आ गया खाट पर भहराकर गिर गई वहू मा और मौसी के काटो तो खून नही बलगाडी द्वार पर खडा थी पकवान बधा हुआ रखा था ऊपर से यह आफत

सारा मेला-त्योहार पल भर म ढह गया जिंदगी के खाने पहरने क दिनो मे मा न पैसा पैसा जोड कज उतारा सभी की नाते रिश्तेदारी निभाई आदमी की उपेक्षा सही अब जाकर जरा आमू पुछे ये ओर मन की धरती पर हरियाली उगी थी कि फिर उनकी जान को क्लेशो के भुरमुटे उठ आए लालाजी की गालियो से सारा घर पुत गया जो भी बतन, कपडा, खाट पीढ़ी सामन आई, टूटी फटी, या फिकी सारे घर के आदमी औरतो की घिग्गी बध गई 'राम जाने अब यह किस किस की दुगत बनायेंगे हे माता मया! सबके मु ह साफ रखियो भलो भयो आज त्योहार!

'परममुरा! अच्छी आज मौत दई! त्योहार मे ही बिस घोलनो हुतो' कहते-कहते वहू मा और वदवती मौसी के ओंठ पपडा गए अब कहा करें या पकवान को और मैया के पुजापे को! मा धरती पर पागल सी फटी फटी आखें लिए पडी थी न आसू न कुछ प्रलाप एकदम सुन्न बावली सी गजब का चमत्कार हुआ कि लाला जी बकते झींकते चुप हो गए वह मा स चिल्लाए—'भौजी, माथे पर हाथ मारती रहौगी या इसके मु ह पर पानी के छीटे दे उठाओगी? हमारे भाग्य म सुख है ही नही चलो इसे तैयार करा जग हसाई होगी सब कपडे पहन तैयार हो जाओ गाडी वाला कब से ही हल्ला कर रहा है किसी को कुछ मत कहना जो हो गया, सो हो गया चलो सब जल्दी करो करम पर दुहत्थड मारन को तो जिंदगी पडी है फुसत से इस चोरी पर बैठकर सोचेंगे फुर्ती करो सब

सभी के मु ह से राख की एक पत तो झडी और मुर्दा हाथ-पैरो मे जान आई सब हवा पर तर उठे, पर मन भीतर से धुक धुक लल्लू का कहा भरोसा! पल म कसाई पल म सह! खैर मा सावधान हुई और जसे-तैसे शीतला पूजी शाम को जब सब तसल्ली से बैठे तब तक लालाजी न कुछ सुराग इकट्ठे कर लिए थे जिसने कडे अगूठी लिए हैं, वह घर का ही आदमी है, यह चोर का काम नही गीली छत पर जूतो के निशान हैं जूते फ्लीट है, जिनके तले या ही नम मिट्टी म छप गए हैं मु डेर तक निशान हैं आगे वह आदमी बजू प्रसाद की छत पर कूदा होगा, बस वही जगह है जहाँ से भागा होगा बात सभी ने जाची और सभी मन म पुख्ता हो गए कि खोज सोलहो आन सच थी परन्तु घर का फ्लीट जूते वाला रहा कौन?

तब सबकी नजरें एक ही पर जाकर टिकी पर कहे कौन? कब तक लकिन न

कहे ! सबका मुंह काला हुआ जा रहा है जो ! बाबा ने हिम्मत बांध कह दिया—'लल्लू ! पलीट के जूता तो ब्याहुली के भैया पहरे भय हते आज सबेरे सू उनको बैराऊ अतो-पतो नाह हैगा' लालाजी की आंखों का संदेह गहरा गया मां का मन पहले ही संदेह से भरा था बात सबके मन की थी पर सब चुप रहे रात को भी मामा नहीं आए दो महीने तक उनका पता नहीं चला घड़ी फसल हल बैल सून से गांव में थे, न अपनी ननसाल में कहां गए ? कड़ा का गम फीका पड़ गया और जवान मामा की फिक्र अधिक हो गई कोई तीन महीने बाद पड़ोसी बाबी बदरी ने हाथ चिट्ठी भेजी मां के नाम, जिसे पढ़ने के लिए गोविंदा उसे स्कूल के पीछे बने सत्यपाल ठाकुर के घर से बुलाकर लाया था, जहां वह दुपहरी में बुनाई के नमूने सीखने जाया करती थी चिट्ठी क्या थी, दीवाली पर छूटने वाला बम पटाखा था टेढ़े-मेढ़े देहाती शब्दों में लिखा था—'बीबी ! तुम्हारे करेजा की पीर मरे हू सालती रही, सो आत-जात हरेक मानस कू देखव-पहचानवे की आदत पर गई कोई दो दिना पहले सूखी नहर के पुल से उतरत भय तिहारे भैया देखे हते हमने जोर सू उनाई नाम लैके आवाज दी कि वो तो पिरान छोड़ के भाज हो, एक बात हम पूरे यकीन सू लिखें हैं के वो हैव याही सहर में हैं तुम बाऊजी ने लैके तुरत चली आवो इधर हम दोनो तलाश जारी रखत रहेंगे'

चिट्ठी पर दो दिन तक घर में सलाह तो क्या] अच्छी-खासी दांता किटकिट होती रही मां का मन एक ओर तो गुस्से और अपमान से भरा था तो दूसरी ओर भाई के प्रति प्यार मोह कम न था ऊपर से मामा को गाली देती, भीतर से मनाती कि उसका कुछ बिगड़े नहीं और किसी तरह राजी खुशी गांव लौटकर अपना काम संभाल ले उधर लालाजी तो मामा के नाम से ही चिढ़ते थे उनका घर में जिक्र नहीं हो सकता था [मां से कह दिया था—'खबरदार, जो पीहर का नाम लिया समझ लेना सब मर गए' मां सुनकर चुप रहती पिता के घर से जाने के बाद ही उनकी आंखों में पानी आता

किसी तरह मां ने पिता को राजी किया बदरी के शहर चलने को लेकिन जाने की नौबत नहीं आई, अच्छे दिन खुद लौट आए मामा खुद आ गए और मां के पैरों में कड़े-अंगूठी दोनों चीजें रख दीं सब चुप सब हैरान क्यों तो लिए क्यों कलंक लगवाया, क्यों खेती पानी का नुकसान किया, किसलिए ? पर ये सवाल भाई बहन के प्यार से बहन आंसुओं में दबकर रह गए लालाजी ने एक शब्द भी नहीं कहा बल्कि पैरों पर झुके मामा को बीच से ही उठाकर गले लगा लिया

सारी कहानी किस्से का जो भी कारण हाथ पल्ले पड़ा वह यह था कि मामा की आशनाई जाने कहां की गई गुजरी काछिन से हो गई थी थी तो काली, पर गजब की थी एकदम चमकदार चेहरे वाली किसी ज्योतिषी ने कभी हाथ देखकर

बता दिया कि शादी मत करना, वरना औरत विधवा होकर रोएगी, क्योंकि तुम्हारी उम्र अधिक नहीं खिंचेगी तभी से मामा ने शादी न करने का इरादा मन ठान लिया था बस काछिन मन मे बैठ गई थी उसके कपडे सिलवाए फसल खेत की खेत म ही बेचकर चुपचाप रकम दी गई कई बार अब भी जो जेवर की पीछे पडी कि आगा-पीछा भूल गए और सीधा रास्ता यही मिला कि कुछ हेरा फेरी कर उसका मन साध लें सो यह गदा करस कर बठे लेकर पहुचे उसके दरवाजे पर तो पता लगा कि यह औरत मन की सच्ची नही खून खौल उठा हाथ से हत्या नही हुई वरना खूब गाली, गलौज, कुटाई पिटाई कर उस पर थूक कर चले आए इतने दिन इसलिए लुके छिपे रहे कि ऊचे खानदानी आदमी से एक तो यह पाप हुआ, दूसरे कैसी नाली पडी औरत ने उनकी बुद्धि गारत कर दी—पछता,ते-हहराते डोलते रहे

काछिन ने कसम खाई, पाव पकडे, आगे ठीक रहने की हामी भरी, लेकिन मन पर जो लकीर खिंची, मिटी नही बहुत याद आई अपना कुकम सामने आया कडे अगूठी लेकर वापिस लौट आए वसे ही सीधे, वैसे ही देवता मन लिए 'अब मारो चाहे काटो, भूल हा गई, प्रायश्चित भी खूब कर लिया अच्छे बुर जसे भी हो, अपनाना तो पडेगा ही आगे म ऐसी एक भी गलती हो, तो सौ जूते और उनका सिर ' कथा करते, सभी ने कहानी सुनी और अपनाने का एक मुह फसला दे दिया मामा गाव लौट गए महीना-दो महीना मन कुढ रहा, फिर वही खेती, वही घर सब कुछ बिखरा सिमट गया आदमी जात, कितन दिन लगते हैं लीपा-पोती करने मे। घर चुप तो बाहर वाले भी चुप बात आई गई हो गई माँ मगन कि सगा मा जाय वीरन भी सही रास्त पर आ लगा और गाढी कमाई के गहने भी आ गए बहू मां को चैन मिला हा, लालाजी ने भूलकर भी कोई ताना नही दिया मा को

वह सब देखती-समझती उमर न एक पग और मारी कि पिता के मन को मा ने कुरेदना शुरू किया कि लडकी सयानी बेगैरतो सी रहती है खाता-पीता लडका देख हाथ पीले कर दो जाने कौन अदृश्य पीछे से भूत की तरह यही स लग बैठा कि लालाजी की लाख इच्छा होने पर भी उसे बहुत दूर की दिशा खीच रही थी वह सदा कहा करते थे—'कौन दस बीस लडकी है ले-दे के एक है सो आस-पास ही देंगे ' जूतो के तले घिसने लग कही घर नही, तो कही वर नही पटिया बठ नही रही थी महीनो से दिन और दिनो से साल यो ही निकल गया एक आदमी काबू मे आया नजदीक का तो रोज आकर घर मे धना दे के बठ जाए कभी गुड की कतली ले आए कभी कगनी क लडडू बाध लाए उसका बेटा बडा खूबसूरत था शक्ल पर मा लटटू हो गई हर तीसरे दिन उसके नाम की कडया चढ़ी रहती उसे

बहुत बुरा लगता सोचती, यह अच्छी हत्या पीछे लगी कसी शम की बात है कि कभी चला के देखता है, कभी हसा के अरे ! हम सूख रह हैं ता कौन नही सूखेगा इस घर म ! हमने कौन कम दुख और उदासी भरे दिन गुजारे हैं छोटी-सी उमर लेकर चला बडा हड्डी टटोलने वाला न करे ब्याह, भूखे नहो बठे हैं मा जाने क्यो इसे मुह पर चढाए रहती हैं रिश्ता पक्का करने की तिथि तय हो गई अगली बसत पचमी को दिन रहे थे बस एक महीना भर लडके का फोटो सचमुच ही कमाल का था उसे भी पसन्द था लालाजी के कोट की जेब से निकालकर घण्टा एक दिन फुसत मे देखा था भटटजी तो उसके पाव की धूल भी नही थे कुवारे मन मे सरसो फिर महक उठी दालें गेहू बेसन पिसने बिनने लगे तीहलो पर गोटे टाकन को मा की मिलन वालिया आने लगी

घर मे तैयारी शुरू हुई इसी कारण बहू मा और बाबा को गाव जान से रोक लिया वेदवती मौसी चली गई तभी फर्रुखाबाद से गजराज मामा आए, जो मा के ताऊजाद भाई थे वह भी उस परगने के महकमे मे नौकरी करते थे, जिसमे वह लडका नौरतन नौकरी करता था पता लगा कि वो क्या शौक के मारे भागे आए हैं ! भाजी की जिंदगी कुए मे धकेली जा रही है, सो बचाने आए हैं इससे बडा धम और कौन सा है ? सारा घर फिर लालटेन की कचलाई लौ मे इकटठा होकर बैठा सभी का एक ही सवाल अचरज भरा था कि ऐसा क्या जुल्म हुआ जो उन्हे यो रात म भागकर आने की जरूरत पडी ! ऐसे तेज जाडे की हवा-पाला भरी रात मे गजरदम कोई आदमी बारह घण्टे का सफर वैसे ही नापता है क्या ? बात जरूर गहरी है

मामा ने सभी को बताया 'आख रहते माखी ना निगली जाव आपको जो फोटू दिखाया गया है वो उसकी जवानी के दिनो का है आप हो भोले जी क वो बुड्ढा है बडा खुर्राट पद्रह बरस मे तीन ब्याह तो रचा चुका बेटे का, य चौथा है दो-तीन साल का फेर देके तीनो मर गइ दस ग्यारह साल से अब खाली है पूछो क्यो ? अरे, अब तुम तो बैठे हो यहा दूर परे असली बात मुझसे पूछो य तीसरी सादी जो भई तो बाकी महतारी थी सौतेली बेटी स यही कोई चार छ साल बडी ब्याह के बाद ही कुवर साहब की लागलपट सास के सग बैठ गई लडको ने साल दो साल सही, आग टी बी म खतम है गई औरत के मरने का कौन दु ख किया ! फिर तो खुलक रग बिखरे किस्मत का था धनी, सो वा डोकरा ससुर भी पिछले तीन साल पहले लम्बे पैर पसार गया अब वही वाकी नौकरी मे आ गई हैगो और वस पानदान सामन धरे रात दिन सरौता से सुपारी काट-काट बीडा चबाती रहे है सोच लभो देगो कौन अपनी छोरी ? मैंन जसे ही जानी कि बाबूजी हाम रुपया भरन पे राजो हो गए हैं, तो भला रुकन का कौन सवाल था ? पहले ही पान-फूल

मी छोरी है अरनी, वहाँ जाके यह चार दिना भी जिंदा रह गई तो मेरा नाम गज्जू धू बदल के दूसरो रख दीजो यो बुड्ढा चाह रह्या है कि एक बार दहेज और फांस लू साफ मना कर दो कि नही करनी शादी सगाई जमाने भर को ससुर कुत्ता वाकू याही पर मिलो है माटी मे मिलावै कू कहा गलत कहा है मैंने ?'

एक-एक वाक्य मे साथ मामा के मुह से हजार-हजार गालिया निकल रही थी सबके मुह यह गाथा सुनकर पीले पड गए ऐसा घोर विश्वासघात क्या बिगाडा था उसका ? खा गया कमबख्त आठ महीने से घर आधी, पाले और गर्मी में जो भी अच्छा लगता बनाके खिलाया उसे क्यो ? मा ने सिर पल्ला ले के रोना शुरू किया बहू मा ने थुकऊ के सात पुरखो की अर्थी निकली बाबा के बुढ़ापे के हाथों मे जवान खुजली चली और लालाजी ! उनकी हालत देखने लायक थी पूरी उमर म ऐसी मात नही खाई जैसी इस खूसट ने दी 'अब आए साला घुटनो की टोपी जड से नही उखाड दी तो ! आहो ! बसत पचमी पर अनर्थ हो जाता इस बार पौली मे पाव रखते ही टखने उखाड दो नालायक के कितने दिनो से हमको बेवकूफ बनाता रहा ? अब हम कैसे जान सकते थे सारी नौटकी को ?'

मामा तो कहके चलते बने, पर जसे लालाजी के मन को चैन न था एक बार आखों से देख तो आए दस पाच रुपये किराये मे ही आएगे ! तसल्ली के लिए कौन लाखो की रकम है ! जहा अब तक हजारो जगह पैसा फूका किया, और सही हीग मे फिटकरी ही रहेगी नाते रिश्तेदार ही कौन दूध धोए होत हैं जहा किसी की नातेदारी सिमान चढ़ी कि आग लगी गजराज ने अपनी बहन ब्याही तो एक आँख के सिपाही को जलन भी तो हो सकती है कि इनकी लडकी क्यो अच्छे घर जाए. बस इसी द्वद्व म मा और लालाजी एक दिन, पूरी एक रात डूबते-उतराते रहे जब मा की भी सलाह मिल गई कि देखना जरूर चाहिए, तब लालाजी सुबह ही पहली गाडी से रवाना हो गए बेशक चले गए थे, लेकिन इस रिश्ते के बीच काटा तो गड ही गया था ब्याह हो भी गया, तो शक की दरार तो रहेगी ही ?

उसे फिर धक्का लगा था भाग्य जाने कहा कैसे-कैसे जिन्दगी का हाथ पकडेगा ? खुशी का छोर आता है और हवा मे लहराकर छूट जाता है सोचकर उदासी गाढ़ी हो जाती लालाजी जाते जाते एक दवाई घुला साबुन और मुह पर मलने की सुगध भरी अच्छी सी शीशी लेकर दे गए— देख इस रात को मुह-हाथ अच्छी तरह धोकर लगा, जरा रग रूप निखरे ये साले ब्याह के झझट आजकल जमकर खून पीते हैं चाहे गधो के पूत आग खिची अधजली लकडी से हो, पर लडकी चाहेग एकदम इन्द्र के अखाडे की परी इनका सत्यानाश जाएगा ' वह शर्म से लाल हो उठी थी उन चीजो को उनके हाथ से लेकर लडकी होकर जसे वह बहुत बडा पाप भोग रही थी मन मे आता था कि जहरमोरा खाकर सो जाए मरने

के बाद ही चैन मिलेगा औरत का जन्म लेना कितना बड़ा पाप है, पर क्यों ?

लालाजी दूसरे दिन ही आकर हाथ का झाला खूंटी पर टांगकर ऐसे आ बैठे जैसे किसी की राख गंगा मे बहाकर लौटे हो । थोड़ा चुप रहकर सारा गुस्सा उस पर उतारा था 'मर भी नही जाती कमबख्त ! हम परेशान कर दिया है हम थोड़ा ही नही चूके, नही तो साले की गर्दन मुर्गे की तरह मरोड़ आते और फांसी पर लटक जाते अरे ! दूर हो जा हमारी आख आगे से शक्ल तो देखो [मनहूस की हाथ पैरो को रगड़-रगड़कर साफ नही कर सकती औलाद दे तो ईश्वर गत की द, सारा दलिद्दर हमारी ही तकदीर मे था अब हम कही नही जाएंगे मरो साले सब हम भला किसके दरवाजे पर भीख मांगे ? पेड़ से लटके हैं न नौनिहाल, सो तोड़ लाओ सब भाड़ मे जाओ हम नही नाक रगड़ने जाएगे कही '

महीनो घर मे फिर नीम की पत्तियां बिखर गई और एक इतवार की दुप हरी को लालाजी की पहली ससुराल वालो मे से किसी ने बताया एक वर, जिसे पिता ने बिना परखे, बिना सोचे, चट रोटी, पट मगनी में बदल दिया बीस दिन के भीतर तो सब कुछ हो गया, जिसके करने के लिए वह बरसो से परेशान थे सब सपना सा अनोखे रूप मे घटित हो गया कौन है ? कैसा है ? घर मे क्या कुछ है ? लड़की सुखी रहेगी या दु खी ? नही, जसे लालाजी अंधे बहरे हो गए थे

घर रिश्तेदारो से भर गया मा की दूर पड़ी बुआ का वह लड़का भी आया था जो तीन वर्ष उसी घर मे रहकर लालाजी की देख रेख मे पला था यही से इण्टर बी ए किया था शर्मीला-सुदर्शन, जिससे बोलना कम होता, लेकिन आखों की भाषा मे बहुत कुछ एक दूसरे के ख्याल पढ समझ लिए जाते उसकी मां बचपन मे मर गई थी एक बार सूनी दुपहरी के सन्नाटे म उसने पूछा था 'तुम इतनी उदास क्यो रहती हो ? मैंने इतन वर्षों मे तुम्हे न मुसकराते देखा है और न हंसकर बात करते हुए ! इस उम्र मे इतनी खामोशी ! ताज्जुब है मुझे कहो, क्या बात है ?'

'कहा ! खुश तो हू उसने कहा था

वह शायद खुद ही उत्तर पा गया होगा क्योकि घर का माहौल उससे छुपा तो था नही

बस मूक रहकर भी उसे मन प्राण से चाहने लगा था गाव मे जाकर नानी से कहा था—'क्या कह रही हो दादी ! कहा के हम सगे पेट के हैं ऐसे दूर-दराज के जाने कितने नाते रिश्ते होते हैं तुम कर दो न सिफारिश ! कौन टाल सकता है तुम्हारी बात ! मैं शादी करने को तैयार हू मेरा बड़ा मन है उधर ' लेकिन नानी ने दुत्कारा ही नही, वरन अपमानित कर लज्जित भी किया था—'चल चल बड़ा आया हमें समझाने कोई चूड़ी चमार हैं क्या ! तेरी हिम्मत कसे पड़ी ऐसे कुबोल बोलन की ! खबरदार अब कही तो ' उसी को शादी के मौके पर पाकर खुशी की

जगह पीड़ा हुई वही उदास गंभीर चेहरा और मूक शू य नज़रो का सामना, जहां बड़ी लम्बी कुछ कहती सी कहानी तैरती रहती थी

बारात आई सभी गवार न खाने की तमीज, न ढग के कपड़े सभी निकट की सहेलियां आई थी पीठ पीछे खूब आंखे दबा-दबाकर मजाक उड़ाई नानी ने सिर थाम लिया बहू मा बुक्का फाड़कर विलख उठी 'हाय ! कऊआ की चोंच में सोने की डरी जा लगी ' माँ ने फेरो पर क यादान देने से मना कर दिया तूफान मचा दिया— नही देखूगी याको म्हो ! कहाँ प द्रह सोलह की लड़की कहा ये पकापकाया आधी उमर का अरे, अब पता लगा कि या छला को फोटू क्यो नही दिखायो हो ! कैसे ब्याह दू या दईस के सग ना अभी बेटी घर की है फेरे पीछे कहीं कुछ नही हो पाएगा ' पर सब विलाप बेकार गया भाग्य के हथौड़े से कोई बचा है आज तक पीली पेवड़ी सी कच्ची उम्र उसी दिन कोयले के घाट पिसकर रह गई

जयमाला के समय उसने भी एक नजर डाली तो जी बुझकर रह गया बेडौल काया, पक्का रग, कुरूप नाक नक्शा देखने बोलने म आधा शेखचिल्ली क्या वही था सपनो का राजकुमार ? आधी भी खुशी न रही मशीन की तरह सारे काम हुए किसी भी चेहरे पर उल्लास नही था लालाजी भी अपराधी-सा महसूस कर रहे थे, जब कहा था - 'बेटी, अपना भाग्य है कोई इसका भागीदार नहीं हमने चार पैसे कमाता देखा है, नेक सुशील है ठीक रहेगा जी तू छोटा म कर हमे तकलीफ होती है ' आज भी याद है कि उनकी आखे भीगी भीगी थी पर प्रश्न था कि इकलौती बेटी के लिए उन्होंने क्या देखा ? क्या भीगी आँखो और दो सिसकते बोलो से उसकी जि दगी खौलते पानी मे जी पाएगी ?

फेरे पड़ गए रोहन पीटन मचती रही फेरो के दूसरे दिन वही बुआ वाला लड़का कोठे म आया था और धीरे धीरे बोला था—'जोड़ी तो खैर किसी की भी नहीं मिलती है, पर ये सब कुछ देखकर जी बड़ा खि न हो उठा है मैं आज रात को चला जाऊगा कभी जरूरत समझो तो परख लेना मन तो बहुत था तुम्ह लेने को, लेकिन ये दुनिया-समाज अपनी ही चलाता है खुश रहो, इसी मे मेरी आत्मा सुख पाएगी अच्छा ! मौका लगे न लगे, ये अगूठी उगली मे पहन लो कभी अलग नही करोगी ' वह तो पहले ही परेशान-उदास थी, इस वाक्य ने उसका चन और छीन लिया विदाई के समय भी तो चुपचाप कह गया था—'देखो, ग र न समझना मुझे लगता है तुम सुखी न रह पाओगी कभी परख सको तो परख लेना' और उसकी डोली आगन से उठ गई थी

ससुराल क्या थी, कुछ भी तो नही मामूली कच्चा घर और गाडी भर कुनबा सभी अपरिचित, बोली मे भी, पहनावे मे भी प्रात का फ़र्क बहुत बडा होता है

कहा पाई

मकान म रखवाली कम हो पाती थी सो घर बदल लिया वह नए वातावरण को समझ भी नही पाई थी कि एक दिन सामने वाले पनवाडी ने हसकर नमस्ते कर ली, तभी वह सामन से आता दिखाई दिया और घर मे घुसते ही जहर उगला —'अरे, वाह ! यहा भी जुगत बैठा ली ऊपर से तो बडी सती बनी रहती है मेरे लिए, लेकिन बाहर मौका लगते ही आखें लडाने मे नही चूकती ! मिला भी तो पनवाडी ! मुझसे वह एक से एक बढकर चीज दू ! अरे थूके भी, तो जमीन देख ले यह साला दा पैसे का आदमी ही पसद आया क्या ? कौन पैसे वाला है ! साली, कोई धाकड चीज तो हो ?' ।

पूरा जगल ही कटीला उस दिन उग आया था उसके शरीर मे वह तो गया बक झक कर बाहर बाजार और उसने खूटी से शाल उठाई और सीधी मोटर मे बैठकर अपने पिता के पास आ गई शरीर मे जैसे रत्ती भर भी खून नही बचा था बहुत पूछने पर लाज शरम छोडकर सब कहानी कह दी लालाजी का बहुत दिनों बाद पहले वाला रौद्र रूप देखा गुस्से म पागल से हो गए रात की गाडी से चल कर वह भी सीधा आ गया सारी रात ससुर,जमाई में कसकर वाकयुद्ध हुआ सुबह लालाजी ने कहा कि अगर मैं चाहू तो वह ले जा सकता है गर्भ मे बीज पनप रहा था एक अव्यक्त भय की सिहरन छाई थी कह दिया—'भीख मिल जाएगी, लेकिन बार बार अपन भीतर की नारी का अपमान मुझसे नही सहा जाता ' वह उफनता गरजता चला गया

मा के नानी से सम्बन्ध बिगड रहे थे मुकदमा चला दिया था पिता ने पूरी तरह से जमीन को लेने के लिए गाव का कोई आदमी मौसी की ससुराल सूचना दे आया था कि वह भी क्यो चुप रहे अपने हिस्से के लिए ? वह भी पति देवर सहित गाव आ बठी

मुकद्दमे मे मां की हार हुई, तो मौसी को भी कुछ हाथ नही लगा और जमीन फिर ज्यो-की-त्यो नानी के कब्जे मे रही हार ,के साथ सम्बन्ध इतने बिगडे कि पहले नाज पानी तो आ जाता था, गुड दाल कुछ नही खरीदनी पडती थी, उससे भी हाथ धोए नानी अब होशियार थी भाईयों को पीहर से बुलाकर अपना बनाया वही स्याह करें, वही सफेद मा की छाती पर साप लोटते थ लालाजी ने अलग मा को लताडा कि उनने फड का आधा रुपया मिट्टी के ढेलो मे बर्बाद करा दिया नानी की अच्छी भलमनसाहत रही कि फिर भी चार दाने फसल पर घर पटकवा देती थी

यहा पूरा बीतते-बीतते भयकर अकाल पडा सिवाय शकरकदी कुछ नही बचा रात को घर पर टोकरे भर उबलती और जितनी खाई जाती खाकर सो जाते फिर

सवेरे मठ्ठे मे कुचल कर पी ली जाती बच्चा बीमार पड गया वह हाथ से न निकल जाए सो जल्दी उसे लेकर लौट आई दो दिन बाद वह आकर फिर उसे ले गया देवर की दूसरी शादी थी मिलिट्री वाले की पहली बहू गौने के बाद निमोनिया मे खत्म हो गई थी और उसी की सगी भतीजी से ब्याह था गाव-ससुराल सीधी गई और सास के साथ शादी की तैयारी मे कुछ दिनो के लिए उदासी से छुटकारा मिला छोटे देवर का पहले साल ब्याह हुआ था, अभी गौना नही हुआ था छोटा देवर ऐसा प्यार देता कि मामा की याद हो आती तसल्ली भी मिलती कि कुछ भी हो, कोई न कोई, किसी जगह, किसी भी रिश्ते को लेकर क्यो न हो, प्यार देने वाला मिला है जिन्दगी जीने को इतनी-सी पगडडी क्या कम होती है ?

जिस दिन देवर के तेल चढना था, उस दिन वह हथलगियो को जल्दी घोलकर दे रही थी तभी छोटा देवर 'हा हां, हू-हू' कराहता आया और गुदडी ओढकर ओसारे मे लेट गया वह हाथ का काम अधूरा छोड उसके पास गई और हाल पूछा तो पता लगा कि पेट मे से जाडा उठता है जो सिर के बाल सीधे कर देता है उसने उस पर भर के गाभे-गूदडे डाले, पर सर्दी की फुरफुरी तभी गई जब बहुत तेज बुखार हो गया यह देवर कम बोलता था जोर से ठट्ठा मार हसना तो देखा ही नही उसका बोलता भी तो बहुत धीरे-से जो बस सुनने वाला ही सुन सके ! रात को थोडी देर को अकेला छोडा था कि उसने उठकर मैंढी मे रखा दिन भर का खट्टा-बासा मट्ठा लोटा भर पी लिया पीना था कि जाडे के बगूले सुबह तक नही थामे सारा घर खुशी मे, खाने मे और बारात की आपा धापी मे लगा था सभी को यही था कि है क्या मामूली बुखार है सर्दी मे या भी जाने कितनी बार जूडी चढती-उतरती है चारो तरफ पोखरा से भरा गाव, वैसे भी सर्दी ज्यादा देता है सब चला जाएगा

सुबह तारो की छाया मे ही बारात जाने की तैयारी शुरू हो गई गाव से बारात का निकलना कोई हसी-ठट्टा नही होता कई बहली, रब्बे, लढा जुडे खडे थे आधी रात से ही काम काज चल रही थी वह अपनी दरी देवर की बीमार खाट के सहारे बिछाकर सो गई जहा मन की जरा सी भी डली गलती बस उसका सारा जी वहीं बिखर जाता सीधा-साधा देवर न कोई ढग की दवा चल रही थी, न गोली राम के सहारे माला के दाने चल रहे थे

बाहर से गाँव की जिठानी बुलाने आई कि बाहर आके काजल लगाई रस्म पूरी करनी है वह हाथ मुह धोकर धोती बदलने चली गई तन थका है तो क्या, रस्म तो निभानी पडती है फिर भी मन न माना तो सास को एक ओर ले जाके कह ही दिया—'एक बेटे का सेहरा सजाने मे जुटी हो रात मे एक घडी भर को भी झाँक कर देखा कि दूसरे पर क्या बीत रही है ? घर के खेत भर आदमी है सगे

सोयरे किसी को भी फिक्र नहीं कि दवा गाली का बदोबस्त करना है सारी रात यो ही आग की तरह भुनवा रहा है तुम भी खूब हो, बेटे के पास एक फेरा तक नही लगाने आइ'

वह लाल रेशमी धोती खुली-बधी लपेट बाहर आई और सीधी वहा गई जहा बादे हल्दी का चौक पूरा हुआ था और कलावा बधी पटली के ऊपर एकदम मन हूस शक्ल लिए लम्बे दांत बाहर निकाले मिलिटरी वाला देवर बैठा मुसका रहा था उसका तनिक भी मन काजल सगाने को नही हुआ कहां-कहां मन की सारी अटारी पर दीए जलाने की हविस पूरी करेगी आग बढ़ पहले हल्दी की चार बूदें उसके ऊपर छिड़की तय तेल म दो अगुली डुबोकर पैरो की पोरों पर छुआ दीं और जल्दी से कजरौटा मे ताजा पला काजल शुरू की दो अगुलियों के पोरको पर घिस कर उन बिजलाई आखो के मिचमिचे पपोटो मे खीच दिया

काजल कहा लगा, कहा सफेदी छोड गया, कौन देखता? पीछे तभी दस-बीस औरतों न घिसी घिसाई बोली म जनम से सुने कुछ सगुन के गीतो मे बुहारी सी पसीटनी शुरू कर दी

देवर ने दूसरी थाली मे पड़े रुपयो मे से पांच रुपए उसके हाथो में थमा दिए औरतो मे एक फटे कपडे-सा हसी का गोला फूटा— 'अरे बीदणी ! या रकम मत लीजो सौ का पत्ता मांग' पर बीदणी पाच रुपए लेकर सीधी ओबरे मे भाग गई और बीमार देवर के पास लाल साडी का छिलका दिखाने को जब मन राजी नही हुआ तब पहले वाली धोती बदलकर दूध गम कर थोडी तुलसी अदरक की चाय बनाकर ले आई टेसू गूलर सी लाल आखें खोलकर उसने जाने कैसी नजर से देखा कि उसके हाथ अपने आप उसके गोरे माथे पर बेतहाशा प्यार से घूमन लग कब तक वह या ही टकटकी बाधे बुखार से तनी नह मे डूबी आखो मे अपना अतर उडेलती रही

दूल्हा देवर आए और बाद मे नीली कमीज पर मखमल की वास्कट पहने, जूता चरमराते हुए ससुर भीतर आए बोले—'अरे नती! कसा जी है रे ले तू अच्छा असनपाटी लेके भाई की स्यादी मे पडा देख, बारात लेके जाना ही पड़ेगा, ब्याह की लगन तो वदली जाए नहीं, तू जी कर्रा करके रहियो बस तीन दिन की तो बात है न!' तभी हैं हैं करता उसका घरवाला पूरा नौटकी का छला बना भीतर आया आज तो धोती का ऐसा शौक चर्राया था जिसकी बेढगी लांग नीचे को झूलकर उसकी हुलिया और बिगाड रही थी घुटनो तक काले रग की जुर्राब सफेद धोती पर अजब धज दे रही थी जो आता बीमार के गम माथे पर ठडे हाथो का लेप कर देता वह घूघट की झिरी से सब देख रही थी

बाहर घोडी वाले ने हांक लगाई तो सबका ध्यान उधर गया और ससुर एक

बार और ध्यान रखने को कहकर मुड चले औरतो-बच्चो का रेला भी पीछे हो लिया

बडी मुश्किल से बारात का माहौल विदा हुआ पिटते ताशा की आवाज उसके दिल पर हथौडो सी पड रही थी औरतो ने उसे भी घेरना चाहा, लेकिन वह बहाने कर भीतर आ गई घर की मेहमान औरतें और सब रिश्तेदारिन खाने पीने पर टूट पडी बच्चो का रोना चिल्लाना अलग शुरू हो गया था छोटा हटरी-सा घर धुए और आवाजो से गूज रहा था

'भाभी ! सिर म दराती सी चल रही है छाती मे सास रुकती जाय है हडकल के मारे टागे तोडने को जी चाहता है' देवर मछली सा तडपा क्या चाह रहा है यह पराया जाया ! मा आती है तो आख बद कर लेता है

बाप भाई आए, एक आखर नही बोल के दिया दूसरी घर की औरतो से जैसे इसकी रूह कापती है और भाभी ! बचपन की जनमजली उदास, दुनिया से भागती सी इसमे क्यो अपने मन के मनके पिरो रहा है ! जिस दिन से ब्याह के आई, रात बिरात, भूख-प्यास म इसी बेपढे, किसान देवर से तसल्ली के दो बोल मिलते रहे घर भर की आदतो के कारनामो का यही थोडा-बहुत मूल-ब्याज चुकाता रहा आज भी बेचनी मे यह उसी का सहारा चाह रहा है तो कौन निराली बात कर रहा है ! है भी कौन इस हाय-हुल्लड मे सुनने वाला,

चाय वैसी ही पडी ठण्डी हो गई वह बाहर आई और सास का पल भर के लिए कोठे के दरवाजे पर खडी कर फिर ताजा चाय बना लाई लोटे मे पानी गम किया भीतर आकर सास को महमानदारी करन भेज दिया और कुछ गम पानी म अपनी धोती का पल्ला भिगो आखो पर, नाक की काटो पर और ओठो के दायरो पर फिराने लगी वह इतने पास बैठकर ही जान पाई थी कि उसका रग ही कुन्दन जैसा नही, नाक नक्श भी घर मे सबसे अलग थे शायद सास ने भारी पावो के समय किसी अच्छे कलेण्डर या सडक चलते प्रियदर्शी आदमी का देख लिया होगा, वरना घर म एक भी छापा तो ऐसा नही, जिसे दो घडी भर निहारा जा सके

जमाने भर की बुराईया से बचे गुलमोहर के पतले ओठ अचानक उठे और दो शबनम बूदें सिर के नीचे रखी दोहर पर लुढक गइ मन मे धसका सा हुआ अरे ये रोने वाली बात क्यो हुई ? कौन-सी ठोस इस सभा सोसाइटी से दूर रहने वाले, कहानी, उपन्यास क पात्रो के चरित्र से अनभिग, स्कूल-दारतो के दायरा की छाया तक से अपरिचित, ¦ दिल को चीरकर हाहाकार कर कराह उठी ? वह अवाक उस की ओर देखती रह गई और बन्द पलको से बूदें परती रही

उसके पीले गम हाथ अपने हाथो म ले वह क्या सहलाने लगी थी ! अपन बच्चे को जस वह थपक कर सुलाती थी, वसा ही स्पश इस समय भी गुदगुदा गया

अतर की दूर पडी सूनी ललक एकाएक सुगबुगा उठी उसने बिखरे बालो से भरे सिर को अपनी ओर कर गाद म भर सा लिया इतना प्यार पाने की उसने शायद कल्पना भी नही की होगी माफ सुथरे कपडो का नेह भरा आँचल, गम्भीर मौन छुअन उसे आश्वासन दे उठी होगी कि उसने और छाती फाड रोना शुरु कर दिया वह घबरा उठी यह गवई गाव का मेहमानो भरा घर घर भी इतना सकरा कि आते जाते हजार निगाह फिसलें कोई निकले तो कहे हाय । ऐसी कौन सजीवन बूटी घालकर पिला दी देवर कू सो यो सबकू भूल गोद मे ढहा पडा हैगा ऐसी चुप चोर बडी जादूगरनी दखी हगी कब कहा मन उडा दें, भला इनका कहा ठिकाना ?

रोते और छटपटाते ही वह दद पिंजर से उडकर न जाने कब उसी की गोद मे शून्य हो गया

उसने कभी मौत को पास से नही देखा था समझा कि दवा से ऐसा हुआ होगा, पर सास की ननद जान गई थी वह सबसे पहले पछाड खाकर गिरी सास ने भी समझा फिर तो वह भी आखें फाडे घडी भर पहले के ताजा, जिंदा इसान की बेकार काया देखती रह गई शरीर की एक एक शिरा जम गई सारा घर हाहाकार कर रहा था जवान मौत । ऐसे समय जब घरसे बारात गई है यो मरता है क्या बेटा देखते-देखते ? इतना ठाडा, इतना मलूक । राम राम । जुल्म ढह गया शिवसिह पर चारो ओर यही आवाज उठ रही थी बहनें पागल हुई डकर रही थी सास ने माथा फोड लिया डाक्टर अपराधी सा सदूक सभाले सिर नीचा किए खडा था ताऊ ने और जेठ के बेटे ने देवर को उतारकर नीचे ले लिया और चादर डाल दी अधेरे की काली चादर सी घर गाव पर छा गई

बडी कठिनाई से रात गुजरी आशा के आसू सूख गए आवाज पत्थर सी जड हो गई वह कुट्टी की मशीन के पीछे घुटनो मे सिर दिए सोच रही थी कि सबसे बडी अभागिन तो वह है नती गया कैसे चला गया ? जाते जात कसी मन की विथा कह गया क्यो कह गया ? जीवन भर याद आने के लिए उसने प्यार का सागर ही क्या न उडेल दिया इन दो दिनो मे उस पर यहा भी कजूसी कर गई मशीन पर सिर टिकाए विचारो की शिलाए धसकती रही और तब मौत भरे घर मे सूरज झाका

बारात उसी दिन लौटनी थी, लेकिन यह कसी भयानक बात हुई कि दरवाजे पर झमझमाती बहली आकर रुकी दुवार चौपाल पर बठे लोगो ने देखा सब जाना, पर बोला कोई नही बहू रूपा तो उतार ली गई और फटे दलान के पीछे से चुपचाप साल मे बठा दी गई पर बहू का बाप चकराया यह कसी बात कि न कोई बोला न चाला आखें मिलते ही नजरें चुराई जा रही हैं क्या बात हुई ? बिन्दो कह रहा था (ननद की जिठानी का लडका) कि बहू के बाप ने केहरीसिह से पूछा

था—'ठाकुर ! क्या बात है ? कुँवर साहब का जी तो चैन में है ?'
केहरीसिंह कुछ बोलें, तब तक छत फोड़कर हाहाकार घर में से उठा

कैसी भी जल्दी में नाई बुलाने गया था और कैसे भी सुन लिया हो कि गौने की तैयारी की जरूरत नहीं, पर मां-बाप का क्या जी मानता बेटी को यों ही विदा करने का ! सो मेहदी रचे हाथ, पांवों में महावर, तीनों जोड़ी बिछुए, अनवट अलग सिर गूंदी चर नए कलाओं का गुथा गुच्छा ? नई कामदार हरी लाल चूड़ियां और कानों में नए झुमके पहना दिए चौड़ा पाटदार काजल वह निकला कठोर हथेलियां न बिन्दी रगड़ दी जो भी बहू का नया वेष और सिंगार देखता वही बेहोश हो जाता उसकी फूटी तकदीर पर देखते-देखते चूड़ियां ढेर हो गई बिछुए धूल में लोट गए सफेद बिना किनारी की धोती, जवान, गांव के घी-दूध से पले गुदकारे तन पर फैला दी गई बड़ी मनहूस घड़ी थी, कभी न भूलने वाली

इधर लाश नहलाई जा रही थी उधर बारात गांव में घुसी सिमाने में ही किसी ने खबर दे दी, तो ताशे बन्द हो गए बजने नई बहू को जाने किसके घर उतार दिया और पूरी बारात पल भर में शव के साथ श्मशान की ओर चल दी कहां देखने को मिलता ऐसा भयानक, दिल फाड़ने वाला दृश्य कि बाराती जवान लाश को लिए जा रहे थे, जिन्हें कपड़े उतारने का तो क्या, अचरज जाहिर करने तक का मौका नहीं मिला था यह धक्का इतना आकस्मिक और असहनीय था कि पूरे घर की जुबान को जैसे लकवा मार गया

नई बहू का क्या नेग और क्या खुशियां ! दूसरे दिन बिना शोरगुल के ले आए और वैसे ही तीसरे दिन विदा कर दी रूपा को तेरहवीं के बाद उसका पिता ले गया सजाकर सुहागिन बनाकर लाया था और सिंदूर पोछकर ले जा रहा था एक हरी भरी औरत क्षण भर में ही सूखी निपट बंजर धरती हो उठी थी

बाढ़ आती है, गांव-नगर उजड़ जाते हैं और समय का हाशिया खींच फिर बस जाते हैं यही तो कायदा दस्तूर मौत का रहा है भूल का लेप आदमी के हाथों में अगर भगवान न सौंपता तो हर घर चिता बन जाता नेसी को गुजरे आठ महीने हो चुके थे उसने ससुर को पत्र लिखाया कि जिस पर इतना बड़ा पहाड़ टूटा है उसे उसी स्नेह, अपनेपन से घर ले आएं क्योंकि उम्र का काफिला उस लड़की को यों ही आते जाते गुजारना होगा ससुर की चिट्ठी आई—'तुम्हारी सास बीमार है यूं भी घर में रूपा को पहलीबार संग साथ का कोई चाहिए तुम कुछ दिनों को चली आओ' हालांकि पत्र घरवाले के पिता का ही था, उसी के यहां की समस्या थी, फिर भी वह भेजने को राजी नहीं हुआ गांव आने का यदि और कोई समय होता तो शायद वह भी नहीं जाती, लेकिन उस पत्र में जवान बेटे की मौत से टूटे एक पिता की भावना थी और एक बेगुनाह को सहारे की जरूरत थी, इसलिए

बड़ी कठिनाई से उसने जाने की मंजूरी ली और अकेली बच्चे को लेकर गांव चली गई

रूपा को ससुर पहुंचे ही ले आए थे सास को कोई खास बीमारी नहीं थी ससुर की विधवा बहन आई हुई थी, बड़ी दकियानूस और दूसरों में हर घड़ी छेद ढूंढने वाली

गांव जाकर रूपा को नंगे हाथ पैरों देख उसे बड़ा धक्का लगा उसने भी उस के सामने माथे की बिन्दी लगाना छोड़ दिया और एक धोती को कई कई दिन पहन रहती तबियत ही नहीं करती थी उसके सामने कुछ सिंगार-पटार करने को उसी के मन में कौन से कनेर फूट रहे थे लेकिन जो भी सुहाग के थोड़े बहुत चोंचले करने पड़ते, उन्हें भी उसने छोड़ दिया रूपा के हाथ-पांव कैसे नंगापन छोड़ें, यही चिंता थी उसे वह अवसर भी हाथ आ गया

आंगन में सिल्वर गिलट के छल्ले-अंगूठी और बटन-जंजीर बेचने वाला बिसाती आ बैठा एक दिन बस फिर क्या था ! ससुर की बहन, सास और ताऊ ससुर की लड़कियां, बहू सभी उसे घेर कर बैठ गई बिछुओं, चुटीलों और बटन लड़ियों के मोल भाव होने लगे बढ़िया बुआ सास ने घैरा के बजने बिछुए पसन्द किए तो सास ने चार छल्ले हाथ में तोले, ताऊ के बेटों की बहुएं गुलाबी रेशमी लच्छे के सफेद कच्चे मोती गुथे चुटीलों पर लार टपका रही थी

थोड़ी देर तो ओबरे में बैठे बैठे उसने यह सब बर्दाश्त किया जब चांय चांय तेज हो गई और इच्छाएं अधिक पंख फैलाने लगीं तब उससे नहीं रहा गया और रूपा के बस बिंदी ही नहीं लगी, बाकी बिछुए और चूड़ियां उसने पहनवा दी थीं कुछ तो मत्थट सजा अब ?

गाड़ी का झटका लगा और विचारों के गर्त से निकलकर अचानक फिर जैसे वह पीहर के आंगन में जा बैठी

इस घर में कैसे प्राण बसे थे मां के वही औने पौने में भाइयों के कहने में आकर लालाजी ने बेच दिया उसे खबर तक नहीं दी मां सारे दिन हारी-बीमारी में भी इस घर को धोती पोछती रहती थी जब वह कहती कि भाई तो अपनी औरतों के साथ चले गए नौकरी पर और ले-दकर तुम और लालाजी हो इस बीस मील लम्बी चौड़ी हवेली में फिर क्यों खटती हो ?

इस पर वह कहती—'ये घर ही तो मेरा पिरान है री इसकी ईंट ईंट में मेरा मोह है मुझे गन्दी अच्छी कहा लगे है ?' वही मां इन बातों के दो साल बाद जरा से पैर फिसल जाने पर खत्म हो गई कनपटी के पास से जो खून बहना शुरू हुआ तो तीन घण्टे में ले गया मां की यदि कुछ मीठी यादें थीं तो वहीं दो साल पहले की फिर भी जितना दुःख उसे उनकी मौत पर हुआ उतना मामा बहू मां और

नेत्ती की मौत पर भी नहीं हुआ पीहर खत्म हो गया तेरहवीं पर गई तो दोनों भाई और पिता उजड़े मदान म बठे थे अपने पिता को जीवन म पहली बार बच्चा की तरह फट-फूट कर रोत देखा

वह उस घर म घडी भर भी चैन स नही बठ पा रही थी वहा क कोने-कोने म माँ की तस्वीरें नाच रही थीं भाइयो की आखा म अलग रस्सी के स अलबेटे पड रहे थ उसी रात वह लौट आई फिर नही गई पीहर के सुख सपने हो गए

मा की ननिहाल से नानी के भाई श्रीरामजी का पत्र आया कि नानी के चला-चली क डेरे हैं दूसरा पत्र मिला कि नानी की बोलती बन्द है वह चाह रही थी कि लिख दे जब भी जरूरत पडे ता दिखाने भलाने मे रुपय की कजूसी न करें उन्ही श्रीराम मामा न दो हजार रुपय मगाए थ

रुपय तो मगा लिए लेकिन वहा स दू, यह तय नही हल कर पा रही थी इन्ही के इन्तजाम के लिए एक-दो दिन की छुट्टी की अर्जी लिख घरवाले के पास गई कि रास्त म घटन टूट गए यह सुनकर कि मा का प्राणो से बढकर, साधा से लिया मकान बिक गया मकान के नाम पर बचपन की हजारा यादें ताजी हो आइ रह रहकर उसके मन म टीस उठती इसी उधेड-बुन म उस नीद आ गई

सुबह बाल्टी क धमाक से उसकी आखें खुली सब ओर धूप फैली थी ओफ ! कितनी बेचैनी ! कैसी यादें, क्या-क्या भूले बिसरे पन्न वह रात भर बटोरती रही रात स सुबह तक शायद जिन्दगी के बचे-खुचे टुकडा को भी इसी तरह बीनती झाडती वह भी खत्म हा जाएगी मा की याद म ता उसका जी कलपता रहता है, लेकिन उसकी याद भला कौन करेगा ? □

फासले का दर्द

ठाकुर मलखानसिंह की आखें कही दूर टिकी थी मैदान मे धूप चिलचिला रही थी भादो की प्राणलेवा कटखनी धूप वह बहुत देर से चाह रहे थे कि समय रहते खेत की मेड ऊची कर बाड रोप दें, पर देह जैसे सत छोडे बैठी थी, हाड गोड टूट रहे थे, दिमाग मे तूफान उठ रहा था जिसके कारण कुछ कर नहीं पा रहे थे चार पाच कौवे सिर पर खडे कीकर की डाल पर चीखने लगे तो मन ही मन उन्होने साहस बटोरा और घुटनो पर हथेलिया टेक उठ खडे हुए मेड की ओर आधा डग भरा ही था कि मन फिर गडबडा गया लौटकर जामुन के नीचे पडी बास की खटिया पर डहराकर टूट पडे करवट खैंच हुक्के की गुनगुनी राख मे दबा तमाखू टटोला थोडा-सा दम था, गुडगुडाने लगे, पर मन मे कही हूक चोट मारे जा रहा था

हुक्के ने तसल्ली नही दी कोने मे सिकुडी सी गौरैया पिंजडे मे गुमसुम बैठी थी उसकी कटोरी का दाना-पानी भी उन्होने नही बदला था मिजई की भीतरी जेब से एक चिट्ठी निकालकर बडे ध्यान से पढना शुरू कर दिया हालाकि अब तक उसे तीन बार पढ चुके थे इस चिट्ठी ने ही तो उनकी टागो का सत और मन का चैन सूत लिया था एक एक लाइन को आखो से पी जाना चाहते थे कितने दिनो से परेशान थे इसके लिए मनफूला जैसे ही डाक का थैला ले बडे बम्बे की पुलिया से उतरता कि वह उसकी ओर लपक उठते मुह से कुछ न कहकर भी मन की बात कह देते थे पर मनफूला देखता कि उसकी चुप्पी उनकी आखो मे राख का हाथ पोत देती और वह थकी चाल से लौट पडते उसी जामुन के नीचे

कल वह बखरी से बाहर निकले ही नही क्या करें उठकर ? जब बेटवा इतना भी नही सोचता कि चिट्ठी डालनी कितनी जरूरी है तो यही फिर क्या जान दें कितना कह दिया था कि जा तो रहे हो बाहर पर याद करके दो आखर हर हफ्ते माड देना यह मत भूलना कि गाव मे हमे छोडे जा रहे हो, जो तुम्हारे लिए ही जीते हैं शहर की चकाचौंध मे गवई गाव का मटमैला मत भूल जाना

सुनकर बेटा जाते-जाते मुड़कर जो कह गया था वही तो कानों में आज भी गूंजता है—'बापू! तुम मन में चिंता मत रखो जब हाड़-गोड़ गलकर इतना ऊंचा लिखाया-पढ़ाया है, तो इतना गया गुजरा नहीं कि तुम्हें और गांव को भूल जाऊं आज तुम्हारे लिए कितने घमण्ड की बात है कि तुम्हारा बेटा अफसर बनकर जा रहा है कोई सोच भी नहीं सकता था बापू—यह सब तुम्हारी लगन रही आसपास में बीस-पच्चीस गांवों में किसने अपना बेटा इंजीनियर बनाया है यह तो सोचो! मैं इस गांव को चमका दूंगा बस, थोड़ा मुझे काम संभाल लेने दो चिट्ठी तुम्हें बराबर लिखता रहूंगा हां, शादी ब्याह का बखेड़ा अभी मत फैलाना मुझसे इस बारे में जरूर पूछ लेना दुःख-तकलीफ के दिन, यो समझ लो कि अब बीत गए अब आराम करो, भगवान सब भली करेगा

वह तब बेटे की चौड़ी कमर को देखते रह गए थे आंखें पानी में डूबी जा रही थी पहले भी तो पढ़ने के लिए आया करता था तब इतना कलेजा नहीं धड़कता था इस बार जा गया तो मन प्राण हिलक उठे उसकी चिट्ठियां बराबर मिलती रही वह सब खबरें सिलसिलेवार लिखता रहा, पर अब की बार जाने क्या बात हुई कि तीन पखवाड़े बीत जाने पर भी कोई खबर नहीं मिली द्विविधा बस इतनी थी कि कहीं हारी-बीमारी तो नहीं लग गई अब मिली तो यह चिट्ठी मिली क्या इसी के लिए वह बावले हुए जा रहे थे? बखत ऐसा बेहया क्या हो गया है आजकल कि हर खून के रिश्ते को छील छालकर फेंक देता है

कल कहां उठे थे वह मनफूला को देखने! अकिसन ने जब मेड़ों के पीछे हांक लगाई कि बड़े दद्दू की चिट्ठी आई है तो उनके बदन में बिजली सी कौंध गई दौड़कर चिट्ठी ली और एक एक आखर जोड़ जोड़कर पढ़ डाला तसल्ली न होने पर फिर चंदर बाहरा से पढ़वाई मन फिर भी कहां खुश हुआ! जो पढ़ा-सुना अच्छा नहीं लगा बुरा भी क्या था फिर भी मन में खटका सा लगा कि चिट्ठी बेमन से लिखी गई है आगे की बातें अब बुरी होंगी न हां, पर वहम सांप-सा केंचुली मारकर बैठ गया

चिट्ठी में लिखा था— बापू! मैं यहां बड़ा खुश हूं जाने कितने अहलकार मेरे नीचे काम करते हैं जी हुजूरी बड़ी तगड़ी है अब तक कई इमारतें बनवा चुका हूं आजकल दो पुल और एक लम्बी सड़क बनवा रहा हूं अम्मा बीमार हैं तो वैद्यजी को दिखा दो, भला यहां से कैसे दवाई भेजूं! भेजूं भी तो किसके हाथ भेजूं! मैं अभी नहीं आ सकता कहां फुरसत है! आप यो ही हर किसी को मेरे पास नौकरी के लिए मत भेजा करो गांव से ऐसे ऐसों को भेज देते हो, जिन्हें साथ रखने और बताने में भी शर्म आती है आप तो रहे निपट भोले, पर हमें तो यहां चार अच्छे-बड़ों में उठना बैठना पड़ता है छोटू नहीं पढ़ता और फेल होता है तो

क्या जरूरी है कि उसे भी पढ़ाओ ! खेती बाड़ी के धंधे मे डाल दो बाड़े का पिछ-वाडा बरसात म गिर गया है ता उठवा लो कच्चे मकान का बनना गिरना चलता ही रहता है ! जस अब तक लीपा-पोती होती रही है, वैसी करवा लो टीन बगरा का विचार छाडो कच्चे लौंदा पर कैसी टीन !

कीरतसिह जो की लडकी के लिए हा मत कर लेना मुझे अभी शादी नही करनी सच बात ता यह है कि इधर ही कही करगा गाव की लडकी बरसो मे शहर का रग समझगी पढी लिखी शहरी लडकी ही लना ठीक होगा भीखम काका की जमीन का टुकडा अगर हमारे नीमवाले खेत की मड म आता है, तो उन्ह द दो बैला की एक जाडी कम है, पर अभी चलन देना रुपये अभी नही भेज सकता खच कुछ ज्यादा हा जाता है सल्लो भाभी से कह दो कि वह मा क मुह न लगा करे, कुछ मा की आदत भी ठीक नही है मुझे घर गाँव के झगडे मत लिखा करो इससे माथा खराब हाता है गामती जिया स कह दो कि जीजाजी खेती म ही मन लगाए यहा न आए, क्योकि कारखान म उनके लिए कोई काम नही है इधर सब अपनी भाग-दौड म रहते हैं, दूसरा क लिए फुसत नही है किसी के भी पास जा जहा जसा है, उस वही रहन दो '

और भी बहुत कुछ था जो उन्हान पढा अनपढा कर दिया था दिल खटटा हो गया था वो चदन बोहरा कसी बोली मार बैठा था—'ताऊ ! कही भैया शहरी छैला तो नही बन गए हैग ! खत मे कुछ तुर्री भी हैगी सुभाव म मरोडी आ गई दीखे है ? सारा खत ढालू सा है दो चार साल और रहे तो सूधे मुह बात नाय करते दीखे हैग ! क्यो गलत कहू हू क्या मै ! वह बिना जवाब दिए या ही मुह म खटास भर उदास मन लिए उठ आए थे और खेत के झगोल मे आ डहके थ

पचू सहाय क बजर की ओर कुछ शोर सुनाई दिया होगे सारे नेवले ! दाढी जारा ने खेतो की जमीन पोली कर दी है फिर शोर पास आता सुनाई दिया कान लगाए ता धीमी तज गुर्राहटें सी लगी कही भेडियो का जमघट तो नही छूट पडा मसलेंगे अलग और धरती पर फसल अलग बिछा जाएगे पावो के ऐसे मोड दूटे हैं कि बाड लगान का काम या ही पडा है

शार सिर पर आ चढा वह कोहनी के बल तिरछे हाकर देखन लगे अरे ! इन्हे दिन-दोपहर ये क्या सूझी ! बुकना मोची, समरथ कोरी, गुमानी तिलकराम, तेजू नाई हरिया ननकू चमार, टीकम तली और लाटू चमार और इन सबके पीछे पूरा चमारवाडा उठा आ रहा है हे भगवान ! बर्छी गडासे बल्ली दपती और गतिया उठाए सरजू चमार के बारहा बेटे कहा जा रहे है ? क्या हुआ ? खर हो रामजी महाराज जमान की नबज ऐसी चल रही है कि जो न हो जाए सो कम है पर है क्या आफत ?

पैरो के मुडाओ मे दो झटके मार वह पुरबिया-ढेकी पर चलकर दम साधे खडे हो गए सबके आगे आगे भूपन का बेटा घनश्याम था उसी के दाए-बाए सीतला, कीरत, भजनलाल और मागी ये अच्छी बात के लिए जान देन वाले और बुरी बात के लिए जान लेने वाले हे देवी भवानी ! कही किसी न कुछ बुरा कर दिया क्या ?

सामने बुजुग काका को देख घनश्याम और उसक साथी मदे पडे ,और बगल काटकर जाने लगे उ होने आगे बढ़कर घनश्याम का कुर्ता पकड लिया वह मुडकर खडा हो गया और फिर कुर्ता छुडाकर चलने को हुआ तब तक भीड का जत्था पास आ गया भला कौन सी आफत आई है जो हथियार थामके चल पडे हो ! न सलाह, न मशविरा क्यो र घनश्याम ! आज ताऊ से पूछन नही आया, खुद मुकददम बन बठा अरे, तुम सब कहा खून बहाने चल पडे ! सत्यानाश हो अकल का पहले ही और आफत कम है क्या जो यो दौड पडे हो ? क्या रे तिलकराज ! रोटी ज्यादा लग गई है कहा रे ?'

तिलकराज की आखो मे खून खिच आया हवा मे हाथो को लहराकर गरजा —'हा, हा काकू ? रोटी लगि रही है अरे, हम गरीबन को है यहा पर कौन ! थले की घमड। गोबर की गोट जेई ना ? और तुमहू पूछ पडे हो ! सुनि लेओगे तो जाई ठौर ते पाव पीटन लगोगे काकू ! बौहत बुरा भयो है आगे निकर देखौ ?' कहते हुए उसन सबको आगे बढन के लिए ललकारा

आस पास के खेतो म काम रुक गए, बूमसिह चौधरी भी हुकई गुडगुडाते आ गए कभी गाव ने इ ह सरपच चुना था सारा गाव याय के लिए इनका मुह ताका करता था वही इज्जत का पटटा आज तक इनके नाम पर बधा था लोग आज भी इनकी बात की धार मानते थ कुए स उतरकर ननकूराम भी आ गए पहलवानी मे जि होने बडे-बडे अखाडे पछाडे थ सुल्तान गाव के भाजदत्त पहलवान को कची मारकर धूल चटा दी थी और चादी की चौकी पर चादी की गदा लेकर सौ गावो म नाम किया था हालत यह थी कि किसी की गदन पर अगुली की चिटली पोर भी छुआ दत, तो कम से कम पद्रह दिन क लिए गदन मोड लेना भूल जाता चलते तो माटी तीन बार फूटती थी आते ही लपके— अबे बाह्र साल ! जिनावरो का चमडा उधेडते उधेडते अक्कल का चमडा भी उधेडन लगा क्या ? कौन बात भई पहले हम समझाव ? ओ बकुना कहा जा रहा हैगा उस्तरा चम काए ! बठिके पहले बात बुझाबा कही हैगो न के जल्दी का काम, राम बदनाम '

गुमानी और बुकना मोची एकदम साथ-साथ चिल्लाए—'पहलवान ! तुमकू पता नही कहा भया हैगा आज ! अरे बहनी-बेटी सबकी एक जसी टेढी नजर बनी रह तो मरदन की जिनगी नरक म आखिन की ढेबढ़ी न खीच लई, तो नाम नाय

कपड़ा की आग बाहर, तो अन्न पानी भीतर कहा गमछे हाथ डारो, काऊ हैगा न्याव करव वारो ! चौधरी ! देखनी हमी आज बिरादरी बिरादरी, म्हों मझेरई कोई गूजर अहीरनी भीतर पर टूट पड़ और हम चुप्पी पहर देखने रहें वासो पहन वारा, क्या कहने हो या जुलम पर ?'

पहलवान, चौधरी और मलखानसिंह के कान खड़े हो गए आज कोई वजन दार हुई है महीना पहले बड़ी मुश्किल म सम्पत्ते पण्डा की बहू का रिश्ता निबटा न चुके हैं कौन बबाल फिर उठ गया है या सारे-सासुर गांव मू आंधी टपनी नहीं दीख पहले खाता-पीता अता भी मोटा-ताजा था, पर्व था तब एक सूत्र म पिरोय रहे थ अब आज कौन करम ताबीर चुटिया म गांठ बांधे आ रहा है कि ना इज्जत रही, ना आबरू जवान सामी असल कोड़न हो गई है अभी वासो, अभी सुधर जाओ न मन वेती मख्त पर कामी नजर छाई रहव है कहीं इन मागा की बहू बेटी तो नहीं छेड़ दो ! फिर तो परलय ही होगी इस गांव का सत्यानाश हान म कसर नहीं हैगी जमाना भर क साथर कम्माल बढ़ गए हैं गुंडई तो पहले भी थी, पर इतनी आग कहां थी ? कहां भया कभी कोई चलती-फिरती डगर पर नीयत फोड़ सी आज तो परमहरोत की हाड़ी बेशिलक खाटन म डर नहीं हैगा म्हारे मा बाबाजी कहा कर था, जहां बईमानी सिर उठाव है और चौपट पर नजर कामी पड जाव है, वहां पर-गाव पलट के जंगल उग आव हैगा ; बस वाही सगुन दिखाई दन लग हैंगे अब यहां की रच्छा बिसनू सिव देवता भी नहीं कर सकें हैंगे आपस म मर-खपक ही मिटेगी य कलजुगी दुनिया '

मलखान सिंह बेटे के घर की खटास भूल गए बोले—'अरे भया ! कौन की इज्जत पर डाका पड़ा है ! कौन दो मूंडी का राकस भया है, जो यो मुह अंधेरे बहन बेटी की पहचान भूल गया ? साफ-साफ कहो ना ! मुह फाड़व सू तो काम चलगो नांय तसल्ली सू सारो बीती बिथा उगलो

सुनकर तेजू नाई छाती पर मुक्का मारकर बोला—'दाऊ ! लेओ सुनो सरजू की बहनी आई है ना समदरी ! अर वाही बीच वारी बहन मीठो पानी यहां कुआ सू भरिव आई ! डोर फंसा के जैसे ही चकरी पर डारी, बस तबई बीरबल गुसाई का काली बिमनी वारी झाव क पीछे सू आए और लरकिनी की बांह पकर खेत मे घसीटत भय ल गए जब छोरी नै चिल्ल-पौंह मचाई, तो मरदूद न बाके मांह मे कहां ठूस दई भगवान जान कसी जोर जमाई करी ही, स्यारी सौगन लरकिनी के लत्ता चीर चीर है रहे हैंगे कितनो जुलम भयो, कितन बच हम ! या तो भगवान जान या गरीबनी ! पर जस ही खेत म धरपटनो ज्यादा मचो, तो वहां सू मल्लू घोसी जब भैसियान कू पोखर म नहाव कू निकलो, तब वो झपट के उतकू पहुंचो कोई बतान लगो कि कसे कुकरम कू उतारू हो रहा था वह जलील गुसाईं मल्लू

चौधरी ने ही ममरदी अगा ठाडी करी और पर लके जब पीछे मुडो तब ताई तो वो कमीनो खेत सू दोई कर गयो जाओ, देख्रि लओ तुमऊ अपनी मूढिन आखिन तें वा बिचारी को हाल तब दोओ न्याव '

उसके चुप होते ही सरजू चमार के चारो बेटे गैंतिया उठाकर गला फाड चिल्लाए—'दाऊ, और तुमऊ सुन लेओ चौधरी काका आज कैंतो चमरटोली जिंदा रहेगी कै बामन टोली गुसाइ को पेट चीरकर भुस नही भरो तो बाप सू नही काम करें हैं तो दो-टूक खान कू मिलै है कही जाकर इज्जत बेचके अमरित नही पीनो है ' चारो तेजी से बामन टोली की ओर झपटे भीड का रेला जो अभी तक वही दोनो परा पर करवटें बदल रहा था, बाढ के पानी की तरह उधर को अर्रा पडा चौधरी, पहलवान और मलखानसिंह मुह बाय दखत रह गए घडी बाद होश आया तो चौधरी बोले—'मलखान ! बात सच ही बुरी भई है या ससुर गुसाइ को कुलच्छन आज खून बहवाएगा वहा चरो ? अकल काम नही कर रही हैगी ये कमेरे लोग जब तक चुप्पी खीचे रहे हैं, तभी तक भलमानस लग हैं, नही तो इन्हे लाज-सरम किसकी ? पहलवान ! ऐसा करो तुम जसपाल और शिवदत्त को सग लेके वहा पहुचो मैं बिजैसीग और बल्लासाय कू लेके तिहारे पीछेई आऊ हू '

इन लोगो ने वहा जाकर देखा कि लोगो के ठट्ठ के ठट्ठ बीरबल गुसाईं के दरवाजे पर जमा हैं गापी सिंह सरपच चबूतर पर खडे सुरती रगडते दिखाई दिए इन्हे देखा तो वही चबूतरे पर बुला लिया गाँव के पाचो पच देवीलाल बनिया और जीगूराम ठेकेदार भी मचिया पर बैठे थे सब चुप थे, बस बीच-बीच मे हुक्के की अदला-बदली चल रही थी जो न्याय मागन आए थे उनकी आवाजें भीड म स आग की लपटो की तरह लपलपा रही थी व ऊपर चबूतरे की सीढिया पर चढन के लिए धक्कम धक्का कर रह थ छज्जे और सपील पर बलवीर गुसाइ के आदमी लाठिया लेकर बौखलाई भीड को पीछे धकेलन म लगे थे सरजू चमार के लडके जहरीला झाग उगल रहे थे—'अरे मामा ! साले बाहर आयके देख सो तेरी मौत खडी है रे ! अब आयके दिखाव मरदानगी ! मुह काला करिके चढाय देओ ससुर को गधे पर अर ! भीतर जाके खैच लेओ तुमऊ बीयरबानीन कू हमऊ कुकरम करिवा जान है अरे जा नीच की टाग फारके छप्पर प सुखाय दओ, फिर इसमें बार नौंचि के मिरच थाप देओ '

न जान क्या-क्या कहा जा रहा था, तभी बलबीर गुसाइ के घर स नपाल और विद्याधर निकले व दोनो गुसाईं की नाक के बाल थे हर काम म उससे चार हाथ आगे बीसिया बार दो चार दिन की हवालात देख चुके थे जान कितनी बार मोटी रकमे देकर अपन अपराधो को दबवा चुके थ साल भर पहल इन्होने नरायनपुर की गूजरी ठेट वस की चौकी पर घेर ली बेचारी भोली भाली अकेली औरत था

गई इनके चक्कर मे सोनिया को गुमटी मे ले जाके पहले तो उसका तमाम कौल छल्ला, जेवर खसोटा, फिर मनमानी नाक डुबोई वहा भी मगतराम फंजू ने दौड कर चुपचाप कबूलपुरिया सिपाही को खबर दी ससुर के करम खोट थे जो अहीरो के नहरो पानी के झझट को देखने दा सिपाही मसूरअली थानेदार के साथ मौके पर मौजूद थे फौरन चालान हो गया पूरी भुस की बोगी बेचनी पडी, तब जाकर नक्कू छुटिके काला मुह लेके गाव म घुस सबके सब खोटे सिक्के रहे

और ता और, या करमफूट विद्याधर कू देखो कसेसर वहे से हाथ फटकार रहा हैगा! अरे वा दिन भूल गया जब अरहर की झरकटियो के नीचे मार मुलक के सराब मे पडे दबे मय निकल हरामी सारे गाव को खिचवाने के फौसव कर बैठा था! थान पर जावे अच्छे भलेमानुसुन के नाम पसीटवा आया चार दिना तक गली गलियारा म सहरी अहलकारो के जूता की धूल उडवा दी खुद नीच वच गया और गरीबन कू बवाल मरवा दिया वचा क्या यो ही! पर य सब ससुर जबान खुलवाए बिना मानें हैं क्या? कहना ही पड़े है, कौन इनके खोट नही जान!

तभी पहलवान न पास आकर विचारो की रस्सी काटी—'चौधरी! कहो तो या भैडा विद्याधर की टेंटिया मसक दें देख तो सही कैसो सारो कूबड फुला-फुला के बुकना और ममरय की तग झोरि रहियो हैगा यो सारी की सारी पहलवानी क्या दीमक सू चटवानी हैगी! तुमकू कसम हैगी जा पामन मे लगी न चलकर डारी होयगी सा देखी जायगी सीनाजोरी तो देखो याकी बस इसके बदन मे नक्कू माम को नाम नाय बेकार बास सी हड्डियन कू खडकाय रह्यो हैगा बवटैटा की एक तो फूटि रही हैगी, दूसरी कू और अबई बठाके आऊ हू, चौं कहा सोचि रहे हो?

चौधरी ने पहलवान का हाथ पकड लिया ओठ के नीच दबी सुरती को दूसरे हाथ से टटोलकर अनखनाए स बोले—'अबई कहा भीर पडी है! दखे जा को देख, पचन म कछु फुसरफुसर मची है र य कहा कहें हैं? इनकू भी ता सुन या नीच विद्याधर कू याके बुरे काम आपई मारिंग, तू चौं अगुआ बने है! अरे हम अबई माहो के कुलच्छन के बारे म तो सोचि रहे हैं तू यहा कहा हो, जब कपास कू कीरा लग गयो हो, अर तबइ, जब तू खिरकपुर वारी बूआन के गयो हा'

पहलवान न उबल आलू-सी आखें बड़े राजदार ढग स दबा क पूछा—'हा, सुनी तो हमनऊ ही कछु फुसफुसाहट कहा चक्कर हो या? इधर-उधर चौधरी के पुटन पिराय गए थे। बाय का सारा शरीर, सा वही थाम क कटे शहतीरा पर पहलवान को लेकर बठ गए विद्याधर से ही नहा, उसके बाबा और बाप से भी उनकी पुरानी लाग थी मन म कई तरह की जलन अटी पडी थी कभी मौका ही नही मिला कि पहलवान जैसा सुनने वाला मित्र और मन को मनी भाई कुछ छट

बडे इत्मीनान से घुटने पर हथेलिया दबा विद्याधर के चरित्र के कच्चे पौधे फाड-फाड के देने लगे—'अरे चक्कर का थोडा हुआ था ? या सारे के सारे लरकिनीन की पाठसाला और टूट गई जो बडी तवालत उठाय के खुलवाई ही पच की खुसामद करी, वो मोटो फसफस एम एल हो, वाकू वीस पोत गाम को जमाई बनायो सहर सू नक्सानबीस कू बुलाकर खाको खिचवायो घर-घर सू चदा करो तब जाके पाठसाला को रूप बनो जाकू या खबगीस ने अपने कुकरम सू माटी मे मिला दियो " कहते कहते उनकी सास फूल गई। फिर से दबा क्रोध आखो मे घिर आया तमाकू की लार ने गले मे फांस डाल दी, सो खासी का ठसका जो उठा, वो बद नही हुआ

पहलवान की बेसबरी बढी जा रही थी वह अपनी चौडी खुरदरी हथेली का पजा उनकी कमर पर फिराने लगा तभी पिछाड़ हवेली का मामनराम दोनो मे पास आ बठा इसे भी विद्याधर फूटी आख नही भाता था चौधरी ने जतन से गले का ठसका घडी को रोक कर कहा -'रे मामन ! जरा पहलवान कू वा कलावती वारो किस्सा तौ सुना दे ' और फिर मुह फेरकर खासी के दौर मे डूब गए

मामनसिंह अपने को थोडा पढा लिखा मानता था बीस तक पहाडे, जोड घटाने के सवाल और खीचतान कर गुणा भाग कर लेता था गाव मे गणेशजी के मदिर के ठीक सामने बुद्धा के ओसारे मे दूकान जमा रखी थी नमक से लेकर औरतो की काजल बिंदी तक वहा मिलती थी न किसी का लेना, न देना बूढी मा और अधे ताऊ के अलावा कोई चक्कर पक्कर नही ब्याह कराने को खूब फिरा, पर रुपयो की गड्डी भी धूल फाकती रह गई कोई बेटी का बाप नारियल देने नही आया बूढी मा रात दिन आते-जाते को पकड कर सोरठे गाती रहती 'अरे ! पूछो कोई फूटी अक्कल सू के कहा कमी है मेरे मामन मे ! चार हाथ को बछेडा सौ सरीर आख नाक सू दुरुस्त नसा पत्ता सू कोसन दूर चार पैसा कमावें है नाज गुड घी छाछ सू ओटा भरौ परौ है और कहा मिलेगी इत्तो रामन की लका तो किसन कहू देखी ना हैगी हा, जे जरूर है के छोरा तनक उलाकू और हमोडी आदत को है या तो सुभाव की बात है अरे ! मैं का जानू ना हू या गाम मे कोढ फूटेगो सब सुनू हू जो कहब हैंगे के मामन ने तो तुलसिया मेवनी बठा रखी हैगी अरे ! वा तुलसिया बिन मा की बाप कू सौ रोग कबई-कभार रासन-पत्ता पहुचा देव हैं मामन, सो हसी दिल्लगी चल जावे है मामन सों कहा आग लग गई या मे ! औरन की जान चो जलै हैगो तुम्हारी परोसी यारीन कू तो सूधव जाय नाहे जन कितनी बहू धी वाके पीछे बावरी भई फिरै हैगी मजाल है जो आंखिन को एकऊ मरोर कहू फेंक्त होय तुलसिया वाकी चूरी पहरवे माग भरे है तो पसो याही सही हमारो जूतीन की नोंक पै घर बठे रहो अपनी नाक देखि रखी है एक

एक ही जड़ सू कटी भई हैगी । चुनिया की यह कथा सवेरे से शाम तक यों ही चलती रहती । बुरा कोई नहीं मानता था । सब सुनते और हँसकर चल देते । किसी से जान जलती तो उसका नाम डोकरी के आगे लेकर मामन और तुलसिया का जिक्र कर देते, बस वह उस आदमी को रात तक गालियां देती रहती ।

मामन बड़ी चटकीली जुबान में कहने लगा— पहलवानजी ! इस गांव की नस का जो किस्सा भया था, बस वैसा ही बिचारी कलावती मास्टरनी के संग हुआ । नई पाठशाला, नया सामान । घर घर से वो मास्टरनी छोरियां बटोरती और सारे दिन पढ़ाती, अच्छी अच्छी बातें बताती । सभी घरों में जावे औरतन को सफाई बताती । इतनी अच्छी कि खुद ही छोटे बालकों को नहलाती, कपड़े भी वे बताती । अजी कोमला भाभी ने तो सिलाई मशीन मंगा ली और कपड़े सीने उससे सीखे । बस सभी एमेले साहब के, उनके दोस्तन के और ठेकेदार के दौरे गांव में बढ़ गए । ये साले विद्याधर, गुसाईं, बलबीर, छाजू और मुन्नो वो जो यहां ससुरे पंच बने बैठे हैं, इनमें से ये तीन — अरे ये ही सूअर बचन, भोगा और त्रिलोचना—ये भी हां मिलकर उनकी खातिर में जमीन आसमान उठा देते । ठहरा का नई पाठशाला की ऊपर वाली कोठी रहती आ रही है । शराब ठर्रे की बोतलें, गांव के चमार जाने कहां से माल भुनवा लाते । नूरा की मुर्गियां नूरा चुरा कर हजम करा दी । जब ये लोग गांव से मुंह फेरते तो मां [illegible] पाठशाला के बाहर [illegible] मिलता । कई सारी बहू बेटी गोद पर चढ़ा दी, इन राक्षसों ने । सभी ती [illegible] गांव का जमींदार बना मूंछ ऐंठ रहा है । विद्याधर के भी गुन गाए हैं । छाजू और वा त्रिलोचना के [illegible] [illegible] फिर हैं । सूरत कहां छिपाएगा [illegible] सब नहीं जाने [illegible] किस किस [illegible] की पोल है !

वो बसंत पंचमी का दिन था जब सारी [illegible] जमा हुई [illegible] शहर का कोई ओवरसियर आया हुआ था, उसकी नजर [illegible] पड़ी [illegible] के संग उसका भी [illegible] की खातिर [illegible] गांव में आ पड़ी [illegible] ये ही ससुर विद्याधर [illegible] [illegible] को बुलाए [illegible] कभी [illegible] [illegible], आसपास के [illegible] [illegible] उसकी [illegible] कि [illegible] यहां इस [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible]

तो उसकू ठीक होने मे लगे ठीक होते ही वो सीधी पहुची गुलाबसिह कोतवाल के पास बडी छाती वाली थी , तभी तो इन सबो के मुचलके करा दिए गुलाबसिह ने उसे अपने जनाने मे बैठाया और सुगनराम डी एस पी को लेके सारी जाच कराई तब बात सबके आगे आई ये सारे खरी नाम वाले पाच महीने तक पछोय मे भागे फिरे राम ही जाने कि इन्होने कौन सी जुगत बैठाई, जो सभी अपने ठौर-ठिकाने पर उसी ठसके के साथ आ जमे और सारी धूल पर कलई पुत गई ये गए गुजरे माले आज न्याय करने बठे हैं गुसाईं की जीभ आज फिर लपलपाई कि औरत का कच्चा मास सूघ बैठी ये हैं सब खून पीने वाले, इनकी बहन-बेटी छेडना उस मास्टरनी जैसा हल्का फुलका काम थोडे ही है देखना इनकी कसी मिट्टी कूटेंगे चौधरी काकू ठीक कह रहा हू ना ।'

चौधरी खासी पर काबू पा चुके थे और कुछ कहने जा रहे थे कि एकदम हल्ला मचा । जल्दी भागो, गुसाइ की बोगी मे और घेर के तिजारे मे आग लग है भगदड मच गई जो भीड चबूतरे के नीचे बिलना रही थी वह ऊपर चढ गई और आग बुझाने को चबूतरे वाले लठैत भीड मे आ घुसे चार छ लट्ठ बरसे तभी फरसे, गडासे भी चल पडे मामला ज्यादा दहशत भरा देख तमाशबीन भाग खडे हुए पच करमचद की मेढी मे जा घुसे गुसाईं के घर की औरतें गाती पल्ला भूलकर दहाड मारती छतो पर चढ गइ और भीड पर चिकनी मट्टी के ढेले फेंकने लगी बलबीर का पैर जाने कैसे फिसला कि भूरा बैल से टकरा गया और हड्डी टूट गई दो कमेरे उसे उठाकर कुट्टी की मशीन वाले कोठे मे डाल आए, वरना गुमानी की गती पेट चीरकर रख देती

चमार मरने मारने पर उतारू थे गुसाइ के किवाड तोडकर भीतर घुस गए और उसे गूल्हगामो के भीतर स खीचकर बाहर दगडे मे खीच लाए बल्लम भाले उसे घेर कर छा गए गुसाइ की बहू और बेटे की बहू लाज-सरम छोड के चमारो की टागो से लिपट गइ उसकी बडी बेटी सरजू के बडे बेटे नानक की परब ाहों लटक गई कौन सुनता था वहा । सब खून के प्यासे हो रहे थे औरतें पैरों में रौंद गइ गुसाइ अधमरा हुआ डकरा रहा था गरीबो का मन, जो हर तरह इन बडों ने कुचल रखा था, बदला लेने को तडप रहा था पहलवान और चौधरी तैयार नही थे कि वे लोग इ हें जान से मार दें और गाव मे इतनी बडी फौजदारी का केस बने उनकी इच्छा थी कि लानत मलानत देकर माफी मगवा दी जाए गाव की बहू-बेटी का किस्सा हवा मे न उडकर भीतर ही दबा दिया जाए पर यहा तो बात उल्टी हुई जा रही थी वह मलखान सिंह को ले बडी मुश्किल से गुसाइ की जान बचाने पर लगे थे समझाने की गरज से कुछ बोल रहे थे, पर भीड की घनघना हट मे कोई सुन नही रहा था उनकी आवाज

एक की जड सू कटी भई हैगी 'बुढ़िया की यह कथा सवेरे से शाम तक यो ही चलती रहती बुरा कोई नही मानता था सब सुनते और हसकर चल देते किसी से जान जलती तो उसका नाम डोकरी के आगे लेकर मामन और तुलसिया का जिक्र कर देते, बस वह उस आदमी को रात तक गालिया देती रहती

मामन बडी चटकीली जुबान से कहन लगा— पहलवानजी ! इसलाम की नर्स का जो किस्सा भया था बस वैसा ही बिचारी कलावती मास्टरनी के सग हुआ नई पाठसाला, नया सामान घर घर से वो मास्टरनी छोरिया बटोरती और सारे दिन पढाती, अच्छी अच्छी बातें बताती सभी घरो मे जाके औरतन को सफाई बताती इतनी अच्छी कि खुद ही छोटे बालकों को नहलाती, कपडे सी के बताती अजी कोमला भाभी ने तो सिलाई मसीन मगा ली और कपडे सीने उससे सीखे बस तभी एमैले साहब के, उनके दोस्तन के और ठेकेदार के दौरे गाव मे बढ गए ये साले विद्याधर, गुसाई, बलबीर, छाज और मुनो वा जो यहा ससुरे पच बन बैठे हैं, इनम से ये तीन अरे ये ही सूअर कचन, भीमा और त्रिलोचना—ये भी हा मिलकर उनकी खातर म जमीन आसमान उठा देते टहरन को नई पाठसाला की ऊपर वाली कोठी रहती आ रही हैं शराब ठर्रे की बोतलें साले चमार जाने कहा से मास भुनवा लाते नूरा की मुर्गिया चुरा चुरा कर हजम करा दी जब ये लोग गाव से मुह फेरते तो मा सौगन पाठसाला के बाहर कसाइपाडा मचा मिलता कई सारी बहू बेटी गोठ पर चढा दी, इन राक्छसो ने तभी तो देख लो ये सासी गुसाइ आज गाव का जमीदार बना मूछ एठ रहा है विद्याधर के सो खून माफ हैं छाजू और या त्रिलोचना कू लेओ साला के गोल गप्पे चार फिर हैं सूरत कहां छिपाएगा भगी सब नही जानें ये किस किस गदे नालो की पौद हैं !

वो बसत पचमी का दिन था जब सारी कुत्ता पाल्टी जमा हुई जान कसे उस दिना सहर का कोइ ओवरसियर आया हुआ था उसकी नजर मास्टरनी पर जा पडी बस मास बोतल के सग उसका भी हुक्कम हुआ वो बेचारी गरीबनी चार टको की खातिर गवई गाव मे आ पडी थी इन कमीना को समझै अपना भाई बाप ये ही ससुर विद्याधर आके बोला कि साहब तुम्हारे काम से बडे राजी हुए हैं मिलन को बुलात है वा चली गइ बस जो जुलुम उस पर हुए उससे य ही गाव नही, आसपास के पचासो गाव हाय हाय कर उठे जाने कब मुह अधेरे को तो भाग गए जीपा म और इन कमीला न मास्टरनी को खून मे लिपटी बेहोश लाय उसकी छान म लाके पटक दी इन्ही दाढियो ने धूप निकलत ही पचो म रपट दे दी कि जाने कहा इस सरीफजादी मास्टरनी ने नाक कटाई है गाव के छैलो को बुलाके देखो कहा कालोंच लपेटी है कि सुसरी कू बेहोशी करके गुडे अपनी मनचीता कर गए हैं ऐसी मट्टी पलीद करी उस बेचारी की जब उसे होश आया तो चार दिन

तो उसका ठीक होने मे लगे ठीक होते ही वो सीधी पहुची गुलाबसिंह कोतवाल के पास बडी छाती वाली थी , तभी तो इन सबो के मुचलके करा दिए गुलाबसिंह ने उसे अपने जनाने मे बठाया और सुगनराम डी एस पी की लेके सारी जाच कराई तब बात सबके आगे आई ये सारे खरी नाम वाले पाच महीने तक पछोय में भागे फिरे राम ही जाने कि इन्होंने कौन सी जुगत बैठाई, जो सभी अपने ठौर-ठिकाने पर उसी ठसके के साथ आ जमे और सारी घूल पर कलई पुत गई ये गए गुजरे साले आज न्याय करने बठे हैं गुसाइ की जीभ आज फिर लपलपाई कि औरत का कच्चा मांस सूघ बैठी ये हैं सब खून पीने वाले, इनकी बहन-बेटी छेडना उस मास्टरनी जैसा हल्का फुलका काम थोडे ही है देखना इनकी कैसी मिट्टी कूटेंगे चौधरी काकू ठीक कह रहा हू ना !'

चौधरी खासी पर काबू पा चुके थे और कुछ कहने जा रहे थे कि एकदम हल्ला मचा ! जल्दी भागो, गुसाइ की बौंगी मे और घेर के तिजारे मे आग लग है भगदड मच गई जो भीड चबूतरे के नीचे चिल्ला रही थी वह ऊपर चढ गई और आग बुझाने को चबूतरे वाले लठैत भीड मे आ घुसे चार छ लट्ठ बरसे तभी फरसे, गडासे भी चल पडे मामला ज्यादा दहशत भरा देख तमाशबीन भाग खडे हुए पच करमचद की मेढी मे जा घुसे गुसाईं के घर की औरतें गाली पल्ला भूलकर दहाड मारती छता पर चढ गइ और भीड पर चिकनी मट्टी के ढेले फेंकने लगी बलबीर का पैर जाने कैसे फिसला कि भूरा बैल से टकरा गया और हड्डी टूट गई दो कमेरे उसे उठाकर कुट्टी की मशीन वाले कोठे मे डाल आए, वरना गुमानी की गती पेट चीरकर रख देती

चमार मरने मारने पर उतारू थे गुसाइ के किवाड तोडकर भीतर घुस गए और उसे गूदडगामो के भीतर से खीचकर बाहर दगडे मे खीच लाए बल्लम भाले उसे घेर कर छा गए गुसाईं की बहू और बेटे की बहू लाज-सरम छोड के चमारो की टांगों से लिपट गइ उसकी बडी बेटी, सरजू के बडे बेटे नानक की परब रहो लटक गई कौन सुनता था वहा ! सब खून के प्यासे हो रहे थे औरतें पैरो मे रुद गइ गुसाईं अधमरा हुआ डकरा रहा था गरीबो का मन, जो हर तरह इन बडो ने कुचल रखा था, बदला लेने को तडप रहा था पहलवान और चौधरी तैयार नही थे कि वे लाग इन्हे जान से मार दें और गाव मे इतनी बडी फौजदारी का केस बने उनकी इच्छा थी कि लानत मलानत देकर माफी मगवा दी जाए गाव की बहू-बेटी का किस्सा हवा मे न उडकर भीतर ही दबा दिया जाए पर यहा तो बात उल्टी हुई जा रही थी वह मलखान सिंह को ले बडी मुश्किल से गुसाइ की जान बचाने पर लगे थे समझाने की गरज से कुछ बोल रहे थे, पर भीड की घनघनाहट मे कोई सुन नही रहा था उनकी आवाज

जैसे ही तेली और चमारो के गम मूरा के कुछ लडके गुसाइ की बेटी को बाल पकडकर खीचने लगे और तेजू नाई उसके कपडे फाडने लगा, तभी गाव का नया आया डाक्टर और उसके तीन साथी चबूतरे पर आकर खडे हो गए डाक्टर ने तेजू को ललकारा उसके साथी गुसाइ के पास जाने म सफल हो गए, और हाथ उठा कर उन्ह शात करने की कोशिश करने लगे बडी कठिनाई से चौधरी पहलवान और मलखान सिंह न इन तीनो के साथ जाकर भीड को पीछे सरकाया डाक्टर चबूतरे पर कमर पर हाथ बाधे खडा था उसकी आखें गुस्से और लाचारी से धधक रही थी आज तक की अच्छी सीख देना और गाव की हर चौपाल पर जा कर गाव की भलाई की बातें बताना सब खत्म हो गया क्या ऐसे लिया जाता है बदला ?

गुसाईं को लपेट मे लेने के चक्कर मे कई लोगो को घातक चोटें आ गई थी जमीन पर गुसाइ एकदम दम खोए सास ले रहा था उसे बहुत चोट आई थी तेजू नाई के हाथो से छूटकर उसकी बेटी पागलो की तरह गालिया बक रही थी वह बाल नोच रही थी डाक्टर ने सब औरतो को घर के भीतर भिजवाकर बाहर से किवाड बन्द करा दिए गुसाइ को खाट पर डलवाकर छप्पर के नीचे बाई ओर वाले दालान मे सुलाया कम्पाउण्डर और दो दूसरे आदमियो को उस होश मे लाने को छोड दिया भीड अब भी अजगर की तरह फुकार मार रही थी, लेकिन थे सब चुप गुसाइ के रिश्तेदार आग बुझाने मे जुटे थे तभी सरजू चमार की औरत फूलदेई और फूला समदरी को घसीटती वहा आ गइ और रोती कलपती लडकी को डाक्टर बाबू के सामने ला पटका भीड पर काबू पाकर मलखान सिंह चौधरी और पहलवान भी वहा आ गए

चौधरी ने बडे प्यार से समदरी को उठाया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसकी मा से बोले—'अरे फूला भाभी तुमह अचम्भा करा हो, भला जा फल-पात-सी छोरी कू यहा लायबे की कौन सी तुक रही ! हम सब पहले ही या बार दास सू दुखी हैं फिर याकू खैचबे की कहा जरूरत ही ! बोलो ! तुम रही निरी की निरी डाक्टर बाबू तुम्हारे भले के लिए पहले ही ठाडे हगे इनके आने सू मामलो तन सुलझो है, नहीं तो सोचो एकाध के पिरान निकर जात तो हजारन की मौत आती मलखान सिंह ने भी फूलादेई को जाने की सलाह दी 'हा भौजी तुम बेगि खिसका लरकिनी कू लके गाव के नए खून मे फिर उबाल घमिड आयो तो सिर फूटिबे मे देर नाहि लगेगी यहा तुम्हारे बेटवा हैं ही हम सब हैं, डाक्टर जी हैं सब निसाखातर हैके जाओ और चुप करिके बखरिया मे बठो'

फूलदेई ने लडकी का हाथ थामा और घूघट खीच लिया उसने सदा मलखान सिंह की गाव भर मे सबस ज्यादा इज्जत की है पहलवान एकदम चुप रहे वारोब

से देखने पर पता चल जाता कि फूलादेई के रोने कलपने और समदरी के उदास चेहरे न उनके मुह पर सबसे अधिक दद उभारा था इसका कारण था

समदरी के बाप सरजू मे और उनमे बचपन से जवानी तक दात-काटी दोस्ती थी जाने कितनी लानत मलानत घर-मुहल्ले मे उन्हे सहनी पडती कि नासपीटे को जी गाठने को कोई मिला भी तो य कलमुहा चमार ही मिला काले रग का पिसाचर धरम-जात सारी भुला दी लेकिन पहलवान न कभी परवाह नही की सारे दिन आम-जामुनो की टहनी टहनी चढना, नहर मे छलाग मारना, नौटकी, रामलीला और मेलो म एक-दूसरे के कपडे अदल बदलकर पहनकर जाना और मौज मजा लूटना खेती-बारी म सरजू सदा सग छाती अडाए रहता और चमडा सुखान, रगने से लेकर ढोने तक वह सरजू के साथ कधा भिडाए रहते बडी गजब की दोस्ती थी दोना के बीच

एक बार बटवारे को लेकर उनकी दुश्मनी किसना साहूकार के बेटो से हो गई ये लोग कई दिन तक इन्ह जान से मारने को डोलते रहे तब उस समय यही सरजू था, जो अपन यारखासे के साथ उन पर ढाल बन के छा गया और तब तक चैन से नहीं बैठा जब तक दोनो तरफ से व्यवहार मे सफाई नही करा दी सफाई भी ऐसी कि किसना के बेटे इनके जिगरी दोस्त बन गए और सारा मैल धुल गया तब दिन गुजरते-ढलते पहलवान कर बैठे एक ठोस परतिज्ञा कि ब्याह नही कराएगे बस खाएगे और पहलवानी के शौक को पूरा करते रहगे और अपन दोस्त सरजू का ब्याह ऐसा कराएगे कि चार कोस तक किसी का न हुआ हो तब आई थी यह फूलादेई भौजी एकदम गुड पडी अधजली छाछ सी कौन कह सके था कि ये चमरटोली की बहू है! चलती तो लचकते बास सी लहराती, उठती तो हजार मोड मारती बदन का ऐसा उभार, के कलेजा मुह म आ बैठे आखें जलती देखन वाले की हथेलिया और खर चाची क रुपया की हुमेल सीन पर एक बिलाद ऊपर उठी रहती सारा रूप छिने सिघाडे सा था सरजू निहाल हो गया बोली का सार बस पहलवान भी पिए बिना कहा रह पाए थे? हनुमानजी के बिला नागा थे वह भगत बिरमचारी पर आज भी अच्छी तरह याद है कि बरसो मुट्ठीदार महदी से रची हथेलियो ने और किगडी लगी गोटदार घाघरी से मे चमकत बूटे से पखो ने भमरी किए रखा उन्हे जब भी खेत-खलिहान देर अबेर रस्ते बीच मे वो फूलादेई मिल जाती और उगलियो की जाली मे घूघट फसा के जमान भर का शहद टपका के खर खबर पूछती, तो वह जल्दी जल्दी हनुमान चालीसा का पाठ कर गा मी डोर मुश्किल से खीच पाते और घण्टा उसके बाद कुए की ठण्डी जगत पर उहट पडे छाती रगडते रहते थ

जब तक दिन और रात सरने, तब तक चार पाच बेटा बेटी भौजी की गोद मे

आ गए, पर मजाल है कि रग रूप पर बाल भी खिचता दिखाई दे बल्कि बदन था भराव और रग का निखार और बढ गया एक दिन पैठ मे सरजू कैसी ठिठोली पर बैठा था ! अरे पहलूआ, लेने न वो धनुसी डोरिया वाली चुरिया कहा सोच है रे ! और लजा कर रह गए थ वह फिर भी वह कहया कब माना था चुटकी मारने मे बोला था उसी निमल हसी मे—'अर भया, देख्ू ह राज ही के सब चासनी भर नजर फेके है फूलिया लग और वो भी तो चमकनी सात बार लोटा न माज चमका बतासे घोल पहले तुझे पानी पियाव है तो कहा बुरी कही मैंन, मे खरीद ले यार काच कगन और डार दे वाकी बाहन मे चों ! अरे पक्के साथी हैं कोई कच्चे हैं का !' ऐस मजाक पूरे रास्ते चलते रहे थे यो ही, मगर वह उस दिन से बहुत समझ सोचकर सरजू के आपन मे कदम धरने लग थे और भौजी की खुश्बू से जितना हो सके था, बचते थे

अब कलेजा भरे नही तो क्या हो ! ये छोरी उनके कधो पर पेट पर उछली है टाग की डण्डा डाली पर झूली है भौजी के लिए आज भी उनके मन के सारे कोने नरम हैं दास्त तो पाच बरस पहले दगा देके रामजी के चरनन म चला गया पर सबको उनकी आखिर आग छोड गया सो छाती तो आज सबसे ज्यादा उनकी फरकी है

सब तो कुछ न कुछ कहकर करतब निभा रहे हैं, पर वो क्या कहें ! हजार मरोडें पेट को मथे डार रही है जी करे गुसाइ को कच्चा ही चबा जाए और भौजी का मारा दु ख पी लें पर मन की विथा भीतर ही ठीक है सचाई म जब जिदगी निकाली है ता क्या अब लरिकापनो करेंगे ! तब यो ही खडे रहे चुपचाप हां, आखा मे मन की मारी बात कह दी कि भौजी तुम जाओ, मेरे से ज्यादा तुम्हे, तुम्हारे बालकन कू और सरजू क प्यार को और कौन समझेगा ! इतना जरूर किया कि सरजू के चारा बेटो को समझा के शात किया हाथ पकड के उतारे के नीचे बैठाया वे लोग भी तो ताऊ को बचपन से ही पहचानते और बाप से ज्यादा इज्जत देते आए थे

कुछ मलखान सिंह का और कुछ चौधरी का कहना कुछ डाक्टर बाबू का गुस्सा और ऊपर से पहलवान ताऊ की सीख, सो सभी चुपचाप बैठ गए जहा घडी भर पहले झगडा जान लेने पर तुला बैठा था वही श्मशान की सी वीरानी छा गई हाँ, अभी तक ननकू और हरिया के चेहरे गरू की तरह तमतमा रहे थे पर हथियार सबके झुक गए थे फूलादेई जैसे ही समन्दरी का हाथ पकडकर मुडी कि ऊपर से गुसाइ की छत गरजी उसकी बहू रामा ने माथ पर दो हाथ मारकर फूलादेई को ललकारा— अरी सतवती उडी गज को छानी हा रही होएगी अब तो ! फुडबा दिए मनखन के मूड माथे अरे जबर कही है क जमीन की जाए कहा, के जूतीन मे धर

लई थी ना मूड ऊपर सो हमारी ही गोट मे आग लगा बैठी छिनारें खुद बनी-ठनी पानी भरिव जामैं हैं, तो मरदमानस की आख नाम उठेंगी कहा ! मैया मेरी, पूछो इन चहततरियो कू, के तुम पानी गोबर करने जाओ हो, के खसमन कू चिरत्तर दिखावे कू जावो हो ! तनक पकरि कहा लई, के जमीन-चादर फार के धरि दियो हैंआ आवे मेरी ससुरी तेरे पूरे कुनवा क देख लीजो, मेरा सराप तोकू नही चाट बैठे तो ! कान खोल के सुनजा निपूती ' वह बके जा रही थी घर की चार पाच औरतें उसे पीछे की ओर खींच रही थी, पर वो तो जैसे राख डाल कर सिर पर उतारू थी

फूलादेई भूल गई भीड को और भूल गई पहलवान की आखो की भाषा को घूघट पीठ पीछे डाल, ऊपर को मुह उठाकर घण्टों का रोस छाती से निकालने लगी— देखी रहो हू गुसाइंन ज्यादा बढकर बोल मत मार अरी आज कौन अमीर, कौन कमीन ! अरी आज जीभ काली मत कर बोल मोसू भी आवें हैं मारने छिनाल छोरी होती तो बावेला ना उठाती, समझी ! वैसे तो हम छूने से तुम्हारी धरम-जात जाती सुने है, चार हाथ बचिके निकरोगे, पर इज्जत सू लिपटि के पवित्तर रह जाओगे ! अपने मरद के दोस मेरी छोरी पर मत मढ़

तू भी जैसी है वैसी मैं जानू हू हम तो यो ही चुप रहे हैं कि बडे घरन की बात, दबी रहन देओ अरी जिन्दगी भर कालू पटवारी और जगदेवा बनिया को उजाडती रही जब मेरा आदमी और उसके दोस्त चौ भीगी बिल्ली से बने बैठे रहे ! बता न बोलते कैसे ! बोली तो मरदन की निकरे है न ! तू भी कान खाल क सुनले गुसाइन मैं लछिया धोबिन ना हू, जो तेरी आदिन आगे खड़आ छडे गढाती रहू और ताकू नौ नौ आस रजावत रहू बहोत मेरी समझ मे जवान मत चला मत उखडवा सतवती मैं कहा ! सतवती तो तू हैगी बाध सके तो आदमी के नकेल डाल नही तो योई कोई दिन ढोलकी मे मूह मारतो पकड लियो जावैगो और वही जिंदा गढवा दिया जायगी, गा5 बौध लै इसकी

फूलादेई गुस्से म थरथर कांप रही थी आगे भी और कुछ कहती कि पहलवान ने शायद पहली बार उसकी कलाई पकडी और दूसरे हाथ से समदरी को पकडे गली पार करा आए सारी बामन टोली और बनिया के घरो पर कालिख पुत रही थी सभी जान रहे थे कि आज छोटो के मुह खुल गए हैं बरसो का धुआ बाहर निकलने को बेचन है जरा भी कुछ कहा नही कि अपने पुरखे-पगतो के नाम इन्होने गिनाए नही लाज-सरम का पर्दा एक बार उठा नही कि फिर धज्जिया फाडने मे देर नही लगती इसीलिए आस-पास घरो के बाहर भीतर लोग मुह चुरा रहे थे जो थोडी देर पहले बढ-चढकर बोल रहे थे, व भी अब थमे पानी स इधर उधर बैठे थे

डाक्टर बाबू धीरे धीरे सरजू के बेटों के पास आ खड़े हुए एक ने उठकर दीवार के सहारे खड़ी मचिया डाक्टर बाबू के लिए बिछा दी, लेकिन वह बैठे नही सभी सोच रहे थे कि ठण्डे सुभाव के डाक्टर बाबू को जाने आज कैसे इतना गुस्सा भर गया है कि आख मुह सभी तमतमा उठे हैं

मलखान सिंह अलग उनके तेवर देख रहे थे दबी बात फिर उनके मन को नए सिरे से दुखी कर गई, क्योंकि डाक्टर को देखते ही उन्हे अपने बेटे वीरेश्वर की याद आ गई और याद के साथ ही वह चिट्ठी ताजी हो गई, जो अभी तक उनकी मिर्जई म पड़ी थी यही कद, यही काठी ऐसा ही सुभाव कि पल मे पानी, पल म आग गोरे माथे पर ऐसे ही बालो के लपेट लिए लच्छे जब से इजीनियर हो गया है तब से देहो के पहरावे मे और ज्यादा सलीका भर उठा है भगवान राजी रखे उसे पर खत क्यो ऐसा वैसा लिख मारा है। कैसे लिखा बावरे ने। तभी डाक्टर बाबू की पहले धीरे, फिर तेज आवाज कानो से टकराई—'कुछ होश है तुम लोगो को! क्या कर बैठे हो अपनी गरमा गरमी म, इसका कुछ भी ख्याल है। लाटू बोलो क्या जवाब है तुम्हारे पास। और तुम समरथ। बोलो क्या कहते हो! सब कुछ भूल गए जो मैंने रात दिन सात साल मे तुम्हे सिखाया। उसी मनमानी पर उतर आए, जिस मनमानी ने तुम लोगो को हमेशा बमौत मारा'

गुमानी का कलेजा फिर दहका और वह थोड़ा झुककर बोला—'डाक्टर जी! हमी ने काहे तिल चबाए हैं का, जो चित भी इन्ही की और पट्ट भी तिहारे आखिन आगे सब कुछ साफ है बताओ आपई क हम आखिर मानस हैं, कहा तक धीरज रखें कहा खून नही खौलेगा। माटी-ढेरा के ही बने बैठे रहै का।'

डाक्टर न तुरत उसकी बात की डोर हाथ मे ली—'य किसने कहा कि तुम लोग मिट्टी के हो या गलत सही का ज्ञान नही रखते हो। कौन कह रहा है कि अपनी इज्जत की तुम परवाह मत करो लेकिन कानून अपने हाथ म ले बठे, यह कौन सी समझदारी की बताओ। आए तुम मेरे पास या चौधरी बाबा के पास? ली किसी भी समझदार या बड़े बूढ़े से तुमने सलाह। सरपच या पचो के लिए तुम्हारे मन म विश्वास नही है, पर इसी गाव म ऐसे भी तो मौजूद हैं जो सदा न्याय की तराजू म ठीक-ठाक बात को तोलते रहे हैं पहलवान आचरा मे कम ताकत है क्या। वह नही तोड़ सकते थे दस-पाच की हड्डिया। लेकिन वह जानते हैं कि क्या करना है और कब इनमे ही पूछ लेते और य मलखान बाबू उधर बड़े कुआ वाले साहूजी, प्रीतमदासजी, करमपालजी और भी कई समझदार हैं शायद उन्ही लोगो की वजह से आज तक खून-खराबा नही हुआ और गाव की हवा बनी हुई है वरना तुम लोग तो दो दिन मे यहा सब बर्बाद कर दो अरे भई! आप लोग आते, सलाह करते, इन सबको ऐसी जुगत म पानी म बहा दिया जाता कि याद

भी मर जाता और लाठी भी बनी रहती सिर-माथे फोड कर और फुडवाकर क्या पा लोग सिवाय इसके कि कल य लोग तुम्हारे लिए सिरदद बन जाए'

बुकना ने बात काटी—'बाबू! आप तो हमारी बिथा सिरफ सात बरस से देखि रहे हैंगे, पर हमारी सात पीढी इन लोगन के जूता खाती रही हैंगी अब कहव वारी बात है का! आप जैसे पढ़े, समझदार अफसर के आगे हम कहा कहैं! के बाबू हमने बेगार काजे हारी बीमारी म, गोड भर पानी मे, खेतन म, पोखरान मे, नहरन म, काम करो है भरी तपती दुपहरियान मे घडन पसीना बहावत रहे, पर जानत हो मजदूरी क नाम पर हमे न रोटी मयस्सर भई भरपेट, न तन पर लत्ता औरत मर रही हैंगी के बच्चा मरो परो है, कबई या बात की परवा ना करी, पर इन मुफतखोरन के घर्रेन म जुटे रह घडी भर की मोहलत मागी, तो ठाकर खाई उधार बीज लेके काहू के हल-बैल माग क सीर पै या अधबटाई प चार-छै बीघा के खेत जात-बो के हाड गलाए तो इ ही लागन न खडी फसल हमारी आखिन आग काट डारी उजाड दी हमारे राता-रात आलू, सकरकदी खुदवा डाली पोखरा सू सिघाडे का बेलें रत मे बिछवा दी छोडो बाबू! बहोत भारी सिलाए धरी है हमारी छातीन प गे जो आज खून बरसो है आखिन मे, या जान कब-कब को इकट्ठो दु ख है नही ता हमऊ भगवान न अकिल दई है या ससुर अकिल ने ही ता आज तलक धूर म पटकनी दिवाई हैगी बाबू! छिमा करना, छोटो मु ह और बडी बात है गी के आदमी को जिनावर या बेरहम आदमी न ही बनायो है जा'

डाक्टर बाबू टकटकी लगाए बुकना की ओर देखते रह गए कितना सच और कितनी गहरी व्यथा उस युवक के चेहरे पर आ फली थी! जस वह बुकना न होकर सदिया म कुचले मानव का प्रतिनिधि था उ होंने देखा कि वहा बठ युवका से बडे-बूढों तक के चेहरा पर, आखा मे यही वाक्य लिखे थे, जो बुकना न अभी अभी कह थ बुकना का जैस अ तल का दद नही था, वह सभी की बात कह गया था पहाड, नदी नाल भी एक बार अपना धम भूलकर बवडर मचा देत हैं, फिर आदमी भी कहा तक सहे! मन की, धीरज की नर्मी की और अपन को दबाने की आदमी की सीमा हाती है इन लोगो के दद का बाध टूट गया है जो रोकन स नही रुकगा पर रोकना तो होगा ही ठीक है नई उमर अब समझदार और मान सम्मान को समझन वाली पदा हो रही है यह भी ठीक है कि य लोग अब अत्याचार या अ याय नही सह सकत पर फिर भी इनकी शक्ति को या नष्ट नही होने देना है अधिकार लेना, काम की कीमत मागना बुरा नही, पर वह तरकीब स मागी जाती है ताकत दोनो ओर के लोगो को खत्म करती है खत्म हाने पर न अधिकार देने वाले रहत हैं और न कत्तव्य दिखान वाल नए खून की ताकत पर ही तो गावो को बढ़ना है उ ही की अक्ल से तो सुधार होंगे और कचहरी हवालात स छुट्टी मिलेगी

इ है समझाना और रास्ता बताना ही तो अपना काम है नदी की शक्ति का क्या मुकाबला ! पर उसे भी किनारा से बाधना पडता है, तब जाकर वह जि दगी देती है, वरना उसके सामन किसी की क्या ताकत !

तभी टीकम ने टोका—'डाक्टर बाबू ! काह सोच म परि गए ! हमार किस्सा हमी न भुगते हैं बात आई है तो कहे दें हैं य बठा आपके पास गुमानी पूछो याकी विथा जादा दिनन की बात ना है गेई होगी मुलन सात आठ बरस पहल की सीत वा साल ऐसो हो क आज तक वैसो ना हुओ या के बाप की बिरत बनवारी लाला और याही गुसाई के नीचही खेतन की रखवारी की काम करन सू घर घेर, सा गी-पतानी सब करनो परै ही जाने कौनल चितकबरी गैया कू खोल ल गयौ बस सबरे दूट पर याके बाप के ऊपर तीन दिना तक वा रखौ मचानवारे पीपल सू बाधिके वाके ऊपर जा मार डारी वाकी एक-न नाय, पूरो गाम गवाह है बूढा की खाल उधरि गई, पर पिसाचन के हाथ नाय थक बूढी मा जब डकरा डकरा के गुहार मचान लगी, तो याके बेटान ने बुकरिया की इज्जत नाय करी बनवारी को जमाई, पूछौ वाकू कहा लनो दनो, वान हमारे सगरे बिरादरी वारन के छप्पर रहा दिए जान भी बूढे डोकरा कू बचाने को नाम लियो, सबके हाथ पाव तोड डारे

बूढे की थकी गली हुडडी ही, सो मार खात-खात दम तारि गइ रपट भी लिखाई, सिपाहीन की गस्त भी भई सबन के बयान लिखे थोडी भौत जो जमा पूजी ही, वा अलग उनके पेटन म गई मौके की सारी हालत भी उनकू दिखाई पर भयौ सब उलटौ बाप भी इनकोई मरो और सहर-कचहरी मे पाय-घुराई भी इ ही की भई सरपच और पटवारी, उधर बुढन साहूकार पहले ही खार खाए बैठे रहे हैंगे, मार पटवारी न जाने कहा कहा लिखा दीयो, कहा-कहा सू झूठे गवाह खरीदे, के सगरो मामलो ही उल्टा है गयौ पूछि लेओ या सू के एक बरस की कर्रो हवालात याकू भई और जुमानो अलग वहानो य, के इन कमीन चमारन ने बडे लोगन की बेइज्जती करी है जुर्माना भरिव को कहा रकम धरी ही, जो हो सो तो पहले ही सरकारी पेट मे जा पचो ही सा करज करके जुर्मानो भरो वा करज की कौडिया पाई अब तक चुका रहा हैगा मगर वा बईमान करज की रकम घटती नजर नही आव हैगो चादी की जूता भी मारनो पडो और फिर भी हाथन मे लोहो कसिवा पडो अब कहा है पके फोरा सो हाल है मन को साच न कुरेटा, तोही भलो है जी

डाक्टर का मन बहुत दु खी हो गया था, वह शहर मे जन्म शहर म पल वही पढ़े और ऐसे ही लोगा का जीवन देखने के आदी थे सुना जरूर था कि जमीदारो पटवारियो और पचा के अत्याचारी किस्सो को पर आख कानो स जानने का

आज ही मौका मिला था यो तो वह पाँच छ साल से इन लोगो का दर्द सुनते आ रहे थे हाड-ताड मेहनत के बाद भी आधा पेट सूखा रूखा खाते देख रहे थे जाडा-गर्मी हर मौसम मे इनकी गरीबी देख रहे थे उन्हें अचम्भा था कि इतना मेहनत कश आदमी भूखा प्यासा जिन्दा कस रहता है ! कौन सी शक्ति बेचारो से इतना पहाड भर काम कराती है ! कितने दुखी कितने सताए गए है ये ! उन्हे इन लोगो से बडी हमदर्दी थी तभी तो उन्होने इतना त्याग किया कि जानबूझकर अपना कार्य-क्षेत्र गाव चुना शहर मे जगह मिली, उसे ठुकराया माता पिता भी शहर मे ही उन्हे डाक्टर देखना चाहते थे पर उन्हे गाव की असली गध लेनी थी न !

अच्छे घर के थे बडे शहर के कालिज म पढे थे गाव की गलिया मन का कुद कर जाती शुरू मे यहा के बच्चो, पुरुषो और औरतो के बीच मन नही लगा पाए, पर जिस सवाल को लेकर आए थे उसे हल तो यही रहकर करना था य लोग भी समझदार थे, बुद्धि रखते थे, बस सीधी राह दिखानी थी उन्हे बातें समझानी थी और देखना था कि इनके मन पर पडी हीनता की पर्तें कहा तक कट पाती हैं ! वह दृढ निश्चय लेकर कूद पडे थे इन लोगो के बीच यह भी जानते थे कि किसी चीज म सुधार करना है तो उसी के अनुसार अपने को ढालना पडता है बस शहरी कपडे बक्स मे चले गए खद्दर का सफेद कुर्ता और पाजामा पहन लिया

फुरसत म खेतो के चक्कर लगाना सबसे मन की बातें पूछना, जितनी हो सकती सहायता करना, उनका काम हो गया था जब मन आया किसी की रोटी खा ली किसी के खलिहान पर मठठा पी लिया किसी बच्चे को पढा दिया, किसी को कहानी किस्से सुना दिए बस देखते देखते जो गाँव पराया लगता था वह अपना हो गया गाव वाला न भी शहरी बाबू को यो अपने दुख दर्द का साथी पाया तो जी खोलकर सलाह लेने लगे उनकी कोई समस्या नही थी जिसे उनका डाक्टर पूरी नही करता था धीरे धीरे उसने अस्पताल के छोटे बरामदे म रात का बडो की पाठशाला चला दी इसमे दस पाच लोग रोज आकर अक्षर-ज्ञान करने लगे और अगूठा लगाने की जगह अपना नाम लिखना सीख गए गाव के युवको म भी जोश जागा मन मे नई नई उमगे जन्म लेने लगी डाक्टर बाबू के सगी साथी कभी कभार शहर से आते, तो वे भी लोगो का शहरी बातो का ज्ञान कराते देश विदेश के किस्से, लडाई के हार जीत के किस्से सुनाते जिससे गरीब भी जान गए कि जुल्म सहना पाप है और मेहनत का फल आदमी को मिलना ही चाहिए सच बोलने मे कोई अपराध नही साथ ही मेल जोल की भावना भी जागी लडाई झगडे कम होने लगे

डाक्टर का असर बढा देखकर गाव म दो दल हो गए दलबन्दी स्वाभाविक

गाँव के अंतनाथ और प्राइमरी स्कूल के पीछे कुछ जमीन पड़ी थी, उसकी मिट्टी खुदवा खुदवाकर पोली करा दी और शाम को वहां अखाड़ा चलने लगा लाठियां के पैंतरे चलने लगे कुश्तियां भिड़ने लगीं गांव से मुर्दनी दूर हुई पानी के जो गड्ढे सड़ते थे वे मिट्टी से दबवा दिए और नालियां निकलवा दीं किसानों को सब्जी, फूल फल बोने के तरीके बताए तीन-चार साल से कितने ही घरों में मुर्गीपालन का काम चल पड़ा दुहरी आमदनी होने से गरीबी के आंसू पुछ चले हर समय गांव व्यस्त रहता था डाक्टर के कमरे के सामने और बरामदे में हर समय कोई न कोई सलाह होती रहती उसी डाक्टर की आंखों के सामने आज लट्ठ चल गए, गंडासे चल गए और खून खराबे का मौका आ गया इससे उनका मन उदास हो उठा था

यह ठीक है कि जो बात आज अनहोनी के रूप में सामने आई, उसमें इन लोगों का दोष नहीं था इन्हें भड़कना और भिड़ जाना इसलिए पड़ा क्योंकि समय ने और दुखों ने इनकी जमी आत्मा को जगा दिया था, लेकिन इन्हें भले-बुरे का अभी और ज्ञान कराना है अपने ही हाथों अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार लें, यह भी तो गलत है डाक्टर ने अब की बार क्रोध में कड़ककर नहीं, बल्कि उन्हीं के दर्द में डूबकर कहा — टीकम! तुम्हारी बात सुनकर सच में बड़ी तकलीफ हुई, ऐसे अत्याचारों से गांवों के इतिहास भरे पड़े हैं यह भी ठीक है कि अत्याचार एक न एक दिन बदला जरूर लेता है, पर कभी मत भूलो कि अभी समय होने में देर है तुम्हें मन की बात छाती फुलाकर सचाई से कह दो अपनी बात मनवाने के लिए काम छोड़ दो भूखे प्यासे रह लो दुःख पा लो और तब तक जमे रहो जब तक तुम्हारी बात पूरी न हो जाए लेकिन बात मनवाने के लिए गाली-गलौज करना, आग लगाना, मारना ठीक नहीं है फिर तुम जिनकी शिकायत कर रहे हो उनमें और तुममें भला फर्क क्या रह जाएगा! तुम नहीं जानते कि बड़ों के सामने बोलने से ही उनकी इज्जत गिर जाती है वे पूरी तरह से बौखला जाते हैं नई रोशनी की चमक में वे घबरा जाते हैं नए खून की गर्मी, तेजी और मेहनत देखकर यह क्या कम है? कहते हैं डर तो आदमी को सीधा कर देता है सब काम धीरे धीरे होते हैं इन लोगों का तुम्हें छोटा, नीच, जानवर और बेगारी समझने की बरसों की आदत पड़ी है जो धीरे धीरे समय के अनुसार जाएगी आज ही ये लोग तुम्हें छाती से लगा लें यह मुश्किल है प्यार से, त्याग से और दृढ़ता से आदमी कटता है, झुकता है अब आज की ही बात ले लो तुम सब गरीब हो दो जून मुश्किल से अन्न पानी जुटा पाते हो कल क्या होगा? खेत रहेंगे या जाएंगे! तुम्हारी रोजी चलेगी या बर्बाद होगी! इसका तुम्हें क्या भरोसा! इसी मेहनत और परेशानी में तुम्हें कुटुम्ब पालना है शादी-ब्याह, मौत गमी भी निभानी हैं, है कि नहीं! और तुम तो ऐसे फौजदारी कर बैठे, जैसे तुमने अपना जीवन हर तरह से सुरक्षित कर लिया हो

थी जो अब तक अंधो भेड़चाल में इन लोगों को बढ़ाने आ रहे थे, उन्हें कैसे बर्दाश्त होता कि फसल की कटाई पर, बुवाई पर, बटवारे पर, पानी चलन पर, नहर काटन के समय यानि हर समय डाक्टर यमदूत की तरह सिर पर खड़ा रहे और उन्नीस-बीस का फर्क होते ही नीच कमीन लोगों की तरफदारी करे जो किसान थोड़े में सिर झुकाकर गुजारा करते थे, जो दे दो उसे ही लेकर दुआएं देते थे, उन्हीं को वह सिर पर चढ़ाए डोल रहा है यह तो बड़ा के पेट पर लात मारने वाली बात हुई न! भला कोई तुक है कि जो काश्तकार पुश्तैनी खेतों करते आ रहे थे, जो साहूकारों की तिजोरी उल्टे सीधे आंकड़ों को बिना समझे भरते जा रहे थे, बेगारी करना ही जिनका धरम था, बाप-दादों से लेकर अब तक जिन्हें जुबान खोलना नहीं आता था, वे ही अब करतब अधिकार की बातें बघारने लगे और चार पैसों का कर्ज चुकाते वक्त हजार बार बहीखाते का पूरा हिसाब पूछें ऐसे कहीं साहूकारी या जमींदारी चली है? कम्बख्त आखर पढ़ना लिखना और सीख रहे थे और ये सब करा रहा है खुरह की जड़ यह डाक्टर! याके सिर पे अच्छी कमाता चढ़ी कि सहरी खुसी और अच्छी खासी जिन्दगी छोड़ या धूरि फाकिब और इन करमफूटेन का रहरोजगी सुनन कू आ मरौ हैगो और अब कहां ग जावगो ना रे यही छाती पर दानो दरतो रहैगो यौंही

डाक्टर अंधा नहीं था सब कुछ सुनता और देखता था उसे यह भी पता था कि उसकी नौकरी में जाल डालने की साजिश भी बड़े लोग करने में नहीं चूक रहे, पर पैर डिगाने के लिए वह यहाँ नहीं आया था मुसीबतें आएंगी, यही सोचकर चला था घरवाले नाराज थे कि इतनी पढ़ाई लिखाई गांवों की मिट्टी धूल में उड़ाने के लिए कराई थी क्या? भला गांव भी भले आदमियों के रहने की जगह है? यही कारण था कि बहुत पक्के दोस्त तो उनसे मिलने गांव आ जाते थे, पर घर का कोई आदमी मिलने नहीं आया था जब मन करता तब डाक्टर स्वयं मिल आते थे वहां जाकर सोच लेते थे कि वक्त सबसे बड़ा मरहम होता है यही घर वाले हो सकता है कि भविष्य में उसके कामों पर गर्व करें।

उन्होंने गांव के बच्चों की हालत सुधारी जहां तक बना सफाई कराई पक्की सड़क न सही लेकिन मिट्टी डलवाकर कराकर रास्ते चौड़े और चलन लायक करा दिए जाने कौन कौन सी दवाइयां बताई और दी भी कि फसलों और बीजों में कीड़े लगना कम हो गया मच्छर मक्खी तो जैसे घर का रास्ता ही भूल गए युवकों का समय समय पर हैजा चेचक और मलेरिया के टीके देते जूड़ी-बुखार जाड़े और पीलिया दस्तों का, जिनमें युवकों की ताकत गलती रहती थी, नाम तक नहीं रहा औरतें तो डाक्टरजी को दुआएं देती नहीं थकती थीं उनके घर, उनके बच्चे, पति और उनके हजार रोगों को उन्होंने अपनी मुट्ठी में लेकर खुशियों से भर दिया था

गाँव के आसपास और प्राइमरी स्कूल के पीछे कुछ जमीन पड़ी थी उसकी मिट्टी खदवा खुदवाकर पोली करा ली और शाम को वहां अखाड़ा चलने लगा लाठियों के पैंतरे चलने लगे कुश्तियां भिड़ने लगीं गांव से मुर्दानी दूर हुई पानी के जो गढे सड़ते थे वे मिट्टी से दबवा दिए और नालियां निकलवा दीं किसानों को सब्जी, फूल फल बोने के तरीके बताए तीन चार साल से कितने ही घरों में मुर्गीपालन का काम चल पड़ा दुहरी आमदनी होने से गरीबी के आंसू पुंछ चले हर समय गांव व्यस्त रहता था डाक्टर के कमरे के सामने और बरामदे में हर समय कोई न कोई सलाह होती रहती उसी डाक्टर की आंखों के सामने आज लट्ठ चल गए, गंडासे तन गए और खून खराबे का मौका आ गया इससे उनका मन उदास हो उठा था

यह ठीक है कि जो बात आज अनहोनी के रूप में सामने आई, उसमें इन लोगों का दोष नहीं था इन्हें भड़कना और भिड़ जाना इसलिए पड़ा क्योंकि समय ने और दुःखों ने इनकी जमी आत्मा को जगा दिया था, लेकिन इन्हें भले बुरे का अभी और ज्ञान कराना है अपने ही हाथों अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार लें, यह भी तो गलत है डाक्टर ने अब की बार क्रोध में कड़ककर नहीं, बल्कि उन्हीं के दर्द में डूबकर कहा — टीकम! तुम्हारी बात सुनकर सच में बड़ी तकलीफ हुई, ऐसे अत्याचारों से गांवों के इतिहास भरे पड़े हैं यह भी ठीक है कि अत्याचार एक न एक दिन बदला जरूर लेता है, पर कभी मत भूलो कि अभी समर्थ होने में देर है तुम्हें मन की बात छाती फुलाकर सचाई से कह दो अपनी बात मनवाने के लिए काम छोड़ दो भूखे प्यासे रह लो दुःख पा लो और तब तक जमे रहो जब तक तुम्हारी बात पूरी न हो जाए लेकिन बात मनवाने के लिए गाली गलौज करना, आग लगाना मारना ठीक नहीं है फिर तुम जिनकी शिकायत कर रहे हो उनमें और तुममें भला फर्क क्या रह जाएगा! तुम नहीं जानते कि बड़ों के सामने बोलने से ही उनकी इज्जत गिर जाती है वे पूरी तरह से बौखला जाते हैं नई रोशनी की चमक में वे घबरा जाते हैं नए खून की गर्मी, तेजी और मेहनत देखकर यह क्या कम है? कहते हैं डर तो आदमी को सीधा कर देता है सब काम धीरे धीरे होते हैं इन लोगों को तुम्हें छोटा, नीच, जानवर और बेगारी समझने की बरसों की आदत पड़ी है, जो धीरे धीरे समय के अनुसार जाएगी आज ही ये लोग तुम्हें छाती से लगा लें यह मुश्किल है प्यार से, त्याग से और दृढ़ता से आदमी कटता है, झुकता है अब आज की ही बात ले लो तुम सब गरीब हो दो जून मुश्किल से अन्न पानी जुटा पाते हो कल क्या होगा? खेत रहेंगे या जाएंगे! तुम्हारी रोजी चलेगी या बर्बाद होगी! इसका तुम्हें क्या भरोसा! इसी मेहनत और परेशानी में तुम्हें कुटुम्ब पालना है शादी-ब्याह, मौत-गमी भी निभानी है, है कि नहीं! और तुम तो ऐसे फौजदारी कर बैठे, जैसे तुमने अपना जीवन हर तरह से सुरक्षित कर लिया हो

मयो, वोला अब ।

इन लोगो से टकर लेना अभी उतना ही ठीक है जितना चल सके गुसाई या उसके साथियों म से कोई मर जाता या किसी का सिर-पेट फट जाता, तो क्या होता? पूरा पुलिस महकमा इनका होता इनके पास पैसे की ताकत है इनकी जुबान म झूठ घुला पडा है ये लोग राई को पहाड और पहाड का राई बनाने की ताकत रखते हैं पुलिस वाले उसी के हैं, जो चार छ दिन उनके जश्न मनवा दे, पाचो घी मे डुबा दे खिचाई तुम्हारी होती

ले-देकर चार हाथ के झोंपडे और दो चार गुदडे हैं तुम्हारे पास, उनसे और हाथ धो बैठन भीतर कर दिए जाते, तो खेती बाडी और काम अलग छुटता तुम्हारे पीछे जिसका सींग समाता, वही उनका मालिक-वारिस बनकर तुम्हे निकाल फेंकता बदनाम अलग होते कहीं चोरी होती तो करता कोई और पकडे तुम जाते इस तरह तुम्हारी रीढ़ टूटी ही रहती तुम्हारी औलाद भी भुगतती जैसे तुम भुगत रहे हो

बीच म टीकम फिर बोल उठा—'डाक्टर बाबू! यही तो हुआ था गुमानी के बाप पै चोरी लगाई वा जान सू मारि डारो और और आगे चलिके वो गैया जिसकी चोरी हम पर लगी थी, बावारी के माले की बाखर म बधी भई मिली वा साले मे और सोमती गूजर मे कहा-सुनी है गई ही, सो बदभाव मे अधेरी रात मे वो खोलके लै गयो और जान माल सू हाथ धोनो पडो औरन कू जे ता सा'ब आप एकदम ठीक कहि रहे हो हम कहा करें! हम गरीबन की सुनवाई है कहा?'

पहलवान को भूख लग आई थी सवेरे का दूध नाश्ता कहा लिया था? एक बाल्टी दूध, एक कटोरी भीगा चना, यह उनका रोज का नाश्ता था आज इस बवाल चक्कर म हुआ ही नही उधर चौधरी भी अनखना रहे थ हुक्क के लिए लेकिन बातें ऐसी सटीक बैठ रही थी मन मे कि उठन का जी नही चाह रहा था

तभी तिलकराम आया 'अब जो भया सो भया बताओ के हमारा न्याव होगा के या ही हम जिन्दगी भर पाटन के बीच पिसत रहगे! जो चाहे पकडवाय देय पुलिस के हाथन मे नाही डरत काहू सू लटकि जाएग फासी रस्सा सू यही ना पर अब और सहने की ताब ना है डाक्टर जी! हम ता अब समझ ले हैं तिहारी सीख पर जे जुल्मी समझ तब हम तो जान अर हमही दवत चले जाए जूता लात खात रहैं सारे बैल कळ चार पना जादा भींच देओ, तो वाऊ हल चलाव सू मुकर जावे है तो हम का जिनावर सू भी गए बीते हैं का?'

डाक्टर तडपे—'कौन कह रहा है कि तुम्हारा याय नही होगा! लेकिन हरेक कम्म समझकर उठाया जाता है मैं जो इतनी देर से दुखी हो रहा हूँ तुम लोगो को समझा रहा हू, इसका मतलब तुम लोगों ने यही लगाया है कि मैं तुम्हें

अत्याचार के पाटो में पिसते देखना चाहता हू पुलिस मे जाने का शौक है तो जाओ पीसो चक्की और मरने दो अपने बाल बच्चा को लगाओ घेरो मे आग यही करके खुश हो तो उठो, काट डालो सबकी गर्दनें पाल लो पुश्तैनी दुश्मनी पूरी जिन्दगी बस यही काम रह जाए कि आज तुम इन्हे मारा, कल ये तुम्हे और तुम्हारे बच्चो को मारें क्यो सलाह लिया करते हो मुझसे या औरो से ? जाओ, जो मन मे आए करो '

डाक्टर का मुह क्रोध से भर उठा वह चलन को हुए कि पहलवान भूख प्यास भूलकर पास आए और हाथ पकडकर उन्हे दुलार से मचिया पर बैठा दिया खुद भी पास म सफील के कोने पर बैठत बोले— अजी तुमऊ डाक्टरजी रह अबई कोरे बालक ही जे सब बडे बिपदा के मारे हैगे अच्छी बुरी सब भूल रहे हैंगे सगरे बालक हैं इनकू कहा अकिल है अभी नयो खून, नयो जोस है, सो उछल पडो है तुम चले जाआगे या छोड के तो है गई बात और बनि गयो काम अब तो ये बताओ के आगे कहा करें ! हम रपट लिखा के आय, के पचन कू बुलवाए ! अबई बखत हमारे पास है क्योकि उधर की टोली ता आग बुझावन मे जुट रही हैगी अबई एकऊ नाय गयो है थाने प सो कमि बोलो कहा करें ! तिहारी बात क्या टका की हैगी हमे कौन ओखरी मे मुह दैनो है, सो बिन सोचे भरत फिर !'

मलखानसिंह, चौधरी और कई बडे बूढे भी बालक टोली से हटकर डाक्टर के पास जुड गए डाक्टर साहब न पूछा— पहले यह बताओ कि लडकी को सिर्फ छेडा है या कुछ बुरा भी हुआ है ?' दुर्गा परसाद ने बडी सजीदगी से कहा— नही साब ? बस छेडखानी की पर घासी नही आवतो तब तक कछु कर गुजरतो या ढेड इतनी बात जरूर याद रखियो क यों ही छोड दियो तो आगे भी बदलो लिए बिना नही चूकैगो या तो आधो सबक तो इन छोरा छपारेन ने दै ही दियो है, रह्यो-सह्यो और दिवा न्ओ बस थोडी डर बठ जावैगी क ये जात अब जूतन के नीचे नही रही है और साब बहू बेटी सबन की एक चाहे ऊचो होय, चाहे नीचो क्यो सुल्तानजी ?

चारा ओर से एक ही आवाज उठी कि मामले को जल्दी सुलटवाओ

डाक्टर ने तुरन्त मेढी म बठे पचा को बुलाया व लोग मन म कभी डाक्टर को कभी गुसाइ को कोसत आए नीचन न सगरो दिन खराब करके रख दियो

पचा के आते ही डाक्टर न उन्हें दूसरी खाट पर बैठाया और बोले—'देखो आप सब इस गाव के पच हैं पच एक तरह से बहुत बडा जज होता है, भगवान होता है उसका काम ठीक को ठीक और गलत को गलत कहना है पीछे के पुरान किस्से छोडो बात आज की है जो भी हुआ अच्छा नही कहा जा सकता इनकी बहन-बेटी की वही इज्जत है, जो गुसाइ या बलबीर या नेपाल की बहू-बहन की

ये समझते हुए हैं कई जमों से गबन का दाम भी है और इन्हें अपने घर और अपने बच्चों से प्यार है मैं नहीं चाहता कि आप लोगों के रहते बाहर जत्था लेकर यहां आए और बेमतलब औरों की जान आफत में डाले या जबर्दस्ती मुट्ठी गर्म कर कसूरवारों को छोड़ जाए इन लोगों को सजा मिलनी ही चाहिए इन्हें कुछ कहा नहीं जाता, तभी तो इनकी हिम्मत भी हाथ बढ़ी हुई है थाने का चक्कर मैं इस बार नहीं चलने दूंगा आप लोग अगर सचाई कहने से डरते हो तो साफ-साफ कह दो मैं आगे की कार्रवाई खुद दूसरे तरीके से कर लूंगा, पर यह जान लेना कि फिर गांव के पंच आप लोगों को नहीं रहने दूंगा और समझ जाऊंगा कि आप भी अत्याचार और अत्याचारियों के साथ हैं'

पंचों के चेहरों पर झुंझलाहट उभरी त्रिलोचनसिंह ने ताव में कहा— डाक्टर साहब ! कौन बात देख ली आपने कि हम इन लोगन के साथ हैं ? पूछि लेओ कि इन दो बरसों में एक भी काम हम लोगन से गलत हुआ हैगा जब हमारे सिर पर पुलिस लाकर बैठा दी जाती हैगी, तो हम भी कहा करें ! गांव का मामला, दे दिवा के ही छुटकारा दिवाते हैंगे हमारी बात मान लें तो क्या झमेला हो, पुलिस के पंजे से छुड़ाने को हम उनकी खुशामद करते हैं, पटाते हैं, तो हमी को बुराई मिलती है यही गांव हमें बेईमान, घूसलेवा और बड़े लोगन का चापलूस कहता है हम तो खुद ही सोचि रहे हैंगे कि पंचायत बैठाओ और देखो कि न्याय होता है कि नहीं क्या जी पंचनसींग ! भूल गए कहा वो बिरधी सांगी का किस्सा हाथों-हाथ निबटाया था हमने और कैसी सांती करी गांव में ! जुलमी कूं सजा भी दई भीमा जी ! कहा सलाह है तिहारी ?'

भीमसिंह ने बीड़ी का आखिरी दम खींचकर गला साफ किया और पूरे बड़प्पन के साथ बोला— पंचायत बैठाओ सांझ को गुसांई का पांव जरा ज्यादा ही बढ़ गया है हां, अगर ये लोग पुलिस को ले आए तो डाक्टर बाबू जानें हम तो खुदई चाहें हैं कि सगरा गांव खुस रहे '

ये बातें चल रही थी कि मेंहदी वाले पीर के पास एक जीप आकर रुकी उसमें से छाजू और बलबीर कूदे दो सिपाही और थानेदार आए थे डाक्टर की आंखें जलने लगीं ये कमबख्त चुपचाप रस्मपुर थाने पर पहुंच भी गए और लोग समझते रहे कि आग बुझाने में लगे हैं एक बार तो उनका मन किया कि थानेदार के पास चलें, पर वहीं बैठे रह कि देखें क्या होता है उन्होंने देखा कि वहां बैठे सबके चेहरे जीप को देखकर फक हो गए हैं करें भी क्या बेचारे ? कितनी हिम्मत बांधें ! इतनी जल्दी पुराने संस्कार कहां दूर हो जाते हैं ? इतना भी खुलकर सामने आए वह उनकी बातें सुनकर और वह भी उनके विचार जानकर ही उन्हें इन लोगों पर बड़ा तरस आया और बड़े अपनेपन से सीतला और भजनलाल के कंधों पर हाथ

रखते तसल्ली दने लगे—'दोस्तो ! घबरा क्या गए ? जब तुम्हारा अपमान हुआ है, तुम सच्चे हो और पूरी टोली तुम्हारे साथ है तब ये हाकिम लोग तुम्हारा क्या बिगाड सकते हैं ? फिर मैं भी तुम्हारे साथ खडा हू और सुनो जो कुछ भी कहो या तुमसे पूछा जाए खूब तसल्ली और हौंसले से बोलना डरना नही पुलिस आई है तो आने दो इनका काम ही मौका देखना और असलियत का पता लगाना है तो लो सभल जाओ, थानेदार इधर ही आ रहा है'

डाक्टर की बात सुनकर सबकी आखें फिर जल उठी यह थानेदार नया आया था अब तक जो लीपा-पोती हुई थी वह और थानेदारो ने की थी टोली को उम्मीद थी कि नया हाकिम है, कान भर सुनेगा और हाथ भर न्याय देगा हो सकता है यह शरीफ हो और बेगार सू नास्ता-पानी जुटाने मे जान छूट जाए चेहरे से तो पक्का मालूम देता है

थानेदार दोनो सिपाहियो को दाए-बाए लेकर शान से बेंत घुमाता आ रहा था छज्जू और बलबीर ने लपककर चबूतरे की बैठक से सूत का पलग निकालकर बिछाया गुसाइ के दोनो बेटे लपककर भीतर से नीली-लाल पट्टी की दरी ले आए और सलवटें मिट मिटाकर बिछाने लगे लेकिन यह क्या ? थानेदार उधर जाने की बजाय सीधा उस ओर मुड गया जहा डाक्टर के साथ हरिजनो की टोली खडी थी पच उठकर खडे हो गए और हाथ जोडकर गुहार करने लगे सरजू चमार के बेटे थानेदार के सामने लेट गए—'माई बाप ! हमारी भी सुनो, हमारी बहिनी, बेटीन की रच्छा करो हजूर ! हम हैं मजूर, ऊपर सू गरीब हमारी लाज शरम कू रोटी का गस्सा समझ निगलने कू बैठे हैं ये पक्के धरम के हमकू बचाओ सिरकार

थानेदार ने हाथ की बेंत से उठने के लिए टकोरा वे सब यो ही माथा रगडते रहे डाक्टर साहब भी मचिया छोडकर खडे हो गए थानेदार साहब की कुशल-क्षेम पूछकर उन्होने उनसे बैठने के लिए कहा थानेदार ने एक उचटती नजर उन पर डाली डाक्टर के साथ उनके दोनो साथी भी आ खडे हुए दरोगा ने सोचा कि इस गवार गाव मे ये सफेदपोश या तो बाहर से आए हैं या सरकारी मुलाजिम हैं पर ये खद्दर के कुर्ते और साफ पाजामे ! एक ने कीमती सूट पहन रखा है कहीं किसी नेता के भाजे भतीजे तो नही !

थानेदार की यो फटी नजर देखकर डाक्टर उसके मन की बात भाप गए उस की चाल मे जो अकड थी और थोडी देर पहले जो सीने मे गुब्बारे फूले जा रहे थे वे ढीले पिचके दिखाई दिए डाक्टर को मन ही मन हसी आई वह बोले—'थानेदार साहब ! इधर कबसे आप आए हैं ? मैं इस गाव की डिस्पेंसरी का डाक्टर हू जमशेद बहादुर मागरा ये मेरे साथी हैं कल ही गाव मे घूमने मिलने आए थे आइए, इधर बठिए आप'

थानेदार की मूछों में फिर बल लहराए आखों से कुछ बेतकल्लुफी झाकी बोला —'वाह डाक्टर साहब ! बैठे बिठाए खूब काण्ड खिला रहे हो ! मैं अभी नया आया हूं महीना पहले नाम दरियाव सिंह है वहिए, क्या बवेला है ?'

'बवला क्या होना है ! वही छोटे-बडे का पुराना चुनाव है अब तो पूछना क्या है, आप आ ही गए है देख लीजिए मामला थानेदार साहब ! भला हम क्या काण्ड खिलवाएगे ऐसे काण्ड तो इनकी तकदीर रोज इनके साथ खेलती है डाक्टर ने काटती हसी से कहा

थानेदार खाट पर बैठ चुका था उसके सिपाही दूसरी खाट पर बैठ गए पल भर के लिए चुप्पी छा गई हवा से पीपल के पत्ते खडखडा रहे थे जमनी गैया का बछडा खुल गया था, जो मा का दूध छक कर पी रहा था किसी का ध्यान आज इन बातो पर नही था थानेदार ने उचटती नजर आस पास डाली टूटे फूटे घर टीन के टुकडो से पटी छतें, कही पानी खाए पूलो के गले छप्पर कही कही खपरैल भी दिखाई दी बीच मे दस-पाच ऊची पट्टीदार हवेलिया कच्चे पक्के घर नगे पट लिए दम साधे बच्चे और कभी-कभी किसी किवाड की सध से झाकती हरी कजरारी आखें सब कुछ सूना सा, भरा-सा अजीब-सा था उधर गुसाईं का बडा बेटा मानक दात पीस रहा था बलबीर चाचा पर और नपाल दद्दा पर के अच्छे भेजे सहर मे चौधरी बनाए के जे नही भई के थानेदार जी को सग लेकर इस चबूतरे पर आते छोड आए अधवर म ही वो ससुर वहा पर फसो हैगो ये कजर उसे भर देंगे साथ ही वहा वो घूरत डाकघर और भर रहा हैगा अच्छी तरह घी चुप डैगा पल्ला तो अपना भारी रखना था जो इन कमीनन की चमडी उधरवा दी जाती सारा खेल ही मिट गया दीखे हैगा अब तो

थानेदार ने हथेली पर बेंत की मूठ घुमाते कहा— कौन है तुममे गुमानी और बुकना मोची और सरजू चमार के तुम्ही हो क्या रे चारो बेटे ? सही-सही बताओ, क्या गडबड मचाई है ?'

गुमानी और बुकना खडे हो गए सरजू के चारो बेटे अब वठ गए थे बोले —'साहब ? हमारी बहनी मवेरे पानी लेन गई यो गुसाइ नीयत का बिगडैल हैगा पहले भी आत जात बहनी की घूरा घूरी करतो रहव था आज जान वब सू ताक लगाए बैठा था अकेली पाके खेतन मे खीच लै गयो और वाकी इज्जत लूटने कू धौर झपट मचाई मगरे लत्ता तोर तीर कर डारे छोरी जब डकराई तो अपनी बण्डी सू म्हौं रूध दयो वो ता हजूर, वहा सू मरलू घोसी निकरो वान बहनी की लाज बचाई या मालिक ! तर बिसवास करौ तो साच तो या है के जे गुसाइ जाने कितनीन की लाज शरम सू खेल चुको है

'फिर क्या किया तुम लोगो ने ?'

'किया क्या हजूर ! सूधी सी बात है हमारी आंखिन मे अधेरो छा गयो और बहनी कू रोती बिलखती देखि कै हमे कछू होस नाय रहो हम हजूर ! गरीबी सह लें, भूखे पियासे मर लें, नगें रह लें, मजाल है उफ करें पर साब ! जो हमारी बहू बेटिन कू छेडे, वाकी चोट हमकू बरदास्त नाहि होवे है'

'तुम सबने जाकर थाने मे रिपोट क्यो नही लिखाई ? सुना है तुम सबने मिल कर गुसाइ और उसके साथिया पर, कुल्हाडी गडासे चलाए, मारपीट की' थाने दार के चेहरे पर कुछ सख्ती आ गई

उधर डाक्टर के चेहरे की नसें भी तन उठी बस वह यही तो नही चाहते थे तभी तिलकराम और हरिया बोल उठे—'साब ! वो तो सारा दिखावा था हम का नाहि जानै हैं कि जो इन लोगन को मुह फोड दयो तो हमारे कूई भरनो परगो डाक्टर बाबू भी हम सै याही बात सू नाराज है रहे हैं इनकू भी हम बाद में बतावो अपनी अकिल की बात, पर इतने मे ही हजूर आ गए या तो सगरो एक तमासो रहो डाक्टर बाबू के कपाउडरन कू भी हमने अपने तमासे म सामिल कर लियो हो'

'कैसा तमाशा ? इन लोगों ने रिपोट लिखाई है कि तुम सबने मिलकर इन्हे बहुत पीटा सारे कपडे खून मे रग गए और जनाब डाक्टर साहब ! आपका भी नाम इन्होंने लिखाया है कि आप जब से गाव मे आए हैं, तब से आपका काम डाक्टरी करना कम गाव के युवको मे अशांति की भावना फैलाना ज्यादा रहा है यह भी लिखाया है कि आपने ही ललकारकर इन लोगो से फौजदारी कराई थी बताओ साफ-साफ क्या खेल तमाशा किया है तुम लोगों ने ?'

समरथ कोरी लहका— अजी साहब ! हमारे डाक्टर बाबू को अगर ये यों नाम धर के लिखा के आए होंगे तब तो सब झूठ है ये तो देवता मानुस हैं हमारी आख खोलने कू जो कुछ भी हमै सिखायो है, वा सू ये लोग तो घबडाएगे ही हम अधेरे अंरे मे डूबे परे रहैं, यही चाहैं ये तो बलक ठाक्टर बाबू तो एक घण्टा सू तमक रहे हैंगे हमारे ऊपर के तुम लोगन न मारपीट चौं करी ! के कानून हाथन मे चौं लयो ! हमऊ सुलट रहे मलखानसिंह काका, पहलवान जी और चौधरी ताऊ सबन कू कुछ पतो नाई के हमने तरकीब कहा करि अमीर लोग तो चादी के सिक्कान सू कचरी देखे हैं और गरीब तरकीब सू कचैरी देखे है— और तरकीब सू जान बचाव हैगा, वही हमने करो'

डाक्टर बाबू अचभ मे खडे थे घण्टा से ये लोग मेरी फटकार खा रहे थे, तब तो चुप थे, मेरे कपाउण्डरो के साथ मिलकर क्या कर डाला इन्होंने उन्होने उत्ते जना और हैरानी से पूछा 'बताते क्यो नही, यह सब क्या हल्ला गुल्ला मचाया था'

तभी दोनो कपाउण्डर हसते हुए आ गए डाक्टर ने जैसे ही उनकी ओर देखा

वे लोग बोले– गुसाइं का जैसे ही पता लगा कि थानेदार साहब आए हैं वह उठकर भीतर भाग गया वह सिफ डर के मारे बेहोश हो गया था उसे होश तो बहुत पहले आ गया था, लेकिन जबरदस्ती हम उसके झूठ मूठ पट्टियाँ बांधे रहे एक बार बोला भी कि मेरे बदन में कहीं दर्द क्या नहीं हो रहा पर उनके दो रिश्तेदार कह रहे थे —'अरे, आग चोट पिराएगी खून तो तुम्हारे लत्तन मे खूब लगि रहा हैगा' पर अब वह हमसे भी नहीं रुका, भागकर भीतर जा बैठा है'

बात ज्यादा अब पेट में रोकी नहीं जा रही थी कहनी ही पड़ेगी सरजू का बड़ा बेटा बोला—'हजूर! हमने सबसे पहले तो तेली पारो जुलाहों के पाचा घर कुम्हार टोली तेजू काका,और तेलीन के लम्बरदार टीकमराम कू इकट्ठो कियो फिर सलाह करी के सब जने हथियार लेके गुसाइं की चौपाल मे जा चढो जसे बने घेर लेओ और जमीन पे पटक के हाथ-पावन की मार लगात रहो, पर हथियारन कू ऊपर ही ऊपर घुमावत रहो, सो सब इनके रिश्तेदार और सगी खुशामदी समझें के हम जान सू मारि डारेंगे गुसाईं कू सबई गुमानी ने हाथ मे भीजो रंग का कपरा चारों लग छिड़ककर मारो जे सब जानत हैं डाक्टर बाबू जसे ही सुनेंगे, भाजे आएंगे और हमें ललकार के बुला लेंगे सब नाई अपना काम खत्म हो, हाथ पैर की मार सू जरूर वाकू हमने अधमरा कर दियो है वो साब हम अपनो गुस्सा कहाँ रोक पा रहे थे उनमे हमने कपाउण्डरन जी कू कह दई के तुम यों ही वा ससुर की मरहम पट्टी झटई कर दीजो डराव की सगरी बातें थी साब''

डाक्टर साहब की आखें खुशी से चमक उठी थानेदार साहब भी हल्के से मुस्कराए नई नौकरी थी जवानी का नया जोश था इधर के इलाका का भ्रष्टाचार सुन चुके थे दो तीन दरोगाओं के किस्से भी उन्हें आते ही मालूम हो गए थे वह खुद भी गरीब घर से पढ़ लिखकर ऊपर उठे थे काम करने का नई उमंग लेकर आए थे उनका पक्का इरादा था कि जितना भी हो सकेगा पुराने मलवा को साफ करेंगे और ईमानदारी की मेहनत से कुछ कर दिखा के तरक्की हासिल करेंगे उनके नीचे काम करने वालों का भी पता चल गया था कि आने वाला आदमी अब थाने पर महफिल नहीं जुड़ने देगा आदमी बड़ा घाघ और तेज है, सभलके चलना पड़ेगा आते ही तीन सिपाहियों को बुहार दिया था ऐसी जगह जहाँ नमक की थैली भी जेब से दो पैसे काटकर लाओ उधर फजपुर के ब्लाक विकास संघ के अधिकारी की एसी तसी करके रख दी थी सलीमपुर के पटवारी के झंझट में पूरा हफ्ता लगा पर वाह रे कसी पटखनी खिलाई कि याद रहेगा कि कोई पुलिस का आदमी आया था पटवारी चोखेलाल ने गाँव के प्रधान से मिलकर जाली अगूठा लगवा के नाम जद रसीदें तैयार करवाईं और बिचारी ननी सक्सेना के तीनों खेत हड़प कर अपने हिमायतियों को दे दिए ननी ने रो रोकर प्रधान, पटवारी और सरपंच सबसे

याय की पुकार की, पर जिनके मुह मुफ्ती माल लग चुका था, जो गाव के सर्वे-सर्वा बने बैठे थे बरसा से, व क्यो सुनते ! उल्टे बुढिया को धमकाया कि जो चार बीघा थाड बचे हैं, उनस भी हाथ धो लेगी उसके पास इतना पैसा नही था कि इन भूख भेडियो के खिलाफ आगे आवाज उठाती

तभी आ गए नए थानेदार न्हीने फिर वही अपनी बात और थानेदार प्रार्थी की अपील पर मामले की जांच करन मे जुट गए गैरकानूनी कारवाई का नोटिस दे दिया पटवारी और प्रधान हफ्ता हाथ बांधे इनके पीछे लगे रहे, पर यह आदमी एकदम पत्थर का बना रहा जब पटवारी ने कुछ खाने-पीने और रिश्वत देने का हल्का-सा इशारा किया तो ये बडे आगबबूला हुए और झूठा केस बनाने के अपराध मे प्रधान और पटवारी का चालान कर दिया

थानेदार साहब भी यही सोच रहे थे आते ही देख लिया था कि चारा तरफ दलदल मे आ फसे हैं पहले ही यहा के लागा म पुलिस न जुल्म व दहशत पैदा कर रखी है गावा के भरे पेट वाले भ्रष्टाचारियो का तो पीछे ही ठीक किया जाए, पहले तो अपने भीतर के उन कर्तव्यहीन लोगो की छटनी करनी है, जो सरकारी नौकरी पर कलक लगाए बैठे हैं यह भी इन्होने देख लिया कि गरीब और छोटे किसान की यही मुश्किल है उन्हे चैन से रहने को तभी मिल सकेगा जब ऊपर से भले बन सफदपोश हर्मैतो का जुआ उनके कधो से उतरेगा खैर, अभी तो इस मामले को देखना है इन लोगो ने, जैसा यह कह रहे हैं किया है एक अनोखा काम यह डाक्टर और चार छ बूढे लोग भले और समझदार लगते है पच लोग तो चार सौ बीस नजर आते है छल कपट की छाया इनके चेहरा पर छा रही है क्या नाम लिया है ? क्या नाम लिया है ? हा गुसाइ ! इसके और यहा के दो और आदमिया के बारे मे कुछ भनक पहले भी उनके कानो म आई है इन छोटी जात के लोगो की आत्मा जागी है कुछ भी हो आदमी अगर ईमानदारी से मैदान मे उतरे तो गावो के अत्याचारी-बेईमान गुर्गो को रास्ते पर ला सकता है रखे रह जाए फर्जी कागज और रिश्वत किसानो मे एकता रही और व साहस से आगे बढे तो दमन चक्र से जरूर छुटकारा पा जाएगे

'बडे चालाक बनते हो तुम लाग ! पड जाती उनकी कसके लाठिया तो रखा रह जाता सारा खल ! कुछ भी हो, खुद जो मुकद्दम बन बठले हो, उसकी सजा भुगतनी ही पडेगी समझे कहा है रे नानक तेरी बहन ?"

'घर मे है हजूर हम बेकसूर हैं जी ! गलती है भी गई होय तो माफी चाहे हैं जी बहन को लाऊ कहा सरकार ?"

'नही, नही, वही बयान ले लेंगे हा, ये लोग तो कह रहे थे कि गुसाई की कोहनी पर भारी चोट है मास तक लटक आया है ?" थानेदार साहब ने [illegible] जाहिर की

मपाम पर आँखें पड़ा और दाया हाथ ऊपर उठाकर कोरस वाला—' हे रामजी महाराज ! पउ राखो मालुम की साहब बड़ो ही मूठो आदमी है जे याही तरियां गू झूठि बाल-चाल में हम लोगन की आम ताइ धास छिपात रहे हैं ज जुलमजार वे ग्लास थानो हनक कोहनी पै झराट थाई है, वाऊ घनश्याम दद्दा की जूती की चोंच नैंक गाल पै गुर्राति गई तो मासऊ सटकि परो हद्द है सरकार चोंचेरा की आप गुद दगि सैं, ग्रुनऊ नाय गलगलायो होयगो '

थानेदार साहब के साथ आए सिपाहियों में एक न सबके नाम लिखे जिनको दस्तखत करना आता था उन्होंने दस्तखत किए, बाकी ने अगूठा छाप दिया थानेदार न तो घूसकी दी, न पटवारा, न अन्य सवे किया फिर भी अगूठा-दस्तखत करते सबके दिल धुकधुका रहे थे थानेदार साहब बड़े भलेमानस लग रहे थे, वरना आज तक एक भी पुलिस का एसा आदमी नहीं आया था जिसने बिना दो ठोकर मारे बात की हो सरकार बिचारी का क्यो दोष उसने तो इन्हे तनखा देके इसी लिए रखा है कि बेगुनाह लोगो की रक्षा करें और गुनहगार को सजा दिलाए, पर करते रहे हैं उल्टा बेगुनाह ही कटघर म ठोका जाय है तनक सचाई के लिए दो बार इन्हे खरी बात सुना दो तो बस यही बेडी सजा मिल जाती है इनका भी भला क्या दोष है बुराई से बुराई पनपती है जब आधा गाव अपनो के ही खिलाफ जहर बोने को तैयार है तब दारोगा तो पाचो घी म हैं ही

थानेदार साहब सरजू के घर की ओर चल दिए समदरी का बयान जो लेना था डाक्टर का मन भी इस नए जोशीले थानेदार के प्रति आकर्षित हो रहा था इसम इसानियत की झलक मिल रही थी कोई कादया इसकी जगह होता तो लडकी को बीस बार बुलवाता गद सवाल कर उसे अधमरा कर देता भीड के सामने उसके शरीर के पूरे भूगोल की जानकारी करने से नहीं चूकता और वह गरीब कुछ कह नही सकती, क्योकि वह रक्षक के रूप मे जो होता यह है कि दूसर घर की लज्जा जानता है, व्यवहार जानता है इसकी नजर म जाति-पाति का भेद भाव शायद नही है डाक्टर न अपने मन की बात मलखान सिह को बतानी चाही लेकिन लग रहा था वह किसी दूसरी दुनिया मे खोए थे

' बात सच थी थानेदार की भलमनसाहत का रूप पकडकर वह इस झमले से निश्चिंत हो गए थे इसलिए खत वाली बात ने उन्हें फिर टीस दिया उन्होंने अपने लडके से बडी आशाए पाल रखी थी सात गावो मे इज्जत बनाने के लिए घास फूस का दाना दाना बेचकर, दो खेत औने-पौने गिरवी रखकर उसे पढाया था लडके की जिद थी कि या तो डाक्टर बनेगा या इजीनियर बे मा का बेटा मौसी ने पाल दिया भला उसका मन कैसे नहीं रखते दिमाग जाने कहा से आला पाया था कि हमेशा पहले दर्जे म पास होता रहा जैसा दिया खाया-पहना जितना दिया उसमे पढाई का काम निकाला ऊचा पूरा गबरू जवान पर मजाल कि शहर

मे या गाव म किसी औरत जात को ताका झाका हो तभी तो इतनी बडी कुर्सी पर बैठ गया कोई सुने तो यकीन न करे कि एक मामूली किसान का लडका यो पूरा अफसर बन जाएगा

पिछले दिनो जब वह आया था तब कहता था—"बापू अब फिर गए दिन तुम्हारे जरा पाव टिकाने दो, फिर खेतो को उठा आना और मेरे पास आकर जरा शहरी मौज लूटना मौसी को भी मेम बना दूगा" कैसा हसमुख लडका पर इधर जाने के बाद न जल्दी जल्दी कागज-पत्तर, न पहले जसी मन साधने वाली बातें यह ससुर आज की चिटठी बडी रूखी है कहो कुछ दाल में काला न हो चढती उमर है इसका क्या भरोसा? उमर की भली चलाई, ऐसी चित कर है कि न बाप दीखे न मौसी सुनत हैं शहरी लडकिया और बीयर बडी तेज तर्रार होती हैं सबके सग खा लें, नाच लें ठिठोली मार लें ऐसे ही मरद उनकी औरतें दस-बीस जगह घूम फिर न लें, दस जगह दिल्लगी न झाड लें, तब तक उन्ह चैन नही भूरा माली तीन दिन रह के आया था विश्वेश्वर के पास, कह रहा था कि मकान मालिक की ऐसी भूरी भूरी गोल-गुदकारी छोकरिया है कि मुला दखत रहो बानिन की ऐसी धनी क आदमी साला भूख पियास भूल के बिटौरा-सी आख फारके बस उन्ह देखता ही रहे ये भी कह रहा था कि विश्वेश्वर सग सलीमा भी जाव हैं भरी सडक पर लपाटें ले-ले के चाटन के दोना के दोना साफ कर लें हैं तभी ता बचवा लिख रह हैं कि गाव की सगाई मत कर लेना, शहर को 'पतिया' नही पाएगी पतिया कैसे लेगी, बारन को मुकुट माथ पै छितरा के सडक पै दागन की दुलत्ती झार के बिचारी कहा चल पाएगी

भूरा एक और जुल्म सुना रहा था कि अब नया फैसन चला है कि न हाथ मे न कान मे निसात छारान की सकल मे चूडी बसा सुतन्ना और मरदन की सो कुरता, न ओढनी न गाती घर मे रहें तो ठीक, पर वो तो सडकन पै भी याही भेष मे हूलती फिरें हैं ना, कितना ही लिखें, पर शादी-ब्याह अपनी ही ओर मू करेंगे तरमीली चाल मे बिछुआ बजाती बहू आगन मे डोल, महो परली-गाती जगमगावें, हाथ भर लाल-कटेली चूरियां खनकती रहें, तीसरे दिन मेहदी सू हथेली महकाले भला यासू बढके कोई औरत का दूसरा रूप होवे है क्या? बहू शहरी नही लगे पर लडका कही मनमानी कर बैठा? जमाने की हवा क्या करे? कितना अच्छा थीर क्या न हो, पर कही आख फसा बैठा, तो वो इसके सिवा क्या करेंगे कि जी जलाके चुप बैठ जाए

कोहनी पर दबाव पडने पर उन्हे होश आया कि डाक्टर बाबू कुछ कहना चाह रहे हैं इन्होने भी इस बात को माना कि थानदार सच मे खानदानी आदमी मालूम हाता है घरो के दरवाजो पर पेडो-दगडो के आगे पीछे लोग, मिल रहे थे सब थानदार को झुक कर राम राम करत और चल पडते कुछ दूर कई टोलियां

बन गई कुछ चेहरो पर सतोष था, कुछ पर शकाओ के जाल छितरा रहे थे, कुछ आखो मे व्यग्य खेल रहा था कि बचो अब लाखटी के बच्चो कुछ ओठो पर तेज धार सी हसी तैर रही थी जिसे अब भी उम्मीद थी कि थोडी देर बाद गरीब नीचा की खाल खिचती दिखाई देगी थानेदार व साथ कीरत, मागी और भूपनका बटा घनश्याम अगुआ बनकर चल रहे थे

थानेदार ने गाव की गलियो के कई मोड पार किए गाव का नक्शा उनकी नजर म आ गया हालत अच्छी नही कही जा सकती थी घरो मे कम पक्क दिखाई दे रहे थे हा, दस-बारह हवलिया जरूर हवा से बातें कर रही थी होगी इन्ही बेईमानो की इनकी नीवो मे इन्ही काले नीचकौम और गरीब असहाय किसानो की हड्डियो का चूरा ही तो है इनकी चमडी से, घरो स, खान पीने से सूअरो को नफरत है, पर बदमासी जब सिर पर सवार होती है तब सालो को उबकाई नही आती, तब इधर ही कीच मे डूबन को डोक लगाते हैं

दुकानें थी तो सात-आठ मिलो, पर था क्या उनमे झाड-पोछ कर कुछ रुपयो का सौदा सारे दिन मक्खी उडाओ, तब कही पौव भर दाने या कुछ सिक्के फटी बोरी मे स झाडकर खीचो एक दो चाय पानी की थडी भी नीम के मोड पर देखी जहा सिलवर के धुआ खाए कैसली भगौन मे खोलती चाय और टूटे प्यालो पर मक्खिया व धूल क थक्के जम देख उनक गले म उबकाई का गोला अटक गया ये कमबख्त इनके थके टूटे शरीरो मे हैजे के कीटाणु और घुसाएगे कच्चा बस्ती को देखते सोचत वह चमरवाडे मे आ गए थानेदार ने देखा कि जिन्हें घर कहा जा रहा है, वे सिर्फ मिटटी के लोदे लपेटकर ऊचे-नीचे घरौद हैं वही पशु और वही इसान चारो तरफ पशाव, गोबर, हरी घास, कुटटी की दमघोट दुर्गन्ध गली के नुक्कड पर एक टूटी फूटी कुइया जिसके चारो तरफ बदबूदार कीचड वही औरतें पानी भर रही थी वही आदमी बच्चे नहा रहे थे इधर उधर कच्ची भीतो या छप्परो पर चमडा सख रहा था एक भी झोपडी से धुए की रमक नहीं निकल रही थी निकले कस ? जिस टोले की लडकी को लूटन, बबाद करने की साजिश की गई हो, वहा रोटी पानी की आग उठेगी क्या?

आगे एक छोटी मढी दिखाई दी चार छ गदे, चमेली के पौधे लगे थे कुछ सूख चले थे कुछ हरे थे मढी के छप्परे पर दो-तीन तरह की बेलें छा रही थी कोने म तुलसी का छतरीनुमा पौधा लहरा रहा था शायद यही मेढी इन लोगो का पूजाघर है हनुमानजी, गणेशजी और काली माई के से थान भीतर झाक रहे थे आजादी की खुशहाली मे भी इस गाव ने बिजली, सडकें और नलो के स्वप्न पूरे नही किए

पटवारी और पच दूसरी ओर से आते दिखाई दिए थानेदार न जसे ही मढा का पिछवाडा पकडा कि पक्की चौपाल के साथ पील रग म पुती एक हवली दिखाई

दी दस खाट का बरामदा लाल पीले खमों को लिए खड़ा था तीन-चार मूढ़े और मूंज के लहरिया बुनावट के दो बड़े पलग पड़े थे थानेदार ने डाक्टर से हवेली के बारे मे पूछा तो पता लगा कि जमनालाल बनिये की है आढत मे बड़ा पैसा कमाया है अब तो जो भी चीज छू लेता है सोना हो जाती है इसका बाप साहूकार था, खा गया दुनिया के जेवर-बतन रेहन रखकर ब्याज इतना लेता था कि उसी को चुकाते चुकाते जीवन बीत जाता पर असल रकम यों ही बनी रहती

थानेदार ने देखा पचा से अलग हाकर पटवारी लबे डग भर चुपके से बनिये की हवेली की ओर मुड गया वही बलबीर और गुसाई का चचेरा भाई भीष्मलाल खड़े थे डाक्टर ने बताया कि उस पार्टी का आधे से ज्यादा जमघट यहीं जुड़ा है गुसाइ के काले कारनामो म इस बनिये का भी बड़ा हिस्सा है हवेली की भीतें उठाने मे इस साल पटवारी ने कम साथ नहीं दिया चार गावा की काली बोरिया इन लागो की बोरियों मे बटवारा करती रही हैं राहत के कामो पर काम करने वाले मजदूरो की पगार तक हडप करने मे ये लोग नहीं चूके

थानेदार ने ठिठककर पूछा—"कौन लोग? क्या काले कारनामे हैं इनके?"

इस बार मलखान सिंह बोले 'सुनो साब! इनकी जिंदगी काले कारनामो से खुसहाल है कोई देखने वाला नहीं अगर आप सही जाच करो तो एक एक के नाम हजार मुकदमे बनें नाज घर, बीज घर बने पता लगाओ कि साधारन किसान को कितना कुछ मिला बोरिया रातो रात ट्रको पर लद गई कर्जा देने के लिए भूमि सुधार समितिया बनी पर सुधार इनके पिछलगुओ का हुआ इसी गुसाई और पटवारी ने प्रधान को मिलाकर फर्जी पट्टे बनाए चकबदी का नाम लेकर जमीनो पर कब्जा किया किसानों के पास आप देखें तो टेढे बाके खेत रह गए हैं बाहर का कोई नेता ऐमेले ना और कोई अफसर भूला भटका इधर निकल आता है तो उसे बाहर ही बाहर हवेली पर ले जाकर शराब और रुपयो की थैली से गले तक दाब देते हैं गरीब दमडे मे खडा देखता उसकी गाडी की धूल ही देखता रह जाता है इनके अत्याचार सारे यहा की जनता की सास सास मे गुथे हैं ये गरीब कू बस इतना जानें हैं कि 'गोरू गवार पशु के चार' जितना बेजुबान गरीब किसान पिस रहा है उतना ही इनका वजन बढ रहा है या'

"कभी तो पकड मे आए ही होंगे?"

'आये हैं, लेकिन वो क्या पकड? यहा से चले भी गए ना चार दिन बाद फिर आ बैठे और फिर वही बसी की तान और गरीब की जान सिचाई की जरूरत उनकी पूरी हो जो इन्हें चटाए आए दिन के टक्स पहले ही घुटन तोड देते हैं फिर आज बाढ तो कल आधी कभी कीडा कभी सूखा गाव मे एक दूसरे से खेंच तान अलग जसे-तसे खेती का रख रखाव कर चार धान खडे करो कि जरा आख चूकी नहीं कि खडी फसल फूक दी जाए के कटवाली जाए खलिहान-भरे नाज या ही

पानी के मोल कारिंदा के हाथों तुन जाते हैं अच्छी याद के आज तलक दरसन हम तो हुए नहीं गाव । देस की हवा जहा मुख द रही होगी, वहा दे रही होगी यहा ता रात दिन जो घुटना रहता है "

थानेदार एक मिनट सोचता रहा फिर डाक्टर और उनके साथियो से वहीं गुसाई की हवेली के सामन खडे रहन को कहा तिलकराज और तेजू को वनिय की हवली के सामन-ठहरन को कहा और सिपाहियो को गाव के मुहाने वाली पुलिया पर भेज दिया और खुद सरजू के घर की ओर गए

घर में अधेरा था दो माटे लट्ठो पर नीचे का झुका-सा छप्पर पडा था आगन मे जूते, कटे तले, औजार और चमडे की कतरन पडी थी, काठ का दरवाजा इतना छोटा कि आदमी आधा मुडकर घुसे उसी दरवाजे की चौखट पर धोती की दुहरी तनाकर समदरी लेटी थी गाव की इस टोली की और बाहर की औरतें लडकिया वहा ठुसी थी समदरी की मा ने थानदार के पैरो के पास आकर ओढनी का पल्लू बार बार छुआया

घनश्याम ने आगे बढकर कहा—"हजूर । यही सरजू की मया है ये रही लरकिनी "

थानेदार ने पहले वहा से भीड हटाइ और खडे खडे लडकी से कुछ सवाल पूछे उन्होने देखा कि लडकी सावले रग की और दुबली पतली है शम स आखें जमे टूट पड़ें ता मले कपडो मे शरीर के हर भाग को लपेटे बडी परेशानी मे खडी है जसे अभी जमीन में ढह पडेगी पीतल क मुद और मैले रग की कलाई भर चूडिया नाक-नक्श अच्छा है गाव की लडकियो मे भला इतनी लाज कहा से आकर मुह पर रग पोत देती है

सरजू की बहू फूलादेई रो रोकर पल्ला भरे दे रही थी एक ही गुहार के "बाबू सरकार । यह लरकिनी आपकी चरनन की धूल है बचाओ हमारी पत आज कछु फैसलो इनकू नहीं मिलो तो ये राकछस गाव भर की बेटीन और खेत गौरे फिरती बहून कू घोर के पी जामेंगे "

अच्छा, चल बैठ काम करने दे माई । जो होगा करेंगे पहले इस लडकी को कुछ खिला पिला न, फिर बात कर "

थानदार लडकी से फिर पूछन जा रहे थे कि रामऔतार तेली भागा आया कि साब अभी उसके बैल ने थाम डारके पटकनी खा ली और उसकी बगल म मल्लू घासी की खखरिया है वहा सू ८ भसिया भाजके बाहर लढामनी म पडी झाग डार रही हैं गोगा घोसी कह रहा हैया कि अपनी आखन स अबई देखा है कि बलबीर का बहनोई खडा हुआ कुछ टटोल रहा था साहब। जल्दी मौके पर चल इन ससुरो ने बैल भस क कछु दिया है मल्लू ने गुसाई सवरे छेना है सो बैर उठा लिया हुगा गुहार माई-बाप की । बैर तो अबई और भुगतिना पडगो '

थानेदार ने एकदम बाहर निकलकर रामऔतार तेली के साथ जाकर मल्लू घोसी को बुलाया उसके चेहरे पर हवाइयां उड रही थी वह हाथ मले जा रहा था गुस्से और चिन्ता मे उसका बोल नही निकल रहा था जैसे बाहर दौडकर आया था, वैसे ही फिर अरहर के टट्टा के पीछे नोहरे घुस गया थानेदार भी पीछे पीछे गया देखा भैस अकडी जा रही थी, आखें बाहर निकली पड रही थी चारो पैरो को धरती पर पटक पटककर घरघरा रही था बैल के बारे मे खबर मिली कि वह मर गया थानेदार समझ गया कि भैस भी मरेगी वह फिर बाहर आए और एक एक आदमी को भेजकर पटवारी और बनिये को वही बुला लाने का हुक्म दिया बलवीर को भी बुलवाया

बनिये की हवेली मे कोई नही था दो चमेर नेजू बुन रहे थे पूछने पर पता लगा कि अबई साह जी रथ्या जोडकर बलवीर सिंह के संग बिलगा वार खेत कू देखवे गए हैं

थानेदार और सब आदमी जल्दी मे गुसाई की हवेली की ओर झपटे वहा न डाक्टर थे, न उसके साथी किसी के हल्के से कराहने की आवाज आई थानेदार के कान चौकन्ने हो गए फिर कराहने की तेज आवाज सुनाई दी वह उधर ही मुडे मरजू के घर से चलकर भीड भी उधर आ गई थी गुसाई की हवेली के बगल मे सूखे नाले के पास एक घर था थानेदार के मन मे न जाने क्या आया कि वह पोखरे की फूटी डागी फलागकर कूदे और देखा तो सन्न रह गए सीतला तने से कसा था मोटे रस्से की डोर उसके पेट और गले के टेंटुए पर इतनी जोर से कस रही थी कि उसके गालो और माथे पर अगुली भर नीली नसें उभर आई थी सिर तक नही हिला पा रहा था जीभ एठ रही थी

दूसरी ओर बेरी के झाडो के बीच मांगी पेट के नीचे बाई कलाई दबाए बिलबिला रहा था उसके मुह से धीरे धीरे आवाज निकल रही थी क्योंकि वह नीम बेहोशी मे तडप रहा था थानेदार ने सीटी बजाई घनश्याम और तिलकराज को सीतला के बधन खोलने का इशारा किया" खुद तीन चार आदमियो को साथ ले मांगी के पास दौडे उसे धीरे से उठाया तो देखा कि उसका कुर्ता खून मे तर हो रहा है कोई उसकी कलाई और हथेली तेज धार वाले हथियार से चीर गया था

थानेदार की आखें गुस्से से जलने लगी यह किसकी नीचता है ? उसमे कौन शामिल है ? सब कुछ साफ हो गया गाव के नौजवान दौड खोज कर डाक्टर और उनके साथियों को ले आए डाक्टर ने आकर यह नजारा देखा तो तुरंत डिस्पेंसरी खुलवाकर उनकी तीमारदारी मे जुट गए थानेदार को इधर से निश्चित रहने के लिए कह उन्ह अपराधियो को पकडने भेजा

थानेदार ने कडककर गाव वालो को कहा 'तुम सब इस समय सिपाही हो चारो तरफ जगल, गाव और नहर के दोनो किनारे घेर लो, हरेक खेत झाडी छान

डाला एक भी बदमाश भागने न पाए मांगी का खून एकदम ताजा है, इसलिए कोई दूर नहीं भाग सकता इतनी जल्दी गाव के सिमान के आस-पास मिल जाएगा ऐसा लगता है कि रब्बा लेकर बनिय का कपूत और बलबीर व नपाल कमीने कही बाहर नहर के सडक पर खड़े है और गुसाई या उसका बेटा यह जलील हरकत कर भागे हैं, जिससे रब्बा मे बैठकर पार हो जाए चलो फुर्ती से, पकडो सालो का कुत्तो की खाल खीचकर मिर्चे नही भरवाई तो नाम छोडकर मूछे मुडवा दू गा '

सिपाही भी आ गए थानेदार उन्ह अपने साथ ले नौलो की ओर दौडचले हर आदमी की आखें हजार बनी थी पेड पत्ता, नाला, गढा, खेत, बिटौरे, झोंगी पूले चरागाह ढहे-टीले हरेक पर आखें बुहारी फेर रही थी किसके पर मे काटा चुभा, कहा धोती उलझी, किसी को होश नही था बडी मुश्किल से ये हराम का खाने वाले पिल्ले पकडे जाएगे अबके हाथ पडे, तब देखें कस मामा चढावेग अपन लाऊ को खीर अब बच के जाना सूअरो ?

डाक्टर डिस्पेंसरी मे जुटे थ सीतला की जगह जगह खाल खिच गई थी पर वह बडा हिम्मती निकला थोडी देर की मसलाई के बाद जी सभाल लिया एक आदमी को मलने की दवा दे उसके पास बैठा दिया गया ताक्त की सुई लगा दी गई मलखान सिंह ने गम दूध लाकर एक एक लोटा दोनो को पिलान की कोशिश की सीतला तो दूध पी गया पर मागी को अभी नीम बेहोशी थी

डाक्टर साहब कम्पाउण्डर के साथ उसके घावो की मरहम पट्टी कर । लग कलाई स हथेली मे चोट अधिक गहरी थी बच गया, नही तो बेशम हाथ ही उडा जाते या पेट की अ तडिया फाड देते मूर्खो न ऐसा क्यो किया ?

पहलवान का जवाब खरा था —"करते कैसे नही ? चोर के पाव, छाड भाज गाव थानेदार क बडे भरोसे पर लाए हैं लकिन दाव पड गया उल्टा एक तो माथा वही ठनक गया ससुरे का, जब नया थानेदार देखा होता वो खाऊ गुलाब सिंह या भूरसिंह तो बाछें खिल जाती बेईमानन की ये आया गरीबन का दाता सतबीर कह रहा था के यहा जो भी बात आपस मे या थानेदार के सामन है रही थी, वो सगरी आना पाई मे इन जालिमन के कानन मे पहुच रही थी जैसे ही इनकू विसवास हो गया के अब जुरम की गागर भर गई है, कौन घरी फूट जाय, कहा ठिकाना, बस भाज छटे नीचन की या आदत होती हैगी के नाक मेरी ना तो नाक तेरी भी ना बस भाजत-दौरते खोटे करम करवें सू फिर भी बाज नही आए

सीतला के बालो से धूल और तिनके झाडत लादू ने बात को एक टीप और दी-- अजी पहलवान जी, रामजी के घर भी तो बहीखाती खुले हेगा आज तिहारी तो कल हमारी भी तो होवै है अरे भइआन नें कम चोट मारी है अपनी रोढन मे अब लेखा बदजातो एक एक के बदल हजारौन "

मलखान सिंह के हाथ स गुडगुडी लेते नैनसीग सूबेदार बोले—' इनको हाल

बसोई भयो है पहलवान जू जैसो मनवपुर वारे जुहारमल और गमना साहूकार को हुओ हो चों याद आई ? याही तरन धरमजरेन ने जुलमन की टटिया सगा दई जब पाप फूट गयो, तो खुद मरो, सब म जीजा और छोटे भैया कू और विसवाई बरसन बत्तीस बिला" ऊची पत्थर की चारी जल मे याके जेल जाते ही सगरे गांव की चौहद्दी म चन छा गयो दहशत के मारे दुश्मन ऊ पैरन मे आ परे सच्ची बात है या अब देख लीजो आखिर स के य दस पाच गुण्डे हाथ म आए नहीं और यहा सू सनीचर भाजो नही"

मागी के घावा पर दवाई लगे बार पट्टी बधे करीब आधा घण्टा हो गया था उसे अब होश आ गया डाक्टर ने उसके सिर और सीने पर धीरे-धीरे हाथ फिराते पूछा—अब कमा जी है, मागी नहीं, नहीं यो ही लेटे रहा बया दद ज्यादा हो रहा है दद तो होगा हो बच गए, यही बहुत है हा यह तो बताओ कि तुम दोनो पर चोट करने वाल कौन थ

ह रामजी ! अब भी रोगटे खडे है गए साब वो पटवारी और गुसाई थे पटवारी न सीतला को रस्सो ने कसा, कमर म दो-तीन लातें मारी वो नीचे गिर गया तो पेड की मुडेर पर पडे रस्से ग उसकी गदन भीचकर बाध दी मैंने समझा कि य इसकी देहुनी म फासी दे रहे है, रस्सी खिरते ही सीतला की आख पलट परीं मैं जो इन्हें धक्का देवे कू आगे आयो कि माकू पीछे धकेल दियो और गुसाई ने कुट्टी के गाडा के पास तू गडासो उठा य मेरे ऊपर वार करो मैंने जो पलट के वार बचायो, तो हाथ मे गडासे की पूरी धार पैरती चली गई"

"घबरा मत तू पिशाचो के हाथ से बच गया ले, ये गोली दूध के साथ सटक ले ले मेरी बाहो का सहारा लेके पी ले ईश्वर दोषी को सजा देगा एक दिन घूरे के भी दिन फिरते हैं लगता है भगवान ने तुम्हारी गुहार सुन ली है गाव म चमकत स सूरज के साथ बच परिवतन आया है हर परिवतन के लिए तकलीफें तो सहना पडती ही हैं न"

डाक्टर ने जतन स उसे दूध पिलाकर वही पिछोरा उढ़ाकर लिटा दिया सुई लगने के कारण या अधिक खून निकल जाने से मागी निढाल होकर सो गया सीतला की सासे भी अब बिना आवाज किए चल रही थी बेहोशी की गजूदगी अब नही थी चारो तरफ घेरा डाले भीड थानेदार के आगे पीछे आ जुटी थी एक आदमी न दौडकर थानेदार को बता दिया था कि इन दोनो पर चोट करने वाले भगोडे पटवारी और गुसाई थे यह सुनकर थानेदार का पारा सातवें आसमान पर चढ गया, वह ऊची आवाज मे दहाड उठा—"देखो, निकल न जाए हरामखोर हाथ से"

तभी मातिया के खेता के पीछे आम क बाग मे पटवारी और गुसाई की पीठ झलकी वे दानो अरहर मूग के खेता म घुस गए दुश्मन का सुराग मिल गया था

भीड उसी ओर गहरा पडी

थानेदार के हाथ का डडा हवा मे उछलने लगा सिपाहियो ने खेतो का दाया हिस्सा काटा लाद्दू और टीकम खेतो म बेधडक घुस गए तेजू और हरिया न दो छलागो मे ही मिसरी के खेता की गोलाई नापकर सामन मोर्चा सभाला पटवारी और गुसाई भाप गए कि पकड मे आ गए समझो व दानो एक दूसरे के हाथ म हाथ फसाकर बेतहाशा अधे बनकर दौडने लगे ओठो पर पपडी जम गई डर से जीभ मे काटे खडे हो गए अरहर के ठूठा ने उनकी पिडलिया चीर दी थानेदार उन्हें यमदूत सग रहा था आज तक की सारी रगीनिया जहरीली नागिन बनकर उन्ह डसे जा रही थी आज तक चन की नीद मार रहे इस साले डाक्टर ने जबसे अपनी मनहूम सूरत लकर गाव घुसाई की तभी से ये कमीने सिर चढ गए साला सूरत से कसा नरम दीखता था पर धीरे धीरे ऐसा पजा दाप कर बैठ गया कि बस गाव के बिगडैल खुले साड स जवानो को कमुस्ट बना वठा सत्यानाश जाय इसका अपना तो सब कुछ डुबो दियो और ये साला थानेदार एक बार जुगतकर छूट भर जाए, फिर सबसे पहला काम इस नरक के कीडे का पत्ता काटना है बन रहा है बडा हिमायती कजरो का सोचत जा रहे थे और जान छोड भाग रहे थे उससे चौगुनी तजी से भीड का रेला उन्ह हर आर से कस रहा था

जाने कैसे उस रास्ते पर आ भटके जहा गोठिया बाबा का अन्धा कुआ था बहुत गहरा और टूटा फूटा झाड-झखारा, कटीली डालियो और इट पत्थरो से अटा था इतना गहरा कि हड्डी तो एक साबुत बचे नही दोनो छाती फाड दौड भैरा रहे थ बस एक मिनट को हवा म चार हाथ लहराए, और जैसे भरे बोरे का भारी गठर गिर जाए, ऐसे दोनो चीखने गिरते अधे कुए म जा गिरे पूरे वाता वरण मे उनके क्रन्दन की आवाज गूज उठी एक बार तो थानेदार की सास भी ठकु'रह गई स्सालो को मौत भी कहा आई है

कलेजा फाड चीखें कुए के भीतर से आ रही थी सबसे पहले दोनो सिपाही आए उन्होने झाका ता नीचे मौत की दहशत दिखाई दी साहब ये तो लहू लुहान पडे हैं" तब तक थानेदार साहब वह छोटे सब आकर जमा हो गए थ थानेदार ने ज्योही नीचे झाका कि गुसाइ चीखा—मार डारो माब, देखि लओ हजूर अब ता आखिन ते सरजू को छोटका हमकू धक्का दैके मारिवे के ढग करि गयो'

थानेदार ने कुए की टूटी मुडेर स एक ढेला मारा और दात पीसकर कहा, "अबे अभी क्या मरा है अभी ता देखता जा हरामी तरी कमी खाल खिचवाकर कुत्ते छडवाता हू साले नीच अब भी झूठे इल्जाम लगान से बाज नही आया है सरजू का छाटका ता डाक्टर के पास है वे मरी आखो के आगे मरा है तू ता अधे अब तू उस भगवान को याद कर जिसने तुझे हमस दड दिलाने से पहले ही सजा द दी चला र, रस्सी डालो और निकालो इन सुअरो के लडुरो को लादो साले

का जीप पर देखने जाओ कमीनो क्या दुगत बनाता हू तुम्हारी ! झूठ बोलने से अब भी बाज नही आए रस्सी छबडा ले आओ और बाध दो इन्हे जीप के पीछे "

तिलक राज और ननकू तालियां बजा-बजाकर ऐसे बौरा गए थे, जैसे उन्हे कुए म बहुत बडा खजाना मिल गया हो पहलवान न भूख पेट पर बार-बार हाथ फेरकर सतोष की डकार ली चलो सौ सुनार की, एक चोट लुहार की मरो मारे ओ जा निगलो है तो देखा बुद्धि-बूद्धि करिके कहो मलखानसिह, कसी नट-बाजी भई

'सारे आपही फस गए गोदर की मौत आवै ता खुदई गाम की लग भाज है न अरे भया, बडन की कौन सुन है के जैसी करनी वैसी भरनी पड हैगी खर, इनकी पाप की घडा फूटिवो हाई पर मरो ता रोम राम या फरिस्ता थानदार कू आसीरबाद द रहा हैगा बडो तरक्की करगा अपनी जिनगी म आदमी कहा है, सेर है सेर दहाडे है ता जगल की एक एक पड बिलाद ऊचो उठ जावै हैगा पुलिस म तो भया, ऐसे अफसरन की जरूरत है दस-बीस ऐस आ जावै ता या महकमा चादी सौ दमकन लग "

किसी ने लाकर रस्सी दी, कोई बडा छबडा ले आया कुछ मनचल बाल्टी निकालन का काटा ले आए सभी खुश परो म जस बिजली लग गई थी गरीबो क मन म हाली दीवाली छा रही थी हथकडा स, आतक से छुटकारा मिला था जुल्मा म फक तो आएगा कुछ बिसन मामा गाव वाला कू किस्सा सुनाया कर है थे काई मुलक मे बादसा भयो हो, बाकी य काम क तनक सौऊ काई कसूर करै बस सिर काटो और धरो बुरज पै बाजार म काऊ नै सौदा-सुलफ कम दियो के कटया लियो उतनोई मास शरीर मे सू अब कहा है सबरे देखें है, थर्रा उठे हैं मन म, मो मजाल का काऊ की के कोई जुल्म या बेईमानी करतो यही अब होयगो जैस जसे गरीबन पे डकैत सी कचन म ठुसे तसेई औरन कू भी सिच्छा तो मिलैगी ही

थानदार न रस्सी म टोकरा बाधकर डलवाया कई झुक पडे निकालने को सभी को खेल हो गया था टोकरा नीचे उतरा कि गुसाई चिल्लाया— 'अरे हिली भी नाय जा रही कैस बठ जाम भैया, अरी मया कौन करमन की फल है रे ?

थानेदार ने घुडका— अब, अपने खोट कर्मों की याद कर बठ जल्दी चिलत्तर करने की जरूरत नही चल बे पटवारी, दूसरे टोकर म चढ जा सालो तुम्हारी मा ने पालकिया भेजी है, बैठो जल्दी मरदूदा ! नही तो नीचे आदमिया का उतारकर गदन म रस्स बधवाकर खिचवा लूगा अबे कराहता है अभी तो घुटन पसली ही फूटी हैं, हडिडया को भी ता मजबूत कर जिन्हे अभी टूटना है साल जरा सिकुड कर बठ बहुत हराम की खाकर मोटा हो रहा है लगा थोडा और दम '

मलखानसिह चाधरी और डाक्टर स वहा ठहरा नही गया या तो जुल्मो को

को सहते देखते सीना छलनी हो रहा था, फिर भी इन लहू-लुहान अपराधियों की दुर्गति नहीं देखी गई तीनों वहां से चुपचाप चले आए चौधरी तो चौपाल पर रुक गए और डाक्टर व मलखान सिंह आगे बढ़ गए

जैसे ही घर आया, मलखान सिंह ने डाक्टर का हाथ पकडकर रोक लिया—"ठहरो डाक्टर बटवा सवेरे सू म्हो उतर रहा हैगा कम मेहनत और गुस्सा किया है क्या ? आओ बीरू की महतारी के हाथ को कलेवा करि लेओ हम तो सच्ची कहें के तुम हमारे बीरू जसे ही हो '

सामने कीकर से दातौन तोड़ते डाक्टर के 'एक दोस्त को भी उन्होंने आवाज देकर बुला लिया दोनों के मना करने पर भी वह उन्हें लेकर अन्दर गए और साफ लिपी पुती मेढी मे बैठाकर अन्दर कलेवा पानी का इन्तजाम करने चल दिए डाक्टर का दोस्त मोहन बोला 'यार कुछ भी हो, यह आदमी बडा गभीर और सज्जन है ' तभी बडे-बडे तीन गिलासों मे दूध और बूरे-आटे के गोंद गिर चार लड्डू लेकर मलखान सिंह आ गए

'बाबा ! आप बडे अच्छे लगे है मुझे तो क्या हैं आपके बेटे ? इंजीनियर हैं क्या ? नाम क्या है उनका ?'

जवाब डाक्टर ने दिया—' विश्वेश्वरसिंह पुडीर "

क्या कहा ? पुडीर साहब इंजीनियर ? '

मलखान सिंह ने बक्स मे से निकालकर अपने बेटे का फोटो दिखाया, यह है हमारा बेटवा एकदम सुभाव सू इन डाक्टर जी जैसा है बडी किल्लतन से पढाया हमने "

'अरे वाह ! इनको तो मैं खूब जानता हू खटनी नहरी योजना मे काम कर रहे हैं आपके बेटे हैं ? मैं अपने चाचा के पास उस मैदान मे करीब दो महीने रुका था, तब रोज मुलाकात होती थी बडे जिंदादिल और दबग इंजीनियर हैं अपनी ईमानदारी के कारण सब ठेकेदारो मे बदनाम हैं, लेकिन चीफ इंजीनियर इनसे बहुत खुश हैं बाबा ! दीसेक दिन पहले ही मल्होरी वाली सडक पर बस स्टैंड पर मुलाकात हुई थी अब मिलेंगे तो बताऊंगा कि तुम्हारे पिता के हाथ से दूध पीकर आया हू हा, इन दिनों परेशान से नजर आए '

"अरे ! बताओ भया ! परेशान क्या हैं रहे हैं ? हमारे पास भी महीना ऊपर आज ही खत आया है वामे भी कुछ परेशानी लापरवाई सी हम लगी है हमतो खुदई बडे ससे मे परे हैं के कछु उन्हे है तो नाय गयो रहन सहन तो कायदे म रक्खें हैं न ?

'आपने भी खूब कही रहन-सहन तो उनका बहुत बढिया है बढिया चाल चलन है परेशानी यह है कि उन्होने तीन केस पकडकर चीफ इंजीनियर को सौंप हैं दो सडको और एक पुल का झूठे नक्शे बनाकर फर्जी मजदूरो के नाम के रजि

स्टर और झूठे आकडे मजदूरो की तनख्वाह के दिखाकर सरकार का लाखो रुपया गवन कर लिया अब उस लपेट मे अनेक ओवरसियर, ठेकेदार और नए छोकरे खाऊ इजीनियर आ गए हैं आए-दिन इन्हे धमकी-भरे खत मिलते हैं कि या तो सत्यवादी हरिश्चन्द्रपना छोडो, वरना किसी दिन जगल मे पुल बनवाते ठायठाय कर दिए जाओगे कई ठेकेदार तो बीस पच्चीस, यहा तक कि पचास हजार रुपये तक रिश्वत देन आए लेकिन पुडीर साहब ने साफ कह दिया कि नौकरी करूगा तो महनत के पसे के लिए नही तो मेरे घर खेत है, वही जाकर सभालूगा रिश्वत लेकर झूठे काम करू, यह नहीं होगा '

मलखान सिंह की आखें वेटे के प्यार और उसकी ईमानदारी से भर आइ बोल— 'भैया आपन हमे वडी खुशखवरी दी है हमन उसे यही तो सिखाया था कि मर जाना पर हराम के पैसे को अगुली मत छुआना वसे कहू कोऊ खतरा तौ नाही है ? '

"खतरा क्या होता ! उन्हे बडी जल्दी तरक्की मिलेगी बाबा आज सरकारी महकमो म पुडीर साहब जसे कितन ईमानदार ह ? अगुलियो पर गिनती है चीफ इजीनियर भी बेहद ईमानदार है बहुत खुश हो रह है याद रखो कि सरकार मे तभी तक अधेर रहता है जब तक बात सामने नही आती, वरना आदमी ईमानदारी के बल पर राज करता है '

"भया, याही मारे खत मे बदहवासी सी है याही लिए गाव नही आ रहा है लेओ लडुआ खाओ, जी म जो आ गया तेओ जी डाक्टर बेटा, लेओ जी तुम दूनौ म्हौं मीठौ करौ जी खुश हो गया "

तभी आगन म घनश्याम और सरजू क बेटवा आ गए आते ही बोले— ' डाक्टर जी सुनो ! अब तो रात कू आपके चबूतरा पै भजन मडली बैठेगी मना मत करियो सरवन पानी आपको भजन हमारी ओ ताईं लाओ दै देओ पूरी मटकिया को दूध सारन कू बीचत-ढोवत कधा पिरा गए '

डाक्टर बोल— 'क्या ले गए उन्हे थानदार साहब ?'

अजी बडे गाजे-बाजेन सू तन वाहर आके देखौ तो कसी हकरावन मचि रही है इन सबन क घर जैसे अबई इनकी चितान म आग फूकि हैगी बस पूछौ मती, आज ऐसौ खुशी कौ दिन हमारे बाप दादान के आगऊ नही आयौ होयगौ "

मलखान सिंह के आगन मे सब अपनी अपनी कह रह थे न वहा अब कोई बामन बनिया रह गया था, न चमार धोवी सब चहक रहे थे बनियों के कई बेटे चमार के बेटा से 'काका ' भैया कह-कहकर बात पूछ रहे थे

डाक्टर सोच रहे थे कि एक ही साहस के झटक से कितनी दीवारें टूट गइ

गुलमोहर अन्तर के तीन चित्र	नीर शबनम	६०-००
धनी दास	चन्द्रप्रकाश प्रभाकर	२० ००
किसान	"	२५-००
†आकाश	बिन्दु सिन्हा	२०-००
†युयुत्सु के बाद	डा विनोद शाही	६० ००
†निशान्त	राजभारती	२५ ००
†विश्वास	मदन गोपाल	२५-००
†अगले मोड तक	रामदेव धुरन्धर	३०-००
गढकाठगा का रहस्य	मधुर कमल	२५-००
आओ न यक्षा	"	२०-००
†परित्याग	अमित कुमार	३० ००
साइको (फिल्म पर आधारित उपन्यास)	रावट ब्लाच	१० ००
नेफा के उस पार	सत्यपाल सुधीर	५०-००
प्रतिशोध	सुरेश कांत	२० ००
गवो	घूस्वा सयमी	२० ००
शीला	अनादि मिश्र	२५ ००

कहानी-संग्रह

सूरज की आहट	सावित्री परमार	६० ००
उडिया की प्रतिनिधि कहानिया	मधुसूदन साहा	३५-००
†कश्मीरी की प्रतिनिधि कहानिया	डा शिब्बनकृष्ण रैना	३५-००
†पजाबी की प्रतिनिधि कहानिया	विनोद शाही	४०-००
†डोगरी की प्रतिनिधि कहानिया		३५ ००
†उर्दू की प्रतिनिधि कहानिया	शाहिद रहीम	४५ ००
†गुजराती की प्रतिनिधि कहानिया	सरला जोशी	३५ ००
†मलयालम की प्रतिनिधि कहानिया		४० ००
†कन्नड की प्रतिनिधि कहानिया		४०-००
†बगला की प्रतिनिधि कहानिया		४० ००
†असमी की प्रतिनिधि कहानिया		३५-००
†तलगु की प्रतिनिधि कहानिया		४०-००
†तमिल की प्रतिनिधि कहानिया		४० ००
†मराठी की प्रतिनिधि कहानिया		३५-००
एक अछूता टुकडा	मधुसूदन साहा	१२ ००
धरातल	डा शिवप्रसाद सिह	३० ००
श्रवणकुमार की झोपडी	डा विनोद शाही	४०-००
†अन्तरिक्ष	योगेश गुप्त	२५ ००
काला कानून	क्षमा शर्मा	१५ ००
जुडी हुई सतहे	प्रतिमा वर्मा	१५-००
नई दिशा	शकुन्तला भटनागर	१०-००
कहानी पीयूष	स रमेलचन्द आनन्द	२० ००
मेरी कहानिया	रामेश्वर उपाध्याय	२० ००

मेरी कहानिया	प्रबोधकुमार गोविल	२०-००
मरी कहानिया	जगदीशचन्द्र पाडेय	३०-००
मेरी कहानियाँ	सविता चडढा	२० ००
मेरी कहानिया	विश्वम्भर चतुर्वेदी	२०-००
मेरी कहानिया	दामोदर पडस	२० ००
ठगो की पर्ते	अनादि मिश्र	३२-००
मनोवति (लघुकथा सग्रह)	मुकेश जैन/सोमेश पुरी	१६-००

नाटक

कलिग विजय	रवी द्रनाथ सक्सेना	१५-००
अधेरे मे	प्रताप सहगल	१७-००
†सात रग नाटक	वस त परिहार	२०-००
श्रेष्ठ कश्मीरी नाटक	त्रिभुवनकृष्ण रैना	३५ ००
प्रतिनिधि एकाकी	स रतनचद आनद	२० ००
शहर करीब है	यशपाल कालडा	२५ ००

इतिहास एव सस्कृति

†बरमूदा त्रिकोण	देवे द्र रस्तोगी	७५ ००
औसत आदमी, इतिहास के आईने मे	ईश्वरसिंह बैस	७५ ००
†खोई हुई सभ्यताए	,	७५ ००
आदि मानव की तलाश मे	कात्यायनी	२५ ००

काव्य सग्रह

शब्दयात्रा	राजे द्रप्रसाद सिंह	२५ ००
करुणा कभी नही मरती	पद्मधर त्रिपाठी	३० ००
सवाल अब भी मौजूद है	प्रताप सहगल	२० ००
कालपुरुष (लम्बी कविता)	डा प्रणवकुमार	१५ ००
मुर्दागाडी	,	२५ ००
समय स दभ म	स डा विजय	५० ००
अणु से ईश्वर तक	स जगमोहन कौडा	२० ००
शिविर	स विनोद शाही/अशोक सिधाशु	२० ००
नवगीत सप्तदशक (खण्ड १ व २)	स राजे द्रप्रसाद सिंह प्र	५० ००
काव्य चेतना	डा परमान द चौबे	२५-००
टूटते चक्रव्यूह	स अशोक लव	२५ ००
राष्ट्रीय गीत सग्रह	स विनोद कुमार दीप	२५ ००
प्रश्नो का सूर्योदय	अनादि मिश्र	२५ ००
पारस की रसभरिया	मुकेश जन	२० ००
श्रेष्ठ व्यग्य कविताए	सतीशच द्र कमलाकर	२० ००

विविध

शक्तिदूत लालबहादुर शास्त्री	विद्या प्रकाश	२५ ००
आधुनिक मुस्लिम निजी कानून	शाहिद रहीम	५० ००
†उत्तर प्रदेश सहकारी समिति अधिनियम		५०-००
स्वास्थ्य रक्षा (प्राकृतिक पद्धति से)	डा हरिओम सिंघल	२५-००



सावित्री परमार

जन्म—१६ सितम्बर, १६३२, खुर्जा जि बुलन्दशहर

शिक्षा—एम ए (हिन्दी)

कहानी तथा काव्य पर अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कृत
राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा 'सहल पुरस्कार' से
पुरस्कृत (१६८४)
लगभग २२ वर्ष से देश की समस्त उच्चस्तरीय पत्रिकाओ
से लेखन द्वारा सम्पृक्त

प्रकाशित कृतिया—

कटी सतरो का इतिहास (काव्य सकलन), सूरज की
आहट एव घाटी मे पिघलता सूरज (कहानी सग्रह),
शाश्वत सौंदर्य के शिल्प-तीर्थ (यात्रा वृत्तात)

सम्प्रति—अध्यापन एव स्वतन्त्र लेखन